DESAI'S ART PRINTING PRESS
LASHKAR GWALIOR

परिचय

सन्मुख हुआ हूं आपके हे प्रेमियो सुन लीजिये ।
सचमुच ढिठाई है बड़ी लेकिन क्षमा कर दीजिये ॥
यह भेट धरता हूं, चरण में देखिए उन्माद को ।
स्वीकार दिल से कीजिये, इस प्रेम के संवाद को ॥ १

संकोच है यह सज्जनों के योग्य मेरा श्रम नहीं ।
दीपक दिखाना सूर्य को यह मूर्खता भी कम नहीं ॥
कोमल हृदय है प्रेमियों का शुभ यही परिणाम है ।
उत्साह भरना सेवकों में स्वामियों का काम है ॥ २

* * *

अज्ञान होकर भी यही अनुमान मन में कर चुका ।
सेवा समझ कर प्रेम से यह भेट सन्मुख धर चुका ॥
यदि भूल हो इसमें कहीं तो प्रेम से समझाइए ।
हे सज्जनो करके दया इस दास को अपनाइए ॥ ३

यह विश्व को मालूम है सब का यही अनुमान है ।
महिमा अलौकिक प्रेम की कहना नहीं आसान है ॥
पाना पता कुछ प्रेमियों का है नहीं संभव कहीं ।
क्योंकर मिलेगा पार जब कुछ पार ही उनका नहीं ॥ ४

* * *

सुख शांति मय देवेन्द्र प्यारे प्रेम का अवतार थे ।
मूरति मनोहर प्रेम की अरु प्रेम के भंडार थे ॥
मुख पर प्रकाशित प्रेम की उनमें अलौकिक शक्ति थी ।
श्रद्धा सहित संसार की उनके हित में भक्ति थी ॥ ५

पड़ती न थी उनके हिए में स्वार्थ की छाया कभी ।
अपने पराए का उन्हें नहिं ध्यान भी आया कभी ॥
किंचित नहीं निष्काम मन में स्वर्ग की भी चाह थी ।
कर्तव्य पथ में प्राण की भी कुछ नहीं परवाह थी ॥ ६

* * *

लवलीन रहकर प्रेम में कर्तव्य से चूके न थे ।
केवल पुजारी प्रेम के ऐश्वर्य के भूखे न थे ॥
संकट समय पर प्रेमियों से मुख कभी मोड़ा नहीं ।
तनपर कड़ाई झेलकर भी प्रेम को तोड़ा नहीं ॥ ७
देखा किसीने स्वप्न में भी अगर उनका भेष है ।
अंकित अभी तक प्रेम की दिल में निशानी शेष है ॥
जिस भांति भृंगी कीट को भृंगी बनाती है सदा ।
लघुता मिटाकर ठीक अपने गुण सिखाती है सदा ॥ ८

*　　　*　　　*

इस भांति से ही प्रेमियों को प्रेम का परिचय दिया ।
अपना अटल आदर्श रख अधिकांश को पावन किया ॥
ऐसे अलौकिक पुरुष का अनुकरण किंचित कीजिये ।
संक्षिप्त उनकी जीवनी को प्रेम से पढ़ लीजिये ॥ ९
हो रही यह जीवनी जगमें प्रकाशित देर से ।
पूरी न अब तक होसकी केवल समय के फेर से ॥
इस काम का उत्साह मुझको एक विदुषी ने दिया ।
है धन्य उनको यह बड़ा अहसान मुझ पर करदिया ॥ १०

*　　　*　　　*

कर्तव्य सेवा धर्म का इसमें सरासर स्वाद है ।
पढ़िये जरा दिल खोलकर यह प्रेम का संवाद है ॥
इस प्रेम के संवाद में सिद्धांत सारा अटल है
पाया अगर कुछ प्रेम तो मेरा परिश्रम सफल है ॥ ११

दोहा

लश्कर नया बजार का बासी छेदालाल ।
माघ सुदी एकादशी चौरासी की साल ॥

*　　　*　　　*

(दोहा)

जब तक नर जीवन रहा, लिया प्रेम का स्वाद ।
प्रेम मूर्ति प्रेमात्मा श्री देवेन्द्र प्रसाद ॥ १ ॥
तन में मन में वचन में, रोम रोम में प्रेम ।
अंत समय तक प्रेम का, खूब निबाहा नेम ॥ २ ॥
संवत पैतालीस का, शुक्ल पक्ष आसौज ।
द्वितिया के दिन जन्म ले, खूब उड़ाई मौज ॥
सतहत्तर की साल में, शुक्ल पक्ष गुरुवार ।
फागुन की थी अष्टमी, छोड़ दिया संसार ॥

देवेन्द्र मिलाप.

कहते थे प्राचीन काल मे जिसको सुन्दर मिथिला देश।
छाई हुई छटा मन मोहन, हर लेती थी मन का क्लेश ॥
परिवर्तन होगया आजकल कहलाता है वहीं बिहार ।
गवर्नमेंट के शुभ शासन मे दिन पर दिन हो रहा सुधार ॥ १
उसी देश में परम मनोहर आरा नगर निराला है ।
बस्या हुआ है नए ढंग से सुन्दर साफ संभाला है ॥
विनय नम्रता आदि गुणों से भरे हुए नर नारी है ।
धन वैभव सम्पन्न भक्ति के भली भांति अधिकारी हैं ॥ २

* * *

इसी नगर में एक जैन कुल--भूषण चतुर गुणों की खान ।
नाम सुपार्श्वदास शुभ उनका होन हार थे परमसुजान ॥
सरल स्वभाव प्रेम से पूरित, दीनों का दुख हरते थे ।
शत्रुमित्र सब हरदम उनकी बहुत बड़ाई करते थे ॥ ३
धन वैभव सम्पन्न सदन में प्यारी पत्नी थी सुखमूल ।
मरजी के मानिन्द हमेशा रहती थी उनके अनुकूल ॥
कर्तव्यों में लीन सर्वदा सुखसे समय बिताते थे ।
दम्पति धर्म नमूना बनकर दुनियां को दिखलाते थे ॥ ४

* * *

परम भाग्य शाली सज्जन थे इनके घर में बड़े कुमार ।
श्री देवेन्द्रप्रसाद प्रेम के प्रकट हुए मानो अवतार ॥
विश्व प्रेम का खूब जिन्होंने आदर सहित प्रचार किया ।
सूखे हुए दिलों के अंदर बाग प्रेम का खिला दिया ॥ ५
कलहकारियों को बरजोरी प्रेम परस्पर सिखा दिया ।
प्रेम शक्ति से पाषाणों को मोम बना कर दिखा दिया ॥
इसी लोक में स्वर्ग लोक को रचने का उपदेश किया ।
प्रेम और कर्तव्य कर्म में जीवन अपना शेष किया ॥ ६

शुभ संवत उन्नीस सैकड़ा ऊपर पैंतालीस किया ।
शुक्ल पक्ष आसोज मास में द्वितिया के दिन जन्म लिया ॥
परम मनोहर समय सुहावन पावन शरद सुहाई थी ।
हरे हरे वृक्षों की शोभा जहां तहां पर छाई थी ॥ ७
शीतल मधुर मनोहर सुन्दर विमल जलाशय भरे हुए ।
रंग बिरंगे फूल सुशोभित वन उपवन सब हरे हुए ॥
पकी हुई थी कृषी देख कर कृषक परम सुख पाते थे ।
धनी और कंगाल स्वभाविक परमानन्द मनाते थे ॥ ८

* * *

निर्मल नील गगन भूमंडल खूब प्रकृति ने सजा दिया ।
ऐसे समय हमारे प्यारे प्रेमी जी ने जन्म लिया ॥
हुआ समय अनुकूल जगत में पड़ने लगी प्रेम बौछार ।
रोग शोक विघ्नों से रक्षित सुख में था सारा परिवार ॥ ९
प्रेमी जी के जन्म समय पर सबको अति आनन्द हुआ ।
द्वितिया के दिन मनो मनोहर प्रकट शरद का चन्द हुआ ॥
शुभ लक्षण युत परम प्रेम मय सरल स्वभाविक काया थी ।
शिशु पन से ही अंग अंग पर उत्तम गुण की छाया थी ॥ १०

* * *

प्रमुदित खिले हुए चहरे पर कभी न देखा गया विषाद ।
देव प्रसाद जानकर सबने नाम धरा देवेन्द्र प्रसाद ॥
भोली भोली सूरत प्यारी मन आकर्षित करती थी ।
प्रेम लपेटी अट पट वाणी सबको हरषित करती थी ॥ ११
पड़े हुए पलने में सुख से शिशु क्रीड़ा दिखलाते थे ।
प्रेम समझ हरएक व्यक्ति के पास प्रेम से जाते थे ॥
क्षुधा सताने पर भी अक्सर नहीं देर तक रोते थे ।
समय समय पर ही पय पीकर समय २ पर सोते थे ॥ १२

* * *

हंसते थे हर समय किलक कर अंग सुडौल हिलाते थे ।
रहते थे आरोग्य हमेशा रोग दूर हट जाते थे ॥
प्रेम प्रकाश विलास देख कर सुख पैदा होजाता था ।
देख देख शिशु पन की क्रीडा सब परिवार सिहाता था ॥ १३

इसी समय पर विघ्न हुआ यह सब का हृदय दुखाने का ।
नियम नहीं है कहीं जगत में समय बराबर जाने का ॥
बडा भयंकर सब लोगों को सहना पडा अचानक शोक ।
जलमें डूब पिता जी उनके असमय चले गये परलोक ॥ १४

* * *

किसी समय यह उच्च घराना धन दौलत में था भरपूर ।
धर्म और कर्तव्य कर्म में दूर दूर तक था मशहूर ॥
अब तो इसी कुलीन वंश का केवल रहा नामही शेष ।
तपते हुए प्रताप सूर्य ने अस्ताचल में किया प्रवेश ॥ १५

जब कोई मुस्तैद आदमी रहा नहीं करने को काम ।
भवसागर में कठिनाई से मिला नहीं बिलकुल विश्राम ॥
पाई नहीं थाह विघ्नो की बहुत विचारी छली गई ।
माता जी तब बाल बालिका लेकर पीहर चली गई ॥ १६

* * *

आरा में ही पीहर उनका वैभवशाली है परिवार ।
सरल स्वभाविक माता जी को करते हैं सब दिल से प्यार ॥
नहीं द्वेष रखती थीं दिलमें मीठी बातें कहती थीं ।
इसी सबब से पहिले अकसर अधिक वहीं पर रहती थीं ॥ १७

पहिले से इस वक्त और भी आदर करके लिया गया ।
कठिनाई के समय शोक में अतिशय धीरज दिया गया ॥
जीवन के आरम्भ काल में ऐसा विघ्न विशेष हुआ ।
शिशु-पन प्यारे प्रेमीजी का मामा के घर शेष हुआ ॥ १८

* * *

मामा का भी परम प्रतिष्ठित सब से बड़ा घराना है ।
धन दौलत से भरा हुआ घर सुधरा हुआ जमाना है ॥
शिशुपन से बालकपन आया दिन २ बढने लगा प्रमोद ।
लेते थे सब लोग बलैयां देख देखकर बाल विनोद ॥ १९
अंगसुडौल कमल से कर पद परम सुहावन नाभि गभीर ।
चन्द्रकला की भांति मनोहर दिन २ बढने लगा शरीर ॥
भृकुटी विकट मनोहर लोचन गाल गुलाबी उन्नत भाल ।
फैला हुआ सुभग आनन पर घुंघराली अलकों का जाल ॥ २०

* * *

भोले मुखसे मीठी बातें साफ सुनाना सीख लिया ।
गिरते पड़ते हुए अंत में दौड लगाना सीख लिया ॥
बारे बूढे सब लोगों में नेह लगाना शुरू किया ।
बालक पनके खेल दिखा कर प्रेम जगाना शुरू किया ॥ २१
मुख में भरे शांति के मंदिर मन्द मन्द मुसकाते थे ।
परम प्रेम की मूर्ति मनोहर साफ नजर में आते थे ॥
कुलमें प्रकट सपूत पूत के पैर पालने दिखते हैं ।
होनहार बिरवों के चिकने पत्ते पंडित लिखते हैं ॥ २२

* * *

प्रेमी जी की प्रभा देखकर सब मोहित हो जाते थे ।
बालक पन के आसारों से होनहार बतलाते थे ॥
वयो वृद्धजन प्रमुदित होकर मनके भाव परखते थे ।
प्रेमी जी के सुन्दर मुख पर सद्गुण साफ झलकते थे ॥ २३
मन मोहन सौन्दर्य प्रभा से अनायास मन हरते थे ।
सरल स्वभाव स्वभाविक गुणसे सब को शीतल करते थे ॥
सुखद सुधाकर सरिस बदन से सुधा बरसता रहता था ।
नहीं प्यास बुझती थी सबका हृदय तरसता रहता था ॥ २४

* * *

क्रीडा करते हुए अनेकों सुखके साथ विचरते थे ।
खेल खेलते हुए परस्पर झगड़ा कभी न करते थे ॥
हार जीत में बालक सारे कड़े शब्द कहलेते थे ।
करते थे कुछ नहीं शिकायत चुपहोकर सहलेते थे ॥ २५
क्षमा लघुन पर प्रीति परस्पर वृद्धजनों का आदर भाव ।
प्रेमी जी का बालकपन मे पड़ा हुआ था यही स्वभाव ॥
गोरे गोरे भोले मुख का भाषण अधिक सुहाता था ।
हट करना या मचल मचल कर रोना उन्हें न आताथा ॥ २६

* * *

बचपन मे ही मतलब अपना थोड़े में समझाते थे ।
सार रहित बातों को बहुधा मुख पर कभी न लाते थे ॥
खेल कूद में कमजोरों पर बड़ी दया दिखलाते थे ।
अकसर अपनी हार बताकर सबका मान बढ़ाते थे ॥ २७
गाली सुनकर भी बदले में गाली नहीं सुनाते थे ।
झूठ मूठ भी कभी किसी के दिल को नहीं दुखाते थे ॥
खाने पीने की चीजों में मन को नहीं लगाते थे ।
दूध भात या मन माने फल नियत समय पर खाते थे ॥ २८

* * *

मीठे अधिक तामसी भोजन नहीं पेट में भरते थे ।
किसी चीजके लिये किसी से कभी नहीं हठ करते थे ॥
भोले पन से कई दिलों में नरम जगह करलेते थे ।
रोते हुए आदमी केवल बातों मे हंस देते थे ॥ २९
लग्न शोधकर प्रेमी जी का धूम धाम से ब्याह हुआ ।
हुई खुशी में खुशी और भी सबको अति उत्साह हुआ ॥
इसी तरह से महा मोद में बालकपन भी शेष किया ।
आरा जिला पाठशाला में इसके बाद प्रवेश किया ॥ ३०

* * *

पगे हुए पिछले जन्मों के प्रेम रूप बन आए थे ।
प्रेमी जी तो दया प्रेम के संस्कार ही लाए थे ॥
इसी सबब से अल्प आयुमें अपना बहुत सुधार किया ।
दया प्रेम का शाला में भी जाकर खूब प्रचार किया ॥ ३१
सहपाठी मित्रों की ममता पलभर नहीं विसरते थे ।
दीन बालकों पर तो हर दम प्राण निछावर करते थे ॥
प्रेम मग्न होकर हरबालक भाव निरखता रहता था ।
प्रेमी जी का प्रेम सरोवर उमड उमड कर बहता था ॥ ३२

* * *

भक्ति प्रेम इत्यादि गुणों पर शिक्षक बहुत सिहाते थे ।
शिक्षा दायक सरल मनोहर दिलसे पाठ पढ़ाते थे ॥
गुरु समझ कर प्रेमी जी भी अतिशय आदर करते थे ।
पढ़े हुए हरएक शब्द को फौरन दिल में धरते थे ॥ ३३
नहीं कड़ाई हुई जरा भी पल पल प्रेम विलास हुए ।
ठीक समय पर उन्नति करके एंट्रेंस में पास हुए ॥
गुरु लोगों को हर्षित करके गये बनारस काशी धाम ।
सैंट्रल हिन्दू कालिज जाकर दर्ज कराया अपना नाम ॥ ३४

* * *

कालिज में भरती होने पर इल्मी उन्नति शेष हुई ।
भक्ति प्रेम सेवा करने की उन्नति और विशेष हुई ॥
प्रेम सरोवर में तर होकर अक्षय सुख में फूल गये ।
पढने लिखने की क्या गिनती अपने को भी भूल गये ॥ ३५
नर जीवन के लिये प्रेम ही कल्प वृक्ष की छाया है ।
विद्वानों ने प्रेम शक्ति को सबसे बड़ा बताया है ॥
जप तप योग यज्ञ कर्मादिक जो जो जग का नाता है ।
प्रेम छका उन्मत्त हुआ मन फिर क्या कुछ भी भाता है ३६

* * *

अर्थ धर्म कामादिक सुख से दशौ दिशा भर सकते हैं।
लेकिन विमल प्रेमकी समता कभी नहीं कर सक्ते हैं॥
प्रेम विवश हो प्रेम शक्ति से विधिने खेल पसारा है।
टिके हुए ब्रह्मांड अनेकों केवल प्रेम सहारा है॥ ३७
चर अरु अचर प्रेम के बल से जगमें जीवित रहते हैं।
ईश्वर प्रेम प्रेम ही ईश्वर ऐसा पंडित कहते हैं॥
पाकर उसी प्रेम मंदिर से अनायास ही प्रेम प्रसाद।
प्रेम मग्न होकर प्रेमी जी क्यों न भूलते तन की याद॥ ३८

* * *

कालिज में भी उसी प्रेम का सुख दायक रस घोल दिया।
सहज स्वभाव समान भाव से प्रेम खजाना खोल दिया॥
जीवन का सुख मूल प्रेम ही जीवन मूरि समान हुआ।
खाते पीते सोते जगते सब में प्रेम प्रधान हुआ॥ ३९
बाहर भीतर तनमें मन में चाल ढाल में समा गया।
नस नस में रस भिदा प्रेम का बाल बाल में समा गया॥
मनसा वाचा और कर्मणा पावन प्रेम प्रकाश हुआ।
बढ़ा परस्पर प्रेम दिलों में रागद्वेष का नाश हुआ॥ ४०

* * *

उडुगण सहित चन्द्र को जैसे सूर्य प्रकाशित करते हैं।
विना परिश्रम अनायास ही अंधकार को हरते हैं॥
इसी तरह से प्रेमी जी का सब पर पूर्ण प्रभाव हुआ।
सत संगी युवकों के दिलमें प्रेम भक्ति का चाव हुआ॥ ४१
सेवा भक्ति प्रेम के बल को भलीभांति से मनन किया।
प्रेम कुटी में सच्चे प्रेमी मित्रों का संगठन किया॥
प्रेम देव के सन्मुख करके मुस्तैदी से कौल करार।
प्रेम मंडली बनी अनोखी सभा सदों की बढ़ी शुमार॥ ४२

* * *

प्रेम देव की प्रबल शक्ति का पाकर भलीभांति आधार ।
प्रेम मंडली प्रेम मंत्र का घर घर करने लगी प्रचार ॥
पश्चिम के विद्वान अरंडल चतुर शिरोमणि नेक मिजाज ।
जिनके नाम और कामों से परिचित है सब सभ्य समाज ४३
कालिज के अनुकूल प्रिंसिपिल भ्रात्र भाव विस्तारक थे ।
समता सहित ब्रह्म विद्या के ज्ञाता प्रेम प्रचारक थे ॥
रुचि अनुसार दिया करते थे सब लडकों को शुभ उपदेश ।
सेवा भक्ति प्रेम ही जिनके जीवन का था लक्ष्य विशेष ॥ ४४

* * *

शिक्षा देते समय एक दिन कर्तव्यों का कह कर हाल ।
मुख्य मुख्य शिष्यों के सन्मुख बडे प्यार से किया सवाल ॥
बतलाओ हे चतुर शिष्य गण जो यह जीवन पाया है ।
तुमने अपने इस जीवन का क्या २ लक्ष्य बनाया है ॥ ४५
बिना लक्ष्य अनमोल जिन्दगी सार हीन होजाती है ।
जैसे भटकी हुई भंवर में नैया चक्कर खाती है ॥
होता नहीं कभी फल दायक अस्थिर जीवन का परिणाम ।
लक्ष्य विहीन पतित पथिकों की मंजिल होती नहीं तमाम ॥४६

* * *

कायम करै लक्ष्य जीवन का तो उन्नति की आशा है
बिना लक्ष्य के तीर फेंकना केवल खेल तमाशा है ॥
सुन कर शिक्षा भरे प्रश्न को आदर सहित जवाब दिया ।
सोच समझ कर सब शिष्यों ने लक्ष्य बताना शुरू किया ॥४७
कोई कहने लगा महाशय मुझे विलायत जाना है ।
विद्वानों में सब से बढ कर ऊंची पदवी पाना है ॥
कहा किसी ने हाथ जोड कर मेरा निश्चित यही विचार ।
बाणिज और व्यौपार करूंगा बनकर मोटा साहूकार ॥ ४८

* * *

कोई बोला सुनिए साहिब मैं अपना प्रण पालूंगा।
सब धर्मों का तत्व समझ कर सच्चा धर्म निकालूंगा ॥
कहने लगा तमक कर कोई मेरा लक्ष्य सबाया है।
कृषि विद्या का पंडित होना मेरे मनको भाया है ॥ ४९
बड़े अदब से कहा किसी ने नहीं सुहाती मुझको ढील।
कानूनी अभ्यास करूंगा बन कर कोई बड़ा बकील ॥
मधुर वचन से बोला कोई मेरा लक्ष्य निराला है।
जन्म भूमि के लिये समर में तन मन धन देडाला है ॥ ५०

* * *

सुनिये साहिब कहा किसी ने हिम्मत कभी न हारूंगा।
उपदेशक या सभ्य सुधारक, बनकर देश सुधारूंगा ॥
गुरू चरणों में शीश नवाया सादर उठकर सबके बाद।
प्रमुदित करते हुए प्रेम से बोले श्री देवेन्द्र प्रसाद ॥ ५१
कुल बातों को अल्प समय के अनुभव से अजमाया है।
विश्व-प्रेम ही इस जीवन का मैंने लक्ष्य बनाया है ॥
तन मन किया विश्व को अर्पण शत्रु मित्र का भेद नहीं।
लागी लगन मगन मन मेरा किसी बात का खेद नहीं ॥ ५२

* * *

प्यारे का हर कौतुक मुझको प्राणोंसे भीप्यारा है।
रमा हुआ है रोम रोम में केवल प्रेम सहारा है ॥
चतुर प्रिंसिपल ने यह सुन कर मन में बहुत विचार किया।
उठकर लगा लिया छाती से बड़ी देर तक प्यार किया ॥ ५३
प्रमुदित करने लगे प्रशंसा हृदय दया-सम्पन्न हुआ।
उसी रोज से उनका उनसे नया भाव उत्पन्न हुआ ॥
श्रद्धा सहित अनन्य प्रेम का पाकर परमानन्द विशेष।
समय समय पर प्रेमी जी को करते रहे विविध उपदेश ॥ ५४

* * *

बिना रुकावट दिन दिन दूना बढता गया अमित उत्साह ।
शीतल करने लगा विश्व को उमड़ उमड़ कर प्रेम प्रवाह ॥
सभ्य जगत ने प्रेमी जी के कर्तव्यों पर किया विचार ।
होन हार युबकों में सबसे अव्वल होने लगी शुमार ॥ ५५
विद्या बुद्धि परिश्रम साहस बल का वेग अथाह हुआ ।
धर्म और साहित्य विषय के अनुभव से उत्साह हुआ ॥
बालकपन के भाव छोड़ कर परिचय युवक समान दिया ।
धीरे धीरे कर्तव्यों के पथ की ओर प्रयान किया ॥ ५६

* * *

अल्प आयु में ही अनुभव से दूर हटाकर विघ्न कड़े ।
दृढ़ होकर कर्तव्य क्षेत्र में तन मन धन से कूद पडे ॥
प्रेमी जी के अविरत श्रम से उन्नति के परिणाम स्वरूप ।
क्रम क्रम होने लगे प्रकाशित शिक्षा प्रद सद् ग्रंथ अनूप ॥ ५७
जिनका पूर्ण रूप से परिचय पूरा विवरण व्यौरे वार ।
जान सकेंगे प्यारे पाठक आगे चलकर भली प्रकार ॥
देश प्रेम कर्तव्य शीलता सुन सुन कर सन्मान किया ।
विद्वानों ने ऊंचा आसन आदर सहित प्रदान किया ॥ ५८

* * *

रीझ रीझ कर सभा समाजें देख देख कर पर उपकार ।
करने लगीं प्रेम से स्वागत प्रेमी जी का भली प्रकार ॥
प्रेमी जी भी स्वार्थ छोडकर विघ्न अनेकों सहते थे ।
तन मन धन से सब के हित में हरदम तत्पर रहते थे ॥ ५९
समता सहित सरल चित होकर सबके बीच विचरते थे ।
देह गेह का नेह छोड़ कर सब की उन्नति करते थे ॥
कलकत्ते के विद्वानों ने सुनकर उनकी कीर्ति अपार ।
सर्व धर्म परिषद् का मंत्री चुनकर सौंपदिया अधिकार ॥ ६०

* * *

सादर मंत्री का पद पाकर पैदा किया जगत में नाम ।
चतुराई श्रम और योग्यता सहित किया परिषद का नाम ॥
विद्वानों के संग्रह-करके शिक्षा दायक विविध विचार ।
अनुपम ग्रंथ प्रकाशित करके दया धर्म का किया विचार ॥ ६१
प्रेम सहित अधिकांश थलोंमें जाकर प्रेम-प्रचार किया ।
मुख्य अहिंसा सर्व धर्म का डंका जगमें बजादिया ॥
जोर दार सिद्धांत बताया विश्व धर्म का लेकर सार ।
बना जहां तक दया प्रेम का खूब जगत में किया प्रचार ॥ ६२

* * *

खोज खोज कर जैन धर्म का मर्म विश्व को बता दिया ।
कुलबातों की विद्वानों ने विना पक्ष स्वीकार किया ॥
यूरुप के सब देशों ने भी समझा खूब भीतरी मर्म ।
मुक्त कंठ से सब लोगों ने स्वीकृत किया अहिंसा धर्म ॥ ६३
खान पान आराम छोड कर किया परिश्रम आठौयाम ।
ज़ाहिर किया जगत के सन्मुख उपयोगी परिषद का काम ।
इसी तरह कुछ रोज बनारस रहकर किया प्रगट अनुराग ॥
संस्थाओं में जान डालकर प्रेमी जी पुनि गये प्रयाग ॥ ६४

* * *

दर्ज कराया नाम वहां पर छात्रालय में किया निवास ।
नहीं लगाया मन पढने में किया न कोई दर्जा पास ॥
सचमुच उन्हे पुस्तकें रटकर जीवन नहीं बिताना था ।
भक्ति प्रेम का श्रोत बहा कर अक्षय पद को पाना था ॥ ६५
स्वार्थ छोडकर सब लोगों की सेवा दिल से करना था ।
मंगल दायक विश्व प्रेम से सकल विश्व को भरना था ॥
छात्रालय के सब छात्रों में पैदा किया परस्पर प्रेम ।
कलह कुटिलता छोड छोड कर रटने लगे निरंतर प्रेम ॥ ६६

* * *

सब के ऊपर प्रेमी जी कुछ जादू सा कर देते थे ।
शुष्क दिलों को विमल प्रेम से अनायास भर देते थे ॥
छोटे बड़े परस्पर सब में देख देख कर प्रेम अथाह ।
भ्रात्र संघ नामक संस्था को कायम किया सहित उत्साह ॥ ६७
जैन समाज कुरीति निवारण विद्या और धर्म उपदेश ।
स्त्री शिक्षा की उन्नति हो यही संघ का है उद्देश ॥
करता हुआ सर्वदा उन्नति संघ अभी तक जारी है ।
प्रेमी जी के प्रेम भक्ति का प्रेम सहित आभारी है ॥ ६८

* * *

अंकित हैं उपदेश अभी तक सब के दिल में लिखे हुए ।
फिरते हैं लवलीन अनेकों उनके ऊपर बिके हुए ॥
आठौं याम परिश्रम करके खूब संघ का काम किया ।
उन्नत शील बनाया सबको विद्वानों में नाम किया ॥ ६९
एक समय पर छात्रालय का छात्र किसी मन मानी से ।
छत पर से गिर पड़ा अचानक गफलत में नादानी से ॥
गिरते ही बेहोश चोट से होकर मरणासन्न हुआ ।
दशा देखकर सब के दिल में दया भाव उत्पन्न हुआ ॥ ७०

* * *

कहा प्रिंसिपिल ने लडकों से इसका यही उपाय करो ।
अपने मुख से इसके मुख में चन्द मिनिट तक स्वास भरो ॥
साहस हुआ नहीं लडकों का उसपर दया दिखाने का ।
अपनी स्वास डाल कर केवल उसके प्राण बचाने का ॥ ७१
लगे झांकने इधर उधर को नहीं गया कोई भी पास ।
प्रेमी जी ने आगे बढ़कर उसके मुखमें छोड़ी स्वास ॥
उस लडके के प्राण बचाकर बहुत बडा उपकार किया ।
चतुर प्रिंसिपल ने खुश होकर प्रेमी जी को प्यार किया ॥ ७२

* * *

कहा पीठ पर हाथ फेर कर तुम जग के हित कारी हो।
निश्चय जीवन सफल तुम्हारा सुर पुर के अधिकारी हो॥
मिल सकती है इससे बढ़कर सेवाकी क्या अधिक मिसाल।
बड़ा असर होता था सबपर देख देख कर उनका हाल॥ ७३
होकर मुग्ध सरस रसना से शिक्षा मनमें धरते थे।
छोटे बडे प्रेम बश उनका उठकर स्वागत करते थे॥
अडे रहे कर्तव्य क्षेत्र में अपने आप विकाश हुआ।
बिना थकावट श्रम करने का दिन दूना अभ्यास हुआ॥ ७४

* * *

किया समर्पण प्रेम पंथ में छिपा खजाना खोल दिया।
पढना लिखना छोड़ अन्त में घर पर आकर वास किया॥
करते हुए दूर विघ्नों को श्रम साहस को साथ लिया।
कूद पडे दिल खोल समर में तनका होश विसार दिया॥ ७५
कायम किया प्रेम का मंदिर और बखेडा छोड दिया।
प्रेम देव के बने पुजारी सेवा धर्म कबूल किया॥
उड़ने लगा गगन मंडल में बडा विलक्षण काम किया।
साफ तौर से विश्व प्रेम का गहरा झंडा गाड़ दिया॥ ७६

* * *

सारा समय इसी मंदिर की भाव भक्ति में लगा दिया।
अधम स्वार्थ की आहुति देकर परमारथ का काम किया॥
इसी प्रेम मंदिर के अंदर विश्व प्रेम भर पूर हुआ।
उमड़ उमड़ कर प्रबल वेग से दुनियां में मशहूर हुआ॥ ७७
पैदा किए सहायक अपने विद्वानों को अपनाया।
जैन धर्म का तत्व खोज कर भली भांति से दरशाया॥
लिखवा कर सिद्धांत अनेकों जैन धर्म मजबूत किया।
अंग्रेजी में छपा छपा कर सब दुनियां को बता दिया॥ ७८

* * *

अमेरिका इंगलेंड जर्मनी फ्रांस रूस ने जान लिया।
जैन धर्म का तत्व समझ कर विद्वानों ने मान लिया ॥
पढ पढ कर आदर्श तत्वको दिल में खूब विचार किया।
भारत के भी विद्वानों ने आदर से स्वीकार किया ॥ ७९
सन्मुख साफ दलीलें रख कर सबका संशय भगा दिया।
प्रेमी जी के कर्तव्यों ने जैन धर्म को जगा दिया ॥
सेवा धर्म प्रेम की महिमा कर्तव्यों का निर्मल ज्ञान।
फैला दिया विश्व के भीतर विश्व प्रेम का तत्व महान ॥ ८०

* * *

चुन चुन कर सुन्दर शिक्षा-प्रद भक्ति प्रेम के विमल विचार।
छपा छपा अनमोल पुस्तकें भली भांति से किया प्रचार ॥
जैन जाति के सुन्दर भूषण जैन धर्म के दृढ़ आधार।
बढ़ा रहे थे जैन जाति में कर्तव्यों की छटा अपार ॥ ८१
इन बातों में प्यारे पाठक किंचित भी अत्युक्ति नहीं।
साक्षी रूप देखिये आकर है सारा मासान यहीं ॥
अब तक उनके मित्र याद में आंसू नीर बहाते हैं।
छोटे बड़े अभी तक उनकी कीर्ति प्रेम से गाते हैं ॥ ८२

* * *

नहीं नजर आता उनका सा अबतक प्रेम प्रभाव कहीं।
खोज खोज कर मिला नहीं है ऐसा सरल स्वभाव कहीं ॥
मिलते समय प्रेम का सब पर महा मंत्र पढ़ देते थे।
प्रेम दृष्टि से कई दिलों को काबू में कर लेते थे ॥ ८३
उनकी नम्र निवेदन सुन कर कोई कभी न नटता था।
मीठी बातों का समझाना कभी न दिल से हटता था ॥
उनके सन्मुख छल की बातें कोई कभी न कहता था।
मंत्र मुग्ध की भांति प्रेम की नजर ताकता रहता था ॥ ८४

* * *

मन के बुरे बिकार छोडकर जिसके आगे जाते थे।
मित्रों की तो कौन चलावे पत्थर को पिघलाते थे ॥
जब वह अपने कर कमलों से पत्र कहीं लिख देते थे।
पढने वालों की तबियत को विना दाम लेलेते थे ॥ ८५
प्रेम पगे कोमल शब्दों को पढकर नहीं अघाते थे।
दूर दूर के व्यक्ति सहायक अनायास बन जाते थे ॥
जातेथे जिस ओर वहीं पर प्रेम बसरने लगता था।
दरशन पाकर सब का सुख से हृदय हरषने लगता था ॥ ८६

*　　*　　*

जहां बैठते सहज वहां से राग द्वेष खो जाता था।
प्रेम पगा मित्रों का मंडल एक हृदय होजाता था ॥
सार हीन नाहक झगडों में शामिल कभी न होते थे।
करते हुए नियम का पालन नहीं समय को खोते थे ॥ ८
शारीरिक श्रम और मानसिक काम खूब कर सकते थे।
बढा हुआ था चाव इर्षा से नहीं जरा भी थकते थे ॥
झरने नदी बाग बन सुन्दर उनको बहुत सुहाते थे।
सहज प्रकृति का दृश्य देखने उद्यानों में जाते थे ॥ ८८

*　　*　　*

सूर्य निकलता हुआ देखकर मन माना सुख पाते थे।
कसरत करते हुए सबेरे कोसों दौड लगाते थे ॥
नित्य नियम से फुरसत पाकर काम शुरू कर देते थे ॥
सब से प्रथम प्रेम मंदिर की डांक हाथ में लेते थे ॥ ८९
अगर डांक में देर हुई तो जरा नहीं कल पाते थे।
पोस्टमैन के इंतिजार में बडे व्यग्र हो जाते थे ॥
डांक खोल कर सब से पहिले वही काम निवटाते थे।
उत्तर देकर कुल पत्रों को फाइल में पहुंचाते थे ॥ ९०

*　　*　　*

शिक्षा प्रद सुन्दर लेखों को बडे यत्न से धरते थे।
लेखक और चतुर कवियों का अतिशय आदर करते थे॥
सुन्दर लेख रसीली कविता जहां कहीं सुन पाते थे।
दौड धूप तकलीफें सहकर निश्चय उनको लाते थे। ९१
ग्रंथ प्रकाशन कला बडी ही अद्भुत और निराली थी।
सहज साफ सुन्दरता सब का हृदय मोहने वाली थी॥
शुद्ध साफ सौन्दर्य देख कर खुश होकर खिल जाते थे।
इसी लिये हरएक चीज में सुन्दता दिखलाते थे॥ ९२

* * *

बिमल मनोहर सुन्दरता के प्रेमी और उपासक थे।
इसी लिये इंडियन प्रेस पर खास तौर से आशक थे॥
मंदिर की अधिकांश पुस्तकें इसी प्रेम में छपती थीं।
जिनके लिये अनेकों आंखें राह हमेशा तकती थीं॥ ९३
कभी मसौदा नहीं भेजते स्वयं प्रेस में जाते थे।
ब्लाक और कंपोज छपाई अपने आप बनाते थे॥
बढिया पेपर कवर मनोहर रंग विरंगी स्याही से।
शुद्ध छपाई जिल्द बंधाई होता काम सफाई से॥ ९४

* * *

ध्यान लगाकर बारीकी से प्रूफ देखते जाते थे।
ह्रस्व दीर्घ की कौन चलावे कॉमा तक बतलाते थे॥
कई दिनों का काम सामने घंटों में करवाते थे।
अपने साथ बनाकर बंडल छपी पुस्तकें लाते थे॥ ९५
लाकर उन्हें प्रेम मंदिर में सजा सजा कर धरते थे।
सेवक सखा अनेक किसी पर नहीं भरोसा करते थे॥
उचित रीति से बना पारसल लेबिल साफ लगाते थे।
दर्ज रजिस्टर करके उनको फौरन ही भिजवाते थे॥ ९६

* * *

जब तक सारा काम समय पर ठीक नहीं होजाता था।
तब तक उनको कलम रोकना बिलकुल नहीं सुहाता था॥
मंदिर की चीजों का उनको खूब सजाना आता था।
लेते समय अंधेरे में भी हाथ वहीं पर जाता था॥ ९७
कड़ा परिश्रम करने पर भी सुस्ती उन्हें न आती थी।
होकर के उत्साहित तबियत अधिक अधिक हुलसाती थी॥
अपना काम समय पर करके औरों का करवाते थे।
उलझे हुए काम मित्रों के खुद जाकर सुलझाते थे॥ ९८

* * *

बाहर के प्रेमी मित्रों के पत्र बहुत से आते थे।
सब के लिये यथो चित उत्तर ठीक समय पर जाते थे॥
रखते थे सन्तुष्ट प्रेम से सब का संकट हरते थे।
स्थानी संस्थाओं का भी काम खुशी से करते थे॥ ९९
एक प्रसिद्ध रईस यहां पर जैन धर्म अनुरागी थे।
धन वैभव सम्पन्न सुकर्मी असत कर्म के त्यागी थे॥
देवकुमार नाम शुभ उनका गुण के बड़े सहायक थे।
बुद्धिमान गुणवान सुशिक्षित जैन जाति के नायक थे। १००

* * *

धर्म प्रचार जाति के हित की सुन्दर युक्ति निकाली थी।
धन देकर सरस्वती भवन की नीव उन्होंने डाली थी॥
संग्रह किये ग्रंथ बहुतेरे धन की थी कुछ कमी नहीं।
विना कार्यकर्ता के लेकिन कार्यप्रणाली जमी नहीं॥ १
प्रेमी जी ने उसी भवन में काम बहुतसा करवाया।
"जैनधर्म सिद्धांत भवन" यह नाम बदल कर धरवाया॥
उत्साही मित्रों को लेकर काम चलाया हाथों हाथ।
हुए सहायक सभ्य अनेकों दिलसे हमदर्दी के साथ॥ २

* * *

आदर सहित निमंत्रण देकर विद्वानों को बुलवाया।
धूम धाम से उत्सव करके उद्देशों को समझाया॥
इसी समय स्त्री शिक्षा का बहुत बड़ा उपकार किया।
महिला शिल्प प्रदर्शन करके नया नमूना दिखा दिया॥ ३
जैन जाति ने हर्षित होकर प्रेम सहित सन्मान किया।
सादर उनको जैन सभा ने कंचन पदक प्रदान किया॥
इस उद्योग और रचना पर बार बार बलिहारी है।
प्रेमी जी की चतुराई को चरचा अब तक जारी है॥ ४

* * *

तब से यह सिद्धांत भवन भी मुस्तैदी से चलता है।
उन्नति करके उद्देशों में पाई खूब सफलता है॥
निर्मल बाबू ने धन देकर बनवाया है भवन विशाल।
सजे हुए हैं ग्रंथ वहांपर लिखा हुआ है सब का हाल॥ ५
बुद्धिमान हैं रक्षक उसके ठीक ठीक चलता है काम।
मिलती हैं पुस्तकें समय पर मुस्तैदी का है परिणाम॥
प्रेमी जी हर एक काममें उत्साहित हो जाते थे।
लगजाती थी लगन इसी से खूब सफल ता पाते थे॥ ६

* * *

इसी समय पर उनकी प्यारी पत्नी का देहांत हुआ।
लेकिन उनका प्रेम पगा मन बिलकुल नहीं अशान्त हुआ॥
इस पत्नी से पैदा होकर बालक कोई नहीं जिया।
इसी सबब से घर वालों ने ब्याह दूसरा ठीक किया॥ ७
प्रेमी जी ने मना किया था नहीं ब्याह की थी परवाह।
घरवालों ने किया आग्रह बढ़ी हुई थी सब की चाह॥
माता का प्रस्ताव प्रेमके बशमें उनसे टला नहीं।
बन्धन हुआ जबरदस्ती से कुछ भी चारा चला नहीं॥ ८

* * *

पाणि ग्रहण होगया मगर कुछ हुआ न उनको हर्ष विषाद ।
करने लगे काम सब अपना कर्तव्यों को करके याद ॥
प्रेमी जी ने धर्म कर्म के खास तत्व को जाना था ।
आगे चलकर दो कामों को करना मन में ठाना था ॥ ९
लिखना था भरपूर एकतो जैनधर्म का कुल इतिहास ।
सुन्दर साफ चित्र हों जिसमें समय समय की घटना खास ॥
इसके लिये परिश्रम करके साधन संग्रह करते थे ।
घूम घूम कर देश देश से चीजें लाकर धरते थे ॥ ११०

* * *

दार्जिलिंग शिमला मंसूरी गिरि शिखरों पर धाए थे ।
गवर्नमेंट की मंजूरी से चित्र अनेकों लाए थे ॥
नगर गांव या घोर बनों में जहां ठिकाना पाया था ।
दूर दूर तक पैदल चलकर घर घर शोध लगाया था ॥ ११
जाजाकर प्राचीन थलों में धन बहुतेरा दान दिया ।
रुचि अनुसार ग्रंथ लिखने को खूब मसाला जमा किया ॥
समय फेर से लेकिन उनका पूरा हुआ नहीं यह काम ।
जोड़ी हुई सकल सामग्री पड़ी पड़ी होगई तमाम ॥ १२

* * *

उनके पीछे घर वालों ने किया जरा भी यत्न नहीं ।
बिना जौहरी और किसी पर कभी ठहरता रत्न नहीं ॥
काम दूसरा यह था उनके मनमें धर्म कमाने का ।
महिलाओं के लिये कहीं पर आश्रम एक बनाने का ॥ १३
जिसमें रहकर जैन जाति का नारी मंडल सुधर सकै ।
शिक्षा पाकर कर्मक्षेत्र में मुस्तैदी से उतर सकै ॥
बिना यत्न के तेजहीन हो नारी रत्न अमूल्य बड़े ।
सनेहुए अज्ञानधूल में जहां तहां बेकार पड़े ॥ १४

* * *

विद्या की कुछ रोज सानपर चढ़ कर अपना नाम करें।
विदुषी बनकर धर्म कर्म से जैन जाति का काम करें॥
इस आश्रम के लिये उन्होंने निश्चित विविध विचार किए।
मित्रों को उत्साहित करके नए नियम तय्यार किए॥ १५
किंतु रहा जैसे का तैसा संग्रह किया हुआ सामान।
पूरा हुआ नहीं जीवन में साथ गया उनके अरमान॥
उनके पीछे अल्प काल मे ही पूरा यह काम हुआ।
सच्चे दिलकी लगी लगन का शीघ्र प्रकट परिणाम हुआ १६

* * *

श्रीमती गुणवती पंडिता चंद्राबाई परम प्रवीन।
जैन जाति की महिला भूषण धर्म कर्म में हैं लवलीन॥
बुद्धिमती आरूढ़ धर्म पर परम शिक्षिता हृदय उदार।
सरल स्वभाव मधुर प्रिय भाषण दया प्रेम की है भंडार॥१७
महिलाओं के लिये उन्होंने पालन यह कर्तव्य किया।
जैन जाति में आगे बढ़कर इस आश्रम का भार लिया॥
दीन हीन नारी मंडल को अपने हाथों सेती है।
बिता रही हैं सादा जीवन धन आश्रम को देती हैं॥ १८

* * *

निर्मल बाबू ने भी अपने कर्तव्यों को पाला है।
कोठी सहित बगीचा सुन्दर आश्रम को देडाला है॥
कोठी के नजदीक और भी इंतिजाम करवाया है।
छात्रालय बनवाकर उसमें कुल सामान सजाया है॥ १९
निर्मल बाबू के उत्साही बहुत करीबी रिश्तेदार।
धन भंडार गुणों के ग्राहक है शुभ नाम धनेन्द्रकुमार॥
श्रद्धा भक्ति सहित आश्रम में आकर धर्म कमाया है।
छात्रालय से एक अलहदा विद्यालय बनवाया है॥ १२०

* * *

देकर गहरी नीव बना है विद्यालय का भवन विशाल।
हरा भरा है बाग मनोहर जिसमें रहता सदा सुकाल॥
धनूपुरा आरा में जाहिर सबको इस आश्रम का नाम।
शिक्षा दायक जैन धर्म का कुंज जैन बाला बिश्राम॥ २१
रह कर यहीं स्वयं बाई जी देख भाल सब करती हैं।
जिन की प्रेमछत्र छाया में सब बालिका विचरती हैं॥
इसमें चतुर सतारा सुन्दरि मैनेजर कहलाती हैं।
खान पान रहने का सारा इंतिजाम कर बाती हैं॥ २२

* * *

कृष्णा देवी परम शिक्षिता हित से पाठ पढ़ाती हैं।
कस्तूरी बाई दर्जे में उन्नति खूब कराती हैं॥
प्रभावती बाई जी सब को सुगम पंथ दिखलाती हैं।
शिल्प कला की शिक्षा देकर धर्म कर्म सिखलाती हैं॥ २३
कुछ घंटों के लिये नियम से रोज समय पर आते हैं।
संस्कृत के पाठ मनोहर पंडित जी सिखलाते हैं॥
नौकर चाकर सब उत्साही फौरन हुकम बजाते हैं।
इस आश्रम का काम देख कर दर्शक खुश होजाते हैं॥ २४

* * *

बिधवा और बालिका मिलकर कुल दर्जों में हैं पैंतीस।
बाई जी के इंतिजाम से मिली सफलता बिश्वे बीस॥
दूर दूर देशों से महिला आकर दाखिल होती हैं।
शिक्षा पाकर शुभ कर्मों का बीज अभी से बोती हैं॥ २५
धर्म कर्म शिक्षा का साधन बल दायक हो जाता है।
जिससे उनका निष्फल जीवन फल दायक होजाता है॥
प्रेमी जी की शुद्ध आतमा स्वर्ग लोक से आती है।
इस आश्रम का काम देखकर प्रेम मग्न होजाती है॥ २६

* * *

अपने जीवन को प्रेमी जी उपकारों में बिता गए।
कर्तव्यों की शिक्षा देकर जैनजाति को चिता गये॥
बतला सकें अधिक क्या लिख कर नहीं लिखी अब जाती है।
उनके जीवन की महिमा क्या सहज समझ में आती है॥ २७
अचल अटल सिद्धांत किसी से कभी नहीं हिल सकता है।
प्रेमी जी के गहरे दिल का पार नहीं मिल सकता है॥
देखी गई सामने जो कुछ और जहां तक जानी है।
मुख्य मुख्य जीवन की घटना मति अनुसार बखानी है २८

* * *

अब आगे के लिये बड़ा ही दिल को सख्त बनाते हैं।
अन्त समय की दुखमय घटना थोड़े में बतलाते हैं॥
प्रेमीजी ने एक समय पर करने को जग का उपकार।
महिलाओं की महिमा सुन्दर पुस्तक करडाली तय्यार॥२९.
विद्वानों के वाक्य छांट कर यश की नदी बहाई थी।
निश्चित करके महिलाओं की कुल महिमा बतलाई थी॥
सुन्दर साफ इसी पुस्तक को छपवाने का था अरमान।
छपी नहीं इंडियन प्रेस में कलकत्ते को किया पयान॥ ३०

* * *

निश्चित किया वहां पर जाकर छपवाने का बर्मन प्रेस।
दिया आर्डर शीघ्र वहां पर करने लगे विविध उपदेश॥
पांच रोज तक किया परिश्रम खान पान का रहा न होश।
पुस्तक जल्दी छप जाने का बढ़ा हुआ था मन में जोश॥ ३१
करते रहे विचार रातमें दिन में सारा काम किया।
पुस्तक छपने की जल्दी में जरा नहीं विश्राम किया॥
कई रोज मिहनत करने से होने लगा बदन बीमार।
नहीं रही ताकत उठने की खूब जोर से चढ़ा बुखार॥ ३२

* * *

सहते रहे भंयकर पीडा बिलकुल नहीं विषाद किया।
घर वालों को बीमारी का जरा नहीं संवाद दिया॥
छटे रोज मालूम हुआ कुछ कठिन शीतला का आसार।
बढती हुई देख बीमारी घर वालों को भेजा तार॥ ३३
घर वालों ने जल्दी जाकर प्रेमी जी का देखा हाल।
बेदर्दी से सता रहा था उन्हें भंयकर काल कराल॥
अंग अंग में पीड़ा उनको कड़ी व्यथा पहुंचाती थी।
देख देख कर घर वालों की व्याकुलता बढ़ जाती थी॥ ३४

* * *

आये वैद्य डाक्टर सारे उनका रोग हटाने को '
किये गए उपचार अनेकों पीड़ा दूर हटाने को॥
बढ़ती गई मगर बीमारी नहीं जरा भी रोग घटा।
बढ़ा हुआ प्रारब्ध कर्म का नहीं किसी से भार हटा॥ ३५
नहीं तंत मिलसका अंत में सन्निपात का कोप हुआ।
बढ़ने लगी अधिक बेहोशी ज्ञान शक्ति का लोप हुआ॥
बेहोशी में भी आपने नहीं लक्ष्य से हटते थे।
पुस्तक और प्रकाशन की ही चरचा मुखसे रटते थे॥ ३६

* * *

क्रम क्रम से प्रेमी मित्रों का नाम बराबर लेते थे।
व्याकुलता में भी तो अपनी प्रेम परीक्षा देते थे॥
करुणा जनक दृश्य का मुख से अकथनीय है हाल तमाम।
जीवन और मृत्यु दोनों का महाभयंकर था संग्राम॥ ३७
व्याकुल प्राण त्राण पाने को तड़प तड़प रह जाते थे।
पलभर निठुर मौत के मुखसे नहीं छूटने पाते थे॥
शिथिल इन्द्रियां हुईं अन्त में शक्ति हीन होगया शरीर।
देख रहे सब वैद्य डाक्टर चली नहीं कोई तदबीर॥ ३८

* * *

बैठे रहे पास हितकारी मित्र और प्यारा परिवार ।
रोने के अतिरिक्त किसी से हुआ नहीं कोई उपकार ॥
मोड़लिया मुख आखिर सबसे दुनियां को नश्वर पहिचान ।
स्वर्ग लोक को प्रेमीजी के प्राणों ने कर दिया पयान ॥ ३९
शुक्ल पक्ष गुरुवार अष्टमी फागुन सतहत्तर की साल ।
संध्या समय बसंत काल में दुख दायक हो गया अकाल ॥
होनहार इकतीस वर्ष का युवा काल की भेट हुआ ।
नहीं पड़ा मालूम कौन से पापों का आखेट हुआ ॥ ४०

* * *

ऐसी दशा देख कर उनकी घरवालों ने किया विलाप ।
छूट गया धीरज मित्रों का सब का हुआ अधिक संताप ॥
जननी और बालिका पत्नी रोरो लगी पीटने माथ ।
बिलकुल ही फट गया कलेजा दुनियां में होगई अनाथ ॥ ४१
कौन बंधावै धीर आज वह धीर धरैया चला गया ।
क्यों कर होगी पार हाय अब नावखिवैया चला गया ॥
माके सन्मुख लाल अचानक हाय काल ने चुरा लिया ।
पता नहीं क्यों प्रेमलता पर ऐसा वज्र प्रहार किया ॥ ४२

* * *

हाय कौनसी निठुर हवाने बिना समय अन्याय किया ।
जैन जाति का परम प्रकाशित दीपक पल में बुझा दिया ॥
कुटिल काल ने बाण तान कर बेदर्दी से छोड़ दिया ।
होन हार बलवान सुभट का अनायास बल तोड़ दिया ॥ ४३
घोर निराशा का आशा के कनक कोट पर गिरा पहाड़ ।
सींची हुई चतुर माली की फुलवाड़ी हो गई उजाड़ ॥
प्रेमी होकर हाय प्रेम से केवट मुखड़ा मोड़ गया ।
बहती हुई प्रेम की नैया बीच धार में छोड़ गया ॥ ४४

* * *

टूट गया अब हाय! अचानक जैन धर्म का खम्भ नया।
प्रेम और साहित्य कोष का रत्न कीमती चला गया!॥
निकल सकेगा नहीं सहज में शूल दिलों में गड़ा हुआ।
पक्षी तो उड़गया कहीं को खाली पिंजर पड़ा हुआ!॥ ४५
होगी नहीं पूर्ति अब इसकी सहज नहीं दुख जावेगा।
देशभक्त के लिये देश सब प्रेम नीर बरसावेगा॥
पल भर पहिले आशाओं की जिसके दिल में भरी उमंग।
पड़ा वही निर्जीव भूमि पर हुए मनोरथ सारे भंग!॥ ४६

* * *

नश्वर देह पड़ी मुरझाकर बिलकुल तेज विहीन हुई।
पूर्ण प्रकाशित दिव्य आत्मा दिव्य ज्योति में लीन हुई॥
अल्प काल में ही भावी वश कुटिल काल का फेर हुआ।
कंचन के मानिन्द प्रकाशित बदन राख का ढेर हुआ॥ ४७
मिटती नहीं किसी से हरगिज होती है भावी बलवान।
अंतिम क्रिया कर्म सब करके घर वाले आगये मकान॥
मित्रों ने भी आकर दुख में हम दर्दी से योग दिया।
देश देश के अखबारों ने अतिशय शोक प्रकाश किया!॥ ४८

* * *

जिन मित्रों को आदर करके प्रेम सहित अपनाते थे।
मुरझा हुआ कमल मुख जिनका सूर्य समान खिलाते थे॥
प्रेमीजी की विरह व्यथा में मिली न उनको शान्ति कहीं।
चिन्ता के अतिरिक्त हाथ में और यत्न कुछ रहा नहीं॥ ४९
केवल रही ग्रसीटन बाकी सांप सरासर निकल गया।
हुआ रंग बदरंग प्रेम का पांसा बिलकुल बदल गया॥
चलती हुई प्रेम की गाड़ी बीच राह में टूट गई।
उड़ती हुई पतंग प्रेम की डोर हाथ से छूट गई॥ ५०

* * *

प्रेम पुजारी विना प्रेम का मंदिर भी सुन सान हुआ।
दुनियां के अधिकांश थलों में इसका शोक महान हुआ॥
जिस मंदिर में मंगल दायक पावन प्रेम बरसता था।
पत्थर का भी हृदय प्रेम से जाकर जहां हरषता था॥ ५१
ठौर ठौर पर खुली हुई थी सुन्दरता की खान जहां।
दीवारों पर वाक्य प्रेम के जाहिर प्रेम प्रमाण जहां॥
सजी हुई थीं प्रेम पुस्तकें होता प्रेम बखान जहां।
होता था नित नया प्रेम से मित्रों का सन्मान जहां॥ ५२

* * *

आज उसी स्वर्गीय भवन में काग बसेरा करते हैं।
जमी हुई है धूल मौज से कीट पतंग विचरते हैं॥
सुन्दर साफ वहां की चीजें मलिन दिखाई पड़ती हैं।
नहीं पूछता उनको कोई पड़ी पड़ी ही सड़ती हैं!॥ ५३
पुस्तक और कीमती चीजें लगे हुए हैं सब के ढेर।
कंचन मिला हुआ माटी में ऐसा विकट समय का फेर॥
प्रेमीजी का प्यारा मंदिर कंटक बन करडाला है।
कोई यत्न काम चलने का अबतक नहीं निकाला है॥ ५४

* * *

खुलते नहीं प्रेम मंदिर में पड़े हुए अब ताले हैं।
सुना गया है मामा उनके सत्व बेचने वाले हैं॥
मिला नहीं कोई भी ग्राहक नहीं किसी ने सत्वलिया।
चलता हुआ काम आगे को हट करके बरबाद किया॥ ५५
अब हम आखिर इस घटना को होन हार पर धरते हैं।
प्रेमी जी के लिये प्रेम से यही निवेदन करते हैं॥
रहें प्रेम में मान सर्वदा विमल प्रेम का बाग खिले।
रहै आत्मा सुखी स्वर्ग में घरवालों को शान्ति मिले॥ १५६

* * *

मित्र-वियोग

भाता नहीं बिलकुल जगत, अबतो तुम्हारे शोक में।
तजकर हमें हे मित्र! तुम, जाकर बसे किस लोक में॥
सोचा नहीं तुमने जरा, कैसा अनौखा प्यार था।
कुछ समय पहिले तुम्हारा, क्या यही इकरार था॥ १
इस प्रेम के सबन्ध में जो, वायदे हमसे किए।
उपदेश करते थे हमें, हरदम निभाने के लिए॥
क्या नहीं उस कौल को, पूरा निभाना था तुम्हें।
इस तरह जल्दी हमें क्या, भूल जाना था तुम्हें!॥ २

* * *

चलते समय दिल खोलकर, कुछ भी न मुख से कहगए।
बैठे हुए हमतो तुम्हारी, राह तकते रहगए॥
जाना नहीं था, प्रेम के पथ में हमें आगे बढ़ा।
बे समय मुख मोड़ने का, पाठ कब तुमने पढ़ा॥ ३
बिन मिले हमसे कभी, हे मित्र! तुम रहते न थे।
पलभर हमारे विरह की, किंचित व्यथा सहते न थे॥
अब क्यों निठुर होकर जुदाई, इस तरह अखत्यार की।
सूरत दिखाते भी नही, बातें सुनाकर प्यार की॥ ४

* * *

लखकर हमारी खिन्नता आनन्द कुछ आता न था।
किंचित कभी तुमको हमारा मलिन मुख भाता न था॥
प्रिय प्राण देने को हमारे कष्ट में तय्यार थे।
मुख पर पसीना देखकर, देते रुधिर की धार थे॥ ५
आज हम होकर बिकल, रो २ पछाड़ें खा रहे।
करते हुए करुणा महा, सब भांति से दुख पारहे॥
हे मित्र! ऐसे कष्ट में भी, क्यों मदद करते नहीं।
दरशन दिखाकर बिरह की दारुन व्यथा हरते नहीं॥ ६

* * *

कुछ तो कहो किस दोष से तुमने बिसारा है हमें।
बिलकुल नहीं "ऐसी निठुरता अब गवारा है हमें॥
सब प्राणियों से प्रेम करना" मंत्र यह रटते रहे।
तकलीफ सहकर प्रेमियों की चाकरी करते रहे॥ ७
समता सहित दिल खोलकर उपकार भी तुबने किए।
अब क्यों कड़ाई सीखली केवल हमारे ही लिए॥
उस मधुर बाणी से हमें धीरज धराते क्यों नहीं।
सन्तप्त मन के ताप को आकर मिटाते क्यों नहीं॥ ८

* * *

उठकर सबेरे मोद से नित घूमते थे बाग में।
हमको दिखाते थे छटा डूबे हुए अनुराग में॥
साहित्य की चरचा हमें सुन्दर सुनाते थे सदा।
नित नए आनन्द में जीवन बिताते थे सदा॥ ९
अब नहीं लेकिन तुम्हें पिछली दशा का शोक है।
भूले हमारी याद जाकर कौनसा वह लोक है॥
करलिया क्यों हाय तुमने कठिन पत्थर का हिया।
बेदर्द हो इस भांति से हमको भंवर में तज दिया॥ १०

* * *

हम तड़पते हैं पड़े तुमको न कुछ भी ध्यान है।
संसार में क्या प्रेम की ऐसी कड़ी पहिचान है॥
अब जान कर हे मित्र! जगमें प्रेम के परिणाम को।
रटते रहेंगे प्रेम से हरदम तुम्हारे नाम को॥ ११

प्रेम

आनन्द दायक है निराली प्रेम की सुन्दर कथा ।
चल रही संसार में चिरकाल से इसकी प्रथा ॥
लाखों इसी के स्वाद में लवलीन बिलकुल हो रहे ।
लाखों इसी अनुराग में अनमोल जीवन खो रहे ॥ १ ॥
लाखों इसी में मग्न होकर बीज यश का बो गए ।
बन गए आदर्श जगमें मुक्त जीवन हो गए ॥
पशु और पक्षी भी अनेकों प्रेम में लवलीन हैं ।
संसार के सब जीव केवल प्रेम के आधीन हैं ॥ २

*　　*　　*

चातक हमेशा स्वाति को ही प्रेम से पल पल रटे ।
पाकर अनेकों कष्ट भी हरगिज नहीं पीछे हटे ॥
आनन्द में लवलीन हो सब ओर से मन को हटा ।
सब नाचते हैं मोर बन में देखकर काली घटा ॥ ३
कोयल रसालों में मुदित होकर विचरती प्रेम से ।
ऋतुराज का स्वागत जनाकर कूक करती प्रेम से ॥
नभमें शरद शशि देखकर अनुराग से उसके लिए ।
उड़ती चकोरी प्रेम से आकाश में हर्षित हिए ॥ ४

*　　*　　*

जाती गगन में दूर तक तोभी उसे पाती नहीं ।
प्रिय प्राण खोकर भी तृषा इस प्रेम की जाती नहीं ॥
मछली बिचारी प्रेम वश हो नीर को सहती रहे ।
लवलीन हो आनन्द उसका मोद से लेती रहे ॥ ५
उसके विरह में एक पल भी ताप को सहती नहीं ।
प्रीतम बिना उसकी कभी फिर जिन्दगी रहती नहीं ॥
देखो कमल के प्रेम को सूरज बिना खिलता नहीं ।
संसार में उसका किसी से मेल ही मिलता नहीं ॥ ६

*　　*　　*

अतिशय कड़ाइ से निठुर हो काटता है काठ को ।
सुकुमार फूलों में फसै देखो मधुप की चाट को ॥
लवलीन होकर प्रेम में वह काल से डरता नहीं ।
पाकर अनेकों कष्ट भी उसको दुखी करता नहीं ॥ ७
संसार में प्रेमी अनेकों प्रेम प्याला पी रहे ।
भवसिंधु में दारुण दुखों से मुक्त होकर जी रहे ॥
लवलीन होकर प्रेम में सब स्वार्थ अपना तज दिया ।
ममता हटाकर, प्राण को भी प्रेम के अर्पण किया ॥ ८

* * *

पाकर प्रतापी प्रेम को होते न जग में दीन हैं ।
जलमें कमल की भांति प्रेमी सर्वदा स्वाधीन हैं ॥
कुछभी प्रतापी प्रेम के बलका न मिलता पार है ।
निर्भय रहें प्रेमी सदा होती न उसकी हार है ॥ ९
सच्चे दिलों में प्रेम का अनुराग जब होता कहीं ।
सन्मुख वहां पर दुष्ट की भी दुष्टता रहती नहीं ॥
हिंसक पशू भी बहुत से इस प्रेम में माते रहें ।
बिष का उगलना छोड़ कर अनुराग दरशाते रहें ॥ १०

* * *

इस प्रेम का आनन्द कोइ सहज में पाता नहीं ।
समझे बिना इसका किसी को स्वाद कुछ आता नहीं ॥
सच प्रेम माते को कभी दुख स्वप्न में होता नहीं ।
रहता सदा आनन्द में प्रेमी कभी रोता नहीं ॥ ११
संसार है प्यारा उसे जो प्रेम के अनुकूल है ।
प्रेमी बिना तो स्वर्ग का भी सुख सरासर धूल है ॥
समझा न जिसने प्रेम को वह निरस जीवन खोरहा ।
कर्तव्यरत प्रिय प्रेमियों का सफ़ल जीवन हो रहा ॥ १२

* * *

प्रेम की महिमा

पावन परम इस प्रेम की चरचा जगत में चल रही।
अतिशय कठिन है समझना इस प्रेम की महिमा सही॥
इस प्रेम के बल से सहज चरखा जगत का चल रहा।
हर एक प्राणी जगत में इस प्रेम से ही पल रहा॥ १
पशु और पक्षी प्रेम से ही पालते संतान हैं।
इस प्रेम से ही तरुलता तृण पारहे सब त्राण हैं॥
छाई हुई है चर अचर में प्रेम की पूरण छटा।
परिपूर्ण हो सबके दिलों में प्रेम रहता है डटा॥ २

* * *

इस प्रेम के उत्साह में प्राणी कभी थकता नहीं।
इस प्रेम का बन्धन किसी से छूट ही सकता नहीं॥
सम्पन्न होकर प्रेम से तो नर्क भी अनुकूल है।
हो प्रेम से खाली अगर तो सुर सदन भी धूल है॥ ३
इस प्रेम में पारस बनाने की बड़ी ही शक्ति है।
इस प्रेम से बढ़कर नहीं कोई जगत में भक्ति है॥
चरचा न हो कुछ प्रेम की ऐसा कहीं भी थल नहीं।
इस प्रेम के बल की बराबर और कुछ भी बल नहीं॥ ४

* * *

इस प्रेम पूजन के बराबर और कुछ पूजन नहीं।
इस प्रेम धनसा स्वर्ग में इन्द्र का आसन नहीं॥
इस प्रेम के सन्मान में बढ़कर नहीं कुछ दान है।
इस प्रेम की समता करे ऐसा न कोई ज्ञान है॥ ५
सारे सुखों में बुधजनों ने प्रेम सुख बढ़कर कहा।
प्रेमी मिला जब प्रेम से तब और क्या बाकी रहा॥
इस प्रेम के परिणाम से दाता बनें नादान भी।
बनता सरासर मोम है इस प्रेम से पाषाण भी॥ ६

* * *

सब छोड़ देता है कड़ाई प्रेम के आमोद में।
सुख मानता है केशरी आकर हिरन की गोद में॥
भव मुक्ति पाने के लिये कुछ है अगर तो प्रेम है।
कुछ है कहीं आनन्द की सीधी डगर तो प्रेम है॥ ७
इस प्रेम को पहिचानना आसान से आसान है।
जाने बिना इस मंत्र को मिलता नहीं सन्मान है॥
रहती नहीं दरकार कुछ भी प्रेम को धन धाम की।
यह चाहता बिलकुल नहीं तारीफ अपने नाम की॥ ८

* * *

सन्मान का अभिमान भी उसको कभी रहता नहीं।
अपमान सहकर भी किसी को कुछ बुरा कहता नहीं॥
झन्झट नहीं है जाति का नहिं चाह कुछ भी रूप की।
करता नहीं परवाह बिलकुल चक्रवर्ती भूप की॥ ९
नहिं पंडिताई की कला कुछ भी नहीं आचार है।
इस प्रेम को केवल जगत में प्रेम का आधार है॥
यह प्रेम ही हर हाल में सच्चा सहारा जीव का।
इस प्रेम से प्यारा रहै प्राणी हमेशा पीव का॥ १०

* * *

पहचानलो इस प्रेम को छल छन्द करना छोड़दो।
नाना विषय की स्वाद का आनन्द करना छोड़दो॥
छोटे बड़े सब प्राणियों के प्रेम को पहचानलो
अनुमान से अपनी तरह सब की दशा को जानलो॥ ११
इस प्रेम का अंकुर अगर दिल में प्रकट हो जायगा।
जन्म जन्मों का भरा संताप सब खो जायगा॥
नर देह को पाकर अगर जो प्रेम को जाना नहीं।
सच्चे दिलों मे प्रेमियों का हाल पहिचाना नहीं॥ १२

* * *

सूखे हिए में प्रेम की पड़ती नहीं ब्यौछार है ।
साधू बने तो क्या हुआ नरदेह को धिक्कार है ॥
जिस ठौर पर इस प्रेम का झरना सदा बहता रहै ।
हरएक प्राणी प्रेम की ही रागिनी कहता रहै ॥ १३
अभिमान का किंचित किसी को ध्यान भी आता नहीं ।
उस ठौर की तो स्वर्ग भी समता कभी पाता नहीं ॥
कानन सघन में यदि नहीं कोई झमेला पास हो ।
कंकड़ों की सेज पर प्रेमी अकेला पास हो ॥ १४

* * *

तज प्रेम अपना इष्ट जिसका मन कहीं जाता नहीं ।
उस जीव के आनन्द को सुरराज भी पाता नहीं ॥
यह जानकर मन का खजाना प्रेम से भर लीजिये ।
मजबूत होकर प्रेम से कर्तव्य कुछ कर लीजिये ॥ १५

* * *

* सेवा धर्म *

सेवा करो सेवा जगत में सिद्धियों का मूल है ।
सेवा बड़ी संसार में सब के लिये अनुकूल है ॥
सेवा परम कर्तव्य है सेवा बड़ा शुभ कार्म है ।
आनन्द दायक प्रेम-सेवा श्रेष्ठ सब से धर्म है ॥ १
सेवा हृदय का द्वार है बल बुद्धि आने के लिये ।
नैया बड़ी मजबूत है भव पार जाने के लिये ॥
सेवा गुरू माता पिता हैं गुण सिखाने के लिये ।
तम को हटाकर मुक्ति का रस्ता दिखाने के लिए ॥ २

* * *

सेवा सरल साधन मनोरथ सिद्ध करने के लिए ।
सेवा सुधाकर है सरासर ताप हरने के लिये ॥
सेवा सजीवन मूरि सेवा प्राण की भी प्राण है ।
सेवा सफलता के लिए रस्ता बड़ा आसान है ॥ ३
सेवा अगम उन्नति शिखर पर पहुंचने का यंत्र है ।
सेवा सकल आपत्तियों को काटने का मंत्र है ॥
सेवा परस्पर प्रेम की फुलवाड़ियों का फूल है ।
सेवा बिना आनन्द की अभिलाष करना भूल है ॥ ४

* * *

सेवा करो मेवा मिले सच्ची मसल मशहूर है ।
संसार के सब पंडितों को बात यह मंजूर है ॥
इसके लिए मज़बूत बनकर कष्ट सहना चाहिये ।
संसार सेवा के लिये तय्यार रहना चाहिये ॥ ५
सबसे परस्पर प्रेम हो यह बीज बोना चाहिये ।
हो सके जिस भांति मन से द्वेष खोना चाहिये ॥
समता सहित छोटे बड़े का भेद मिटना चाहिये ।
सन्मान या अपमान हो यह खेद मिटना चाहिये ॥ ६

* * *

गुस्सा न हो गंभीरता भरपूर होनी चाहिये ।
कुछ भी कहे कोई शिकायत दूर होनी चाहिये ॥
बढ़ता रहे हरदम दया का धाम होना चाहिये ।
दिल में हमेशा शांति का विश्राम होना चाहिये ॥ ७
भरपूर पावन प्रेम का भंडार होना चाहिये ।
जगमें लुटाने के लिये तय्यार होना चाहिये ॥
सब के द्रवित हो दिल परस्पर खूब मिलना चाहिये ।
सूखे नहीं ऐसे खुशी के फूल खिलना चाहिये ॥ ८

* * *

सर्वस्व देकर स्वार्थ को मुख पर न लाना चाहिये ।
बदला चुकाने की दिलों में बू न आना चाहिये ॥
तन मन बचन से सर्वदा यह मंत्र रटना चाहिये ।
उपकार करने से कभी पीछे न हटना चाहिये ॥ ९.

*　*　*

इतिशम्

—:※:—

बिपत्ति में धैर्य

रे पंकज नादान! सोच तू क्यों करता है? ।
सुख में फूला रहा, बिपति से क्यों डरता है? ॥
तुझपर ऐसी कड़ी आपदा नहीं रहैगी, ।
अंधकार मय निशा सर्वदा नहीं रहैगी: ॥
होगा सवेरा फिर तुझे वह मित्र मिल जायगा, ।
पाकर वही आनन्द फिर तू मंद से खिल जायगा? ॥

—:※※※:—
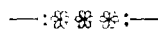
चेतावनी

काल खड़ा तय्यार शीस पर काल खड़ा तय्यार।
बने अगर तो किसी तरह से अपना जन्म सुधार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥ टेक ॥

मालिक से पूंजी ले आया करके कौल करार ।
लगी हुई है हाट जगत में करले कुछ व्योपार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥ १ ॥
हाट देखकर फूल गया तू भूल गया इकरार ।
पूंजी खोकर सहनी होगी मालिक की फटकार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥ २ ॥

* * *

ऊंचे स्वर से बजे नगाड़ा है चलने की बार ।
नहीं किया सामान सफ़र का सोता पैर पसार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥ ३ ॥
मंजिल कड़ी बड़ी कठिनाई मारग अगम अपार ।
कोई नहीं सहायक होगा अड़े नाव मझधार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥ ४ ॥

* * *

धन दौलत सब यहीं रहैगी यहीं रहै घर द्वार ।
मरघट तक पहुंचाकर तुझ को तज देगा परिवार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥ ५ ॥
चिकनी चुपड़ी देह चिता में हो जावैगी छार ।
केवल साथ चलैगा तेरे दया दीन उपकार ॥
शीश पर काल खड़ा तय्यार ॥ ६ ॥

* * *

पूंजी अगर बढ़ाकर अपनी जाना हो भव पार ।
सच्चे दिल से सकल सृष्टि को खूब किया प्यार ॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार ॥
बनें अगर तो किसी तरह से [illegible]ना जन्म सुधार ।
शीस पर काल खड़ा तय्या[illegible] ॥

दृढ़ता

अगर मंजिल पै जाना है तो खोटी राह मत करना ।
रहै या जाय यह जीवन कभी परवाह मत करना ॥ टेक ॥

कसाले झेलना सुख से,
न डरना घोर विघ्नों से ।
करोड़ों शूल सहजाना,
ज़रा भी आह मत करना ॥
रहै या जाय यह जीवन कभी परवाह मत करना ॥ १ ॥

* * *

लगाना साथ में अपने,
थके कमजोर पथिकों को ।
उठाना शीश पर सब को,
किसी से डाह मत करना ॥
रहै या जाय यह जीवन कभी परवाह मत करना ॥ २ ॥

न खाना राह में धोखा,
न सोना धाम से पहिले ।
विषय की चाट में पड़कर,
वदन को स्याह मत करना ॥
रहै या जाय यह जीवन कभी परवाह मत करना ॥ ३ ॥

* * *

न डिगना प्रेम के पथ से,
निकट है शांति की मंज़िल ।
छोड़कर विश्व की सेवा,
स्वर्ग की चाह मत करना ॥
रहै या जाय यह जीवन कभी परवाह मत करना ॥ ४ ॥

* * *

प्रेम सुधा

प्रेम सुधा पीचुका मौत से क्यों डरता है।
रहै सर्वदा अमर नहीं प्रेमी मरता है॥
अखिल विश्व का भार सहज सिर पर धरता है।
बिना योग जप यज्ञ सिर्फ प्रेमी तरता है॥
सारा पसारा काल की मझधार में बह जायगा।
स्मृति पट पर प्रेमियों का नाम ही रह जायगा॥

रसाल-वन
चाहिए अर्द्धाङ्गिनी जन को पढ़ाना तो तुम्हें।
अङ्गनाएँ जब जगेंगी, सजगता जग जायगी।
गिरीश
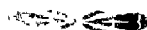
प्रकाशिका का सन्देश

विमला की हृदय-विदारिणी विपत्ति-गाथा

पढ़ के दृगों की वारिधारा में नहाइए।

सरला अर्धांग नलिनी की घबराहट को

लख के अधीर स्वयं आप बन जाइए

माम के स्वरूप में विलोकिए अशिक्षा-फल

फिर ललनाओं को प्रेम से पढ़ाइए

लीजिए रसाल-वन गान श्री गिरीश जी का

गेह गेह में सनेह के समेत गाइए

प्रेममंदिर
आरा

प्रेमलतादेवी

प्रेम-पुजारी

का

प्रेमाभिवादन
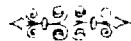
आज मैं अपने पाठकों को ऐसे सघन रसाल-वन में ले चलता हूँ जहाँ एक भारतीय महिला का करुण-क्रन्दन अरण्य-रोदन हो रहा था। इस पद्यमयी पुस्तिका में जो मर्मतलस्पर्शी भाव हैं उनके सम्बन्ध में हमें विशेष कुछ वक्तव्य नहीं है, क्योंकि हमारी पूजनीया साध्वी माताजी ने अपनी भूमिका में जो कुछ हृदयोद्गार व्यक्त किया है, वही यथेष्ट है। फिर भी गृह-लक्ष्मी की सुयोग्य सम्पादिका श्रीमती गोपाल देवीजी, और स्त्री-शिक्षा के परमानुरागी बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन एम० ए०, एल-एल० बी०, प्रोफ़ेसर शिवाधार पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी०, कविवर पं० श्रीधर पाठक, तथा पं० रामनरेश त्रिपाठीजी ने जो अपनी अपनी अमूल्य सम्मति इस रचना के सम्बन्ध में प्रकट करने की उदारता दिखाई है, उससे हमारे वक्तव्य की आवश्यकता न रह गई। जिसकी उत्तमता और समयानु-कूलता के विषय में ऐसे ऐसे पुरुष-रत्नों और महिला-रत्नों के मार्मिक विचार प्रकट किये जा चुके हैं उसके सम्बन्ध में मैं अपनी ओर से कुछ न कह कर यही कहूँगा कि नये भावों की जागृति-जाह्नवी में स्नान करते रहनेवाले जिन महाशय ने यह ललित-रचना प्रस्तुत की है उनके पथ-प्रदर्शक तथा शिक्षक प्रसिद्ध साहित्य-सेवी कवि-सम्राट् पं० अयोध्यासिंह

उपाध्याय "हरिऔध" जी हैं। रचयिता का निवास-स्थान मछलीशहर (जौनपुर) है। और उनका शुभ नाम पं० गिरिजादत्त शुक्ल है। केवल उनकी पदवी ही शुक्ल नहीं है किन्तु उनका हृदय और उनके विचार भी पूर्णिमा की तरह शुक्ल हैं। वे वर्तमान राजभाषा के भी योग्य पंडित हैं और हिन्दी के जैसे अनन्य अनुरागी हैं वैसा उनके पद्य ही प्रत्यक्ष कर रहे हैं। मुझे आशा है कि शुक्लजी सर्वदा स्त्री-शिक्षा एवं हिन्दी-साहित्य सेवा में शुद्ध चित्त से दत्तचित्त रहेंगे।

विशेष आनंद का विषय यह है कि इस नवीन युग का यह संदेशा लेकर हमारी प्रणयिनी गृहदेवी प्रेमलता प्रेम-संसार के सन्मुख उपस्थित हो रही हैं। विश्वास है कि, उनके उत्साह का सच्चा स्वागत होगा।

प्रेममंदिर,
आरा
२२-१०-२०

—देवेन्द्र

भूमिका

विचारशील पाठक बन्धुओ एवं पाठिका बहनो ! यद्यपि इस पुस्तक की भूमिका लिखना किसी कविकोविद का काम था, क्योंकि गुणी जन ही गुणों की जाँच कर सकते हैं; काव्य-ज्ञान के बिना किसी कवितामय ग्रन्थ के विषय में सम्मति देना अनधिकार चर्चा ही है; तो भी लेखक महाशय के इस अयाचित गौरव-प्रदान को कृतज्ञता से शिरोधार्य करके, इस पुस्तक के विषय में कुछ निवेदन करना उचित समझती हूँ।

वर्तमान काल की भारतीय सासों और बहुओं में स्नेह और श्रद्धा के स्थान में किस प्रकार द्वेष और कलह रहता है, इसका चित्र इस पुस्तक में बड़ी मार्मिकता से एक हृदयद्रावी घटना द्वारा खींचा गया है।

यद्यपि यह उदाहरण सर्वत्र व्यापक नहीं है तथापि अधिकांश भारतीय परिवार के लिये उपयुक्त ही है।

पुत्र-वधू से कलह करना केवल उसी के लिये हानिकारक नहीं है वरन् अपने प्राण-प्रिय पुत्र के समस्त सुखों पर पानी फेर कर और दाम्पत्य प्रेम का नाश करके आजन्म के लिये उसके सुखमय जीवन को मिट्टी में मिला देना है।

स्त्री-समाज में इस विषय का ज्ञान करानेवाली पुस्तकों की बड़ी भारी कमी है, क्योंकि देश की स्त्रियों में लिखने की योग्यता कम है और पुरुषों को इस झगड़े में पड़ने का उत्साह नहीं है। किन्तु उसको 'विमला' के चरित्र ने बहुत कुछ ढक दिया है। आशा है कि इसको पढ़कर (सास

बहनें अपनी पुत्र-वधुओं के साथ वैसा ही बर्ताव करेंगी जैसा कि वे अपनी पुत्री के लिए करवाना पसन्द करती हैं तथा नवीन वधुओं को भी 'विमला' के विनीत बर्ताव से शिक्षा मिलेगी।

घर का काम-काज करके, बिना खेद और उद्धतता के, धैर्य के साथ, सद्गृहिणी किस प्रकार कर्तव्य पूरा करती रहती है, इसका ज्ञान इन पदों से भले प्रकार हो जाता है।

"यद्यपि वधू सदन-कार्यों को थी सानन्द किया करती।
अवसर टीका-टिप्पणियों के थी न कदापि दिया करती॥"

—इत्यादि

लेखक महाशय ने हमारी बहनों के हितार्थ इस काव्य की रचना करके स्त्री-संसार में कविता-जीवन का सञ्चार किया है। साधारण बात भी पद्यावली में ग्रथित होकर शतगुणी मनोहर दीखती है। फिर, यदि शिक्षा-प्रद कथाएँ कविता में लिखी जायँ तो एक असाधारण सौन्दर्य का विकास होना स्वाभाविक बात है।

इसी कविता-प्रेम में निमग्न होकर महाराज भोज ने महा-कवियों से लेकर तुकबन्दी करनेवालों तक को लाखों रुपये पुरस्कार देकर समस्त देश में विद्या-प्रचार कर दिया था। आज भी कवियों की लेखनी में अद्भुत शक्ति भरी है। ये लोग राई को पर्वत और पर्वत को राई बना सकते हैं। इस समय भी यदि वर्तमान कविगण स्त्रियों के सुधारार्थ सरल एवं उत्त-मोत्तम पद्यों द्वारा शिक्षा-प्रचार करें तो नारी-समाज में ज्ञान की बहुत कुछ वृद्धि हो सकती है।

अन्त में मैं लेखक महोदय के इस ग्रन्थ-निर्माण-सम्बन्धी स्त परिश्रम का हृदय से अभिवादन करके अपनी समस्त स्त्री-समाज की ६ से उनको शत शत धन्यवाद देती हूँ।

विजया दशमी
१९७७

विनीता
—चन्दाबाई जैन

सम्मति

मैंने गिरीश जी के रसाल-वन में विचरण किया है। गिरीश जी का अभी छोटा वय है, उनके 'वन' में भी उनके अल्प वय के चिह्न दिखाई देते हैं। अवस्था-प्राप्त अनुभवी माली का हाथ वृक्षनिर्वाचन और काट-छांट में नहीं लगा है। किन्तु इसमें संदेह नहीं, कि इस छोटी काव्य-वाटिका में, जिसको उसके रचयिता ने 'वन' का नाम दिया है, लालित्य और रस-माधुर्य्य है। स्थान स्थान पर छोटे छोटे नये पल्लवों की शोभा चित्ताकर्षक है, और होनहार अच्छे माली की स्वाभाविक मनोवृत्ति और शक्ति अंकित करती है।

अमल कपोलों पर कर क्रीड़ा, व्रीड़ा ने भर दी लाली

इस पङ्क्ति में अच्छी कविता का लक्षण है।

गिरीशजी की सम्पूर्ण वाटिका को देखकर मुझे विश्वास होता है कि उनमें स्वाभाविक प्रतिभा है, और समय पाकर हिन्दी-भाषा की सृष्टि में वे सुन्दर, ऊँचे, लाभदायक, और स्थायी वन की रचना करने में समर्थ होंगे।

बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन

एम० ए०, एल-एल० बी०, वकील, हाईकोर्ट।

गिरीशजी-कृत 'रसाल-वन' नामक नूतन पद्य-प्रबन्ध काव्य के अनेक गुणों से युक्त है। यह एक होनहार नवयुवक कवि की प्रथम रचना है, जो दृढ़ आशा दिलाती है कि प्रौढ़ावस्था प्राप्त होने पर आप से मातृ-भाषा की और भी प्रशंसनीय सेवा बन पड़ेगी।

कविकुलभूषण

—पं० श्रीधर पाठक।

यह एक होनहार हृदय के उत्साह का पहला प्रवाह है। इस लेखनी के पास सच्ची साहित्य-सेवा की स्याही है, और उससे बहुत कुछ आशा है। प्रचलित प्रणाली से वह ज्यों ज्यों निकलती जायगी सरल, सबल, सुन्दर और सरस होती जायगी। आज-कल कविता के अरुणोदय का आरम्भ है। समय दूर नहीं है कि पृथ्वी-आकाश में एक नया उजेला होगा, हृदय हृदय में पवित्र ज्योति की प्रेरणाएँ जगेंगी, सृष्टि के रोम रोम से एक अक्षय

वर्षा का आविष्कार होगा। तब तक सरस्वती के जो दो चार आँसुओं के छींटे इधर उधर से भटक कर हमारी आत्माओं को छन भर को छिड़क जाते हैं उन्हीं से सन्तोष करना चाहिये।

प्रोफ़ेसर

—शिवाधार पांडेय

एम० ए०, एल-एल० बी०

गिरीशजी अपने "रसाल-वन" में स्वयं कोकिल बनकर मधुरालाप कर रहे हैं। रसिकों के लिए यह एक आनन्दमयी सूचना है कि वे शीघ्र इस नव विकसित वन में प्रवेश करें। इस रसाल-वन की कोई कोई मंजरी बहुत ही सुगन्धित और हृदय को हुलसानेवाली है।

'मिलन' तथा 'पथिक'-रचयिता कविवर

—पं० रामनरेश त्रिपाठी

६—१०—२०

'रसाल-वन' के लेखक उदीयमान कवि श्री गिरीश महाशय ने काव्य में जिस छोटी किन्तु मनोहर आख्यायिका की कल्पना की है, वह उनकी केवल कोरी कल्पना ही नहीं, वरन् वर्तमान स्त्री-समाज का एक जीता-जागता चित्र है। और उस चित्र में यह बात बड़ी खूबी के साथ पद्य के प्रत्येक पाद में प्रत्यक्ष करके दिखाई गई है कि अशिक्षा के दोष ने भारत की प्रायः अधिकांश सासों को स्वकर्त्तव्य-ज्ञान से रहित बना दिया है। वे पुत्र-वधुओं का जो अपमान करती हैं, आज हम उसी का भीषण परिणाम देख रही हैं, कि वे दुःखिता आत्म-हत्या करके ही शान्त नहीं हो जातीं, वरन् विधर्म्मियों का आश्रय ग्रहण कर कुलटा तक बनते कुण्ठिता नहीं होतीं। इस भीषण पाप को शीघ्र रोकना चाहिये, अन्यथा समाज रसातल से भी नीचे तलातल तक जाकर दम लेगा।

—श्रीमती गोपालदेवी

सम्पादिका गृहलक्ष्मी

समर्पण

प्रिय-प्रवास महाकाव्य-रचयिता कवि-सम्राट् साहित्य-रत्न स्व-नामधन्य श्रीमान् पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय जी के पद-पंकज समीप सादर निवेदन—
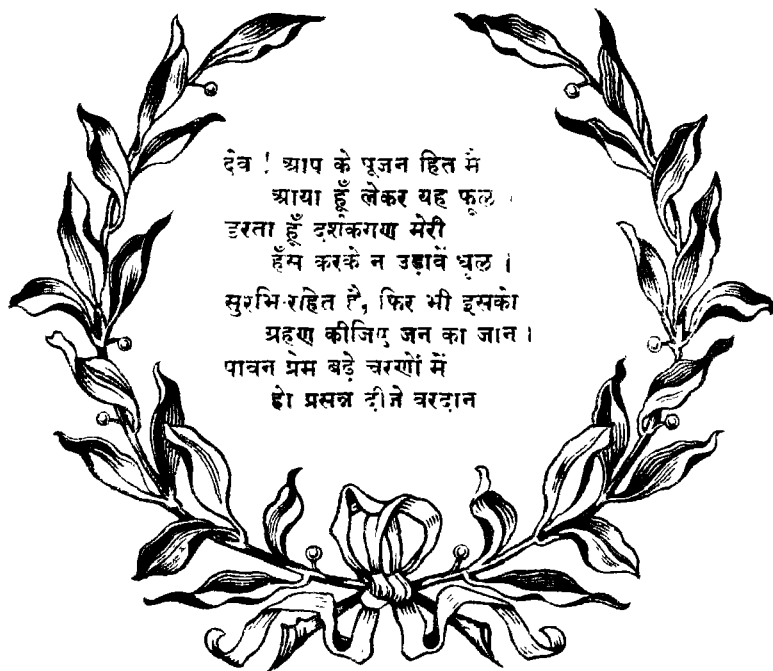
देव ! आप के पूजन हित में
आया हूँ लेकर यह फूल ।
डरता हूँ दर्शकगण मेरी
हँस करके न उड़ावें धूल ।

सुरभि-रहित है, फिर भी इसको
ग्रहण कीजिए जन का जान ।
पावन प्रेम बढ़े चरणों में
हो प्रसन्न दीजे वरदान
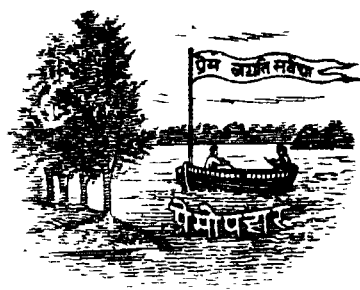
रसाल-वन

कालिन्दीतीर

सरस-वसन्त-प्रशान्त गगन में रजनीकान्त पधारे थे,
उनके संग छटा विस्तारे शोभित प्यारे तारे थे।
चन्द्र-प्रभा की चारु चमक थी चांदी सी चित को हरती,
विकच कुमुद पर कान्त कला की क्रीड़ा थी मोहित करती।

ललित लता विकसित कलिका के आलिङ्गन का रस लेता,
मन्द मलय मारुत बहता था शीतलता सब को देता।
विटपों से लिपटी अलबेली वल्लरियां लहराती थीं,
राजित कान्त रजत किरणों में कुसुम व्याज मुसकाती थीं।

तरल तरंगवती रवितनया बहती थी कलरव करती,
शशि-तारक चञ्चल छाया रख श्यामल जल में मन हरती।
विमल विभा वर विधु की सरि में विशद छटा छिटकाती थी,
विकसित-वदन नवल कुमुदों का चुम्बन कर मुद पाती थी।

रसाल-वन

एक रसाल-विटप-वन रविजा-तट पर था शोभाशाली,
जिसमें चन्द्र-विभा-वैभव ने शान निराली थी डाली।
दार्शनिकों कवियों को जो वह मोद सदैव वितरता था,
तो निर्जनता से अबलाओं को भयभीता करता था।

कम्पित-दल तरु की शाखाएँ न्यारी शोभाशाली थीं,
ज्योत्स्ना से रञ्जित मञ्जरियाँ मंजुल नवल निराली थीं।
चञ्चलता की मूर्त्ति विहग-कुल शान्त बने अब सोते थे,
संकुचिता सरोजिनी में बँध मधुकर व्याकुल होते थे।

ललित लता सी कलित, कृशाङ्गी केलिथली कोमलता की,
शोभा सरसि लसित कमला सी मंजुल मूर्त्ति सरलता की।
विटप-तले बैठी दिखलाई वन में एक नवल बाला,
वदन छिपाती थी लख जिसकी अलक छटा अलिनी माला।

उसके शोभामय आनन पर पीलापन भी लसता था,
मानों रमणिरूप तन ऊपर वर पीताम्बर बसता था।
जलद बने नव जलज-विलोचन जल की धार बहाते थे,
कोमल अमल कपोल उसी से पल पल भींगे जाते थे।

सखिजन संग रुचिर भवनों में छाया से जो डर जावे,
एकाकी वह विजन विपिन में ! हा ! न किसे करुणा आवे।
रोदन कर असहाया बाला क्रमशः श्रान्तनितान्त बनी,
सोई विटप तले पीड़ा भी कियतकाल लौं शान्त बनी।

राज-भवन में विहरण-योग्या निर्जन वन में सोती थी,
मानस सर की मञ्जु मराली निर्जल सर में रोती थी।
नवला-नलिनी-रस पीने की जो अलिनी अधिकारिणि थी,
कुटज-कुसुम-मधुपान घड़ी यह उसकी हृदय-विदारिणि थी।

❀

मृदुल कुसुम-शय्या उपयुक्ता थी मंजुल तन हित जिसके,
महि पर करती शयन उसे लख सजल न होते दृग किसके।
जिस तन पर लस धन्य कहाता शोभन वसन तथा गहना,
उस पर एक फटी धोती को उस दीना ने था पहना।

❀

दृग-जल-युक्त वदन-मण्डल को अलकें श्याम न थीं घेरे,
ओस-भरे पङ्कज ऊपर थे मधुकरमाला के डेरे।
सुकुमारी के युगल दृगों में जल-कण थे इस भाँति बसे,
दो विकसे प्रसून में जैसे कतिपय मोती हों विलसे।

× × × × + ×

❀

छन छन में नव छवि से छिति पर विलस छपाकर-किरण चलीं,
छिटकी जगरञ्जिनि ज्योत्स्ना में विकस चली कलकान्ति-कली।
क्रमशः दश बजने की वेला आई शोभन शान्ति लिए,
दिन भर कार्य्यों में रत जग के तन लोचन हित क्लान्ति लिए।

❀

अति सुकुमार कुसुम-लतिका-तन प्रतिपल आन्दोलितकारी,
चपल समीर बना निद्रित सा स्फूर्त्ति गई उसकी सारी।
तरल-तरंगिणि तरणि-तनूजा थी अति केलि-कलाप-रता,
किन्तु अलसता-वश उसने भी तज दी तन की चञ्चलता।

रसाल-वन

तरुगण के कोमल पत्तों ने निज चांचल्य सकल छोड़ा,

क्लान्ति-बिकलता के मोचन को नाता स्थिरता से जोड़ा।

बेला और चमेली-दल में तारा तारापति-तन में,

दीख पड़ा शैथिल्य निराला बिकच कुमोदिनि के वन में।

ऐसे समय किसी जन के पग-चालन की ध्वनि कान पड़ी,

समधिक स्थापित सहज शान्ति में विघ्नकरी सी जान पड़ी।

गौरव टपक रहा था उसके धीरे धीरे आने से,

पावन हो जाता था मानस उसका दर्शन पाने से।

उसके शिर पर सित पगड़ी की ज्योत्स्ना में थी दिव्य छटा,

मस्तक-नभ में तिलक लसित था देता जो शशि-गर्व घटा।

विशद वदन दर्पण था मन के सात्त्विक भावों का आला,

शान्तिमयी शोभा ने जिसको केलि-सदन था कर डाला।

श्वेत अँगरखा, श्वेत दुपट्टा, सरलपना टपकाता था,

धोती श्वेत, उपानह सादा, भक्तिभाव उपजाता था।

शान्त वदन पर सहज धीरता औ गुरुता दिखलाती थी,

परम सुजनता उनकी गौरव-गरिमा में छबि पाती थी।

अब उस विटप तले वह आया सोती थी वह बाल जहाँ,

आगे कोई होगा इसका विदित उसे था हाल कहाँ।

चरण रुके औचक ही उसने अबला से ठोकर खाई,

चौंक पड़ी सुकुमारी जागी आगत को लख अकुलाई।

अमल कपालों में कर क्रीड़ा व्रीड़ा ने भर दी लाली,
अलसानी आँखों में नव छबि शील विनय ने भी डाली।
मन का मुकुर मनोहर मुख था घबराहट थी लसित जहाँ,
जो ज्योत्स्ना में झलक रही थी होगी ऐसी कान्ति कहाँ।

❀

रोम खड़े हो गए गात के नवला बाला काँप पड़ी,
जैसे पवन लगे कँप जावे लतिका मृदुल ललाम बड़ी।
शिर से हट आए निज पट को झटपट ठीक किया उसने,
थोड़ा सम्हल मृगाङ्क-विनिन्दक आनन झुका लिया उसने।

❀

औचक आकर श्याम घटा ने नभतल में शशि को घेरा,
डाल दिया उस तरु के नीचे घोर अँधेरे ने डेरा।
ठोकर खा राही ने निज को करके यत्न सँभाल लिया,
और सविस्मय उस बाला से प्रश्न यही तत्काल किया।

❀

है तू कौन? बता हे बाले! आई है किस भाँति यहाँ?
सोती है क्यों तरु के नीचे? कह तेरा है धाम कहाँ?
कोल-किरात-कुमारी है तो क्यों है एकाकी वन में?
जननी जनक कहाँ हैं तेरे? परम चकित हूँ मैं मन में।

❀

डूब गई अबला चिन्ता में जब ये बातें कान पड़ीं,
पूर्व यातनायें दृग आगे चित्रित जैसी जान पड़ीं।
प्रश्न मही पर गिरकर शंका-जल-मय-तर्क-घड़ा फूटा।
उमड़ चला नयनों से पानी दुखमय बन्धन से छूटा।

धारण धैर्य्य किया फिर उसने पोंछ विलोचन-जल डाला,
टूटे स्वर में करुणा सानी बोली मृदु वाणी बाला।
'देव ! नहीं हूँ कोलिनि, भिल्लिनि हूँ न किरात-कुमारी मैं,
वंश-मयङ्क-कलङ्क-स्वरूपा हूँ दीना द्विज-नारी मैं।

❀

कातरता-रजनी ने रसना-नलिनी को फिर बन्द किया
तद्गत बोल-भ्रमर को उसने सहज-मौनता-मंत्र दिया।
परम अधीर बना वह राही, आकुलता मन में छाई,
बोला फिर "हे बाले ? बतला कैसे तू बन में आई ?"

❀

अरुण अधर डोले ललना के तरुण कमल के दल ऐसे,
धारण करके धीरज बोली, कूकी पिक-बाला जैसे।
"जाओ, देव ! जहां जाते हो पूछो मेरा हाल नहीं,
मेरे ऐसी भाग्य-विहीना होगी धरती में न कहीं।

❀

सोऊँ क्यों न विटप के नीचे मैं असहाया हाय ! भला,
ऐसी ही दुर्गति की पात्री हैं अब भारत की अबला" !
इतना कह के मौन बनी फिर दग से उमड़ी जल-धारा,
व्याकुल हो राही फिर बोला, "बाले ! हाल बता सारा"।

❀

थाम कलेजा ललना बोली वज्र-हृदय धारण करती,
प्रबल विलोचन-जलधारा का बलपूर्वक वारण करती।
"अपने माता और पिता की मैं तो परम दुलारी हूँ,
आँखों की पुतली हूँ उनकी प्राणों से भी प्यारी हूँ।

गोद तथा पलने में रह के शैशव था बीता मेरा,
सखियों संग मधुर मुद-मधु था मन-मधुकर पीता मेरा"।
बाला-कथन-श्रवण से मानों बादल को करुणा आई,
उसने मुक्त किया शशि को, फिर ज्योत्स्ना छिटकी मनभाई।

❀

उस आकुल अबला-आनन पर अब आगत के नेत्र पड़े,
ललना-लोचन भी आनन पर उसके, लज्जा साथ अड़े।
प्रस्तर-मूर्त्ति समान बना वह राही चकित थकित होके,
'हाय पिता !' कह बाला दौड़ी उसकी ओर व्यथित होके।

❀

"हा ! हा ! विमले ! हा हा विमले ! मेरी कन्ये ! कान्तलते,
चित-पुत्तलिके ! मेरी विमले ! हा ! सौम्ये ! सद्भाव-रते !"
वचन निकाल वदन से ये ही राही ने आकुल मन से,
उस बाला को गले लगाया, मोचन कर जल लोचन से।

❀

पकड़ पिता के चरण कमल को फूट फूट विमला रोई,
धारण धैर्य न कर सकता था करके श्रवण रुदन कोई।
विदलित-हृदय पिता के दृग से जल की बूँदें छलक पड़ीं,
जो कि कपोलों पर से बह के विमला-शिर पर ढलक पड़ीं।

❀

स्नेह-विषाद विकल वे दोनों शब्द न कोई बोल सके,
अति असमर्थ बने न हृदय के भावों को वे खोल सके।
धारण करके धैर्य्य हृदय में विकल पिता ने बात कही—
"बेटी ! तेरी यह गति कैसी ? कह तो अपना हाल सही"

इसके उत्तर में ही मानो करुण-रुदन-रव और बढ़ा,

हृदय-विदारकता का पारा क्रमशः ऊँचे और चढ़ा।

बारम्बार पिता ने पूछा उत्तर कोई पा न सके,

रुकता था न रुदन विमला का, अश्रु सह प्रबल व्यथा न सके।

गिरे धरणि पर मूर्च्छित होकर धारा धैर्य्य न और गया,

विमला ने भी मूर्च्छा खाई; नीरव वन वह ठौर गया;

शशिवदनी की विपदा शशि ने हिम के मिस रोके पूछा—

समझ स्वजातीया लतिका ने दुख-कम्पित होके पूछा।
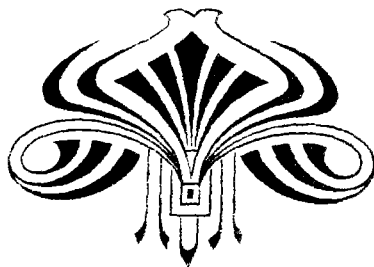
विपद-घटा

आध कोस पर आम्र-विपिन से शोभन देव-नगर जैसा
कालिन्दी के तट पर राजित प्रकृति-रमणि-वर-घर जैसा।
सौम्य प्रशान्त जनों से पूरित लसित विशद आवासों से,
एक परम रमणीक नगर था विकसित हास-विलासों से।

❀

शोभा-सदन नाम का गृह था उसमें एक छटा शाली,
जिसको रच शिल्पी ने थी निज सकल कला दिखला डाली।
कोकिल-कूजित अलिगण-गुञ्जित भरित मनोहरताओं से,
एक निकुञ्ज सदन-सम्मुख थी निर्मित ललित लताओं से।

❀

संध्या समय मनोहर बाला एक उसी में थी बैठी,
अरुण कपोल पाणि पर रक्खे, भाव पयोनिधि में पैठी।
रुचिर भाल सिन्दूर-बिन्दु से रञ्जित हो रँग लाया था,
भृकुटि-युगल ने मनसिज-धनु का सारा मान घटाया था।

❀

अलक नहीं, थे वदन कमल पर अलिकुल ने डेरे डाले,
खंजन-मद भंजन करते थे चञ्चल लोचन मतवाले।
कीर विलोक मनोहर नासा पिंजड़े में था बद्ध हुआ,
रुचिर अधर-रस-लोलुप बेसर से था रस कमनीय चुआ।

झूल रहे थे युगल श्रवण में कर्णफूल छविमूल महा,
कौन मन-मधुप भूल न जाता इन फूलों सँग झूल अहा !
व्रीड़ित परम बना था बिम्बा अधर-अरुणिमा-दर्शन से,
पल्लव लाल प्रवाल सभी थे श्रीहत निज मद-मर्दन से।

था न श्याम तिल कल कपोल पर, एक भ्रमर रस पीने में,
लीन हुआ था, निजता खो के, विकच कमल के सीने में।
मुख पर एक खिंची थी रेखा चिन्ता की परिचायक सी
किन्तु सलोनी रूप-छटा की थी वह भी उन्नायक सी।

मृदुल भुजा अवलोकन करके लज्जित तरु-शाखाएँ थीं,
तन लावण्य विलोक निराला लज्जा-मग्न लताएँ थीं।
नवयौवन-माली-कर-सज्जित अङ्ग-कुसुम थे कान्त महा,
जिनका वर सौरभ करता था अलि के मन को भ्रान्त महा।

पङ्कजकर में कल कङ्कण था, हार गले में मन-हारी,
कौन न बलिहारी हो जाता ! मूर्त्ति निहार सरल प्यारी।
पीत वसन में कञ्चन-तन की मादक दीप्ति बड़ी ही थी,
अधिक कहें क्या मदन महीपति की वह कलित छड़ी ही थी !

इतने ही में अरुण अधर पर शशिकिरणें धारण करती,
स्वर्ण अलङ्कारों में व्रीड़ा-भाव प्रभा-तन से भरती।
चाल मरालों को सिखलाती आई वहाँ अपर बाला,
निज पट की अनुपम सितता से ज्योत्स्ना-मुख करती काला।

नयन-विलास पढ़ा था उसने सरल मृगी-बालाओं से,
मन हरना सीखा था उसने कुसुमित कलित लताओं से।
मुद-वश प्रथम बाल के दृग को इसने मूँद दिया कर से,
उत्तर पाया "आ सखि ललिते! शीघ्र विलग हूँगी घर से।

❀

"लोप चकोरी-दृग से होगी कल ज्योत्स्ना की कान्तछटा,
सास सदन को जाना होगा घहरावेगी विपद्-घटा।"
ललिता पीछे से हट कर उस बाला के आगे आई—
बोली "नलिनि! बता तो किससे यह शिक्षा तू ने पाई?"

❀

"अभिनव ढंग कहाँ से आए? कैसे बदला रंग भला?
हृदयोल्लास छिपाने की यह कब से पढ़ ली नव्यकला?
मञ्जु वसन्त विपिन में आया कोयल! हो कलगानरता
अलिनी! हो पति-अंक-सरसि में प्रीति कुसुम-रस-पानरता"।

❀

अरुण कपोलों में नलिनी के और अरुणिमा चढ़ आई
तरुण-सरोज-विलोचन ने भी मादकता नूतन पाई;
बार बार आनन्दित हो हो कान्त लताओं सी डोली
डाल गले में बाँह सखी के वह कोकिल-कण्ठी बोली।

❀

"ललिते! क्या सम्भव है यह मैं तुझ से बात छिपाऊँगी?
तुझ से भेदभाव रखने का हृदय कहाँ से लाऊँगी?
तुझ से भी मैं चाल चलूँ तो मम जीवन कैसा होगा
नहीं ध्यान भी कर सकती सखि दारुण वह जैसा होगा।

सखी मान, कहूँ जो ललिते ! विपद पड़ी विकराल बड़ी
डर जाती हूँ, कँप जाती हूँ, होती हूँ बेहाल बड़ी;
जननी-जनक-विरह की स्मृति ही मेरा हृदय हिलाती थी,
मैं इस पीड़ा से ही रो रो आँखें लाल बनाती थी।

❀

लेकिन कल आई विमला का हाल सुना मैंने जब से
शीश धुना करती हूँ, समधिक विपुल अधीर बनी तब से;
हृदय-विदारिणि विपद बहन की सुन सखि ! बेग बताऊँगी
सास सदन में जो गति होती तुझ को सकल सुनाऊँगी।

❀

सास जिठानी और ननद ने उसको कष्ट अपार दिए
शेष नहीं वर्णन कर सकते जो जो अत्याचार किए;
यद्यपि बहन सदन-कार्यों को थी सानन्द किया करती
अवसर टीका-टिप्पणियों के थी न कदापि दिया करती।

❀

प्रति दिन जग के बड़े सवेरे थी वह नहा लिया करती
चौका बर्त्तन और रसोई थी विध साथ किया करती;
सास-जिठानी-चरण दबाने भी अवसर से थी जाती,
करती थी तत्काल जिसे थी करने की आज्ञा पाती।

❀

तो भी सास उसे देती थी तरह तरह के कष्ट कड़े,
उसके पीड़न-हित करती थी वह दिन रात प्रयत्न बड़े।
पाती थी झगड़ा करने में वह आनन्द सदैव बड़ा,
बनती थी अत्यन्त विकल जब होता था न कभी झगड़ा।

झगड़े नये उठाने में ही वह दिन रात बिताती थी,
शान्ति विनाशन की चाहों में आप मरी वह जाती थी।
झगड़ा ही उसका खाना था, झगड़ा था उसका पीना,
झगड़े के मारुत-मण्डल में उसका होता था जीना।

❀

रोगों से चंगी होती थी जब थी झगड़ा कर पाती,
झगड़े के बिन बेचैनी से वह थी कृश तन हो जाती।
झगड़े की ही चिन्ता में वह सोती जगती रहती थी,
बैठी लेटी झगड़े की ही धारा में वह बहती थी।

❀

रँगी रंग में झगड़े के थी झगड़ा उसका प्यारा था,
उसके मुख-दर्शन बिन उसका दुखमय जीवन सारा था।
झगड़ा आँखों का तारा था, परम दुलारा था झगड़ा,
वह गोपी थी और रँगीला मोहन प्यारा था झगड़ा।

❀

स्वपति-हृदय-तरु-दल-कम्पन-हित वह थी विकट पवन बनती,
उनके बदन-मृगाङ्क-प्रभाहित कार्य तरणि का थी करती।
उसकी झपटों में जो पड़ता वह कम्पित होता मन में,
सिंहिनि सी आखेट-रता वह रहती थी गृहकानन में।

❀

बोली मधुर भगिनि की उसके उर में थी शर सी लगती,
स्वार्थ न सधने से उसकी क्रोधाग्नि भभक कर थी जगती।
पा न कलह का कारण कोई वह रहती थी मन मारे,
कौन विपत्ति पड़ी है पूछा करते थे पुरजन सारे।

विवश हुए पर ननद जिठानी को उसकाया करती थी,
        वैर घृणा के भाव अनेकों उनके मन में भरती थी।
किन्तु निरख उन्हें करती थी भगिनी की मृदुता-मानी,
        षड्यन्त्रों की नाशनशीला मञ्जु मनोहारिणि बानी।

❀

अति विनम्र मम भगिनी पति भी सकते थे कुछ बोल नहीं,
        दुख अनुभव करते भी मन में सकते थे मुख खोल नहीं।
व्यथा विवर्द्धित अधिक हुई जब छोड़ दिया गृह का आना,
        ग्रामान्तर्गत अन्य सदन में रहना ही अच्छा जाना।

❀

चातक जैसे स्वाती जल का कमल कली रवि का जैसे
        बाट जोहती ही रहती थी सास कुअवसर का वैसे
भगिनी भाग्य गगन को काला कर वह अवसर भी आया
        जो कुटिला की वाञ्छा-लतिका के हित धाराधर आया।

❀

सात घड़ी रजनी बीती थी, चन्द्र छटा छिटकाता था,
        मारुत मलयाचल का चलके मन को मत्त बनाता था।
जेठ नहीं थे गृह को आए भोजन था न किया अब लों,
        भगिनि उन्हीं का पथ लखती थी, घटना अघट घटी तब लों।

❀

उसके लोचन क्लान्त विकल हो बन्द स्वयं थे हो जाते,
        श्रान्ति-अलसता-अरिगण पर थे किसी भांति न विजय पाते।
भीत-सहारे बैठी बैठी वह अचांचक ऊँघ गई,
        अहह ! न सरला ने यह समझा आवेगी आपत्ति नई।

बिल्ली ने आके क्षण में ही भोजन सकल समाप्त किया,
दीप ने दम तोड़ उसी दम गृह को तम से व्याप्त किया।
आधी घड़ी बीत जाने पर भगिनी घबराकर जागी,
दीप जला जब उसने देखा काँप उठी तब हतभागी।

दीखे खण्ड पड़े रोटी के, दाल गिरी महि दृष्टि पड़ी,
छिटके भात धरा पर देखे, दृग से हो जल वृष्टि पड़ी।
टूटा वज्र अचानक उस पर आकुल विकल नितान्त बनी,
असहाया अवलोक अवस्था अपनी अतिशय श्रान्त बनी।

"अयि मायाविनि ! निद्रे ! तू ने आज अनर्थ किया कैसा ?
नेत्र ! तुम्हें यह उचित नहीं था धोखा हाय ! दिया कैसा ?"
अमित दुखित थी योंही होती भगिनी वदन मलीन महा,
सलिल-विहीन मीन लों वह थी तड़फ रही बन दीन महा।

माथा ठोंक ठोंक निज कर से हो नत-शीश लगी रोने,
उसकी विपत विलोक दिया भी कम्पित-गात लगा होने।
जेठ रसोई-गृह में आये भोजन-हेतु समय ऐसे,
समझ सके न रहस्य यहां का, और समझते ही कैसे ?

नहीं आ सकी थाली आगे और न थी परसी जाती,
केवल सिसिक सिसिक रोने की ध्वनि थी कानों में आती।
दी आवाज़ उन्होंने मां को, वह कुपिता दौड़ी आई,
हाल यहां का लख कोपानल ने उसकी, आहुति पाई।

जैसे सिंहिनि किसी हरिणि पर करिणि कमलिनी पर जैसे
        टूट पड़ी असहाय बहन पर, वह विकराल-वदनि वैसे
जेठ उठ गए झट चौके से ननद जिठानी भी आई,
        जग-संहारिणि काली के सम वे भी भगिनी पर धाई !

❀

जो कुछ हाथ लगा तीनों ने उससे ही उसको मारा,
        जैसे गाय कसाई मारे दया-भाव तज के सारा।
उसको मृतक समान बना के अपनी मनभाई करके,
        करने शयन गई राक्षसियाँ मन में मोद महा भर के।

❀

जाती रही शक्ति धीरज की, भगिनी विकल अपार बनी,
        शान्त निशा में रोई जी भर, सम्र-नयन-जलधार बनी।
कम्पित कान्त शिखा को करके सहृदय दीप विकल भारी,
        कहता था मानों 'मत रोओ' 'धारण धैर्य करो' प्यारी !

× × × ×

❀

प्रातःकाल उसे ज्वर आया कार्य्य परन्तु पड़े करने,
        क्रमशः इससे रूप भयङ्कर दिन दिन रोग लगा धरने।
गृह का कोना औ हिस्से में उसके टूटी खाट पड़ी,
        करुणा करता कौन वहां पर उलटे सब की डाट पड़ी !

❀

बोली सास बनाकर मुँह को वह है डिप्टी की बेटी,
        मैके में सब काल पलँग पर ही तो रहती थी लेटी।
कैसे कार्य्य करेंगे गृह का कर कोमल कमलों जैसे,
        तृण भी था न उठाया महि से वज्र उठावेंगे कैसे ?

फूलों की शय्या सजवा दो वह रानी बन के सोवे,
ठीक तभी होगा जब दासी पंखा करने को होवे।
व्यङ्ग-भरे ये तीक्ष्ण वचन जब मम भगिनी के कान पड़े,
कर्म्मों में प्रेरित करने के संदेशों से जान पड़े।

❀

यत्न किया उसने उठने का, शक्ति परन्तु न तन में थी,
पीड़ा परम, न गृह कार्य्यों को कर सकने की मन में थी।
थोड़ा सम्हल उठी वह ज्योंही चक्कर सा शिर में आया,
कांपी, अमित-अमावस्या-तम आंखों के आगे छाया।

❀

आज्ञा-पालन-चेष्टाओं को उसकी, ज्वर ने भंग किया
हाय! गिरा के महि पर उसको आहत उसका अंग किया!
"चाण्डालिन उनसे चल चाले जिनको भ्रम में डाल सके
यह बना जिनको यह तेरा चालाकी का जाल सके"।

❀

यों ही कहती सास कराला दीन भगिनी पर झपटी
चोंनी पर चोंटे सी, लोहू की प्यासी डायन लपटी।
ननद जिठानी ने आकर के इसमें झटपट योग दिया
और सकल पैशाचिक बल का उस पर हाय प्रयोग किया!

❀

डिप्टी की बेटी हैं तो मैं हड्डी इनकी तोड़ूँगी
दम में दम मेरे हैं तो कर ठीक इन्हें मैं छोड़ूँगी।
करुण काण्ड करके हट आई, योंही सास कथन करती;
बेटी और पतोहू के संग गौरव-माल ग्रथन करती।

करुणा-हीन अधम ज्वर ने भी अपना रूप कराल किया,
घोर निराशा ने भगिनी के मन में डेरा डाल दिया।
मरण-प्राय वह थी, तथापि था पास नहीं कोई जाता,
एक बूँद आँसू भी कोई उस पर था न बहा पाता।

❋

पास-पड़ोस-निवासिनि आकर आश्वासन जो देती थीं,
सास विरोध प्रबल का पहले वे साहस कर लेती थीं
क्रमशः भगिनि-विपत्ति ने उनमें करुणा का संचार किया,
उपकारात्मक भावों को भर हृदय अपार उदार किया।

❋

सास-वचन-शर-विद्ध बनीं वे पर न कहा उसका माना
दृढ़ संकल्प दवा करने का सब ने निज जी में ठाना।
षड्यन्त्रों की रचनाएँ थीं सास सदैव किया करती
घर आने का अवसर उनको भरसक थीं न दिया करती।

किन्तु निपीड़ित-पीड़ा-वारण के दृढ़ भावों के आगे
बाधाओं ने शीश नवाया, विघ्न सभी डर के भागे,
ज्वर के हृदय-मरुस्थल में भी करुणा का कल जल निकला,
भगिनि-निरुजता-दाभ-सरोरुह जिसमें रम्य नवल निकला।

गृहकार्य्यों के करने से फिर विमला रुग्ण न हो जावे—
इस भय ने निश्चय करवाया, वह निज मैके को जावे।
सब ने की प्रार्थना सास से बात अनेकों समझाई
यत्न निरन्तर करते रहने पर उसकी स्वीकृति पाई।

इसमें भी गहरा कारण था रहा लेश औदार्य नहीं,
कर सकती थी निज जीवन में स्वार्थ-रहित वह कार्य नहीं।
बालक-वृद्ध तरुण नर-नारी ग्राम-निवासी जन सारे
जान गए थे उसकी लीला और कलह-कौशल न्यारे।

❀

जाती थी वह जिधर उधर ही उसकी निन्दा थी होती,
सब से पहले पूछा जाता, नाश बीज क्यों है बोती !
निन्दा के थे बाण निराले हृदय विद्ध करनेवाले
वह भी जान गई थी अब मैं पड़ी कुचक्रों के पाले !

❀

बन के विवश ननदिनि का उसने अंगीकार किया जाना
तब महिलाओं ने अपने को महा धन्य मन में माना।
"पत्र पठाए हो", यह मिथ्या सब से कही बात उसने
निज काले मन के भीतर की फिर यह कही बात उसने।

"बीते दो सप्ताह अभी लों कोई उत्तर पा न सकी
मैके को कर याद मरेगी विमला जो अब जा न सकी।
इससे उसका देवर उसको लेकर प्रात चला जावे
धीरे धीरे चार घड़ी में वह उसको पहुँचा आवे"।

❀

कपट-हीन सब ने अनुमाना, जो उसने प्रस्ताव किया,
भूले भी नहिं मन में आने कोई शंका-भाव दिया।
आया प्रात परन्तु बहन के जाने का सामान न था
कौन कहे कि विलम्ब-करण में कोई विपद-विधान न था।

बोली बहन चरण लग सब के करती अमित ढिठाई हूँ,
एक निवेदन करने के हित सेवा में मैं आई हूँ,
गुरुजन-पूजन से बढ़ जीवन में है कोई कार्य्य नहीं
जाता है वह जीव नरक में जिसको यह व्रत धार्य्य नहीं।

❀

कितनी अधम कहाऊँगी मैं पिता-सदन जो जाऊँगी!
कार्य्य अधिक करना पड़ता था, कैसे यह बतलाऊँगी!
तन में शक्ति रहेगी जब लों कार्य्य स्वगेह करूँगी मैं
स्वर्ग मिलेगा कर्त्तव्यों को करते अगर मरूँगी मैं!

❀

अम्बचरण-अम्बुज-विरहानल का दें मन संताप मुझे
ज्वर के तापों में भी भीषण होगा यह परिताप मुझे।
करके श्रवण मनोहर वाणी भगिनी की यह विनय-सनी
सजल-नयन महिला हो आई अतिशय विह्वल सकल बनी।

❀

बोलीं "देवी है इस पुर की क्यों तू यों न कहे? विमले!
तेरे ऐसी पुत्रवधू हों जग में सबकी, हे सरले!
"पुत्रि! परन्तु पिता के गृह पर तुझ को जाना ही होगा।
हम सब की इच्छा के आगे शीश झुकाना ही होगा"।

❀

निज भावों को सर्व्वजनों की हृदयेच्छा में मग्न किए—
आज्ञा-पालन-बिकच-कुसुम पर मन-मधुकर को लग्न किए,
जब मध्याह्न समय सबसे मिल दृग-जल डाल चली विमला,
जलद-पटल ने छाया कर दी, मन्द मनोज्ञ समीर चला।

जाती देख बहन को गृह का तोता भाभी कह रोया !
रोई गैया, रोया बछड़ा, हृदय-धैर्य्य सबने खोया
पतित वारि के व्याज गिरा के आँसू की बूँदें न्यारी,
कम्पित-गात लता आँगन की रोई बन व्याकुल भारी !

ग्राम-निवासिनि ललनाएँ सब उसको जाती लख रोईं,
ओस बहाने जैसे रोवे चन्द्र-वियोग समय कोई ।
सास जिठानी और ननद के लोचन से भी जल निकला,
सोच यही कि सतावेंगी अब किसको, हाय ! चली विमला ।

जान पड़ा भगिनी को मानों स्वर्ग-समान सदन छूटा !
हा दुर्दैव ! सरल चितवालों पर ही वज्र सदा टूटा !
कण्टक सकल हटा मारुत ने मग में सरस कुसुम डाले,
फिर भी वह डरता था भगिनी के पद में न पड़ें छाले ।

आगे देवर पीछे भगिनी चलती शोभा पाती थी,
पादप-पङ्क्ति युगल-जन-स्वागत के हित पत्र हिलाती थी ।
मग के मञ्जुलता-द्रुम सारे कान्ति निराली पाते थे,
रजनवरण रजकण-रञ्जित पद की जब श्रान्ति मिटाते थे ।

संध्या लौं कालिन्दी-तट के आम्रविपिन में वे आए,
क्लान्ति-जलधि के मञ्जुल मोती भगिनि कपोलों पर छाए,
अङ्ग समस्त शिथिल श्रम से थे, आगे थे न चरण पड़ते
श्रान्ति-निपीड़ित लज्जा-प्रेरित अनायास वे थे अड़ते ।

रसाल-वन

एक तरु तले बैठे दोनों भगिनी बैठी ही सोई,
 जागी जब नभ, शशि, तारक, तरु, सरिता त्याग न था कोई !
देवर उसको छोड़ अकेली अहह ! भवन अपने भागे
 भाव करुण भगिनी-रोदन से पवि-पाहन में भी जागे ।

करके श्रवण भगिनि की गाथा रो रो मरती है माना,
 हाल पिताजी का जैसा है वर्णन नहीं किया जाता ।
बता सखी ! न डरूँ फिर कैसे कैसे मोद मनाऊँ मैं !
 प्रेम भरे भावों को मन के भीतर कैसे लाऊँ मैं ?

सासु-सदन जब जाऊँगी तब गति यह मेरी भी होगी ।
 मेरे जीवन-नभ में भी तब घोर अँधेरी ही होगी !
क्या जाने कैसे लोगों के मध्य मुझे रहना होगा ।
 हाय ! नहीं जाने सखि ! कैसी धारा में बहना होगा !

कैसे लोग वहां पर होंगे ! देश वहाँ कैसा होगा
 अनजाने जन में जाने से क्लेश वहां कैसा होगा !
कोई बात बिगड़ जावेगी तो मैं मारी जाऊँगी !
 साधारण अपराधों पर भी दण्ड कड़ा मैं पाऊँगी" ।

इतना करके कथन विकल हो नवल बाल नलिनी रोई,
 ललिता ने भी सुन सब बातें व्याकुल हो सुधि-बुधि खोई ।
घबराहट नलिनी की लख के, विपद्-कथा विमला वाली
 करके श्रवण, विकल हो डूबे कम्पित गात किरणमाली ।

विपद्-घटा

वर्ण गगनमण्डल का आला बदला, कालापन छाया,
बना विवर्ण विपुल व्याकुल सा, ताराओं का दल आया।
घेर गगन को घोर तिमिर ने लोचन को निरुपाय किया!
दृष्टि अगोचर नलिनी ललिता दोनों को कर हाय! दिया।

चिन्तित और विकल नलिनी के लोचन में जो जल छलका
और रसालविपिन में विमला के दृग से जो जल ढलका!
उससे भारत के सदनों में सिक्त-वसन बनने वाली
अबलाओं का संकट काटो, विनय यही है वनमाली!
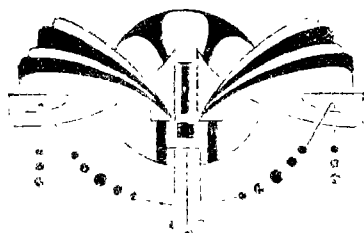
प्रकाशक
प्रेमलतादेवी
प्रेममंदिर

ॐ

शिवराम भजनसंग्रह प्रथमभाग

अर्थात

शिवराम पुष्पांजली

अङ्क १

रसीले और जोशीले भजन

सम्पादक व प्रकाशक—

तोशाम निवासी मा० शिवरामसिंह जैन

रोहतक।

द्वितीयवार	वीर नि० सं० २४५७	मूल्य
१०००	ई० सन १९३१	दो आने

गयादत्त प्रेस, क्लॉथ मारकेट में मुद्रित हुई।

ॐ

❀ श्री परमात्मने नमः ❀

शिवराम पुष्पांजली

अङ्क १
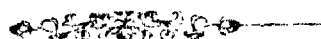
मंगलाचरण।

सुख अनन्त अनंतबल दरशन ज्ञान अनन्त।
गुण चतुष्टय युक्त मो नमूं देव अरहंत॥

भजन नं० १—जिनदर्शन

(चाल—कुछ नहीं दरकार हमको यह निशानी आपकी)

मोहनी छवि अय प्रभूजी मुझको भाती आपकी।
ज्ञान केवल की दशा अब याद आती आपकी॥ टेक

धन्य हैं ये नेत्र मेरे धन घड़ी शुभ आज दिन।
हो गये सब दूर संशय देख प्रतिमा आपकी॥ १

नाशा दृष्टि शान्त मुद्रा पद्मआसन मनहरन।
कर्म आठों देख भागे ध्यान अवस्था आपकी॥ २

तुमको जो ध्यावे प्रभूजी शुद्ध कर तन मन बचन।
बेड़ा उस का पार होवे ऐसी महिमा आपकी॥ ३

दास की अरदास ये है मेटदो आवागमन।
हो प्रभू शिवराम पै अब मेहरबानी आपकी॥ ४

२—जिनशरण (ग़ज़ल कव्वाली)

तू नैय्या पार कर मेरी प्रभू मैं शरण हूँ तेरी।
बहुत जन की सुनी टेरी मेरी बर क्यों करी देरी ॥ टेक

पड़ी भवसिन्धु में नैय्या नहीं कुछ पार है जिसका।
है चारों ओर से छाई घटा मिथ्यात अन्धेरी ॥ १
नरक तिर्यंच मानुष देव भंवर भारी बने हैं येह।
मुझे इन बीच भटकाते करम आठों महा बैरी ॥ २
जगतके देव मैं पूजे नहीं छूटा मगर दुख से।
तुम्हारे बिन मेरे स्वामी मिटावे कौन भव फेरी ॥ ३
जगत बन्धू श्री जिनजी जरा सुन लीजिये विनती।
अभागी दुक्खसागरमें शरण शिवराम है तेरी ॥ ४

३—संसार दर्शन (ग़ज़ल)

सुनले चेतन जग में जीवन स्वप्न की सी बात है।
अंजली का नीर जैसे वृक्ष का जिमि पात है ॥ टेक

रूप धन बल ज्ञान कुल का तू कभी मत मान कर।
चार दिन की चांदनी ये फिर अँधेरी रात है ॥ १
छल कपट से धन कमाकर रखता उसको कर जतन।
ना चलेगा संग तेरे जाना खाली हाथ है ॥ २
हैं सगे सब स्वार्थ के ये पुत्र नारी बन्धु जन।
कौन किसका तात भाई कौन किस की मात है ॥ ३
वीर के सेवक बनो तुम अरु कमावो धर्म धन।
अंत में शिवराम सब के जाना येही साथ है ॥ ४

४—संसार स्वरूप

(चाल—यह कैसे बाल बिखेरे हैं यह सूरत क्या बनी गम की)

समझ कर देखने चेतन जगत बादल की है छाया।
कि जैसे ओस का पानी या सुपने में मिली माया ॥ टेक
कहां हैं राम और लक्ष्मण कहां सीता सती रावन।
कहां हैं भीम और अर्जुन सभी को कालने खाया ॥ १
जमाये ठाठ यहां भारी बनाये बाग महल माड़ी।
यह संपत छोड़ गये सारी नहीं रहने कोई पाया ॥ २
क्यों करता तू तेरी मेरी, नहीं मेरी नहीं तेरी।
हो पलकी पलमें सब ढेरी तुझे किसने है बहकाया ॥ ३
किसी का तू नहीं साथी न कोई तेरा संगाती।
यूंही दुनिया चली जाती न कोई काम कुछ आया ॥ ४
महा दुर्लभ है ये नरभव रहा है मुफ्त में क्यों खो।
अरे शिवराम तू अब सो कि अवसर तेरा बन आया ॥ ५

५—देश दर्शन

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं)

ऐ हिन्द किसने है तुझे बरबाद कर दिया।
मेरे निवासियों ने ही बरबाद कर दिया ॥ टेक
डंका अहिंसा धर्म का बजता यहाँ रहा।
हा हा मिथ्यात ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ १
है कहाँ मुनि अर्जिका पंडित प्रवर महान।
इस काल पञ्चम ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ २
यहाँ पर तो राज्य करते थे धर्मज्ञ राजपूत।
आपस की फूटने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ३

यहाँ पै तो सेठ थे घने करोड़ लखपती ।
फजूल खर्ची ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ४
कमजोर पस्त हौसला संतान क्यों हुई ।
बचपन की शादी ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ५
सनअतो हिरफत तेरी जाती रही कहाँ ।
विदेशी चीजों ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ६
हिकमत साइँस फलासफी ज्योतिष तेरी कहाँ ।
हा हा अविद्या ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ७
आते थे इल्म सीखने यहाँ गैर मुल्क से ।
आराम तलबी ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ८
प्लेग और अकाल की क्यों आफतें पड़ीं ।
गौवों पै ज़ुल्म ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ ९
आखिर जवाब हिन्द का शिवराम अब तू सुन ।
आलस तुम्हारे ने मुझे बरबाद कर दिया ॥ १०

६—नरभव दुर्लभता

(चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना)

पाया नरभव तुमने भाई मुफ्त में क्यों खोते हो ।
क़ीमती यह रत्न भारी सिंधु में क्यों डबोते हो ॥ टेक
निजकौमकी और देश अपने की भी है तुमको खबर ।
क्या दशा जिनधर्म की है जागते हो कि सोते हो ॥ १
काम तो खोटा करैं पर सुख की उम्मैद है ।
आमकी इच्छा अगर है शूल क्यों तुम बोते हो ॥ २
फज़ूल खर्ची शादी बचपन से तबाही होगई ।
दाग़ कौमी मिल के प्यारो क्यों नहीं तुम धोते हो ॥ ३
करना तुम को है बहुत कुछ नींद ग़फ़लत को तजो ।
वक्त जब जाये गुज़र शिवराम फिर क्यों रोते हो ॥ ४

७—चेतन चेतावनी

(चाल—एक तीर फैंकता जा तिरछी कमान वाले)

मोह नींद में ऐ चेतन ऐसा क्यों सो रहा है ।
निज ज्ञान धन को अपने क्यों मुफ्त खो रहा है ॥ टेक

तुझे पुण्य पाप की तो कुछ भी खबर नहीं है ।
दृष्टि उठाके देखो जग में क्या हो रहा है ॥ १
थे भारी ठाठ जिनके फिरते हैं दरबदर वे ।
कल हँसता जिसको देखा वह आज रो रहा है ॥ २
मद लोभ क्रोध माया इनको तजो रे भाई ।
तू जान बूझ मग में काँटे क्यों बो रहा है ॥ ३
शिवराम अब तो चेतो नरभव रतन यह पाया ।
आशा नदी में क्यों तू, इस को डबो रहा है ॥ ४

८—धर्म रक्षा
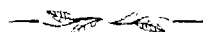
(चाल—खरनाल शंकरदास)

प्यारो धर्म चला अब हाथ से तुम्हें कुछ भी खबर नहीं है ॥टेक

किस ग़फ़लत में तुम सोते हो, रत्न अमोलक क्यों खोते हो ।
बीज पाप का क्यों बोते हो, काट धरम को आप से ।
यह कैसी कुमति गही है ॥ १

बहुत हुई धरम की हानी, नाम मात्र की रही निशानी ।
अब तो चेतो मूढ अज्ञानी, डरो धरम की घात से ।
अति भारी विपत सही है ॥ २

अब तो पक्षपात को छोड़ो, फूट राक्षसी का सिर फोड़ो ।
परस्पर प्रेम महोब्बत जोड़ो, लड़ते हो किस वास्ते ।
यह थोड़ी उमर रही है ॥ ३

धर्म संभालो उठकर भाई, वैरभाव को दो विसराई।
वेग करो प्रभु आप सहाई, विनती दीनानाथ से।
शिवराम ने शरण लई है ॥ ४

६—पूर्व स्मृति

(चाल—मैं वही हूं प्यारी शकुंतला तुम्हें याद हो कि न याद हो)

कभी हम बलंद इकबाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो।
दुनिया में हम बे मिसाल थे तुम्हे याद हो कि न याद हो॥ टेक

हरफ़न में हम हुशियार थे और ज्ञान के भंडार थे।
हम हिन्द की सरकार थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ १
हम रखते देश अभिमान थे और करते पूजा दान थे।
हम धरम पै कुर्बान थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ २
मशहूर हम धनवान थे और सब गुणों की खान थे।
हम ही महा बलवान थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ३
हम करते पर उपकार थे और सबको सुख दातार थे।
करते इल्म का परचार थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ४
ये नहीं प्लेग और काल थे रहते सदा खुशहाल थे।
हम गौवों से ही निहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ५
मिथ्यात से हम दूर थे और उम्दा सब दसतूर थे।
हम मुल्कों में मशहूर थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ६
वर्ण यहां पर चार थे वो करते निज निज कार थे।
और रखते सत्य व्यव्हार थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ७
हम साहिबे दरबार थे शिवराम देश हितकार थे।
भारत के हम सरदार थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ८

१०—हमारी दुष्प्रवृत्ति

(चाल—बूंटी लाने का कैसा बहाना हुआ।)

कैसे मंदिर को हाय बदनाम किया कैसे मंदिरको ॥ टेक

जावें दर्शन के काज वहां करते अकाज।
बिगड़ा सारा रिवाज कहते आती है लाज।
अब तो मन्दिर को सैर का धाम किया ॥ १

मुख शीशे में देख बांधें पगड़ी और केश।
लगा घंटे की टेक क्रिया ऐसी अनेक।
करके झट पट वहां से प्रयाण किया ॥ २

नहीं जपते नवकार गड़बड़ शब्द उच्चार।
चांवल फैंके दो चार हुए भागन को त्यार।
नहीं कुछ स्तुति परणाम किया ॥ ३

करते मंदिर पै मेर नहीं लड़ने में देर।
टलते पूजा की बेर देखो कैसा अंधेर।
हम जैनी को यूंही सरनाम किया ॥ ४

वृथा झगड़े वाहियात् सारी दुनियां की बात।
हंसी ठट्ठा मजाक करते हो के बेबाक़।
लेटें सोवें वहां पै आराम किया ॥ ५

ऐसी क्रिया अज्ञान दुखदाई महान।
छोड़ो छोड़ो नादान करो भगवत का ध्यान।
चेत काहे नहीं शिवराम किया ॥ ६
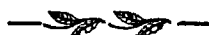
११—नरभव दुर्लभता

(चाल—गज़ल कव्वाली)

मिला मानुष जनम प्यारे यह क्यों वृथा गवांया है।
चौरासी लाख में भ्रमते बड़ी मुश्किल से पाया है ॥ टेक

भरा है पेट अपना ही निवारा दुख कहो किस का ।
अनाथों का रुदन सुनकर न तुम को दर्द आया है ॥ १
दिया ना दान एक पैसा किया उपकार क्या किसका ।
बिवाह शादी फजूल खर्ची में धन सारा लुटाया है ॥ २
दशा बिगड़ी है जिनमत की नहीं परवाह तुम्हें कुछ भी ।
ताश शतरंज चौसर में समय सारा बिताया है ॥ ३
लड़कपन में हंसे खेले जवानी में विषय भोगे ।
धरम से हम रहे गाफिल बुढापा आन छाया है ॥ ४
तजो आलस करो मिलकर सभी प्रचार विद्या का ।
सफल करलो जनम अपना यह मौका हाथ आया है ॥ ५
नहीं शक्ती है कुछ मुझमें करूं जो क़ौम की भक्ती ।
नाम जैनी अरे शिवराम कहो तो क्यों लजाया है ॥ ६
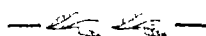
१२—सप्त व्यसन निषेध

(चाल— मूंगा तूने लेदूँगा ये ओय ओय ।)

ज्ञानी त्यागो त्यगो रे सप्त व्यसन दुख खान जियरा । टेक
अपयश होवे धन सब खोवे । प्रथम जुवे की बान जियरा ॥ १
निर्दयी बनावे नर्क दिखावे । दूजे मांस बखान जियरा ॥ २
धर्म भुलावे बुद्धि नशावे । तीजे मदिरा पान जियरा ॥ ३
पाप निशानी धन वृष हानी । चौथे वेश्या मान जियरा ॥ ४
महादुख पावे कुगति ले जावे । पंचम हिंसा जान जियरा ॥ ५
निंदा करावे दंड दिलावे । छठे अदत्ता दान जियरा ॥ ६
है पर कामन विष भरी नागन । सप्तम व्यसन महान ॥ ७

१३—चेतावनी

(चाल—एक तीर फैंकता जा बाँकी कमान वाले)

जिन्दा दिली दिखावो मुर्दा कहाने वालो ।
कुछ होश में तो आओ हस्ती मिटाने वालो ।। टेक
अपनी थी कैसी इज्जत ऐसी हुई क्यों जिल्लत ।
अब तो कुरीति छोड़ो शेखी दिखाने वालो ।। १
षट्कर्म को न जानें अपने को जैनी माने ।
चेतो जरा धरम को बट्टा लगाने वालो ।। २
करते हो खोल कर जी, प्यारो फ़जूल खर्ची ।
विधवा अनाथ भूखे धन को लुटाने वालो ।। ३
हिंसा महान होती कन्या गऊ हैं रोती ।
उट्ठो दया धरम का दावा रखाने वालो ।। ४
धन दे गऊ मराते व्यभिचार को बढाते ।
पापी बने हो कैसे रंडी नचाने वालो ।। ५
बचपन की शादी छोड़ो भद्दी रसम को तोड़ो ।
दिल में दया विचारो विधवा बढ़ाने वालो ।। ६
संतान को पढाओ शुद्ध आचरन सिखाओ ।
कालिज नहीं तुम्हारा दौलत रखाने वालो ।। ७
चीजें विदेशी साहिब छूनी नहीं मुनासिब ।
छोड़ो चमक दमक पै लट्टू हो जाने वालो ।। ८
औषध शराब की है कंद में हड्डी पिसी है ।
सोधी बने हो कैसे खाने खिलाने वालो ।। ९
कथनी शिवराम तेरी बस हो चुकी बहुतेरी ।
कुछ कर दिखावो अब तो बातें बनाने वालो ।। १०

१४—संबोधन

(चाल—आछे पिया वाहे देश बुलाले हिन्द में जी घबरावत है)

मित्रों अब तो उठो जरा, होश संभालो, धर्म चला अब जावत है ॥ टेक

सोचो तो धर्म की हुई है कैसी दुर्दशा ।
मिथ्यात्व का अंधेर चारों ओर छागया ।
जग में है जैनधर्म नाम मात्र ही रहा ।
मालूम होने वाला है निशां रहा सहा ।

एजी तो भी पड़े हो नींद में सोते, जाग जरा नहीं आवत है ॥ १

फक्त एक नाम के लिये ही मरते आज हम ।
धर्म के बहाने से हैं पाप कर्म करते हम ।
मन्दिर धरम स्थान में हैं जाके लड़ते हम ।
खोटे कर्म के करने से नहीं हैं डरते हम ।

अपनी हंसी हम आप कराते शर्म जरा नहीं आवत है ॥ २

धर्म के प्रचार की रही नहीं है गर्ज़ ।
बल्कि विघ्न डालना हुआ हमारा ऐन फ़र्ज़ ।
रस्मे बद और ऐबों का लगा हमारे आन मर्ज़ ।
दूर होने का अगर कोई भी सोचते हैं तर्ज़ ।

कैसे कहें और किसने कहें हम, ध्यान में कोई ना लावत है ॥ ३

रसूम बद और फूट को अब तो हटावो तुम ।
आचरण सुधार के धर्मात्मा कहावो तुम ।
जैनीपने का कोई तो करतब जरा दिखाओ तुम ।
ना हाय जैनधर्म को बट्टा जरा लगावो तुम ।

शिवराम अमल कर खुद पहिले, और को क्या समझावत है ॥ ४

१५—ऋषभ विनय

(चाल—ग़ज़ल कव्वाली)

एजी श्री नाभि के नंदन सुनो मेरी पुकारी जी।
दयालू तुम सुधारो अब दशा बिगड़ी हमारी जी॥ टेक
महा दुखिया मैं संसारी करो कृपा मेरे स्वामी।
है भवसागर अथाई में पड़ी नैय्या हमारी जी॥ १
घटा मिथ्यात की छाई मेरा रस्ता भुलायाहै।
कर्म चोरों ने आघेरा पड़ी है बिपता भारी जी॥ २
अंजनादिक अधम तारे उतारे सिंह नवल हस्ती।
सती सीता प्रभु तुमने अग्न कुंड से उबारी जी॥ ३
पड़ा शिवराम संकट में नहीं तुम बिन कोई मेरा।
प्रभु अब के मोहे तारो शरण लीनी तुम्हारी जी॥ ४

१६—शिक्षा षटकर्म

(चाल—क़तल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना)

धर्म को हरगिज नहीं दिल से भुलाना चाहिये।
जैनीपने का कोई तो कर्तव्य दिखाना चाहिये॥ टेक
षट्कर्म श्रावक के मित्रो अर्ज करता हूँ सुनो।
कीजे सदा शक्तियथा आलस हटाना चाहिये॥ १
प्रात: उठ, नवकार मंत्र जाप्य सामायिक करें।
सूरज उदय फिर शौच को जङ्गल में जाना चाहिये॥ २
स्नानादिक क्रिया से फिर होना फ़ारिग है जरूर।
सामग्री ले प्रसन्न हो मँदिर को जाना चाहिये॥ ३

हर्ष और आनन्द से वहाँ दर्शनो पूजन करें।
बा अदब जिनराज को फिर सिर झुकाना चाहिये ॥ ४
देख प्रतिमा ख्याल कीजे धन्य धन्य इस ध्यान को।
राज तज त्यागी भये ये मन में भाना चाहिये ॥ ५
धन्य २ जिन कर्म नाशे पाया केवल ज्ञान को।
कह गये जो मार्ग वह उस राह जाना चाहिये ॥ ६
शास्त्र का स्वाध्याय कर फिर अमल भी उस पर करें।
और गुरु महाराज के गुणगान गाना चाहिये ॥ ७
भोग क्या बस रोग हैं यही दुखों के मूल हैं।
तप व संजम में ही सब को दिल लगाना चाहिये ॥ ८
बेईमानी झूठ चोरी खोटे पेशों को तजें।
धर्म और इंसाफ से ही धन कमाना चाहिये ॥ ९
खर्च कर उस द्रव्य को निज भोग पर उपकार में।
दान देकर ही सफल उस को बनाना चाहिये ॥ १०
फिर संभाले शाम को हम अच्छे और खोटे करम।
पाप ज्यादा होवे तो उस को घटाना चाहिये ॥ ११
"शिव" सुख अगर चाहते हो मित्रो धार लो दिल में नियम।
आफतें आकर पड़ें तो भी निभाना चाहिये ॥ १२

१७—आत्म संबोधन

(चाल—ग़ज़ल कव्वाली)

अरे अब जागरे चेतन अगर शिवपुर को जाना है।
तू तजदे मोह निद्रा को ज्ञान धन गर बचाना है ॥ टेक
अनादि काल से चेतन पड़ा तू गैर के घर में।
ज़रा अब सोच तो प्यारे तेरा यहां क्या ठिकाना है ॥ १

कड़ी मंजिल तुझे चलना सवेरे जाग रे भाई ।
कि वेगि चल पड़ो यहां से बुरा आया जमाना है ॥ २
कषाये चोर फिरते हैं रहो हुशियार ऐ चेतन ।
धर्म धन लूटेंगे तेरा कठिन जिस का उपाना है ॥ ३
वतन शिवपुर तेरा शिवराम भुलाया किसलिये तूने ।
फिरे परदेश में भ्रमता विषय में सुख माना है ॥ ४

१८—उद्‍बोधन

(चाल—एक तीर फैंकता जा बाँकी कमान वाले)

उठ जावो जैनमित्रो बहु सो चुके हो भाई ।
अब आंख तो उघाड़ो ऐसी क्या नींद आई ॥ टेक

कहां जैन की वह अज़मत कहां दुर्दशा यह हाये ।
दृष्टि उठाके देखो कैसी पड़ी तबाही ॥ १
बाग वाड़ि को लुटा कर अग्नी से घर जला कर ।
रंडी को फिर नचा कर चाहते हो क्या भलाई ॥ २
विधवा विलाप सुन कर बालक विवाह छोड़ो ।
वेगी करो ऐ प्यारो बद रस्म की सफाई ॥ ३
हरसू से हो रहे हैं ग़ैरों के तुम पै हमले ।
नहीं जागते हो लेकिन गफलत क्यों ऐसी छाई ॥ ४
विद्या प्रचार कीजे कालिज को खोल दीजे ।
अनाथाश्रम भी कायम करके करो सहाई ॥ ५
शिवराम गुल मचाओ और कौम को जगाओ ।
कोशिश किये ही जाओ हो जायगी सुनाई ॥ ६

— ❦ —
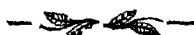
१६—जाति दुर्दशा

(चाल – ग़ज़ल कव्वाली)

यह नैय्या कौम जैनी की अजब चक्कर में आई है।
मुसीबत की घटा सरपर यह देखो कैसी छाई है॥ टेक
उठा तोफान अविद्या का उड़ाया बादबानों को।
बीच मझधार में आकर यह किश्ती डगमगाई है॥ १
फ़जूल खर्ची कुरीति का भरा पानी सुराखों में।
चली जाती है डूबी यह बचाओ जी दुहाई है॥ २
करो मज़बूत नैय्या को लगा इतफ़ाक़ की बल्ली।
बनो मल्लाह मेरे प्यारे यह वक्ते आज़माई है॥ ३
करो तुम कर सको जो कुछ तरक्की कौम की ख़ातिर।
अहो शिवराम क्यों तुम ने उमर सारी गँवाई है॥ ४
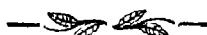
२०—समय का फेर।

(चाल—बूँटी लाने का कैसा बहाना हुआ)

इक दम कैसे यह उल्टा जमाना हुआ इकदम कैसे॥ टेक
जग में छाया अज्ञान हुये पापी महान।
मारे गौवों की जान महा सुख की जो खान।
दया धर्म तो यहां से रवाना हुआ॥ १
थे नरोत्तम जहां, नहीं उन का निशाँ।
हैं मुनीश्वर कहाँ नहीं पण्डित यहाँ।
काल पञ्चम का अब जो बहाना हुआ॥ २
मरे पिता व मात, हुये लाखों अनाथ।
पूछी जिनकी न बात, पड़े मलेच्छों के हाथ।
यह प्लेगो क़हत का जो आना हुआ॥ ३

जा विदेशों को माल, हुआ भारत कँगाल ।
बिगड़ी सारी है चाल, हुआ हाल बेहाल ।
परदेशों का जब से यह बाना हुआ ॥ ४

धर्म कर्म आचार, भ्रष्ट हुआ व्यवहार ।
रहा कुछ ना विचार, होवे घर घर तकरार ।
अब तो भाई से भाई बिगाना हुआ ॥ ५

खोलो शिवराम नैन, धर्म जाता है जैन ।
गर चाहो सुख चैन, तो मानो जिन बैन ।
जिस से जीवों का मुक्ती में जाना हुआ ॥ ६

२१—उपालंभ

(चाल—सोहनी)

जिनको धमर से रुचि नहीं जैनी हुये तो क्या हुये ।
निज करम की सुधि नही जैनी हुये तो क्या हुये ॥टेक

षट् कर्म को नहीं जानते, श्रावक व्रत नहीं धारते ।
धर्मो करम से बेखबर, जैनी हुये तो क्या हुये ॥ १

कुगुरु कुदेव को मानते, नहीं जैन धर्म को जानते ।
बस फंस गये मिथ्यात्व में, जैनी हुये तो क्या हुये ॥ २

हुये धनाढय अरु इलमदां लाला व बाबू मुनशियां ।
इसलाह न की गर क़ौम की जैनी हुये तो क्या हुये ॥ ३

बचपन की शादी है ग़ज़ब विधवायें होने का सबब ।
रीति तजी जब शास्त्र की जैनी हुये तो क्या हुये ॥ ४

हम तुम कहाते हैं जवां, पर हम में शक्ति है कहां ।
पाला नहीं ब्रह्मचर्य को, जैनी हुये तो क्या हुये ॥ ५

सिखाते विषय सन्तान को, शिक्षक बना इक रांड को।
जिसको नचावें ब्याह में, जैनी हुये तो क्या हुये ॥ ६
व्यर्थ व्यय में धन लुटा, किया कौम को हमने तबाह।
रोका नहीं बदरस्म को, जैनी हुये तो क्या हुये ॥ ७
परवाह नहीं निज देशकी, हा ! वस्तु लें परदेश की।
हुब्बुल वतन गर ना बने, जैनी हुए तो क्या हुये ॥ ८
वर्षों दिये लैकचर मगर, अमल किया नहीं एक पर।
'शिवराम' वृथा एक नाम के जैनी हुये तो क्या हुये ॥ ९

२२—जिनदर्शन

(चाल—ग़ज़ल कव्वाली)

हमें मन्दिर में नित आना, मुबारिक हो मुबारिक हो।
दर्श जिनराज का पाना, मुबारिक हो मुबारिक हो ॥टेक
सर्वज्ञ वीतराग होवे जो, परम हितोपदेशी हो।
तिन्हों की मूर्ति का ध्याना, मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ १
किये हैं नाश कर्म कैसे कि होवें हम उन्हों जैसे।
यह मन में भावना भाना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ २
हा ! नरकों में तड़पते थे व स्वर्गों में तरसते थे।
ये नर भव हाथ अब आना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ३
कुदेव पूजे सदा शिवराम, न बन आया कुछ उनसे काम।
ये सच्चे देव को ध्याना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ४

२३—धर्म परीक्षा

(चाल—लच्छी की)

आहारे जिया तूने जाना नहीं, जाना नहीं, जाना नहीं।
गुरु देव धरम को पहचाना नहीं ॥ टेक

कुगुरु कुदेव कुधर्म सेये, कुधर्म सेये कुधर्म सेये ।
तूने सत्य असत्य को छाना नहीं ॥ १

चारों ही गति में भरमा, तू भरमा तू भरमा तू ।
दुःख सहे अपार ठिकाना नहीं ॥ २

देव जिनेन्द्र को ध्यावो सदा, ध्यावो सदा ध्यावो सदा ।
खोटे देव के धोके में आना नहीं ॥ ३

गुरु निर्ग्रंथ अरु धर्म दया, धर्म दया धर्म दया ।
जहाँ हिंसा का नामों निशाना नहीं ॥

तीनों की भगती तू कर शिवराम, कर शिवराम कर शिवराम ।
यह सहज मनुष्य भव पाना नहीं ॥ ५

२४—भगवत्प्रेम ।

(चाल—ग़ज़ल कव्वाली)

हमें दुनिया से क्या मतलब मेरा जिनराज प्यारा है ।
वह सच्चिदानंद अविनाशी उसी का नाम आधारा है ॥ टेक

सर्वज्ञ वीतराग प्रभु हो तुम, सर्वोत्कृष्ट सर्वोत्तम ।
परमहितोपदेशी हो सुपद अर्हं तुम्हारा है ॥ १

प्रभू हैं मोक्ष के दाता न कोई और जगत्राता ।
सफल हुआ जनम मेरा प्रभू दर्शन निहारा है ॥ २

प्रभू पूजा है सुखदाई है मेंडक ने सुगत पाई ।
नवल गज सिंह को स्वामी तुम्हीं ने पार तारा है ॥ ३

अपार महिमा प्रभु तेरी अल्प सी बुद्धि है मेरी ।
ये गण शिवराम कथे कैसे इंद्र स्तुति करके हारा है ।
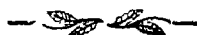
२५—आत्म संबोधन

(चाल—परदेश में फंस गई जान अपना कोई नहीं)

जिया देखा सकल जग छान अपना कोई नहीं ॥ टेक

मात तात और कुटुम्ब कबीला, कोई न आवे तेरे काम । अपना १
विषयन में सुख सरसों दाना, दुख है मेरु समान । अपना २
चारों कषाय कुगत दिखावें, क्रोध लोभ छल मान । अपना ३
जीव अनादि से चहुंगति भीतर, भरमत है बिन ज्ञान । अपना ४
केवल धर्म सहाई अपना, जप तप संजम दान । अपना ५
काल बली सिर ऊपर खेले, संशय कछु मत जान । अपना ६
लो शिवशरण श्री जिनवर की, धरले उन्हीं का ध्यान । अपना ७
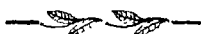
२६—कलयुगलीला

(चाल—कव्वाली नत्थासिंह की ।)

जमाना आगया कैसा नहीं पापों से डरते हैं ।
मिले जब पाप का फल तो दोष ईश्वर पै धरते हैं ॥ टेक

फर्ज अपना जो था पहिला श्री जिन दर्शनो पूजन ।
तजा आलस अविद्यावश नहीं जिन शास्त्र पढ़ते हैं ॥ १
धर्म से होगई नफरत नहीं शुभ कर्म से मतलब ।
बदी जो दिल में आती है वही करके गुजरते हैं ॥ २
झूठ और छल कपट चोरी से जो जर हम कमाते हैं ।
न परोपकार में खर्चें न अपना पेट भरते हैं ॥ ३
धरम के नाम तो पैसा भी देना हो गया मुश्किल ।
लुटावें ब्याह शादी में सिर्फ शेखी पर मरते हैं ॥ ४

रसमे बद हटाने को अगर होती है पंचायत ।
तो आपा पंथी बन २ के धरम में विघ्न करते हैं ॥५
मुताबिक अपनी मरजी के अगर जो काम नहिं होता ।
तो बहाना ढूंढ के कोई वहीं पंचों में लड़ते हैं ॥ ६
कभी मशहूर थी जग में एकथता जैन जाति की
गज़ब अब तो सगे भाई अदालत में झगड़ते हैं ॥ ७
धर्म जब से किया रुखसत बना पापी ये भारतवर्ष ।
तभी से मित्रो बीमारी काल पर काल पड़ते हैं ॥ ८
डरो अब तो कुकर्मों से रही थोड़ी है जिंदगानी ।
विचारो दिल में ऐ शिवराम कि हम क्या काम करते हैं ॥ ९

२७—प्रार्थना

(चाल—कव्वाली)

तू जिनवर स्वामि है मेरा प्रभू मैं दास हूं तेरा ॥ टेक
सताते हैं करम मुझ को खबर सारी प्रभू तुझ को ।
अनादि से पड़े पैंडे मुझे भवदधि में है घेरा ॥ १
यह भव सिंधू अपारा है नहीं सूझत किनारा है ।
मुझे तुम बिन लंघावे कौन पड़ा मझधार में बेड़ा ॥ २
भँवर में गोते खाता हूँ अजी डूबा मैं जाता हूँ ।
प्रभू तारन तरन हो तुम हरो दुख स्वामी भव केरा ॥ ३
प्रभू अवलंबन टुक दीजे अर्ज मेरी यह सुन लीजे ।
पतित शिवराम को तारो तेरे चरणों का है चेरा ॥ ४

—❧❧—

२८—जाति दुर्दैव

(चाल—इस भारत की नय्या डुबाते तुम्हारे क्या हाथ आ०)

जैन जाति की बिगड़ी हुई है दशा हा कब तक सुनायेंगे ॥ टेक
नहीं रहे मुनीश्वर ज्ञानी । लोप होने लगी जिन वानी ।
कायम करके समाज मन मानी, गजब सत धर्म छिपायेंगे ॥ १ ॥
कहाँ सेठ सुदर्शन भारी । जिन ध्वजा थी शील की धारी ।
नहीं आज कोई ब्रह्मचारी, धर्म को कैसे बचायेंगे ॥ २
कहाँ भट्टाकलंक कुमारा । निकलंक से जैन दुलारा ।
जिन धर्म पै तन को वारा, हमें कौन आकर जगायेंगे ॥ ३
चहुँ ओर से हो रहे हमले । तू कौम न करवट बदले ।
धर्म विद्या को अब तो पढ़ले, कि नास्तिक कब तक कहायेंगे ॥४
हा कितने हमारे भाई । हुये भ्रष्टमती ईसाई ।
नहीं कालिज तुम्हारा हाई, कहाँ जैन शिक्षा दिलायेंगे ॥ ५
इस वेश्या नृत ने प्यारे । घर लाखों हैं हाय उजाड़े ।
दया धर्म के पालन हारे, गौ बध कब तक करायेंगे ॥ ६
बने मात पिता अन्याई । कन्यायें हैं विधवा बनाई ।
वृद्ध बालविवाह से भाई, खुशी क्या अब भी मनायेंगे ॥ ७
प्रिय जैन महाशय जागो । शिवराम प्रमाद को त्यागो ।
अब तरक्की के मारग लागो, वही दिन फिर आजायेंगे ॥ ८

२९—जाति दुर्दशा

(चाल—कव्वाली)

हमारी जैन जाति की तरक्की हो तो कैसे हो ।
नहीं लीडर कोई इस का तरक्की हो तो कैसे हो ॥ टेक

नहीं त्यागी मुनीश्वर हैं नहीं विद्वान हैं कोई ।
नहीं अकलङ्क से वादी तरक्की हो तो कैसे हो ॥ १
जो हैं विद्वान भी कोई नहीं कुछ लाभ उन से है ।
फँसे जगधंद के फँदे तरक्की हो तो कैसे हो ॥ २
गिने जाते हैं जो पंडित पतित हैं आचरण से वे ।
नहीं उपदेश लगता है तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ३
घटा छाई जहालत की सुविद्या का छिपा सूरज ।
पड़े मिथ्यात के ओले तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ४
हमारे नवजवाँ लड़के पढ़ें जो गैर कालिज में ।
बने जिन धर्म के दुश्मन तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ५
कहो सन्तान को अपनी कहां तालीम दिलवायें ।
नहीं कालिज कोई अपना तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ६
धर्म की उच्च शिक्षा हो ब्रह्मचर्य्य की रक्षा हो ।
नहीं ऐसे गुरुकुल हैं तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ७
धनाढ्यों का नहीं बिल्कुल रहा कुछ धर्म से मतलब ।
पड़े हैं ऐश इशरत में तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ८
धर्म प्रचार की खातिर दिया जाता नहीं पैसा ।
लुटावें ब्याह शादी में तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ९
धर्म की उन्नति मित्रों सिर्फ स्त्रियों पै निर्भर है ।
नहीं होती उन्हें शिक्षा तरक्की हो तो ऐसो हो ॥ १०
तेरी फर्याद को शिवराम वृथा बकवाद समझते हैं ।
उदय है कौम का खोटा तरक्की हो तो कैसे हो ॥ ११

३०—चेतावनी

(चाल—कव्वाली)

यह नय्या देश की डूबी बचाले जिसका जी चाहे ।
जहालत के भँवर से अब निकाले जिसका जी चाहे ॥ टेक
छाया तोफान अविद्या का उठी पाखंड की लहरें ।
समाजें अब नई कोई बनाले जिसका जी चाहे ॥ १
मोक्ष तो मिल नहीं सकती कभी मिथ्यात सेवन से ।
चौरासी लाख के दुखड़े उठाले जिसका जी चाहे ॥ २
कभी सुख मिल नहीं सकता अथिर संसार भोगों से ।
विषय से आत्मा अपना ठगाले जिस का जी चाहे ॥ ३
पतिव्रत ही धर्म नारी कहा है शास्त्रकारों ने ।
नियोग अथवा विवाह विधवा चलाले जिसका जी चाहे ॥ ४
हजारों हो गये पैदा बिना मा बाप के इन्साँ ।
बता कर ईश्वर कर्ता बहकाले जिसका जी चाहे ॥ ५
जरा वेदों को पढ़ देखो लिखी है यज्ञ में हिंसा ।
कोई कुछ अर्थ अब उसका लगाले जिसका जी चाहे ॥ ६
कहीं भी जीव हिंसा में धरम तो हो नहीं सकता ।
यूंही दावा सदाकत का जिताले जिसका जी चाहे ॥ ७
सिवा जिनमत के जीवाजीव हरगिज जान नहीं पड़ते ।
कोई भी ग्रन्थ पढ़कर आजमाले जिसका जी चाहे ॥ ८
जैन की मूर्ति पूजन पर लगाते झूठा जो दूषन ।
ध्यान वो पीठ की हड्डी पर लगाले जिसका जी चाहे ॥ ९
बिना देखे फिलासफी जैन की निंदा जो करते हैं ।
पाप शिर पै कहै शिवराम कमाले जिसका जी चाहे ॥ १०
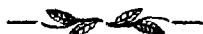
३१—संसार की अथिरता।

(चाल—बहना आफत जान री दिल किस को ठगाया)

दो दिन का महमान रे जिया काहे गर्भाता ॥ टेक

भीम और अर्जुन कहाँ है रावण, उनका न नामो निशान। रे जिया॥१
बचे न कोई काल से भाई, वैद्य शूर सुजान। रे जिया० ॥ २
धन यौवन है अथिर जगत में, जानो बिजली समान। रे जिया०॥३
संग किसी के गया न कोई, नारी पुत्र मकान। रे जिया०॥ ४
कौन कौन योनि तैं धारी, भूल गया नादान। रे जिया ॥ ५
पाया नरभव अतिशय दुर्लभ, बांधे पाप महान्। रे जिया० ॥ ६
कपट से परका धन तू खासे, गल मोमे बेइमान। रे जिया० ॥ ७
विषय भोग में रत होकर के, याद नहीं 'शिव' थान। रे जिया०॥ ८
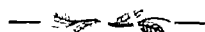
३२—उद्बोधन

अब तो आंख उघाड़ियो है कैसी दशा तिहारी ॥ टेक

हम तुम सब जैनी कहलावें, जैनत्व का क्या चिन्ह रखावें।
वृथा धर्म को कलंक लगावें, दिल में आप विचारियो।
है क्या करतूत हमारी ॥ १

षट् कर्म को तनिक नहीं करते, पंच पाप से ज़रा न डरते।
झूँठी नामवरी पर मरते, अपनी ओर निहारियो।
बसे कैसे पापाचारी ॥ २

देखो अन्य मतों ने भाई, देश में कैसी धूम मचाई।
तुम्हें हा अब भी निद्रा आई, अबतो होश संभारियो।
हुई जैन धर्म की ख्वारी ॥ ३

धन्य २ निकलंक कुमारा, धर्म पर जिसने तनको वारा ।
कहां गया वह जोश तुम्हरा, नैय्या वेग उभारियो ।
नहीं डूब चली मझधारी ॥४

अब भी गर तुम सोवोगे, तो रत्न धर्म को खोवोगे ।
फिर सिर धुन २ के रोवोगे, निश्चय उर में धारियो ।
तुम सहोगे आपद भारी ॥५

शिवराम घना क्यों शोर मचावो तनधन से तत्पर हो जावो ।
खुद कुछ अमल कर दिखलावो, हिम्मत कभी मत हारियो ।
पूरी होगी आश तुम्हारी ॥६

३३—विनय

(चाल—मंगल नायक भक्त सहायक स्वामी करुणाधारी)

करुणा सागर गुण गण आगर अब सुध लेहु हमारी ।
भारत प्यारा देश हमारा हो रहा बहुत दुखारी ॥ टेक

शेर—पंडितो विद्वान सारे हाय जग से चल बसे ।
अभाव मुनियों के भये अब दर्शनो उपदेश के ।
व्यभिचार फैला जगत में शील तप जाता रहा ।
धर्म की चर्चा उठी है ना कोई ज्ञाता रहा ॥
हम ज्ञान बुद्धि कर हीने, इन विषयों ने ठग लीने ।
शिव सुखकारा धर्म विसारा सहते संकट भारी ॥ १

शेर—फँस गये मिथ्यात में हा अभक्षण को भखें ।
अन्याय फैला जग विषै सुक्ख की आशा रखें ।
छोड़ कर शुभ आचरण हा दुष्करम करने लगे ।
देश भारत पै तभी से दुख पै दुख पड़ने लगे ॥
ये काल प्लेग सतावें नित नई मुसीबत आवें ।
बनै ईसाई लाखों भाई छोड़ धरम हितकारी ॥ २

शेर—लाखों गऊ पक्षी पशूगण नित मरें जिस देश में।
गर्भपात महान हिंसा हो भला जिस देश में।
अज्ञान अरु परमाद का हा राज्य हो जिस देश में।
खुदपसंदी देश की हो दाह लगी जिस देश में।
शान्ति सुख फिर ऐ बुज़ुर्गो हो कहाँ सकती वहाँ।
कुशील चोरी झूठ छल का हो पड़ा डेरा जहाँ।
यदि कुशल देश की चाहो तो खोटे कर्म नशावो।
दया धर्म को चित में देकर हूजे पर उपकारी ॥ ३

शेर—कुरीतियों को दूर कर वैश्या नचाना छोड़ दो।
बालक विवाह से आयु बल बुद्धि घटाना छोड़ दो।
विधवा अपाहिज और यतीमों की खबर कुछ लीजिये।
व्यर्थ व्यय शौकीनी फैशन को दिखाना छोड़ दो ॥
संतान के शत्रू न बन कुछ ज्ञान उनको दीजिये।
जिनधर्म का परकाश कर नास्तिक कहाना छोड़ दो।
हे भारतवासी जागो अब नींद अविद्या त्यागो।
शिवराम तुम्हारा जीना क्या है बने न धर्म प्रचारी ॥ ४
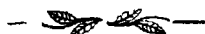
३४—दर्शन स्तोत्र

(चाल—महाराज लाई हूं मैं जल न्हवन श्री जिनवर का।)
महाराज आया हूं मैं अजी दर्शन काज तुम्हारे। टेक
मैं अष्ट द्रव्य ले आयो। प्रभु चरनन शीस नवायो।
तुम चरन कमल चित धारे ॥ १
हे वीतराग हितकारी। सर्वज्ञ अतुल बलधारी।
गणधर यश गावत हारे ॥ २

जो शरण तुम्हारी आये । तिन अजर अमर पद पाये ।
पुनि लोकालोक निहारे ॥ ३
शिवनाथ कृपा अब कीजे । मम बांह पकड़ टुक लीजे ।
तुम पतित उधारण हारे ॥ ४
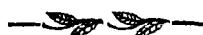
३५—जाति दुर्दशा

(चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ।)

देखो मित्रो अब तुम्हारी क्या दशा है होगई ।
जैन जाति थी अगाड़ी सो पिछाड़ी हो गई ॥ टेक

संस्कार का प्रचार बिल्कुल क़ौम से जाता रहा ।
इसलिये संतान अब मूरख अधर्मी हो गई ॥ १
ब्रह्मचर्य सा खोया रतन ब्याह बालापन में कर ।
बुनियाद थी जो जिंदगी की खोखली वह होगई ॥ २
शास्त्र की चर्चा उठी जब, ज्ञान सब जाता रहा ।
जैन की निन्दा इसी से हर ज़बां पर होगई ॥ ४
बल गया बुद्धि गई अब हो गये निर्धन सभी ।
बहार जिस गुलशन में थी वहां पर ख़िज़ां अब होगई ॥ ५
छोड़ कर पेशा तिजारत नौकरी करने लगे ।
विदेश को अनमोल चीजों की खानी हो गई ॥ ५
क्यों न हो ये क़ौम ग़ारत क्यों न हो भारत तबाह ।
फ़ज़ूल खर्ची काहली शौक़ीनी ज्यादा हो गई ॥ ६
देखकर ये दुर्दशा खामोश तुम बैठे रहो ।
शिवराम जैनी हो तुम्हारी सख्त छाती होगई ॥ ७

३६—शिखर महात्म

(चाल—गज़ल)

देखो वहां पर जाकर आनंद आरहा है ।
जहां पर श्री शिखर जी जलवा दिखा रहा है ॥ टेक

वह ऊँचा नीचा पर्वत सोहे अतिही सुन्दर ।
हरसू हैं चश्मे बहते सबज़ा लहरा रहा है ॥ १
यहां से श्री जिनेश्वर शिवपुर बसे हैं जाकर ।
ऋषियों की ध्यान भूमि गिरवर जिता रहा है ॥ २
महिमा बड़ी है गिर की कैसे कहूं बनाकर ।
जिस ने किये हैं दर्शन वही गुण को गारहा है ॥ ३
भविजन यहां पै आकर हैं धर्म ध्यान करते ।
कलियुग में गिर ये हम को शिवमग बतारहा है ॥ ४
शिवराम की ये विनती भव भव में दर्श हूजो ।
गिरवर चरण में निशदिन चित्त को लगा रहा है ॥ ५

३७—धर्म प्रचार

(चाल—कोई आवो लूट ले जावो)

करो जैन धर्म परचार सजन क्यों देर लगाते हो ॥ टेक
यह देह मनुष्य की भाई, कोई पुण्य उदय से पाई ।
तुम करलो पर उपकार, जन्म क्यों व्यर्थ गंवाते हो ॥ १
ये धर्म सर्व हितकारी, है स्वर्ग मुक्ति करतारी ।
कर अपना ही अधिकार उसे क्यों हाय छिपाते हो ॥ २
जो देख इसे टुक पावें वो तुरत ही शरण में आवें ।
अब खोजी है संसार नहीं क्यों रतन दिखाते हो ॥ ३

उठ शोर सभा का मचावो जिनवानी सभों को सुनावो
करो विद्या का विस्तार वृथा क्यों धन को लुटाते हो ॥ ४
शिवराम खड़े हो जावो मत जैनी नाम लजावो ।
खोलो कालिज कोई दोचार दौलतमंद तुम्ही कहाते हो ॥ ५
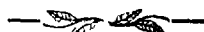
३८—अविद्या की करतूत

(चाल—सांप ने मुझको डस लिया)

अरि अविद्या ये क्या किया हाय सितम ग़ज़ब सितम ।
भारत को ग़ारत कर दिया हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥टेक
दया जो धर्म जैन का, दुनिया से जाता है चला ।
पाखंड सारे बढ़ गया हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥ १
प्यारी कहां गई दया जल्दी से अब तो लौट आ ।
गौवों पै ज़ुल्म हो रहा हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥ २
कुरीतियों ने करदिया देश सारा ये तबाह ।
हुई हमारी दुर्दशा हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥ ३
वो जैन वीर हैं कहां जो धर्म हेतु देत जां ।
वंश क्या उन का उठगया हाय सितम गजब सितम ॥ ४
शिवराम अब तो हो खड़ा परमाद में क्यों तू पड़ा ।
जन्म ये सारा खोदिया हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥ ५

३९—चन्द्रप्रभू स्तुति

(चाल—बहना आफत जानी री।)

चन्द्र प्रभू महाराज जी मोहे राखो शरण में ॥ टेक
चन्द्र चिन्ह शुभ चन्द्र वरण तुम । चन्द्रपुरी की लाज जो । मोहे १

सुलक्षमणा देवी धन २ माता । महासेन पिता सरताज जी । मोहे २
राज त्याग कर दीक्षा धारी । कीनो आतम काज जी । मोहे ३
भवदधि डूबत जीव उबारे । आय कियो शिवराज जी । मोहे ४
शिवराम ध्यावे शीश निवावे । काटो संकट आज जी । मोहे ५

४०—महावीर स्तवन

मैं बन्दू बारम्बार श्रीमहावीर जिनंद स्वामी ।। टेक
चर्म तीर्थंकर पर्म हितंकर , भविजन को सुखकंद । स्वामी १
त्रिशला देवी धन २ जननी । राय सिद्धारथ नन्द । स्वामी २
जन्मे जिनेश्वर चैत सुतेरस । कुंडलपुर आनन्द । स्वामी ३
बाल ब्रह्मचारी दीक्षाधारी । काटे करम के फंद । स्वामी ४
ज्ञान प्रकाश मिथ्यात विनाश । प्रगटो जिनवर चंद । स्वामी ५
तुम गुण गावे पार न पावे । शिवराम है मतिमंद । स्वामी ६

—❧❧—

४१—निवेदन

(चाल—इलाजे दर्देदिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता)

सुनो जिनजी अरज म्हारी करम दुख देते हैं भारी ।
करम ने जो विपत डारी प्रभु तुम जानते सारी ।। टेक
कभी नरकों में ले जाते वहाँ जो दुःख दिखलाते ।
जिगर कांपे बयां करते भयानक भूमि दुखकारी ।। १
कभी धारी पशु पर्याय रहा प्यासा मरा भूखा ।
किसी ने डाला गल फांसा किसी ने आ छुरी मारी ।। २

मनुष्य गति भी योंही भोगी, रहा रोगी कभी सोगी ।
मैं इष्टानिष्ट संजोगो सहे, दुखड़े अति भारी ॥ ३
कभी गर स्वर्ग भी पाई, हुई मुझको वो दुखदाई ।
लखी जब माला मुरझाई, हुई ग़म की नहर जारी ॥ ४
न करमों ने तरस खाया चौरासी लाख भरमाया ।
नहीं टुक चैन मैं पाया, करी गति चार में ख्वारी ॥ ५
प्रभु चरणों का हु चेरा, धरूं मैं ध्यान अब तेरा ।
करो उद्धार तुम मेरा, शरण शिवराम है थारी ॥ ६
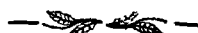
४२—गृहस्थ धर्म

(चाल—अमोलक मनुष्य जन्म प्यारे)

अणुव्रत पञ्च धरो प्यारे पापी पड़े नर्क मझधारे ।

षट्काया की रक्षा करोजी हन मत जीव सुजान ।
दया धर्म का मूल है प्यारे कहते वेद पुरान ।
यह हिंसा पाप तजो प्यारे ॥ १
कटुक वाक्य निंदा कथन जी, झूठ बचन मत भाष ।
हित मित सुखदायक बचन जी, साँच सदा मुख राख ।
ये अनृत पाप तजो प्यारे ॥ २
धरा पड़ा भूला हुवा जी, द्रव्य पराया जोय ।
बिना दिया लीजे नहीं जी, जनम २ दुख होय ।
ये चोरी पाप तजो प्यारे ॥ ३
परनारी पैनी छुरी जी, मत कर इस से प्रीत ।
माता भगन सम गिनो जी, यही धरम की रीत ।
ये मैथुन पाप तजो प्यारे ॥ ४

प्रगट जगत में देखिये जी, प्यारे लोभ दुखों की खान ।
तृष्णा नागन वश करो जी, परिग्रह संख्या ठान ।
परिग्रह पाप तजो प्यारे ॥ ५
पाप दुखों का मूल है सही जी, प्यारे जानत हो शिवराम ।
इन को त्यागो सर्वथा जी, चाहो अगर सुख धाम ।
मिले पद अविनाशी प्यारे ॥ ६

६३—वर्ण व्यवस्था

दिये दुःख यह कर्मों ने भारे फिरैं घर २ दीन बिचारे ।
हा ! कैसा समय अब आया चहुं ओर ही संकट छाया ॥ टेक
नहीं रहे मुनीश्वर ज्ञानी बढ़े पाखंडी अभिमानी ।
मनमाना पन्थ चलाया ॥ १
कहां क्षत्री हैं बलधारी प्रजा रक्षक सर्व हितकारी ।
है नाम निशान छुपाया ॥ २
कहां ब्राह्मण हैं व्रतधारी भये धूर्त पापाचारी ।
सब धर्म रु कर्म नशाया ॥ ३
कहां वैश्यों की साहूकारी करते फिरें वो खिदमतगारी ।
वाणिज्य व्यापार भुलाया ॥ ४
अब शुद्र होगये आलिम बन अफसर हुए हैं जालिम ।
सब वर्ण भेद मिटाया ॥ ५
ताऊन अकाल सतावें अरु आफ़त पै आफ़त आवें ।
कारण कौन बनाया ॥ ६
शिव नेत्र हिये के खोलो और पुण्य पाप को तोलो ।
यह पलड़ा कौन झुकाया ॥ ७
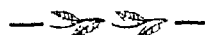
४४—आरती महावीर स्वामी

(तर्ज जय जगदीश हरे)

जय सन्मति देवा प्रभु जय सन्मति देवा।
वीर महा अति वीर प्रभु जी, वर्द्धमान देवा॥ टेक

त्रिशलापुर अवतार लिया प्रभु सुर नर हरषाये।
पन्द्रह मास रतन कुण्डलपुर धनपति वरषाये॥ १

शुकल त्रयोदशी चैत मास की आनन्द करतारी।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव ठाठ रचे भारी॥ २

तीस वर्ष लों रहे गृह में बाल ब्रह्मचारी।
राज त्याग कर भर जोबन में मुनि दीक्षा धारी॥ ३

द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया।
झलके लोकालोक ज्ञान में सुख भरपूर लिया॥ ४

कातिक श्याम अमावस के दिन जाकर मोक्ष बसे।
पर्व दिवाली चला तभी से घर २ दीप चसे॥ ५

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी शिव मग प्रकाशी।
हर्ता हर ब्रह्मा नाथ तुम्ही हो जय २ अविनाशी॥ ६

दीन दयाला जग प्रतिपाला, सुर नर नाथ जजैं।
सुमरत विघ्न टरैं इक छिन में पातक दूर भजैं॥ ७

चोर भील चाण्डाल उभारे, भव दुख हरण तुही।
पतित जान शिवराम उभारो हे जिन शरण गही॥ ८

❀ हमारे यहां की पुस्तकें ❀

१—शिवराम पुष्पांजली अङ्क १ (शिवराम भजन संग्रह प्रथम भाग) मूल्य दो आने।

२—शिवराम पुष्पांजली अङ्क २ (वीर पुष्पांजली) इस में वीर भक्ति के उत्तमोत्तम जोशीले भजन हैं। प्रथमावृत्ति समाप्त हो चुकी है सिर्फ चन्द प्रतियें बाक़ी हैं। दूसरी बार और अधिक मनोहर भजन बढाकर दुगने पृष्ठोंमें शीघ्र छपवानेका विचार है।

३—शिवराम पुष्पांजली अङ्क ३ इसमें जाति सुधार और धर्मप्रचार के उत्तमोत्तम नये जोशीले भजन हैं। टाइप व काग़ज़ बहुत सुन्दर। मूल्य ≈)॥

४—शिवराम पुष्पांजली अङ्क ४ भी शीघ्र प्रकाशित करनेका विचार है।

५—बाल शिक्षा—इसमें बालकों को कण्ठस्थ कराने योग्य उनके सदाचार और दिनचर्य्या सम्बन्धी शिक्षाप्रद सरल कविताएं हैं तथा प्रातःकाल की प्रार्थना भी सम्मिलित करदी गई है। प्रत्येक पाठशाला की प्रारम्भिक कक्षा में इस पुस्तक को कोर्स रूप रक्खा जाना बहुत उपयोगी है। थोड़ी सी प्रतियां बाक़ी हैं। मूल्य केवल एक आना

नोट—इकट्ठी पुस्तकें लेनेवालों को २५) रु० सैंकड़ा कमीशन दिया जायगा। धर्मार्थ बांटनेवालों को विशेष कमीशन मिलेगा।

२—थोड़ी पुस्तकें मंगानेवालों को टिकट भेजने चाहियें क्योंकि वी० पी० भेजने में बहुत खर्च आता है।

निवेदक—

मास्टर शिवरामसिंह

मैनेजर जैन वाचनालय, मोहल्ला सराय,

रोहतक (पंजाब)

शिवराम पुष्पांजलि

अङ्क २

अर्थात

वीर पुष्पांजलि

का—रूपांतर

सम्पादक व प्रकाशक:—

मास्टर शिवराम सिंह जैन

शिक्षा प्रचारक—रोहतक

द्वितीयावृत्ति १००० | वीर निर्वाण संवत २४५६ ई० सन १९३२ | मूल्य ढाई आना

भट्टाचर प्रेस ईश्वरभवन, खारी बावड़ी देहली।

* वन्दे वीरम् *

शिवराम पुष्पाञ्जली

अंक ६

१—वीर शरण

तर्ज—न छेड़ो हमें हम सताये हुये हैं

शरण वीर तेरी हम आये हुये हैं।

शीस तेरे चरणों में नाये हुये हैं॥ टेक॥

कहीं भी जगत में न सुख हमने पाया।

करम वैरी के हम सताये हुये है॥ १

नहीं पर को जाना न आपा पिछाना।

नशा मोह अनादि पिलाये हुये हैं॥ २

तेरे नाम नामी को सुनकर के स्वामी।

हम अर्जी को अपनी ये लाये हुये हैं॥ ३

हे 'शिव' पद हमारा सो मिल जाये हम को।

इसी बर की आशा लगाये हुये हैं॥ ४

२—प्रार्थना ग़ज़ल

हे नाथ मुझ पै अब तो इतनी ज़रा दया कर ।
जीवन सफल हो मेरा ऐसी प्रभो कृपा कर ।। टेक ।।

अकलंक वीर ज्ञानी मुझ को बनादो स्वामी ।
पाखंड को हटा दूं तेरा धरम सुना कर ।। १ ।।

निकलंक सा बहादुर बन जाऊं मैं भगवन ।
अपने को मैं मिटा दूं अपने धरम की खातिर ।। २ ।।

सुदर्शन सा ब्रह्मचारी होकर गृहस्थाचारी ।
अपना नियम निभादूं सुख सम्पदा गवां कर ।।३ ।।

बन कर के राम लक्ष्मण युधिष्ठिर व भीम अर्जुन ।
कर्तव्य मैं बता दूं आदर्श को दिखा कर ।। ४ ।।

बनकर तिलक वो गांधी हरूं दुःख देश का भी ।
आज़ाद मैं करा दूं भारत को मन लगा कर ।। ५ ।।

गोपाल सा हो पंडित स्याद्वाद शस्त्र मंडित ।
गज वाद को भगादूं सिंह नाद मैं बजाकर ।। ६ ।।

डूबी धरम की नैया उसका बनूं खिवैया ।
मैं पार अब लगा दूं आतम बली लगाकर ।। ७ ।।

जैन धर्म को जो खोकर खाते हैं जग में ठोकर ।
"शिव" राह में दिखादूं दिया ज्ञान का जला कर ।। ८ ।।

३—पुकार

तर्ज.—मेरे शम्भू तू काशी बुलाले मुझे

नैया पार हमारी लंघादो प्रभू ।

डूबी जाती है इस को बचा दो प्रभू ॥ टेक ॥

बीच मझधार पड़ी आन हमारी नैया,

कौन है तेरे सिवा जो कि बने खेवैया,

अपनी कृपा का बांस लगादो प्रभू ॥१॥ नैया पार०

ज्ञान धन मेरा हरा आये कषाये तस्कर,

मोह मिथ्यात की जन्जीर से बांधा कसकर,

अब तो कर्मों का फंद छुड़ादो प्रभू ॥२॥ नैया पार०

चोर चाण्डाल अधम तुमने उतारे शूकर,

नवल गज सिंह कपि और उभारे कूकर,

विपता आज हमारी हटा दो प्रभू ॥ ३ ॥ नैया पार०

भव सागर में लगे आवा गमन के चक्कर,

दुःख पर्वत से लगी बार अनन्ती टक्कर,

भूले 'शिव' पुर मार्ग बना दो प्रभू ॥४॥ नैया पार०

४—मनोकामना सोहनी

तर्ज़ हे दयामय हम सभों को शुद्धताई दीजिये

भारत के दिन भगवान फिर वे लौटकर कब आयेंगे

जैन के झंडे जगत में हर जगह लहरायेंगे ॥ टेक ॥

भेंट कुर्बानी पशूवध दूर हों सब देश से ।

इक अहिंसा धर्म ही का जब कि नाद बजायेंगे ॥ १ ॥
सैकड़ों मुनियों का वह कब संघ विचरे देश में ।
धर्म सुन एक दम में लाखों जैन यहाँ बन जायेंगे ॥ २॥
भील तस्कर से अधम जन छोड़ देंगे दुष्टता ।
सिंह और हस्ती पशू भी धर्म श्रद्धा लायेंगे ॥ ३ ।
दृढ़ प्रतिज्ञा पर रहें चाहे जान भी जाती रहे ।
यम पाल से चांडाल भी अपने नियम को निभायेंगे ॥४॥
छोड़ देंगे पक्ष दिल का सुन के जो तत्त्वार्थ को ।
विप्र विद्यानन्द स्वामी जैन दीक्षा पायेंगे । ५ ॥
होंगे वैरागी अचल कब देश में जम्बू कंवर ।
बालपन में सम्पदा सब पाँव से ठुकरायेंगे ॥ ६ ॥
काव्य रचना से हो जिनके जेल के टूटें कुफल ।
कब असहयोगी की शिक्षा मानतुङ्ग सिखायेंगे ॥ ७ ॥
अकलंक और निकलंक से कब बाल ब्रह्मचारी बनें ।
प्राण को कर के निछावर धर्म वीर बचायेंगे ॥ ८ ॥
समन्तभद्राचार्य से विद्वान कब हों देश में ।
चरण में शिव. कोटिराजा जिन के शीश झुकायेंगे ॥ ९ ॥

५—आजा

तर्ज़—नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते

वीर भगवान तू फिर दर्श दिखा दे आजा ।
यह हुआ देश दुखी धर्म सुना दे आजा ॥टेक॥

बे ज़बानों के गले आज हैं चलते खंजर।

फिर दया धर्म का तू डङ्का बजादे आजा ॥१॥

हाय तीर्थों पे हुई अब तो मुक़द्दमे बाज़ी।

अपने अनुयाइयों की फूट मिटादे आजा ॥२॥

हुई तहज़ीब भी काफ़ूर हमारी अब तो।

फिर वही सभ्यता प्राचीन सिखादे आजा ॥३॥

है पराधीन हुआ आज हमारा भारत।

गैर के हाथ से आज़ाद करादे आजा ॥४॥

जैन का दाइरा अब तंग हुआ है बिल्कुल।

करके तू इसको वसी फिरसे दिखादे आजा ॥५॥

जैन के नाम से ही चिढ़ते हैं लो बे समझे।

द्वेष और पक्ष का तू आग बुझादे आजा ॥६॥

कर रहे गैर हैं अब चारों तरफ़ से हमले।

न्याय तलवार से अब उनको हटादे आजा ॥७॥

छाया पाखंड का अंधेर है सारे जग में।

सूर्य किरने [illegible] आजा ॥८॥

९—आकाश वाणी

नहीं नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते

वीर के आने का सामान बनाओ तो सही।

वीर दर्शन का ज़रा पुण्य कमाओ तो सही ॥टेक॥

कौन सी मान है वह कुख में जिसकी आये।

देवी त्रिशला सी कोई मात बताओ तो सही ॥१॥

वीर को चाहते हो फिर से बुलाना गर तुम।

कोई सिद्धार्थ पिता हमको दिखाओ तो सही ॥२॥

किस जगह जन्म लें वह कौन है ऐसो नगरी।

कोई कुण्डल पुर सा शहर बसाओ तो सही ॥३॥

वीर उपकार को है तुमने भुलाया बिल्कुल।

ऐसो कृतघ्नता पै दिल में लजाओ तो सही ॥४॥

देश भारत में नदी खून की बहती हरजा।

दूध गौओं का वहां पहले बहाओ तो सही ॥५॥

काम हिंसा के तजो वीर बुलाने वालो।

भेंट कुर्बानी बली यज्ञ हटाओ तो सही ॥६॥

लौट के आते नहीं मुक्त से कोई 'शिवराम'।

आप खुद आप कोही वीर बनाओ तो सही ॥७॥

७—वीर बधाई (पंजाबी)

महावीर मेरा प्यारा मैं वारियाँ,

राय सिद्धार्थ दा नंद ;

त्रिशला देवी दी आंखों दा तारा मैं वारियां ॥टेक॥

जद दुनियां में हिंसा वड़ी सो, दीन पशुआं पै विपदा पड़ी सी,

ज़ालिम लोका नु जुल्म गुज़ारियां ॥१॥ महा०

जिन जानी नहीं जिन बानी, उन ठानी पशू कुरबानी,

घोड़े बकरे हवन बिच डारियां ॥२॥ महा०

दीन पशुओं दा कष्ट हरन नूं, सारे जगदा कल्याण करन नूं,
तब वीर जिनेद्र पधारियां ॥३॥ महा०
तिथि चेत सुतेरस प्यारी, प्रभु जन्मे जगत हितकारी,
कुण्डलपुर में वधाई अपारियां ॥४॥ महा०
तिहूं लोकां में आनन्द छाये, आन भारत दे प्राण बचाये,
बिच देशां दे जय जय कारियां ॥५॥ महा०
'शिव' मार्ग सवां नू दिखाकर, हिंसा कर्मा नू दूर हटा कर,
दया धर्म सकल विस्तारियां ॥६॥ महा०

८—वीर जन्मोत्सव ग़ज़ल

महावीर जन्म उत्सव मिलकर मनाओ सारे ।
वर्धमान, वीर, सन्मति अति वीर नाम प्यारे ॥टेक॥
होती थी घोर हिंसा कैसा विकट समय था ।
जब धर्म नाम पर ही जाते थे जीव मारे ॥१॥
सद्धर्म छुप गया था फैला था वाम मारग ।
जगोद्धार के ही कारण तब वीर जिन पधारे ॥२॥
तिथि चेत शुक्ल तेरस कैसी वह शुभ घड़ी थी ।
कुण्डल पुरी के अन्दर उत्सव के ठाठ न्यारे ॥३॥
राये सिद्धार्थ के घर जन्मे जगत के ईश्वर ।
त्रिशला के लाल प्यारे आंखों के ये सितारे ॥४॥
प्रभु बाल ब्रह्मचारी यौवन में दिक्षा धारी ।
करके कठिन तपस्या चराचर सकल निहारे ॥५॥

डंका बजा दिया था जग में दया धरम का।

पाखंड को हटा कर शिव धाम को सिधारे ॥६॥

स्वामी अगर न आते 'शिव' मार्ग ना दिखाते।

बन जाते पापी सारे ये भारती विचारे ॥७॥

९—वीर स्तवन

तर्ज़—मादरे हिन्द की आंखों का सितारा गांधी

वीर भगवान तेरी आज शरण में आया।

बिनु नहीं तेरे सिवा और है कोई पाया ॥टेक॥

सर्प विकराल बना देव परीक्षा कारण।

देख बल तेरा प्रभू चरणों में है सिर नाया ॥१॥

राय सिद्धार्थ पिता फ़िक्र जो शादी की करी।

आप इन्कार किया राग नहीं मन भाया ॥२॥

बाल ब्रह्मचारी रहे तीस बरस तक घर में।

भर यौवन में मुनि बन के निजातम ध्याया ॥३॥

वर्ष बारह है करी घोर तपस्या वन में।

बहु उपसर्ग सहे ज्ञान है केवल पाया ॥४॥

भूल बैठे थे सभी धर्म करम को अपने।

मोक्ष जाने का प्रभु राह उन्हें दिखलाया ॥५॥

मारे जाते थे यहां धर्म के ही नाम पशु।

हिंसा सब दूर करी धर्म दया बतलाया ॥६॥

धर्म परचार किया तीस बरस तक स्वामी।

करके उद्धार जगत आपने 'शिव' पद पाया ॥७॥

१०—वीर वाणी कव्वाली

वीर वाणी पर हमें विश्वास लाना चाहिये।
हो नहीं सकती ग़लत यह निश्चय लाना चाहिये ॥टेक॥
जो प्रभू सर्वज्ञ हितकर वीतरागी हो चुके।
कैसे दें उपदेश मिथ्या शक हटाना चाहिये ॥१॥
है नहीं उसमें गुज़र कुछ पूर्वापर के विरोध का।
कोई भी तो ग्रन्थ पढ़कर आज़माना चाहिये ॥२॥
एकेन्द्री से पंचेन्द्री तक हैवान क्या इन्सान क्या।
सबका है कल्याण इसमें ना छुपाना चाहिये ॥३॥
सिंह और हस्ती पशु भी तर गये संसार से।
हां मगर श्रद्धान को दिलमें जमाना चाहिये ॥४॥
इसका खण्डन कर सके जो है भला किसकी मजाल।
स्याद्वादी सिंह के सन्मुख तो आना चाहिये ॥५॥
इसके मनन से है बनता आत्मा परमात्मा।
तत्व है इसके निराले खोज पाना चाहिये ॥६॥
देख कर सिद्धान्त इसके यूरपी हैरान है।
हरबर्ट जैकोबी के लेक्चर देख जाना चाहिये ॥७॥
है यही सच्चा गुरू प्यारा हमारा आज कल।
पक्ष और अभिमान तजकर सर झुकाना चाहिये ॥ ८ ॥
विश्व हितकारी है वाणी बन्द कर रखना नहीं।
हो सके 'शिवराम' तो सब को सुनाना चाहिये ॥ ९ ॥

नोट.—मि हरबर्ट वारन जैन इङ्गलैंड . मि. हमन जैन कोo बीo जर्मन

११—वीर भक्तों का कर्तव्य ग़ज़ल क़व्वाली

वीर भक्तों में लिखा दो सबसे पहिले नाम को।
देश सेवा के किसी भी कर दिखादो काम को ।।टेक।।
जाति रक्षा के लिये गर हो ज़रूरत जान की।
है उचित उसके हवाले करदो तन के चाम को ।। १
बे मौत हाय मर रहे हैं लाखों की तादाद में।
उनकी रक्षा कीजिये सब देके धन और धामको ।। २
है भला उसका मरण जो कीजिये अपने लिये।
है वोह ज़िन्दा धर्म पै जो दे चुका है प्राण को ।। ३
वीर के उपदेस का परचार हो अपना मिशन।
धुन यही हरदम रहे अब हर सुबह और शामको ।। ४
है समय यह कार्य का बातें बनाना छोड़ दो।
नोजवानों का सुना दो जाके इस पैग़ाम को ।। ५
वीरता अपनी दिखादो वीर के गर भक्त हो
क्यों लजाते हो वृथा तुम अपने जैनी नाम को ।। ६
देश जाती धर्म सेवा का रहे मेरा परण।
ऐसी बुद्धी दो प्रभू अब दास इस 'शिवराम' को ।।७

१२—वीर स्मरण क़व्वाली

पर्व दीवाली सदा सबको मनाना चाहिये।
वीर के सुमरण को हरगिज़ ना भुलाना चाहिये।।टेक।।
है मुबारिक आज का दिन वीर के निर्वाण का।

गौतम गुरू के ज्ञान का गुण ग्राम गाना चाहिये ॥ १
इन्द्र देवों ने करी थी रत्न दीपक रोशनी।
दीप माला चल गया उत्सव मनाना चाहिये ॥ २
यह खिलौने और हटड़ी रह गई झूठी नकल।
समोसरणकी थी यह रचना ख्याल लाना चाहिये ॥३
लक्ष्मी जो पूजते हो हर तरह पाखण्ड है।
ज्ञान लक्ष्मी का तुम्हें पूजन रचाना चाहिये ॥ ४
निर्वाण के उत्सव समय पर सर्व जैन समाज को।
हो इकट्ठे भक्ति से लड्डू चढ़ाना चाहिये ॥ ५
फिर सभा कर के भविक जन गाइये विनती भजन।
वीर का जीवन चरित सबको सुनाना चाहिये ॥ ६
वीर के उपकार को भूलो न भाई एक दम
मार्ग 'शिव' बतला गये जो उस पे जाना चाहिये ॥७

१३—धर्म प्रचार

तर्ज़—मेरे शम्भू तू काशी बुलाले मुझे

डंका जैन धरम का बजायेंगे हम।
सब को वीर का भक्त बनायेंगे हम ॥ टेक ॥

शेर—एकेन्द्री से पंचेन्द्री तक हैवान क्या इन्सान क्या,
है यही सब के लिये रस्ता परम कल्याण का।
चाण्डाल पापी को बनाता है यही धर्मात्मा,
इसके सेवन से हो बनता आत्मा परमात्मा।

सब को मुक्ती का मार्ग बताये़गे हम १ डंका० ॥

शेर—हैं अनादी जीव पुद्गल धर्माधर्मा काश काल,
स्याद्वादी फिलसफा इसका निराला कर्मजाल।
इसका खंडन कर सके जो है भला किसकी मजाल.
इस पर विजय पाई किसीने वहम है झूठा खयाल।
येही सबको चेलेन्ज सुनायेंगे हम डंका० ॥ २

शेर—प्राचीन इसको मानते हैं बाल गङ्गा धर तिलक,
बुद्धि की नहीं शाख है यह तत्व है इसका अलग।
नास्तिको कायर बताना पाप है बेजा हतक.
क्षत्रियों का धर्म है यह जैन थे चन्द्र गुप्त।
लाला १ जी को प्रमाण दिखायेंगे हम ॥ डंका० ३

शेर—इस अहिंसा तत्व का संसार में सानी नहीं
सामने इस धर्म के अब सिर झुकाते हैं सभी।
इसके धारण से कभी कायर कोई बनता नहीं.
जो अहिंसा का है पालक वीर सच्चा है वही।
येही शिर राम छाप लगायेंगे हम ॥ डंका० ४

१४—आत्म सम्बोधन

नहीं रे सुन बावल मार कहे का ज्यादा विदेश
रे सुन आतम प्यारे सतगुरू का उपदेस ॥ टेक.॥

---

१ लाला लाजपतराय।
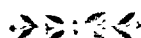
काल अनन्ता भ्रमते ही बीता,
भुगत रहे हो क्लेश ॥ १ रे सुन०
छाय रहा मिथ्यात अंधेरो,
भूल रहे हो स्वदेश ॥ २ रे सुन०
ज्ञान नेत्र से मार्ग निहारो,
प्रभु का सुमर सन्देश ॥ ३ रे सुन०
'शिवराम' अपना हित यदि चाहो,
छोड़ दो राग और द्वेष ॥ ४ रे सुन०

१५—संसार की असारता ग़ज़ल

दुनिया ना पायेदार में क्या दिल लगाया है।
थोड़ी सी ज़िन्दगी पे क्यों इतना लुभाया है ॥ टेक ॥
औरों को मरना देख कर करना नहीं खयाल।
गोया हमेशा रहने का पट्टा लिखाया है ॥ १
हो चुके हैं सकड़ों लाखों बली धनी ।
आखिर में उनको कालने आकर दबाया है ॥ २
नेकी बदी मौजूद है दो यारो जहान में।
ज़र है मनुष्य जन्म जो मुश्किलसे पाया है॥३
'शिवराम' लो खरीद कुछ मेला है चन्द रोज़।
फिर बाद में पछताने से क्या हाथ आया है॥४

१६—आत्म हित

तर्ज़—मेरे शम्भू तू काशी बुलाले मुझे

घड़ी दो घड़ी मन्दिर में आया करो,
आकर धर्म कथा सुन जाया करो ॥ टेक ॥
काल अनादि से भटक हाय रहे दुनिया में,
जन्म और मरण के दुख भुगत रहे दुनिया में।
कष्ट नर्क के याद तो लाया करो ॥ १ घड़ी०
बड़ी मुश्किल से मिला मनुष जनम ये प्यारो,
भोग विषयों में इसे व्यर्थ न योंही हारो।
कुछ तो नेक कमाई कमाया करो ॥ २ घड़ी०
पूजा जिनवर की करो और गुरू की भक्ति,
नित्य स्वाध्याय करो दान दो यथा हो शक्ति।
तप संजम में चित्त लगाया करो ॥ ३ घड़ी०
वीर शासन पे रहो मित्र सदा तुम कायम,
धर्म साधन के लिये कुछ तो निकालो टाइम।
'शिवराम' प्रमाद हटाया करो ॥ ४ घड़ी०

१७—चेतावनी

चाल—आन बैठा खिलापत पे देदो

जिन चरनन चित्त लगाओ मत जनम ये व्यर्थ गँवाओ। टेक
कोई पूरब पुन्य कमाया तब मानुप जन्म ये पाया।
अब हाथ सु अवसर आया, यह जीवन सफल बनाओ ॥ १

तो

काहे दुनिया के भोगों में रांचे हाय खोये रत्न मय सांचे।
मिथ्यात्व में फंसे माचे कुछ होश जरा अब लाओ ।।२
गुरु देव की भक्ति विसारी, स्वाध्याय तजो हित कारी।
रीतिदान की तुमने बिगारी तप संजम क्यों न कमाओ ।३
तुमने परको है आपा माना नहीं आतमराम पिछाना।
सोचा समझा न अपना विगाना अब भेद विज्ञान जगाओ ।४
सब जोग मिले सुखदाई कुछ करलो न नेक कमाई।
तुम जैन कहावो भाई 'शिवराम' न नाम लजाओ ।५

१८—वरदान

चाल यार खुद गर्ज़ जमाना है

मुझे दो बल ऐसा भगवन। टेक
इन्द्रिय ठग और दुष्ट कषाय काम क्रोध अभिमान।
लूट रहे धन ज्ञान इन्हों का मेटूं नाम निशान ।।१
कवच अहिंसा धारण करके छोडूं समता वान।
त्रास जरा परमाद नआवे दूर भेज दुर्ध्यान ।।२
कितना ही बल क्यों न दिखाये कर्म उदय बलवान।
शक्ति अनंत प्रगट कर अपनी जीतूं मोह महान।। ३
राग द्वेष का खोज मिटा दूं लेकर ज्ञान कृपाण।
आतम कोष संभालू अपना दृग सुख वीरज ज्ञान ।।४
पाय स्वराज्य अचल अविनाशी मुक्त पुरी निजथान।
होय सुखी 'शिवराम' करूं नित शांति सुधा रसपान। ५

१९—कन्या प्रार्थना

चाल—यू जुल्म कर न ज़ालिम तुझको करम के बदले

भगवन मुझे सुशीला विद्यावती बनाना।

दोनों कुलों की शोभा लज्जावती बनाना॥

बनवास में पती का जिसने न साथ छोड़ा।

सत शील की विधाता सीता सती बनाना॥

कुष्टी पती को पाकर सेवा से मुंह न मोड़ा।

वह धर्म कर्म ज्ञाता मैना सती बनाना॥

छोड़ा न शील हरगिज संकट सहे हजारों।

वह मनोरमा सुभद्रा अञ्जना सती बनाना॥

'शिवराम' भेष धर कर क्षुल्लक करी परीक्षा।

सम्यक्त्व से डिगी न वह रेवती बनाना॥

२०—वीर स्तवन

जय बोलो जय बोलो श्री वीर प्रभू की जय बोलो॥टेक

जब दुनियां में जुल्म बढ़ा था हिंसाका यहां जोर बड़ा था।

आप लिया अवतार प्रभू की जय बोलो॥१

पुण्य उदय भारत का आया कुण्डलपुर में आनन्द छाया।

हो रहा जय जय कार प्रभू की जय बोलो॥२

राय सिद्धारथ राजदुलारे त्रिशला की आंखों के तारे।

तीन लोक मनहार प्रभू की जय बोलो॥३

भर जोबन में दीक्षा धारी राजपाट को ठोकर मारी।

करो तपस्या सार प्रभू की जय बोलो ॥४
तपकर केवल ज्ञान उपाया जग का सब अन्धेर मिटाया।
कीना धर्म प्रचार प्रभू की जय बोलो ॥५
पशु हिंसा को दूर हटाया सब को 'शिव' मारग दरशाया।
किया जगत उद्धार प्रभू की जय बोलो ॥६

२१—उत्सव गायन

होवे जय जय कार ३ श्री जी के द्वार ॥ टेक
सब जन आवो सिर को झुकावो मिलगुन गावो भावना भावो,
सफल होवे यह उत्सव हमारा करें सद्धर्म प्रचार । १
द्वेष मिटावें प्रेम बढ़ावें खर्च घटावें फैशन उड़ावें,
करें विद्या का जग में उजारा होवे समाज सुधार । २
हिंसा को टालें सत्य सम्हालें शील को पालें नीति पे चालें,
भोजन वस्त्र हो शुद्ध हमारा, करें स्वदेश उद्धार । ३
सुखी हो सारा देश हमारा भारत प्यारा सब संसारा,
फैले जैन धर्म हितकारा 'शिवराम' घर घर द्वार । ४

२२—झंडा

चाल:—विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

प्राणी मात्र का रक्षक प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा—टेक
प्रेम भाव दर्शाने वाला शांतिसुधा बरसाने वाला ।
जग जन को हरषाने वाला धर्म अहिंसा सब सुखकारा ॥ १

समता पाठ पढ़ाने वाला सेवा धर्म सिखाने वाला ।

सच्चा वीर बनाने वाला जिनमत सार जगत हितकारा ॥ २

आओ वीर सभी मिल आओ वीर पताका यह लहराओ ।

शान वह पहिली फिर दिखलाओ ऊँचा मस्तक रहे हमारा ॥३

वीर भक्त कहाने वालो अपना अब कर्तव्य संभालो ।

देश धर्म की लाज रखालो करदो अर्पण तन मन सारा ॥ ४

इस झंडे को शीस झुकाओ वीर प्रभु के मिल गुन गाओ ।

झंडा यह घर घर लहरावो 'शिव' मारग दरशावन हारा ॥ ५

२३—युवक सम्बोधन

चाल:—रघुवर कौशिल्या के लाल मुनी का यज्ञ रचाने वाले

तुम सुनो हो जैन कुमार क्यों नहीं जोश दिलों में लाते । टेक

नहीं रहा जैन का राज है कहां श्री मुनिराज ।

नहीं दिखते पंडित आज जो कि अहिंसा धर्म बढ़ाते ॥ १

टुक लखो जैन की ओर करो दशा पे उसकी गौर ।

क्यों न मचाय सभा का शोर देश को वेग जगाते ॥ २

अपनी जाति पड़ी मँझधार वाका कौन करै उद्धार ।

तुमको जरा न सोच विचार वेह सभों के आगे जाते ॥ ३

कैसा छाय रहा परमाद इसने तुम्हे किया बरबाद ।

करके पिछली हालत याद क्यों नहीं दिल में टुक शरमाते ॥४

रक्खो आपस में तुम प्यार करदो विद्या का परचार ।

अपनो करो जीपर उपकार जीवन सफल किया जो चाहते । ५

अपने सभी बुरे हैं काम हमने किया धर्म बदनाम ।

जो सच पूछो तो 'शिवराम' तुम हो जैनी नाम लजाते ॥ ६

२४—चेतावनी

चाल—सरौना काहे भूल आये प्यारे ननदोइया

मेरे प्यारे भाइया धरम काहे छोड़ दिया ॥ टेक ॥

गुरु जन सेवा शास्त्र पठन नित पात्र दान जिन पूजा ।

गृहस्थी का कर्त्तव्य यही है और काम नहीं दूजा ॥ १

पहिले तात वचन की खातिर राज तजा श्री राम ।

अब है बेटे बाप झगड़ते बीच अदालत आम ॥ २

शास्त्र सभा में निद्रा आवे धरम कथन न सुहावे ।

तासरु चौसरु खेल कूद में सारा समय गवांवे ॥ ३

खान पान आचार मिटाया तजा स्वदेशी भेष ।

भक्ति भाव औ धर्म कर्म का रहा नहीं लवलेश ॥ ४

देश धर्म औ जाती हितका कोई तो कीजे काम ।

मानुष भव औ उत्तम कुलको मुफ्त न खो शिवराम ॥ ५

२५—कन्या विनय

चाल—उसका खुदा भला करे

विद्या बिना हैं मूर्खा शिक्षा दिलादो हे पिता ।

यही हमारी प्रार्थना हमको पढ़ा दो हे पिता । १ टेक

उपजे हैं एक ही गर्भ से भाई बहन ये हम सगे ।

फिर भेद भाव किस लिये हमको बता दो हे पिता । २

करते हो खर्च तुम रुप्ये बेशक बहुत दहेज में।

विद्या का दान क्या दिया हमको बतादो हे पिता। ३

मत और खर्च कीजिये विद्या का दान दीजिये।

नारी का धर्म कर्म सब हमको सिखा दो हे पिता। ४

राजुल अंजना चन्दना सीता सती मनोरमा।

वो रेवती औ चेलना हमको बनादो हे पिता। ५

हो जावें हम सरोजनी सत्यवती या पार्वती।

'शिवराम' देश भक्ति का पाठ पढ़ा दो हे पिता। ६

२६—देशहित

तुम्हें अब तो चर्खा चलाना पड़ेगा।

कि खद्दर से तन को सजाना पड़ेगा॥ टेक

कसरत भी होगी कते सूत घर का।

समय न अकारथ गवाँना पड़ेगा॥ १

ये हिंसा के कारण हैं वस्त्र विदेशी।

तुम्हें धर्म अपना निभाना पड़ेगा॥ २

दयावान सज्जन न रेशम को छूयें।

उन्हें शुद्ध वस्त्र बनाना पड़ेगा॥ ३

ये भूकी हैं मरती जो विधवायें बहिनें।

तुम्हें सूत उनसे कताना पड़ेगा॥ ४

है फैशन ने नेशन की करदी तबाही।

तुम्हें शस्त्र खद्दर उठाना पड़ेगा॥ ५

ये शिवराम चर्खा है चक्र सुदर्शन ।
जरूरत वे इसको घुमाना पड़ेगा ॥ ६

—०—

२७

चाल—उसका खुदा भला करे

भगवत की शांत मूर्ति का दर्शन सदा किया करो ।
ज्ञान वैराग्य का यहां शिक्षण सदा लिया करो ॥ टेक

देखा कहीं है सच कहो ध्यान का फोटो यह अहो ।
कैसी है वीतरागता ध्यान जरा दिया करो ॥ १

दुनिया की ऐश छोड़कर भोगों से मुंह को मोड़कर ।
स्वात्मध्यान है किया ख्याल तो ये किया करो ॥ २

काम और क्रोध को मारकर राग और द्वेष को टालकर ।
जाना है लोका लोक सब वाणी सुधा पिया करो ॥ ३

आदर्श है कल्याण साधन पद निर्वाण का ।
'शिवराम' ज्ञान औ ध्यान का पाठ यहां पढ़ा करो ॥ ४

२८—धर्म प्रचार

चाल प्रभु दीजे दान अपनी हमें भक्ती का

कीजे सत्य विचार मिल के सभी तुम भाइयो ॥ टेक

यहां फैले पाखंड भारी, हुये पंथ सैकड़ों जारी ।
कि जिनका बार न पार । मेरे भाइयो ॥ १

कोई हिंसा में धर्म बतावे, कोई प्यारा है खसम सुनावे ।

वढ़ा जाता व्यभिचार—मेरे भाइयो ॥ २

कोई कुगुरु कुदेव को माने, नहिं दया धर्म को जाने।

भटकता है संसार —मेरे भाइयो ॥ ३

कोई गंगा मे मुक्ति बताते, और मुर्दों का श्राद्ध कराते।

हुवा अज्ञान प्रचार—मेरे भाइयो ॥ ४

अब पक्षपात को छोड़ो, सतधर्म मे नेहा जोड़ो।

जगत में जिनमत सार—मेरे भाइयो ॥ ५

यदि आतम हित तुम चाहो, तो शरण जैन की आवो।

कहें शिवराम पुकार—मेरे भाइयो ॥ ६

२१—भजन संस्कार

चाल—कव्वाली

जैन संस्कार का उत्सव सदा शुभ हो सदा शुभ हो।

घड़ी धन्य आजका अवसर सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ टेक

श्री अरहंत सिद्ध साधु धर्म मंगल जगत उत्तम।

हमें इन चार का शरणा सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ १

हुवा गुरु देव का पूजन हवन विधि जैन सुखकारी।

श्री जिन धर्म की श्रद्धा सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ २

जहां इनका भजन पूजन वहां दुख का कहां दर्शन।

नष्ट होवे विघ्न बाधा सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ ३

रहे सुख शांति इस घर में बढ़े परिवार धन सम्पत।

दुआ शिवराम की दिल मे सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥ ४

३०—कषाय निषेध

चाल— (यार खुद गर्ज जमाना है)

तजो तुम दुष्ट कषाये चार ॥ टेक

क्रोध कषाय करो ना प्यारे यासों होय बिगार।
तन नाशे अपयश करे ये वैरी हो संसार। तजो० ॥ १

मान जगत में बुरा है प्यारे नशे मान से मान।
जो तुम चाहो मान को प्यारे मान तजो मतिमान। तजो० २

माया बिश की वेलड़ी यह उपजत यासे त्रास।
पशु गति दायक दुष्टनी ये नष्ट करे विश्राम। तजो० ॥ ३

लोभ दुखों का मूल है प्यारे कहा पाप का बाप।
दुर्गति का कारण येही है त्याग मिटे संताप। तजो० ॥ ४

चारों कषाये जीव को प्यारे देते कष्ट महान।
इनको त्यागो सर्वथा जो तुम चाहो गर 'शिव' थान। तजो० ५

३१—खेद

चाल गजल

हाय लुटा रहे हैं माला मकान अपना, धन धर्म खो रहे हैं
भाई तमाम अपना ॥ टेक ॥

ऐ लक्ष्मी सपूतो जरा चेत करके देखो।
हाय मिटा है जाता नामो निशान अपना ॥ १

अपनी थी कैसी इज्जत हुई आज कैसी ज़िल्लत।
निन्दक हुआ है अब तो हर खासो आम अपना ॥ २

हा स्वार्थ लोभ में हम फंस कर हुए हैं अन्धे।

पैसों में बेच डाला धर्मो इमान अपना ॥ ३
वह मान्यता तुम्हारी सुखानन्द सी कहां है।
अब जी हज़ूरों में ही बाकी है नाम अपना ॥ ४
है वह कहाँ तिजारत मित्रो जहाज़ अपने।
चल कर हमें दिखा दो व्यापार धाम अपना ॥ ५
अब मुल्क में तुम्हारे कितने हैं कार खाने।
मुहताज गैरों के अब ढकने को चाम अपना ॥ ६
तज कर कुरीतियां सब विद्या प्रचार कीजे।
इस ही में अब लगादो तन धन तमाम अपना ७
शिवराम स्वार्थ तज दो कुछ क़ौम की खबर लो।
बिन जाति सेवा के ये जीवन हराम अपना ॥ ८

३२—सत्यार्थ देव

चाल—कव्वाली

कर कल्याण जीवों का वही इक देव सच्चा है,
बतावे मोक्ष का रस्ता वही इक देव सच्चा है-टेक
जो हो सर्वज्ञ हितकारी धर्म उपदेश का दाता,
अठारा दोष वर्जित हो वही इक देव सच्चा है ॥ १
सदानन्द शिवस्वरूपी हो न जग धंधों से कुछ मतलब,
न कर्त्ता हो न हर्त्ता हो वही इक देव सच्चा है ॥ २
नहीं अवतार धरता हो नहीं घट घट का व्यापी हो,
मगर घट घट का ज्ञाता हो वही इक देव सच्चा है ॥ ३

जो गुण सागर अतुल महिमा निरंजन निर्विकारी हो,
उसे पूजो उसे ध्यावो वही इक देव सच्चा है ।। ४
कहो अरहन्त जिन उसको खुदा परमात्मा ईश्वर,
कहो शिव राम गौड़ उसको वही इक देव सच्चा है ।। ५

३३—सत्यार्थ गुरु कव्वाली

करे नित ध्यान आतम का वही इक साधु सच्चा है ।
जो दे उपदेश आतम का वही इक साधु सच्चा है ।। टेक ।।
महा व्रत पंच को धारे समिति पांचों को जो पाले ।
करी वश इन्द्रियाँ सारी वही इक साधु सच्चा है ।।
विषय आशा नहीं जिनके न कुछ आरम्भ से मतलब ।
हो ज्ञान और ध्यान का धारी वही इक साधु सच्चा है ।। १
जो कंचन कांच सम जाने अरी अरु मित्र इक माने ।
तजे रागादि दुखकारी वही इक साधु सच्चा है ।। २
जो ग्रीषम में तपे गिर पर जो पावस वृक्ष के नीचे ।
शीत सागर के कंठारी वहा वही इक साधु सच्चा है ।। ३
धर्म दश लाक्षणी धारे विचारे भावना बारह ।
परीषह जो सहे भारी वही इक साधु सच्चा है ।। ४
उसी को सतगुरु मानो उसी का ध्यान उर आनो ।
उसी की भक्ति 'शिव' कारी वही इक साधु सच्चा है ।। ५

३४—सत्यार्थ धर्म क़व्वाली

दया परधान हो जिसमें वही इक धर्म सच्चा है।
स्वपर विज्ञान हो जिसमें वही इक धर्म सच्चा है ॥ टेक
इकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक करो षट काय की रक्षा।
यह आज्ञा जिसकी है भाई वही इक धर्म सच्चा है ॥ १
कुमारग का करे खण्डन बतावे मोक्ष का रस्ता।
कहा है आप्त ने जिसको वही इक धर्म सच्चा है ॥ २
कोई वादी प्रतिवादी उलंघन कर नहीं सकता।
हो नय परमाण से साबित वही इक धर्म सच्चा है ॥ ३
कहो जिनमत उसे निजमत अहिंसा या कहो सन्मत।
वह है परधान षटमत में वही इक धर्म सच्चा है ॥ ४
वही सत शास्त्र है जिसमें हो ऐसे धर्म का वर्णन।
उसे 'शिवराम' उर धारो वही बस धर्म सच्चा है ॥ ५

३५—राजुल विनय दादरा

कहीं देखे हमारे हैं नेमी पिया। टेक
पशु पुकार सुनी जब प्रभु ने तोरन से रथ फेर लिया। १
नेमी पिया की पहिचान यही है गिरनारी पे जाके जोग लिया। २
नौ भव राखो शर्ण प्रभु तुमने दश में काहे बिसार दिया। ३
हाथ जोड़ सेवक यों बिनवे 'शिव' देवी कंवर का मैं शरण लिया। ४

३६—राजुल विनय

चाल—मैं वन खण्ड को जाऊं मेरी माता

गढ गिरनारी प जाऊं मेरी माता ॥ टेक

पंच महाव्रत अब मैं धरूंगी यही मन मेरे भातारी माता । १

मिलो मुझसे तुम संगकी सहेली नेमी विन कछुना सुहाता री माता । २

लाख कहो मैं तो एक न मानूं करूंगी संजम नाना री माता । ३

मैं उग्र २ करूं तप भारी कर्म हरूं दुख दातारी माता । ४

नेमी शरण 'शिवराम' गहो अब वोही ता हैं सुख दातारी माता । ५

३७—पाठशालाओं का स्वागत गायन

* गज़ल *

आओ विद्यार्थियो सब धन्यवाद आज गायें ।
अपने हितैषियों का आशीर्वाद पाये ॥ टेक ॥

धन आज का दिवस है धन आज शुभ घड़ी है ।
श्री मान हैं पधारे फूले न हम समायें ॥ १

हो आपका ये साया हमको सदा मुबारिक ।
दिया ज्ञान का हो रोशन ये ही दुआ मनाये ॥ २

रहे आपकी इनायत पाठशाला पें हमेशा ।
यह आरजू हमारी तरक्की इसे दिलायें ॥ ३

धन है उन्हीं का जीवन दौलत सफल है उनकी ।
विद्या प्रचार आदी कामों में जो लगायें ॥ ४

विद्या समान जग में नहिं दान और प्यारो ।
जिसका प्रकाश करके अज्ञान तम हटाय ॥ ५

विद्या के जो हितैषी फूलें फलें सदा वो।
रुतबा बलन्द होवे 'शिवराम' दिल से चाहें॥ ६

३८—जाति दुर्भाग्य–ग़जल

न जाने जैन कौम की क्या होनहार है!
चारों तरफ से हो रही कर्मों की मार है॥ टेक॥
जो कौम थी इस देश में सब से बढ़ी चढ़ी।
हा आज मुरदा जाति में उसका शुमार है॥ १
चौदा घटे तेरा रहे तेरा भी घट चले।
दोसौ बरस में खातमा हा ये तैयार है॥ २
लीडर फ्रीडर होगये इस क़ौम में निराश।
उनके दिलों पै होगई नफ़रत सवार है॥ ३
कल शौक से खड़ा हुआ सेवा के वास्ते।
वह आज शक्ले कौम से हुआ बेज़ार है॥ ४
कृतघ्नता को छोड़ कर उपकार की क़दर।
जो जीते रहने का तेरा कुछ भी विचार है॥ ५
'शिवराम' स्वार्थ में पड़े क्यों मुर्दा बन रहे।
जिन्दा है वोह जो क़ौम पै हुआ निसार है॥ ६

३९.—रक्षा बंधन चाल दादरा

प्रति वर्ष सलोनो मनाया करो जी। टेक
जैन धर्म का पर्व ये उत्तमसब ही को तो याद दिलाया करोजी॥ १

विष्णुकुमार महा मुनिवर के तप का महातम जताया करोजो।
आदर्श लेकर विष्णु मुनि का आपस में प्रेम बढ़ाया करोजो ॥ २
रक्षा करी मुनि सात शतक की रक्षा बंधनको सब ही बंधाया करोजो ।
पात्र दान में धन को लगाओ गुरुओं का पूजन रचाया करोजो ॥ ३
सन्ध्या समय 'शिवराम' सभा कर कथा को उसकी सुनाया करोजो ।

४०—उपदेशक

चाल—यार खुद गर्ज जमाना है।

धर्म बिन कौन करे उद्धार ॥ टेक

धर्म प्रभाव से मिली है मित्रो सुख सम्पति भण्डार
रोग रहित यह नर तन पाया, उत्तम कुल अवतार ॥ १
ज्ञान ध्यान का अवसर पाया, दुर्लभ जो संसार।
भाग्य उदय से मिला है मित्रो, जैनधर्म हितकार ॥ २
आज राख फल भोगन प्यारे ज्यों किसा नजग मांहि ।
तैसे भोगो भोग उचित तुम धर्म बिसारो नांहि ॥ ३
देव गुरु श्रुत भक्ति करो नित दया धर्म चितधार,
दान सुपात्रनि को नित दीजे कीजे पर-उपकार ॥ ४
जल में थल में वन में रण में पड़े जो संकट आन।
धर्महि रक्षक होत तहां पर धर्म करो "शिव" धान ॥ ५

४१—स्तुति

चाल—सुनो २ मित्रो हम नाटक दिखायें।

प्रभु थारे चरणों में सिर को झुकाऊं ॥

आहा दर्शन मिला, सब पातक हटा।

बलिहारी मैं जाऊं, मैं तुम गुण को गाऊं ॥ टेक ॥ १ ॥
तुमसा न कोई सुदेव जग में, हे हे जिनेश्वर कल्याणकारी।
तारण तरण हो तुम ही शरण हो,
थारी महिमा मैं कैसे गाकर सुनाऊं ॥ १ ॥
चोर भील अरु पापी अधम जन पक्षी पशु हैं तुमने उभारे।
तुम पै जो आये, सब दुख नशाये,
त्याग प्रभु तुमको शरण किसकी जाऊं॥२॥
'शिवराम' तेरा चरण का चेरा करता है विनती सुन लीजे इतनी।
आवा-गमन से जामन मरण से,
कृपा ऐसो कीजे, छुटकारा मैं पाऊं ॥ ३ ॥

४२—कर्म वैचित्र्य

चाल—हाय बड़ी मुश्किल से कटती है रात।
हाय सारे फैला कर्म का है जाल, ज़रा देखोजी करके खयाल ॥ टेक ॥
सुर नर सारे या से हैं हारे, ऊर्ध्व लोक जी मध्य पताल ॥
हाहा तिहुं जग कीने बेहाल, हाय सारे० ॥ १ ॥
अञ्जना सीता को दुख दीना, सागर में डाले श्रीपाल।
हा हा कष्ट सहा सुकुमाल, हाय सारे ॥ २ ॥
कहां पै जाऊं किसको सुनाऊं, विपता का अपना जी हाल।
हा हा टेढ़ी करम की ये चाल, हाय सारे ॥३॥
'शिवराम' तेरा चरणनि चेरा—जिनेश्वर तू दीनदयाल।
हा हा संकट से मोको निकाल—हाय सारे ॥४॥

४३—स्तुति

चाल—तू हितकारी नाथ जगत का महिमा तेरी अपरम्पार।

हे वृषभेश्वर चन्द्र जिनेश्वर शान्ति महेश्वर चक्रेश्वर।
वीर जिनन्दा आनन्दकन्दा तोड़ू भवफन्दा परमेश्वर॥ टेक
हम हैं सारे चरण मझारे भक्त तुम्हारे तीर्थेश्वर।
करुणाधारी पूरो सारी आश हमारी जगदीश्वर॥ १

महिमा अपार है तुम्हारा नाम सार है,
कल्याणकार है सबको अधार है;
हम पर दया धरो आनन्द सुख भरो,
'शिवराम' दुख हरो इतनी कृपा करो॥ २

४४—भजन

नाम जिन्दा में—गांधी गुणानुवाद

देश भारत था यह सोता हां जगाया तूने।
आबरू धर्म को खोता था बचाया तूने॥ टेक॥
देश हित के लिये तन धन को किया है अर्पण।
पहिले ही आपको आदर्श बनाया तूने॥ १॥
तप व संयम में तेरे आज नहीं सानी।
गांधी अवतार हुये नाम ये पाया तूने॥ २॥
जाके अफरीका में सह सह के हजारों संकट।
भारती भाइयों का कष्ट हटाया तूने॥ ३॥
हिन्द का हाल जब ज्यादा बिगड़ता देखा।

शस्त्र सत्याग्रह का आप उठाया तूने ॥ ४ ॥
शान्ती का पहन कवच हाथ अहिंसा झंडा ।
ले असहयोग खडग युद्ध मचाया तूने ॥ ५ ॥
तोप तकले को बना चक्र सुदर्शन चरखा ।
मानचेस्टर किले का कोट गिराया तूने ॥६॥
अब सुना चाहते 'शिवराम' विजय का डंका ।
सोना स्वाधीनता को छिन में छिड़ाया तू ने ॥७॥

४५—भावना

रात दिन है भावना सारा सुखी संसार हो ।
जिन धर्म का परचार हो सब जीवों का उद्धार हो ॥ टेक ॥
हो न हिंसा रंच भर अरु सत्य का व्यवहार हो ।
चोरी जारी हो नहीं संतोष शील अपार हो ॥ १ ॥
त्याग दें सब क्रोध को नहिं मान अश्व सवार हो ।
नहिं छल का अब व्यापार हो ना लोभ भी दुखकार हो ॥२॥
जितने जग के जीव हैं सब में सभी का प्यार हो ।
गुणिजनों को देखकर हिये में हर्ष अपार हो ॥ ३ ॥
दुःखि जनों को देखकर चित्त में दया सञ्चार हो ।
दुष्टी पापी जीव में माध्यस्थ भाव विचार हो ॥ ४ ॥
देश में वरतें कुशल राजा प्रजा हितकार हो ।
कहत बीमारी भगे सुख शान्ति का विस्तार हो ॥ ५ ॥
शास्त्र का अभ्यास हो अरु संगति सुखकार हो ।
सन्त जन के गुण ग्रहूं प्रिय वैन आत्म विचार हो ॥ ६ ॥
'शिवराम' जीवन धन्य हो तुझ से जो पर उपकार हो ।
तन से तेरे तप सधै हो इस जग से बेड़ा पार हो ॥ ७ ॥

हमारी पुस्तकें

शिवराम पुष्पांजलि अंक १—इसमें जाति सुधार तथा धर्मप्रचार के ४४ जोशीले भजन हैं कागज़ तथा टाइप बड़ा सुन्दर और साफ़ है। मूल्य केवल ≤) मात्र।

शिवराम पुष्पांजलि अंक २—ये पुस्तक पहिले वीर पुष्पांजलि के नाम से प्रकाशित हुई थी, जो बहुत ही शीघ्र हाथों हाथ उठजाने और ग्राहकों की अधिक मांग होने से पुनः प्रकाशित की गई है। इसमें पहिले की अपेक्षा करीब तिगुने भजन हैं बड़े उत्तम और चित्ताकर्षक हैं। मूल्यमात्र ढाई आने।

शिवराम पुष्पांजलि अंक ३—इसमें नई तर्जपर धर्मप्रचार जाति सुधार, तथा खद्दर आदि स्वदेश प्रेम के भी उत्तमोत्तम भजन छपे हैं, कागज़ टाइप आदि सर्वोत्तम हैं। मूल्य ≤)॥ मात्र।

शिवराम पुष्पांजलि अंक ४—भी शीघ्र छपकर भजन प्रेमियों को आनंद प्रदान करेगा।

मुनिसंघ भजनावली—जिसमें आचार्य श्री शांतिसागरजी तथा मुनिसंघ सम्बन्धी उत्तमोत्तम भजन प्रकाशित हुये हैं, केवल कुछ प्रतियां ही बाकी रहगई हैं। मूल्य आधआना।

नोट—इकट्ठी पुस्तकें मंगाने वालों को उचित कमीशन दिया जावेगा थोड़ी पुस्तकें मंगाने वालों को टिकट भेजना चाहिये। क्यों कि वी. पी. से भेजने में बहुत खर्च आता है। इसलिये कई बार आर्डर की आज्ञा का पालन करने में उपेक्षा करनी पड़ती है।

निवेदक

पुस्तक मिलने का ठिकाना — **मास्टर शिवरामसिंह जैन**

शिक्षाप्रचारक (रोहतक)
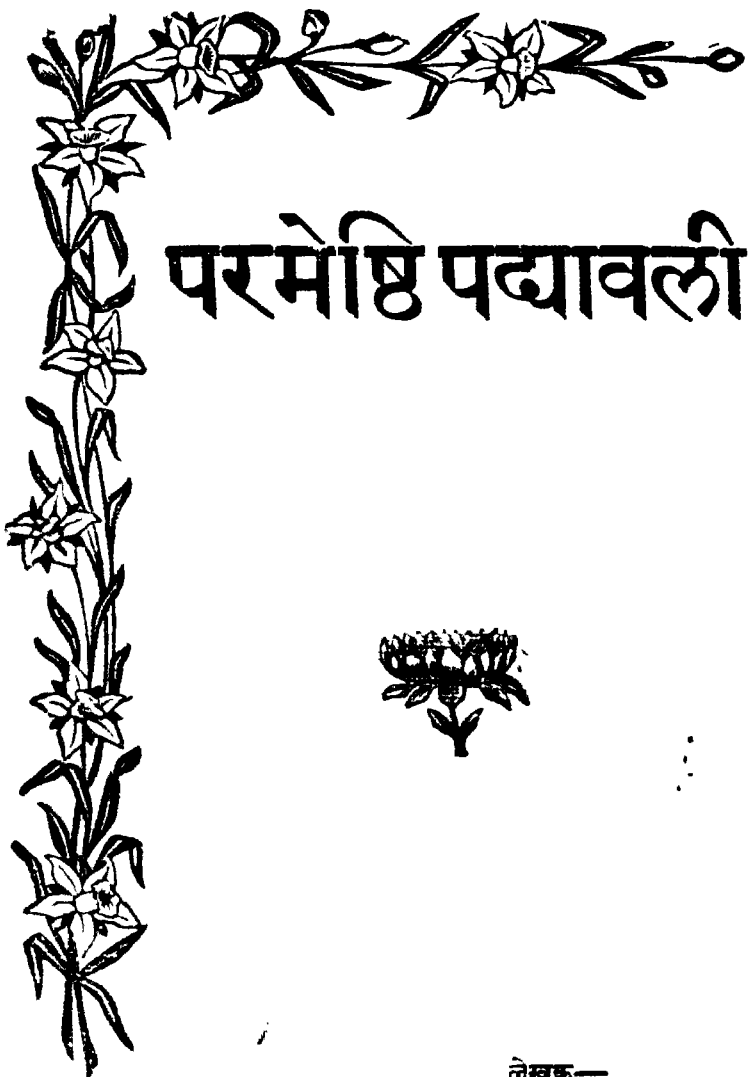
परमेष्ठि पद्यावली

लेखक—

परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ

शि

शि

शित्र

शिव

पुनि

नोट -

नक्

परमेष्ठिनेनमः

परमेष्ठि पद्यावली

लेखक—

पंडित परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ, सूरत।

प्रकाशक—

जौहरीमल जैन सर्राफ

दरीबा कलाँ, देहली।

प्रथमवार १००० | सन् १९३४ वीर निर्वाण संवत् २४६० | मूल्य =)

गयादत्त प्रेस, बाग दिवार देहली में छपा।

नम्र निवेदन !

यह बात सूर्य के प्रकाश जैसी सत्य है कि न तो मैं कोई कवि हूं और न कविता करने का मुझे ज्ञान ही है। फिर भी विद्यार्थी अवस्था में और उसके बाद भी कभी कभी प्रसंग वश जो तुक बन्दियां किया करता था उन्हीं का कुछ संग्रह आज आपके सामने रखा है। इस 'पद्यावली' में पद्य की दृष्टि से अनेक भूलें होंगी. उनकी चिन्ता न करके मैंने तो मात्र अपने हृदयगत भावों की ही तुकबन्दी कर डाली है। इसलिए मैं क्षम्य हूं!

मुझे विश्वास है कि युवक वर्ग इस 'पद्यावली' से लाभ उठायगा। वीरजयन्ती, रक्षाबंधन, दीपावली, होली, पर्यूषण पर्व तथा अन्य सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय अवसरों पर इसके प्रासंगिक पद्यों का उपयोग हो सकेगा। इसमें कुछ शिक्षोपयोगी पद्य भी हैं। श्रीमान् लाला जौहरीमल जी सर्राफ का मैं आभारी हूं कि जिनके प्रयास से यह 'पद्यावली' प्रगट हो रही है।

चंदावाड़ी–सूरत
११–२–३४

परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ।

अनुक्रमणिका

परमेष्ठिने नमः ।

परमेष्ठि पद्यावली ।

वीर-विनय ।

वीर प्रभु शीघ्र करो उद्धार ।

महावीर मम झंझरी नैया, अटक रही मझधार ।
पार लगादो नाथ एक बस, तुम ही हो पतवार ॥ वीर०॥

ज्ञान नेत्र मुंद गये पाप का, जमा निविड़ अंधयार ।
हित का मार्ग सूझता नाहीं, कहाँ मोक्ष का द्वार ॥ वीर०॥

हे सन्मति अब सन्मति दीजे, कीजे नहीं अवार ।
करुणानिधि लीजे उतार अब, भव का बोझ अपार ॥वीर०॥

मैं तो दीन दुखी हूँ स्वामिन, तुम करुणा भंडार ।
इन पापी कर्मों का भगवन्, कैसे हो संहार ॥ वीर० ॥

एक वार हस्तावलंब दो, हो जाऊँगा पार ।
हे अति वीर वीर हो जाऊँगा, लो तनिक सम्हार ॥वीर०॥

मोक्ष गये हो गये वर्ष हैं, पूरे ढाई हजार ।
वर्द्धमान भगवान "दास" को अब तो कीजे पार ॥वीर०॥

महावीर का शुभ संदेश !

धर्म वही जो सब जीवों को भव से पार लगाता हो ।
कलह द्वेष मात्सर्य भाव को कोसों दूर भगाता हो ॥
जो सब को स्वतंत्र होने का सच्चा मार्ग बताता हो ।
जिसका आश्रय लेकर प्राणी सुख समृद्धि को पाता हो ॥१॥

जहां वर्ण से सदाचार पर अधिक दिया जाता हो जोर ।
तर जाते हों जिसके कारण यमपालादिक अंजनचोर ॥
जहां जाति का गर्व न होवे और न हो थोथा अभिमान ।
वही धर्म है मनुज मात्रको हो जिसमें अधिकार समान ॥२॥

नर नारी पशु पक्षी का हित जिसमें सोचा जाता हो ।
दीन हीन पतितों को भी जो हर्ष सहित अपनाता हो ॥
सत्य अहिंसक जैन धर्म में यह विशालता होती है ।
किन्तु खेद है जैन जाति निज भान भूलकर सोती है ॥३॥

ऐसे व्यापक जैन धर्म से परिचित करदो सब संसार ।
धर्म अशुद्ध नहीं होता है खुला रहे यदि सबको द्वार ॥
धर्म पतित पावन है अपना निश दिन ऐसा गाते हो ।
है लेकिन आश्चर्य आप फिर क्यों इतने सकुचाते हो ॥४॥

प्रेम भाव जग में फैलादो करो सत्य का नित व्यवहार ।
दुरभिमान को त्याग अहिंसक बनो यही जीवन का सार ॥
तंगदिली को त्याग धर्म अपना फैलादो देश बिदेश ।
"दास" ध्यान देना इस पर यह महावीर का शुभसंदेश ॥५॥

महावीर-जयन्ती ।

जब चौतरफा भूमंडल में साम्राज्य पाप का छाया था ।
अज्ञान और पाखण्डों का सारे ही जग में पाया था ॥
सबलों के अत्याचारों से निर्बल दुख लाखों पाते थे ।
अरु मूक पशु तक बेचारे यज्ञों में होमे जाते थे ॥१॥
तब महावीर का जन्म हुवा सब तितर बितर पाखंड हुये ।
सब पाप और अत्याचारों के क्षण भर में थे खंड हुये ॥
जो सारे जग को सुखकर था उनने ऐसा उपदेश दिया ।
अरु बहते हुये अनेकों को अज्ञान धार से पार किया ॥२॥
निष्कंटक मार्ग इधर को है हे पथिक उधर को मत जाओ ।
भगवान वीर के अप्रतिहत शासन की छाया में आओ ॥
अब तक तो भूल रही भारी तुम मारे मारे फिरते थे ।
जाते थे जिधर वहां पर हा ठोकर खा करके गिरते थे ॥३॥
पर भाग्योदय से आज अरे इस सन्मारग को पाया है ।
आओ आओ बैठो भाई यह कैसी शीतल छाया है ॥
यह वीरों का है मार्ग यहाँ आकर जो तेज दिखाते हैं ।
वे कर्म काट कर क्षण भर में बस महावीर हो जाते हैं ॥४॥
जितना करले उतना भरले है पराधीनता लेश नहीं ।
ईश्वर फल देने वाला है यह तो इसमें उपदेश नहीं ॥
उन्नति अवनति है निजाधीन यह जिन शासन में गाया है ।
सच्ची स्वतंत्रता का देखो यह "दास" सुपाठ पढ़ाया है ॥५॥

वीर जयन्ती !

सुलग रही है जब समाज में भीषण भट्टी पापों की।
जला रही ज्वालायें अबला दीनों के संतापों की ॥
तब क्या वीर जयन्तीके व्याख्यानों से होगा कल्याण ?
अथवा दो दिन के उत्सव से होजावेगा क्या उत्थान ॥

× × ×

जब समाजके श्रीमानोंको अपने धनका है अभिमान।
बने पंच परमेश्वर फिर भी नहीं न्यायका है कुछ ज्ञान ॥
चाहे जिसे बना देते हैं पतित और पावन वे लोग।
मगर लड्डुवों के भीतर भी रहता है कुछ अनुपम योग ॥

× × ×

ऐसे समय विचार कीजिये क्या कर्तव्य हमारा है।
उनका अब उद्धार कीजिये जिन्हें न कोई सहारा है ॥
शंखनाद कर शुद्धि मार्ग का उन लोगों को अपनाओ।
सच्चा साहस करके उनको निजसमाज में फिर लाओ ॥

× × ×

जब तक ऐसे कार्य न होंगे क्या उत्सव से होना है।
यह तो बस प्रतिवर्ष हमारा एक निरर्थक रोना है ॥
अब हे युवको! वीर जयंती पर कुछ करके दिखलाओ।
'दास' बहुत हो चुका न अब वह गीत पुराने ही गाओ ॥

वीर-स्तुति ।

हे वीरनाथ भगवन् ! आपत्ति आ रही है ।
नैया हमारी देखो किस ओर जा रही है ॥
जिस ओर देखता हूं झोखे उधर से आते ।
चक्कर लगाये कितने नहिं पार पा रही है ॥ १ ॥
हे वर्द्धमान स्वामिन ! हम थक चुके बहुत हैं ।
धर वेष नित्य नूतन विपदा सता रही है ॥
संसार यातना को हम सह चुके हैं भारी ।
डोंगी प्रभो! हमारी विपरीत जा रही है ॥ २ ॥
कितने सहें कहो अब दुख एक हो तो सहलें ।
सिर पै विभो ! हमारे आपत्ति छा रही है ॥
नहिं एक पूर्ण होती विपदा हमारी स्वामिन !
तब तक तो दूसरी भी सजधज के आ रही है॥३॥
जावें कहाँ कहो जो रक्षा करे हमारी ।
तेज़ी के साथ दुनियां उल्टी ही जा रही है ॥
डूबा प्रभो ! मैं डूबा जल्दी उभार लीजे ।
हे वीर! "दास" की अब यह जान जारही है ॥४॥

चेतावनी।

जैनियो चेतो अब इक बार ॥

तुमको अब तक ख्याल नहीं है,
मार्ग कहां अरु चाल कहां है।
सम्हल जाओ देखो अब भी पग रखना तनिक सम्हार ॥

दशा तुम्हारी होगी कैसी,
रही चाल यदि आगे ऐसी।
बहुत कठिन हो जावेगा पाना फिर अपना द्वार ॥

भाई से भाई मिल जाओ,
चलें साथ हम सब ही आओ।
जानकार जो हम में हैं करलें उनको अगवार ॥

नहीं अगर मानोगे ऐसा,
मन आया तानोगे जैसा।
फल होगा बस यही रहोगे पड़े अरण्य मझार ॥

इसी लिये झगड़ा अब तोड़ो,
बिछुड़े बंधु "दास" सब जोड़ो।
जय बोलो भगवान वीर की होगा बेड़ा पार ॥
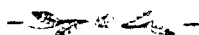
समाज-नैया ।

हे वीर नाथ भगवन् ! अब तो इधर निहारो ।
नैया समाज की यह अब वेग ही सम्हारो ॥

लोगों के कोसने से मल्लाह छोड़ बैठे ।
निश्चिंत हो रहे हैं मुंह हाय मोड़ बैठे ॥ १ ॥

फिर भी अनेक पापी उत्पात कर रहे हैं ।
झिंझरी अनाथ नैया पत्थर से भर रहे हैं ॥

कुछ खेंचतान करके धक्के लगा रहे हैं ।
रक्षक को गालियां दे कोसों भगा रहे हैं ॥ २ ॥

दुखिया समाज भोली वश इनके हो रही है ।
मुंह आंसुओं से अपना दिन रात धो रही है ॥

घड़ियां दुखों की गिन गिन कर स्वांस भर रही है ।
रक्षक नहीं है कोई असहाय मर रही है ॥ ३ ॥

लाखों विपद हिलोरें आती हैं अब बचालो ।
हा डूबती है नैया प्रभु वेग ही सम्हालो ॥

सोये हुये मुसाफिर मल्लाह जाग जाओ ।
अस्तित्व "दास" अपना मिल कर सभी बचाओ ॥४॥
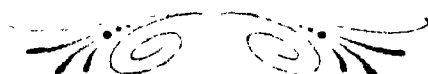
नवयुवकों से !

आशा नवयुवको तुम से है, कुछ करके काम दिखाओगे ।
अज्ञान और अत्याचारों को, जग से मार भगाओगे ॥
हालत जो नहीं सुधारोगे, तो यह समाज मर जावेगी ।
रह सकती अमर अगर अब भी, हस्तावलंब तव पावेगी ॥

× × ×

इन ऐश और आरामों को, तज स्वार्थ त्याग करना होगा ।
सच्चे सुधार के हेतु तुम्हें, हंसते हंसते मरना होगा ॥
इन अच्छे सुन्दर कामों में, तो विघ्न अनेकों आवेंगे ।
पर देख तुम्हें कटिबद्ध यहां से, शीघ्र कूच कर जावेंगे ॥

× × ×

देखो पर ध्यान रहे इतना, जो कुछ भी हो सच्चा करना ।
हो जग में धर्म प्रसार, कार्य ऐसे करने से मत डरना ॥
संगठन बना करके पक्का, सिद्धांत प्रचार करो जग में ।
है "दास" आश ऐसी हो, सब आजावेंगे सच्चे मग में ॥

न गई !

जैनियो! नींद ये अब तक भी तुम्हारी न गई।
वार लाखों सहे पर हाय खुमारी न गई॥
कौन कहता है कि अब आपकी उन्नति होगी।
देख ऐसी दशा जब तुम से सुधारी न गई॥ १॥

× × ×

आपसी द्वेष में निज शक्तियां खोते अफ़सोस।
कोशिशें होके भी जड़ फूट की मारी न गई॥
हाय तैयार हो ले पक्ष का पापी खंजर।
दोनों मिट जायेंगे यह बात बिचारी न गई॥ २॥

× × ×

मैं ही सब कुछ हूं मगर दूसरा अज्ञानी है।
आज तक बासना खोटी ये बिसारी न गई॥
"दास" यह क़ौम रसातल को चली जावेगी।
गिरती हालत ये अगर जल्द सुधारी न गई॥ ३॥

रहे न रहे ।

जैनियो ! शान तुम्हारी रहे रहे न रहे ।
धर्म अरु जाति हमारी रहे रहे न रहे ॥
खूब ही मौज करो भाई तुम्हारे रोवें ।
नाम धन धाम भी उनका रहे रहे न रहे ॥ १ ॥
आज तक क्या हुवा अरु हो रहा आगे होगा ।
क्या तुम्हें इससे है यह दिन रहे रहे न रहे ॥
नीच से नीच भी जब क़ौम बढ़ी जाती हैं ।
सोलो तुम रात ये बाक़ी रहे रहे न रहे ॥ २ ॥
खूब मन मस्त रहो खाओ पिओ सो जाओ ।
ऐश का यह समां बाक़ी रहे रहे न रहे ॥
देश के वेष से तुम को कहो मतलब क्या है ।
सत्व संसार में उसका रहे रहे न रहे ॥ ३ ॥
स्वार्थ पोषण के लिए धार्मिकों को ठुकरालो ।
उनका नामो निशां चाहे रहे रहे न रहे ॥
खुद भी करना नहीं इस धर्म की सेवा देखो ।
"दास" हो नाश या बाक़ी रहे रहे न रहे ॥४॥

सावधान !

सुमति का होगा कब संचार ।

आपस में हम हाय लड़ रहे ।
भाई भाई खूब भिड़ रहे ॥
अपनी हठ पर लोग अड़ रहे,
कैसे हो उद्धार ॥ सुमति० ॥१॥

बिगड़ गई हालत समाज की,
दशा हुई है कोढ़ खाज की ।
कथा कहो क्या कहें आज की,
बहत नयन से धार ॥ सुमति० ॥२॥

पुजते ढोंगी आज यहां हैं ।
सत्यासत्य विवेक कहां हैं ।
हठ ईर्षा छल जहां तहां हैं,
विपुल द्वेष भंडार ॥ सुमति० ॥३॥

आगम शुद्ध मिटा जाता है,
मन में जो जिस के आता है ।
वही गीत निर्भय गाता है,
कैसा अत्याचार ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

रचा किसी ने चर्चा सागर,
दान विचार विषैली गागर ।

'सूर्यप्रकाश' तिमिर का है घर,
रचे त्रिवर्णाचार ॥ सुमति०॥ ५॥

इनने है मिथ्यात्व जगाया,
कैसा क्रूर कलंक लगाया।
धर्म कर्म को दूर भगाया,
नहीं विवेक लगार ॥ सुमति०॥६॥

हमने जिन्हें हितैषी माना,
पंडित अथवा गुरु पहिचाना।
स्वार्थ उन्हीं ने मन में ठाना,
इनके पतित विचार ॥ सुमति०॥७॥

अब तक जैसा धोखा खाया,
फल वैसा समाज ने पाया।
सावधान का अवसर आया,
अब तो होश सम्हार ॥सुमति०॥८॥

शत्रु मित्र को अब पहचानो,
कहां ढोंग है यह भी जानो।
जहां सत्य है उस को मानो,
देखो तनिक विचार ॥सुमति०॥९॥

बहुत होचुका है मन माना,
नहीं ढोंग का रहा ठिकाना।
अब सचेत जैनो होजाना,
"दास" इसी में सार ॥सुमति०॥१०॥

चेतावनी।

जागो जागो नहीं पछताओगे,
गया मौका नहीं फिर पाओगे ॥ जागो जागो० ॥

× × ×

क्यों पड़े हो सुस्त तुमको कुछ खबर अपनी नहीं।
देखते ही देखते स्वाहा न हो जावे कहीं ॥
फिर तो रोओगे अरु चिल्लावोगे ॥ जागो० ॥

× × ×

सच कहो क्या आज तक तुमने विचारा है कभी।
होश या बेहोश हैं या मस्त सोते हैं सभी ॥
अपना नामो निशां खोजाओगे ॥ जागो० ॥

× × ×

घूमते चारों तरफ हैं चोर डाकू आनके।
आपको सुध भी नहीं सोते दुपट्टा तानके ॥
हाथ मलते ही बस रह जाओगे ॥ जागो० ॥

× × ×

अब उठो फिसले हुये यह क्रांतिका युग आगया।
"दास" आंखें खोलकर देखो अंधेरा छागया ॥
हाथ मलते ही फिर रह जाओगे ॥ जागो० ॥
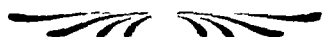
वीरान किया।

जैन वृष बाग़ तेरा किसने है वीरान किया।
फूल फल पत्तियां डाली चबा बेमान किया ॥
बाग़बां जो कि थे उनने ही इसे खाया है।
जागते धर्म की जड़ काटके बेजान किया ॥ १ ॥
और कितना कहें क्या क्या अभी जो चाल चली।
सत्य परचारकों को खूब ही हैरान किया ॥
धर्म जड़ खोद के मट्ठा भरा उस में भारी।
था अमन चैन वहां किसने है सुनसान किया ॥ २ ॥
पाप पत्थर उठा धुन मस्त हो ऐसे फेंके।
कूजती कोकिलों को तान से बेतान किया ॥
देखते देखते कैसा चमन किया जंगल।
वेष रख शेरे बबर स्यार का सा काम किया ॥ ३ ॥
शोक इतने पै अभी सो रहे सोने वाले।
पाप आचार से संसार को अज्ञान किया ॥
"दास" को आश है जल्दी से सम्हल जाओगे।
खण्ड पाखण्ड के कर सत्य का जो ध्यान किया ॥ ४ ॥
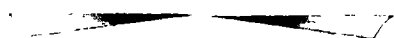
हमारी दशा।

जै-नो जागो अब नैया यह, मंझधार डूबती जाती है।
न-श गया धर्म अरु कर्म सभी, लख करके फटती छाती है॥

० ० ०

जा-गे जो अगर नहीं अब भी, तो सर्व नाश हो जावेगा।
ति-ल भर भी शांति नहीं होगी, आतंक महा तब छावेगा॥

० ० ०

का-रण जब अत्याचार अधिक, भूमंडल में हो जाते हैं।
क-रतूतें लख पापी जनकी, बस धर्म वहीं सो जाते हैं॥

० ० ०

रो-ना अब होगा अगर नहीं, भाई कुछ सोचोगे मन में।
सु-स्ती को छोड चेत जाओ कुछतो फुरती लाओ तन में॥

० ० ०

धा-रक हो जैन धर्म के तो कुछ ऐसे कर्म करो जग में।
र-स्ते में "दास" लगे सब भी आजावें इस सच्चे मग में॥

हमारी दुर्दशा ।

हा हा ! हमारी अब दशा प्रति दिन बिगड़ती जा रही ।
वह ज्ञान ध्यान रहा नहीं कैसी अविद्या छा रही ॥
है प्रेम आपस में नहीं अब स्वार्थ दूना बढ़ गया ।
अविवेक और कुकर्म का हा भूत कैसा चढ़ गया ॥१॥

भाई हमारे मर रहे भूखे हमें चिंता नहीं ।
फिर भी दशा अच्छी रहे कहिये भला सम्भव कहीं ॥
अब दासता ही दूसरों की देखिये स्वीकार है ।
है घृणा देश समाज सेवा से हमें धिक्कार है ॥२॥

इच्छुक उपन्यासादि के ही लोग बहुधा होगये ।
प्राचीन उस इतिहास के ज्ञाता सदा को सो गए ॥
धन बल तथा विद्या सभी से हीन होते जारहे ।
अज्ञान सागर में हमारे बंधु गोते खा रहे ॥३॥

आकर यहां पर दूसरे असहाय हमको जानकर ।
अपने बिछाते जाल हैं अज्ञान पक्षी मान कर ॥
ऐसी दशा आगे रही तो एक दिन वह आयगा ।
हा ! "दास" भारतबर्ष का बस नाम ही मिट जायगा ॥४॥

नींद पूरी हो चुकी ।

अयि जाति जैनी जाग तू अब नींद पूरी हो चुकी ।
इस नींद में धन धर्म जन लाखों करोड़ों खो चुकी ॥
हतवीर्य जैनी हो गये बाकी नहीं कुछ जोश है ।
ठुकराये जाते हैं सदा फिर भी नहीं हा ! होश है ॥१॥
माता बहिन अरु बेटियां कैसी सताई जा रहीं ।
स्लाम होने के लिये धमकी बनाई जा रहीं ॥
टुकड़े किये हैं मूर्तियों के हाय ! अत्याचार है ।
चुपचाप अब जीना तुम्हारा जैनियो बेकार है ॥२॥
अब भी सम्हल जाओ उठो तुम वीर की संतान हो ।
पहिले बचाओ धर्म फिर पीछे बचाओ जान को ॥
हो धर्म का अपमान फिर जीना न जीना एक है ।
इस बात को वे जानते जिनमें कि ज्ञान विवेक है ॥३॥
गायन नहीं यह भाइयो ! पर हार्दिक दुख भाव हैं ।
अन्याइयों द्वारा किये हा मार्मिक यह घाव हैं ॥
अंतिम निवेदन आप से अब होश में आ जाइये ।
फिर से समय उस वीर का अब "दास" जग में लाइये ॥४॥

जिनवाणी माता से !

सदा दिन एक से माता किसी के भी नहीं रहते ।
जगत उत्पाद व्यय ध्रौव्यात्मक है ऋषि यही कहते ॥
गये दिन वह कि जब तेरा जगत भर में उजाला था ।
करोड़ों अज्ञ जीवों को भवोदधि से निकाला था ॥१॥

मगर अब क़ैद करके है रखा माता तुझे ऐसे ।
अरे! बाहर निकलना है कठिन अलमारियों में से ॥
स्वयं उद्धार होने को तरसती है अंधेरे में ।
पड़ी है स्वार्थियों के आज अब तू मात घेरे में ॥२॥

परम तीर्थेश से तेरा हुआ अवतार था माता ।
मुनी गणधर ऋषीश्वर मंत्र गुण तेरे सदा गाता ॥
मगर अब आज हे माता ! दशा तेरी निराली है ।
स्वार्थियों ने बनाई कृति तेरी खूब काली है ॥३॥

सड़ाया अरु गलाया दीमकों से भी खवाया है ।
नहीं परवाह है तेरी अजब स्वारथ समाया है ॥
मगर युवकों के दिल में दर्द अब तेग सताता है ।
हुई है "दास" को आशा ज़माना ठीक आता है ॥४॥

विष्णुकुमार !

जयति जय मुनिवर विष्णुकुमार ॥

हे गुण वात्सल्य के धारी, तज सर्वस्व परम उपकारी ।
बलि की ऐंठ चूर कर डारी, लीना संघ उबार ॥जयति०॥

सप्त शतक मुनि दुख पाते थे, अग्नि मांहि होमे जाते थे ।
मंत्री दुष्ट गीत गाते थे, मद सब कीना क्षार ॥ जयति०॥

जो तुम नहिं उपसर्ग हटाते, क्षण में क्षार ऋषी हो जाते ।
उनका नाम नहीं फिर पाते, होता अत्याचार ॥जयति०॥

जनता ने अति दुख पाया था, मानों छठा काल आया था ।
महा घोर संकट छाया था, लीना वेग उतार ॥ जयति०॥

बलि जब शरण तुम्हारी आया, द्वेष नहीं तुमने था लाया ।
उसको सच्चे मार्ग लगाया, किया शीघ्र उद्धार ॥जयति०॥

पापी का तुम पाप छुड़ाया, वात्सल्य का पाठ पढ़ाया ।
जैनधर्म का मार्ग बढ़ाया, नमें "दास" शत बार ॥जयति०

रक्षाबंधन पर्व ।

पर्व राखी का मनाता आज भारतवर्ष है ।
देखिये चारों तरफ सब के हृदय में हर्ष है ॥
बांध बंधन सूत का कृतकृत्य निज को मानते ।
सत्य है उद्देश्य इसका हम नहीं कुछ जानते ॥१॥

× × ×

बंधुओ ! कैसे हुए उपसर्ग लाखों धर्म पर ।
अरु अकंपन वीर दृढ़ कैसे रहे सत् कर्म पर ॥
दुष्ट बलि ब्राह्मण मगर हा ! दुष्टता करता रहा ।
संघ धारण धैर्य कर नरयज्ञ में जरता रहा ॥२॥

× × ×

आज लों ऐसे अनेकों विघ्न आते ही रहे ।
दुष्ट सज्जन को सनातन से सताते ही रहे ॥
किन्तु विष्णुकुमार से मुनि जो कहीं होते नहीं ।
धर्म खाता पाप अंध समुद्र में गोते वहीं ॥३॥

× × ×

बंधुओ! शिक्षा ग्रहण इससे तनिक तो कीजिये ।
धर्म हित तन मन तथा धन को लगा अब दीजिये ॥
आज संकट की भंवर में जा फँसा यह धर्म है ।
"दास" यह सब जानकर मौजें उड़ाते शर्म है ॥४॥

रक्षा बंधन।

बंधुओ कुछ तो विचारो आज क्यों यह हर्ष है।
देखिये चहरों पै सब के हर्ष का उत्कर्ष है॥
मात मौ मुनियों की रक्षा आज ही थी की गई।
जिनधर्म की रक्षा हुई थी हां उसी का हर्ष है॥१॥
बंधन उसी का बांध कर प्रमुदित सभी हैं हो रहे।
उत्सव यही होता रहा अरु हो रहा प्रति वर्ष है॥
पर व्यर्थ यह उत्सव तुम्हारा भूल है इस हर्ष को।
धन धर्म जन लुटते रहैं तुमको नहीं कुछ तर्स हो॥२॥
कर्तव्य तो था यह कि रख आदर्श विष्णुकुमार को।
जिनधर्म रक्षा कर उठाते इस मही के भार को॥
पर कुछ नहीं तुम ने किया सब देखते सोते रहे।
लूटा तुम्हें सब ने मगर लुट कर वहीं सोते रहे॥३॥
जो कुछ हुवा सो हो चुका अब क्या करें कुछ तो कहो।
जब तक न हो निज पूर्ति तबतक सतत ही उद्यत रहो॥
इच्छा तुम्हारी फिर अहो कहना हमारा हो चुका।
यदि "दास" अब चेते नहीं तो जो बचा वह खोचुका॥४॥
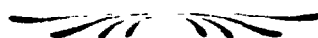
पर्यूषण-पर्व ।

परम पावन पर्व पर्यूषण अहो यह आ गया ।
भाव वस सत्वेषु मैत्री का सभी के छा गया ॥
व्रत नियम उपवास संयम शील में सब लीन हैं ।
दान दे संतुष्ट लाखों कर दिये जो दीन हैं ॥१॥

× × ×

किन्तु प्यारे बंधुओ यह तब सफल कहलायगा ।
स्थितिकरण का भाव मन में आपके जब आयगा ॥
देख कर करतूत साधर्मी बिछुड़ते जा रहे ।
जो बचे हैं हम उन्हें धक्के अनेक लगा रहे ॥२॥

× × ×

खूब हुल्लड़ हो चुका अब तो क्षमा धारण करो ।
डाह हठ मात्सर्य को अपने हृदय से अब हरो ॥
होगया सो होगया अब आप फिर मिल जाइये ।
"दास" शासन वीरका बस विश्व को दिखलाइये ॥३॥
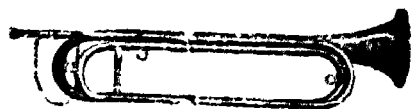
क्षमा-पत्र ।

हमने पूर्ण किया पर्यूषण यथा शक्ति कर व्रत उपवास ।
शास्त्र सभा स्वाध्याय आदिसे हुआ धर्म का किंचित भास ।।
दशलक्षण अरु सोलहकारण तथा सूत्र का सुन व्याख्यान ।
क्रिया पाठ पूजा सामायिक दिया यथोचित चौविध दान ।।१

इसीलिए हैं सरल हो गये भाव हमारे अपने आप ।
क्षमा भाव धारण करने से दूर हुये हैं सब सन्ताप ।।
धर्मकृत्य यह किये आपने भी होंगे सब इसी प्रकार ।
क्षमा परस्पर करें करावें पाया यही धर्म का सार ।। २ ।।

होती हैं मानव से भूलें इसे जानता है संसार ।
शायद हमसे क्षुब्ध हुवा हो हृदय आपका किसी प्रकार ।।
इसीलिये अपराध भुलादें मन बच काया कृत सब आप ।
हमने भी अब क्षमा भाव धारण कर दूर किया संताप ।।३।।

क्या हम आशा करें आप कर लेवेंगे इसको स्वीकार ।
आज उतारें विगत वर्ष की मनो मलिनता का सब भार ।।
और बढ़ावें प्रेम परस्पर, प्रेम क्षमा का है अवतार ।
सुखमय जीवन हो जाता है दास हृदय में इसको धार ।।४।।

क्षम प्रार्थना ।

श्रीमन मनाया पर्व पर्यूषण बड़े आनन्द से ।
वर्णन करूँ मैं क्या कहो अब तुच्छतम इस छंद से ॥

यम नियम व्रत उपवास जप तप शक्ति भर मैंने किये ।
प्याले क्षमाऽमृत के पिलाये अरु स्वयं भी हैं पिये ॥

हां, आपने भी वीर अर्चा अरु दया सत् कर्म में ।
यह पूर्ण दिन होंगे किये बस एक सेवा धर्म में ॥

कुछ दान भी याचक जनों को आपने होंगे दिये ।
थोड़ा बचा होगा अभी अवशिष्ट मेरे भी लिये ॥

है इसलिये यह याचना बस पूर्ण झट कर दीजिये ।
अपराध मन वच काय कृत कृपया क्षमा सब कीजिये ॥

अज्ञान और प्रमाद से अथवा किसी भी भूल से ।
मैंने कषायोत्पन्न की हो वह उखाड़ मूल से ॥

बस और अब मैं याचना कुछ आप से करता नहीं ।
कारण क्षमाऽमृत प्राप्त कर संतुष्टि हो जाती वहीं ॥

अंतिम निवेदन "दास" का पत्रादि नित देते रहें ।
हों इष्ट जन उनसे यथावत जैजिनेंद्रादिक कहें ॥

क्षमा याचना

(१)

श्रीमन् ! मनाया पर्व पर्यूषण सभी ने हर्ष से ।
दिन धर्म में बीते दसों जिन भक्ति के उत्कर्ष से ॥
याचक अयाचक हो गये दानादि नित होते रहे ।
पर "दास" याचक रहगया मुँहसे उसे अब क्या कहे

(२)

फिर भी प्रगट है ही उसे स्वीकार अब कर लीजिये ।
गत वर्ष के अपराध सब मेरे क्षमा कर दीजिये ॥
यह बात जगत प्रसिद्ध है होती सभी से भूल है ।
सज्जन जनों को तो मगर वह शूल सम भी फूल है ॥

(३)

यदि सच कहें तो व्यर्थ ही है याचना यह आप से ।
छाया बचाती है नहीं क्या याचना बिन ताप से ॥
फिर भी विनय मेरी अहो स्वीकार यह कर लीजिये ।
अब "दास" को भूलें नहीं ऐसी कृपा बस कीजिये ॥

नूतन-वर्ष

नू-तनवर्षारंभ हुवा अब आओ सब मिल काम करें ।
त-न मन धन अर्पण कर अपना देश दुखोंका नाम हरें ॥

न-हीं द्वेष का लेश रहे अब मन का मैल निकल जावे ।
ब-न्धु वही नाता जोड़ो यह धर्म उसी पथ पर आवे ॥

र-स वेरस होगया प्रेम का फिर से वह पीले प्याला ।
पा-णो पल पर शुद्ध करें जो हृदय हमारा था काला ॥

रं-क तथा राजा कोई भी धर्म बन्धु अपना होवे ।
भ-रसक करें प्रयत्न कभी निज धर्म हाथ से ना खोवे ॥

हु-ल्लड़बाजी बहुत होचुकी होश सम्हालो अब अपना ।
आ-ओ फिर से हृदय मिलालें "दास" बहुत देखा सपना ॥
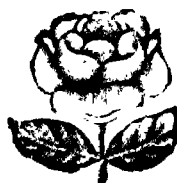
नूतन वर्ष की चाह

सफल हो नूतन वर्ष जिनेश ॥

हिलमिल कर सब प्रेम बढ़ावें, मंगल गान नित्यही गावें ।
न्याय नीति से द्रव्य कमावें, सुखी बने यह देश ॥ सफल० १

पालन करते रहें धर्म को, पावें जग के जीव शर्म को ।
पहिचानें सब सत्य कर्म को, कष्ट रहे न लेश ॥सफल०॥२

एक दूसरे के हित आवें, सबके घर में आनन्द छावें ।
ईति भीति सबही नश जावें, दूर भगें सब क्लेश ॥सफल०॥३

गुणीजनों के गुण को जानें, एक दूसरे को पहिचानें ।
मिले नहीं सारा जग छानें, नाम मात्र को द्वेष ॥सफल०॥४

जैन मार्ग का जग अनुगामी, हो जावे हे अंतरजामी ।
रही "दास" की है हे स्वामी, यही भावना शेष ॥सफल०॥५

दीपावलि

मनाते हैं दीपावलि आज ॥

कहां भाव मैत्री प्रमोद का ।
नाम नहीं था द्वेष क्रोध का ॥
कहां आज आपसमें लड़ते नहीं तनिक भी लाज ॥मनाते०॥१

करुणा का वह भाव कहां है ।
साधर्मी से चाव कहां है ॥
जीव दया से द्वेष ठान कर, बनते हैं सिरनाज ॥मनाते०॥२

आपस में अब प्रेम नहीं है ।
युगल पक्ष की क्षेम नहीं है ॥
इसीलिए मिलजावेंगे हा, मिट्टी में सब साज ॥ मनाते ॥ ३

है समाज क्षयरोगी कब से ।
वर्ष सैंकड़ों बीते अब से ।
इतने पर भी खुजा रही, खेंचातानी की खाज ॥मनाते०॥४

"दास" अगर अब भी मानोगे ।
सत्य बात को पहिचानोगे ॥
अखिल विश्वमें फिर फैलेगा जैनधर्मका राज ॥ मनाते०॥५

दीपावली कैसे मनावें

दीपावली प्रभो ! हम कहिये कहां मनावें ?
जब तक समाज मन्दिर अपना नहीं बनावें ॥

नक़ली मकान मिट्टी के सब सुधार डाले ।
मन के मकान लेकिन कैसे पड़े हैं काले ॥ १ ॥

भाई हमारे हम से दिन रात लड़ रहे हैं ।
अज्ञान के शिखर पर तेज़ी से चढ़ रहे हैं ॥

दीपक बनावटी से होगा प्रकाश कैसे ?
जब अंतरंग सब के मैले पड़े हैं ऐसे ॥ २ ॥

हा प्राण भाइयों से जिनके लिये गये हों ।
मन्दिर में मूर्तियों के टुकड़े किये गये हों ॥

जिनके जलूस उत्सव अबतक रुके पड़े हों ।
वे पर्व यह मनाने कैसे कहो खड़े हों ॥ ३ ॥

भगवन् ! सुबुद्धि अब तो ऐसी प्रदान कीजे ।
अपने समाज के हित जिससे हृदय पसीजे ॥

तब एक तान होकर दीपावली मनावें ।
फिर "दास" वीर प्रभु का संसार को बनावें ॥ ४ ॥

दीपावली या होली ?

दीपावली नहीं यह भाई लेकिन होली आई है।
भारत में जब अतुल अहिंसक क्रांति चतुर्मुख छाई है ॥
जहां देश के दीन जनों पर बढ़ता आता हो अति त्रास।
वहीं मनाया जावे कैसे दीप जला करके उल्लास ॥ १ ॥

भारत के सपूत जेलों में सहते कष्ट अनेक प्रकार।
कहीं जप्तियां कहीं लाठियों के होते हैं खूब प्रहार ॥
ऐसे विकट समय में कैसे दीपावली मनावेंगे।
दीन दुखी होकरके कैसे व्यञ्जन विविध बनावेंगे ॥ २ ॥

मचा हुवा है आज देश में हृदय विदारक हाहाकार।
प्राण हथेली पर ले करके सहते वीर अनेकों मार ॥
है संकल्प मरण जीवन का अंतिम है यह रण संग्राम।
ऐसे समय सजावेंगे हम दीपावलि से कैसे धाम ॥ ३ ॥

अस्त्र सस्त्र संपूर्ण उधर हैं मगर निहत्थे हैं इस ओर।
सत्ता के बल पर चलती है दमन नीति कैसे घन घोर ॥
भारत माता पर विपत्ति की अघट घटा जब छाई है।
कहो "दास" दीपावलि है यह अथवा होली आई है ॥

होली

तब ही सब हिलमिल हम होली मनावेंगे ॥

भीतर समाज के जो पाप और अत्याचार-
होते हैं उन्हें कोस लाखों भगावेंगे ।
नाप तक मिटा देंगे पापी अन्याइयों का-
खोज लगा उनका पता जहां जहां पावेंगे ॥ तब० १ ॥

दीन हीन दुखिया समाज आज करती है-
त्राहि त्राहि उसे घोर संकट से बचावेंगे ।
तब तक है सुख से खाना पीना हराम हमें-
जब तक समाज शांति पथ पर ना पावेंगे ॥ तब० २ ॥

खूब ही वे समझ लेवें उनकी भी खैर नहीं-
धार्मिक मार्ग में जो रोड़ा अटकावेंगे ।
कारण यह वीर का है शासन विशाल इसे-
सबके कल्याण हेतु विश्व को बतावेंगे ॥ तब० ३ ॥

"दास" का निवेदन है उन ही नवयुवकों से-
पंडित और बाबुओं का भेद जो मिटावेंगे ।
आशा सब युवक संघ से भी मैं करता हूं-
ऐसे उच्च कार्य यदि सदस्य कर दिखावेंगे ॥ तब० ४ ॥

होली का कबीर

अररररररर भैया मोर कबीर !

गज़ब किया है जैन जाति ने करके अजब सुधार ।
बड़े बड़े हैरान होगये नहीं पा सके पार ।
भरे पोथा प्रस्तावों से ॥ १ ॥

खड़े हुये हैं धर्म धीर ले करके गोबर थाल ।
गो मूत्रों से घट भर लाये पंडित अपने भाल ।
करेंगे पूजा जिनवर की ॥ २ ॥

यह तो शास्त्र विहित पूजा है लखो त्रिवर्णाचार ।
चर्चासागर पाठ प्रतिष्ठा कहते यही पुकार ।
मूत्र-गोबर हैं द्रव्य पवित्र ॥ ३ ॥

पंडित दल में जितने हैं चर्चा सागर के भक्त ।
गोबर गरमागरम उठा लावें देखो उस वक्त ।
दृश्य कैसा अनुपम लगता है ॥ ४ ॥

गोबर पंथी पंडों को यह होली का त्योहार ।
है अपूर्व पूजा का अवसर करो द्रव्य तैयार ।
न कोई भला बुरा मानेगा ॥ ५ ॥

अवसर मिला त्रिवर्णाचारी पंडित जन को आज ।
करें योनिपूजा सब मिलकर नहीं रखें कुछ लाज ।
आपके शास्त्रों की आज्ञा है ॥ ६ ॥

गोबरादि से पूजा का जो करते व्यर्थ निषेध ।
है शास्त्रीय पवित्र द्रव्य यह नहीं जानते भेद ।
सुधारक बुद्धि गमा बैठे हैं ॥ ७ ॥

अब की बार सभी विद्यार्थी लेकर गोबर मूत्र ।
गोबर पंथी पंडित जन पर डालें पढ़ पढ़ मन्त्र ।
द्रव्य यह प्रिय उनको है खूब ॥ ८ ॥

कहनी थी अनेक बातें पर कहदी हैं दो चार ।
होली का अवसर है कोई बुरा न माने यार ।
वर्ष भर अब नहिं बोलेंगे ॥ ६ ॥

दुखिया देश

देश की विपति हरो भगवान ॥

दीन दशा है आज हमारी, संकट विकट छा रहा भारी ।
भारत भूमि पुकारे सारी, इधर दीजिये ध्यान ॥देश० १॥

हमने दुख अनेकों भोगे । यह सब आप जानते होंगे ।
कहो ध्यान अब कबतक दोगे, अटक रहे हैं प्राण ॥देश०२॥

नहीं अन्न घर में खाने को, तरस रहे दाने दाने को ।
तत्पर हैं सब मरजाने को, सात करोड़ किसान ॥देश० ३

वस्त्र न उनको मिल पाते हैं, अर्ध नग्न ही रह जाते हैं ।
अपनी दुख गाथा गाते हैं, अशुभ कर्म को मान ॥ देश० ४

कहां गया वह समय हमारा । बहती थी अमृत की धारा ।
नष्ट हुवा धन वैभव सारा, बिगड़ गया सब काम ॥ देश० ५

जो सब जगका प्रतिपालक था, अखिल विश्व का संचालक था ।
दीनों के दुख का भालक था, बना वही दुख खान ॥ देश० ६

कहां गई वह सम्पति सारी, देश हुवा है हाय! भिखारी ।
आती हैं विपदायें भारी, भारत को पहिचान ॥ देश० ७

नाथ! सुदिन वह कब आवेंगे, मिलकर सब मंगल गावेंगे ।
दुखी न "दास" यहां पावेंगे, भरा रहे धनधान ॥देश० ८

देश सेवकों से

जयतु जय हिन्द हितैषी वीर ॥

अर्पण तन मन धन सब करके, वीर अहिंसक बाना धरके ।
क्षमा शांति को मन में भरके, निकल पड़े हो धीर ॥जयतु०

तुम स्वतंत्रता व्रत के धारी, कष्ट सहे इसके हित भारी ।
भारत के दृढ़ शील पुजारी, किया रुधिर का नीर ॥जयतु०

आत्म बली पर शस्त्रहीन हो, धन विहीन लेकिन न दीन हो ।
स्वतंत्रता नद में सुलीन हो, पहुंच चुके अब तीर ॥ जयतु०

तुमने जो साहस बतलाया, वह भूमंडल पर है छाया ।
कंपित हुई बृटिश की काया, देख तुम्हारा तीर ॥ जयतु०

है यह उज्वल ध्येय तुम्हारा, हो स्वतंत्र अब भारत प्यारा ।
सुखमय होवे देश हमारा, बहे स्वतंत्र समीर ॥ जयतु०

भारत की आंखों के तारे । देख पराक्रम आज तुम्हारे ।
चकित होगये जगजन सारे, धन्य धन्य रणधीर ॥ जयतु०

भारत के स्वतंत्र करने को, माता के बंधन हरने को ।
तत्पर हुये आज मरने को, बन निरस्वार्थ फकीर ॥जयतु०

आओ आओ स्वागत आओ, भारत माता के गुण गावो ।
"दास" दासता दूर हटाओ, मिलकर दीन अमीर ॥जयतु०

पराधीन भारत

भारत मां के लाल पेट पर पत्थर रख कर सोते हैं ।
नन्हें नन्हें बालक निशदिन भूखे प्यासे रोते हैं ॥
कितने ही तो तड़प तड़प कर प्राण अब बिन खोते हैं ।
इतने पर भी नाथ ! आज अन्याय अनेकों होते हैं ॥ १

चिथड़े नहीं लाज ढकने को ऐसी कंगाली आई ।
चौतरफा से भगवन इस पर विपति घटा कैसी छाई ।
नष्ट भ्रष्ट करदिया गुलामी से सोने का हिन्दुस्तान ।
ठुकरा रहे स्वार्थी इसको जिसका था जग भर में मान ॥२

नहीं हमें अधिकार मनुष्योचित पशु सम हम रहते हैं ।
निज नूतन अन्याय अनर्थों को चुपके से सहते हैं ॥
जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करने को जो भी कहते हैं ।
वे कारागृह के कष्टों को पड़े पड़े हा ! सहते हैं ॥ ३

वस्तु हमारी हमको मिलना कठिन होगया है हे नाथ ।
सत्य बतादे अब तो भगवन ! रहता है तू किसके साथ ॥
हम स्वतंत्र होंगे अथवा यों पराधीन मरजावेंगे ।
बंधनबद्ध देश में मर कर नरक वास ही पायेंगे ॥ ४

इसीलिये हे नाथ निहारो अब तो तनिक सत्य की ओर ।
भारत मां पर आज छा रहे कैसे कैसे संकट घोर ॥
जूझ रहे हैं भारतवासी प्राण हथेली पर लेकर ।
"दास" दासता अब तो टूटेगी वीरों की बलि देकर ॥ ५

बहिनों से

करता हो सम्पूर्ण देश जब बिलख २ कर हाहाकार ।
नित्य नये होते हों जब भारत माता पर अत्याचार ॥
बंधु तुम्हारे भूखे प्यासे और वस्त्र बिन रोते हों ।
पर्ण कुटी में दीन हीन बालक प्राणों को खोते हों ॥ १

तब क्या बहिनों मौज शौक से रहना तुम्हें सुहावेगा ।
अपने देश बंधुओं पर क्या तरस नहीं कुछ आवेगा ॥
तुम हो जननी नर रत्नों की शक्ति प्राप्त है तुम्हें महान ।
किन्तु खेद है अपना अब तक नहीं तनक भी तुमको भान॥२

जिस दिन देश दशा का तुमको पूर्ण ज्ञान होजावेगा ।
उस दिन भारतवर्ष बेड़ियां तोड़ मुक्ति को पावेगा ॥
बड़े बड़े नेता कहते हैं एक बात बस यही पुकार ।
बहिनें रण चण्डी बन उतरेंगी तब होगा बेड़ा पार ॥ ३

इसीलिये सर्वस्व समर्पण करके रखो देश की लाज ।
तब तक नहीं चैन हो तुमको मिले न जब तक पूर्ण स्वराज ॥
मुख्य मुख्य भारत महिलायें आज सह रही कारावास ।
लगी हुई है अखिल हिन्द की एक तुम्हारे ऊपर आस ॥४

सेवा जो तुम से स्वदेश की अधिक नहीं होने पावे ।
फिर भी "भारत हो स्वतंत्र" यदि यह विचार मनमें आवे ।

तब इतना तो करना होगा वस्त्र विदेशी सब छोड़ो ।
बाह्य माल का बहिष्कार करके उससे नाता तोड़ो ॥ ५

बने जहां तक तुम से देशी चीजों का उपयोग करो ।
त्याग अपव्यय फिर से अपने भारत का भंडार भरो ॥

चरखा कातो नित्य तुम्हारे वस्त्र घरों में बन जावें ।
"दास" दासता तोड़ सभी मिल करके तब मंगल गावें ॥ ६
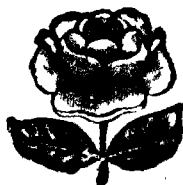
महिलाओं से

माताओ बहिनो अब देखो, तुम भी अपनी नज़र पसार ।
भारत मां के ऊपर होते, निशदिन कैसे अत्याचार ॥ १
कितनी ही भारत ललनायें, भुगत रही हैं कारावास ।
बंधन बद्ध देश है अपना, बढ़ा हुवा है कैसा त्रास ॥ २
बालक वृद्ध तथा महिलाओं, का भी होता है अपमान ।
सत्य बतादो तुमको इससे, होगा क्या अब दुःख भी भान ॥३
सेवा अगर नहीं स्वदेश की, अधिक आपसे हो पावे ।
इतनी बातों पर तो फिर भी, दृष्टि तुम्हारी नित जावे ॥४
कपड़ा पहनो सब स्वदेश का, कता बुना अरु बना हुवा ।
उसे त्यागदो आज शीघ्र ही, चरबी से जो सना हुवा ॥ ५
चरखा कातो नित्य देश का, अगर तुम्हें है कुछ भी ख्याल ।
साठ करोड़ बचेगा रुप्या, जो विदेश जाता प्रति साल ॥ ६
परदेशी से मोह छोड़कर, वस्तु स्वदेशी अपनाओ ।
भारत हो स्वतंत्र अब अपना, यही भावना नित भाओ ॥ ७
सीधा सादा खाना पीना, साधारण होवे शृंगार ।
"दास" देश का होजावेगा, तब तो जल्दी बेड़ा पार ॥८
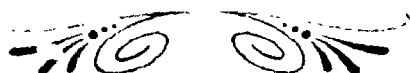
महिला ज्ञान

ज्ञान सब उन्नति का सोपान ॥

इसको प्राप्त करो महिलाओ, अपना समय न व्यर्थ गमाओ।
फिर से भारत स्वर्ग बनाओ, होवे जग में मान ॥ ज्ञान० १

इससे दुख सुख होजाते हैं, संकट सब ही सोजाते हैं।
दुष्कृत भी सब खोजाते हैं, होता निज पर भान ॥ ज्ञान० २

ज्ञान बिना चारित्र धूल है, सब धर्मों में यही मूल है।
इस बिन हित का ध्यान भूल है, करो प्रयत्न महान ॥ ज्ञा० ३

आश्रम-शालाओं में जाओ, वहां धार्मिक ज्ञान बढ़ाओ।
सीता सावित्री पद पाओ, बढ़े तुम्हारा मान ॥ ज्ञान० ४

महिला जो शिक्षित होजावें, तो घर घर में आनन्द छावें।
दिन फिर वही पुरातन आवें, होवें मंगल गान ॥ ज्ञान० ५

बालक को जिसने पाला है, उसकी गोद पाठशाला है।
यदि वह सद्गुण की माला है, निश्चय हो उत्थान ॥ ज्ञान० ६

महिलाओं का शिक्षित होना, सत्य भाव संतति में बोना।
आवश्यक भारत दुख धोना, है कर्तव्य महान ॥ ज्ञान० ७

इसीलिये अब हे महिलाओ, शिक्षा में तत्पर होजाओ।
जग में "दास" मान फिर पाओ, रहे तुम्हारी आन ॥ ज्ञान० ८

उन्नति की आशा

अब आयगा वह दिन कि भारत ज्ञान मय होजायगा ।
होंगें विवेकी वीर अरु अज्ञान तम सो जायगा ।।
यदि लें बना निज ध्येय को सच्चा स्वभावी शांतिमय ।
तो ज्ञान और विवेक की सीमा कभी वह पायगा ।। १ ।।

है एकसा ही नहीं रह सकता जमाना सर्वदा ।
अब देखना यह भी कभी रंगत निराली लायेगा ।।
व्यवहार निश्चल सर्वदा करता रहा जो और से ।
सब नीति न्याय विवेक से जग मौलि यह होजायगा ।।२

उन्नति तथा अवनति मगर सब आपके आधीन है ।
स्वातंत्र्य अपना देश अब तो शीघ्र ही पा जायगा ।।
इसलिये ज्ञानाचार और विवेक से हम काम लें ।
तो "दास" यह निज रूप को बस शीघ्र ही पा जायगा ।।३

स्वागत-गान

आओ आओ हृदय से स्वागत है ।
लख प्रेम अनूपम जागत है ।।

आपकी होगी कृपा कब नित्य इसका ध्यान था ।
सत्य हृदयों में हमारे आपका ही मान था ।।
देख दुख हमारा भागत है ।। आओ० ।।

हार्दिके जो भाव हों वह पूर्ण हो जाते कभी ।
शीघ्र दर्शन आपके हों चाहते थे यह सभी ।।
कैसा प्रेम रगों में राजत है ।। आओ० ।।

आप हैं दिनकर कमल हम योग कैसा मिल गया ।
है यही कारण कि मन ऐसा हमारा खिल गया ।।
कैसा दृश्य मनोहर लागत है ।। आओ० ।।

कर ग्रहण आसन अहो उपकार इतना कीजिये ।
धर्म की सेवा करें हम यह सुशिक्षा दीजिये ।।
बस "दास" यही अब चाहत है ।। आओ० ।।

परिषद

भरा है परिषद का दरबार ॥

देश देश के नेता आकर, अपने शुद्ध विचार बताकर ।
मिथ्याचार कुरीति हटाकर, करें समाज सुधार ॥ भरा० १॥

जो जन आश्रय हीन हो रहे, वे हैं अपना धर्म खो रहे ।
कैसे दुख कर बीज बोरहे, उनका हो उद्धार ॥ भरा० २॥

मन में जिसके जो कुछ आता, उसे जैन वाणी बतलाता ।
जिन साहित्य बिगड़ता जाता, उस पर करो विचार ॥भरा० ३॥

कैसा मन में भेद भाव है, नहीं परस्पर तनिक चाव है ।
अटक रही इसलिये नाव है, "दास" लगाने पार ॥ भरा० ४॥

घूमते हैं

हे नाथ आज तक तो सुध भी नहीं है,
पाया नहीं तनिक भी जग का सहारा ।
जाते जहां हम वहीं यह देखते हैं,
मेरे समान सब ही नर घूमते है ॥ १ ॥

मैं तो गया इसलिये उस राह से था,
कोई अवश्य पथ-दर्शक तो मिलेगा ।
देखा परन्तु जब दृष्टि पसार मैंने,
मेरे समान सब ही नर घूमते हैं ॥ २ ॥

संतोष था पर नहीं मुझको हुवा जो,
सोचा उपाय फिर भी इस ओर जाऊं ।
ऐसा विचार करके फिर भी बढ़ा तो,
मेरे समान सब ही नर घूमते हैं ॥ ३ ॥

जाऊं कहां अब कहो तुम नाथ मेरे,
पाऊं समुन्नति जहाँ नर मैं कहाऊं ।
विश्वास सा जम गया यह "दास" को है,
मेरे समान सब ही नर घूमते हैं ॥ ४ ॥
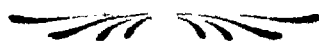
ब्रह्मचर्य

१

है ब्रह्मचर्य ही ऐसा जो, जग जीवन ज्योति जगाता है ।
जो हैं कुरीतियाँ उनको भी वह क्षण में मार भगाता है ॥
बस ब्रह्मचर्य ही है ऐसा जो जग से मोह छुड़ा करके ।
सच्चा स्वरूप प्रगटा करके बस रस्ते ठीक लगाता है ॥

२

है ब्रह्मचर्य ही सदाचार अरु धर्म वही हम सबका है ।
है ब्रह्मचर्य ही निज स्वरूप यह धर्म सदा से गाता है ॥
बस ब्रह्मचर्य उद्धारक है अरु एक वही हितकारी है ।
है और नहीं उस सा जग में जो निज स्वरूप में लाता है ॥

३

की सेठ सुदर्शन की सेवा देवों ने आकर कारण क्या ।
है ब्रह्मचर्य की ही महिमा सेवक सब जग हो जाता है ॥
इसका आनंदमात्र सुनने पढ़ने से कभी नहीं आता ।
जो अनुभव कर देखे उसको आनंद अपूर्व दिखाता है ॥

संसार दशा

सभी संसार झूठा है जगत में कौन है अपना ।
जिसे अपना समझते हो वही है रयन का सपना ॥

नहीं साथी इसी भव का कहें क्या दूसरे भव की ।
अगर अपना भला चाहो सदा जिन नाम को जपना ॥

जगत सब खोज कर डाला सभी स्वारथ के साथी हैं ।
अगर विश्वास करलोगे तो फिर होगा वही सपना ॥

जगत में धर्म लाखों हैं यही सब मान बैठे हैं ।
मगर सद्धर्म ही बस एक है कल्याण कर अपना ॥

कोई कहता है यह अच्छा कोई यह ठीक कहता है ।
हज़ारों जाल फैले हैं समझ कर पैर को रखना ॥

परीक्षा खूब कर देखो तभी हित आपका होगा ।
तपे लाखों अभी तक "दास" अब जिनतप ज़रा तपना ॥

स्वार्थी संसार

जगत में कोई न साथी तेरा, अकेलो खाय रह्यो है फेरा ॥

मात पिता परिवार जनों ने आन तुझे है घेरा ।
सच पूछो जे तबलों साथी जब लग तो ढिंग डेरा ॥जगत०॥

करत सबन हित पाप पुण्य तू खाय अकेला फेरा ।
मूरख कितनी बार जगत की घानी में तोय पेरा ॥जगत०॥

जब लग रह्यो कमाऊ जग में पलंग मखमली तेरा ।
बाद मरे पर घास फूस पर करत तुम्हारो डेरा ॥ जगत०॥

जबलों तन में प्राण तबहि लों कहत तोय तू मेरा ।
निकले प्राण क्षणिक में तब नहिं तू मेरा मैं तेरा ॥ जगत०॥

मोह जाल में फंस रह्यो प्राणी तोय करम ने घेरा ।
परमेष्ठी के "दास" बनो तब मिटहि जगतका फेरा ॥ जगत०॥
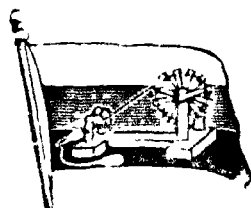
प्रभु प्रार्थना

करुणानिधान भगवान शरण है तेरी ।
मझधार डूबती नाथ नाव अब मेरी ॥

तुम हो प्रभु दीनदयालु पतित पावन हो ।
सुध लीजे दीनानाथ करो मत देरी ॥ करुणा० ॥

तुमने अंजन से अधम अनेकों तारे ।
निष्पक्षपात भगवान हमें क्यों देरी ॥ करुणा० ॥

संसार एक बाजार मुझे हा इसमें ।
बीता अनादि है काल लगाते फेरी ॥ करुणा० ॥

मेरी भी हे भगवान भूल इतनी है ।
मैं हूं ममता में मस्त बनी वह चेरी ॥ करुणा० ॥

सब जान बूझकर फंसा फाँस में उसकी ।
पापिन ने मेरी ज्ञान शक्ति है घेरी ॥ करुणा० ॥

पहिले था ज्ञान विवेक हीन मैं स्वामी ।
खुल गये कान सुन स्याद्वाद की भेरी ॥ करुणा० ॥

अब हे परमेष्ठी ! ध्यान इधर को दीजे ।
कह दीजे कब है शीघ्र "दास" की बेरी ॥ करुणा० ॥
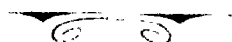
सुमतिनाथ भगवान

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान ॥

दम्भ कषाय कलह कुरीति का, होजावे अवसान ।
चकनाचूर हमारा होवे, सब झूठा अभिमान ॥ सुमति० १

प्राणहीन सम जैन जाति नित, सहती है अपमान ।
अब तो शीघ्र सम्हल जावें हम, हो निज पर का भान ॥ सुमति० २

होते नित्य आक्रमण नूतन, कायर हमको जान ।
अब हो जैन समाज साहसी, रक्खे धर्म की आन ॥ सुमति० ३

आपस की तू तू मैं मैं तज, तजे मूर्खता मान ।
धर्म हेतु हम तन मन धन का, करदें हँस कर दान ॥ सुमति० ४

अत्याचार क्षार होजावें, करें प्रयत्न महान ।
नहीं बुराई धर्म देश की, सुनें हमारे कान ॥ सुमति० ५

जग से प्रेम हमारा होवे, अपने बंधु समान ।
हिलमिल करके "दास" सभी फिर, गावें निजगुण गान ॥
सुमति दो सुमति नाथ भगवान ॥ ६ ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

हे पार्श्वनाथ भगवान अनाथ नाथ ।
हे वीतराग भव लंघन हेतु नाव ॥
मैं हूं अनाथ तुम नाथ अनाथ के हो ।
कीजे अपार भव सागर पार देव ॥ १ ॥
है वीतराग पर निष्ठुर है नहीं तू ।
है कर्म हीन पर दीन दयालु भी है ॥
कीजे कृपाल भव जाल विदीर्ण मेरा ।
तेरा सहाय मुझको बस एक ही है ॥ २ ॥
तारे अनंत दुखिया क्षण में दयाल ।
निष्पक्ष भी सब तुझे कहते परन्तु ॥
मैंने अनंत दुष देव नहीं सहे क्या ।
जो आज भी तुम नहीं मुझ पै कृपाल ॥ ३ ॥
जाऊं कहां कुछ नहीं अब है विवेक ।
अज्ञान मोह ममता मुझको भ्रमाती ॥
हे नाथ शीघ्र वह मार्ग मुझे बतादो ।
हो "दास" पास जिसपै चल देव तेरे ॥ ४ ॥

पक्ष-पात

हो पक्ष पिशाच नाश तेरा, तूने क्या धूम मचादी है।
सारे ही जग में हा तूने पापों की छपरी छादी है॥
यह जैन समाज आज तेरे चुंगल में कैसे आन फंसी।
हा! हृदय टूक होजाता है जब इसकी करते लोग हंसी॥१

सचमुच में हो जब से तेरा, साम्राज्य यहां जम पाया है।
तब ही से कलह अशांति द्वेष लोगों के मन में भाया है॥
इस जैन जाति अरु धर्म हेतु, जिनने तन मन धन दे डाला।
तेरे कारण उपहार उन्हें गाली गलौज की है माला॥ २॥

जिसकी सत्कृतियां देख देख सब देश विदेश खुशी होते।
पर पक्षपात परिपूर्ण हृदय अपने मन ही मन हैं रोते॥
उस धवल कीर्ति पर निज कलंक मंढने का साहस करते हैं।
अपने ही पाप पंक में वे हा! हृदय कोठरी भरते हैं॥३॥

विद्वानों पर टुच्चे फुच्चे कैसी बौछारें करते हैं।
वे दिवानाथ पै धूल फैंक अपने ही मुंह में भरते हैं॥
तेरे ही कारण पक्षपात जिन विम्ब अमान्य कहे जाते।
तेरे ही कारण साधर्म्मी जन कैसे कैसे दुख पाते॥ ४॥

तेरे ही कारण लोगों का मुनि भक्ति भाव में भेद हुवा।
बाबू पंडित दो थोक हुये हा! मूल चने का छेद हुवा॥
होचुकी हद्द है पक्षपात झट कृपा यहां से अब कीजे।
अरदास 'दास' की है भगवन! सद्बुद्धि शीघ्र सबको दीजै॥५

हमारी शिक्षा

है आज शिक्षा ने हमारा नाश कैसा कर दिया।
दासत्व नस नस में हमारी कूट कर है भर दिया॥
यह आधुनिक शिक्षा अगर हितकारिणी होती कहीं।
तो भव्य भारतवर्ष में बेकारियां होती नहीं॥ १॥

विपरीत है यह मार्ग इसको आप सब हैं जानते।
पर खेद है गुरुजन वहीं पर देख कर हित मानते॥
जब पदवियों का पैकरा कुछ वर्ष में वह डाल कर।
बस नौकरी की चाह में फिरता दुखी हो दरबदर॥ २॥

दुर्भाग्य से उसको नहीं तब नौकरी मिलती कहीं।
होकर दुखी तज प्राण तक इस देश में रहता नहीं॥
इस ओर अब हे विज्ञवर कुछ ध्यान देना चाहिये।
शिक्षा हमारी योग्य हो यह "दास" सोचें आइये॥ ३॥

बाल पुष्पांजलि

अर्थात्

बालकोपयोगी उत्तमोत्तम भजन, रोहतक फ्लड, भूकम्पविहार तथा शिक्षाप्रद कविताओंका संग्रह।

सम्पादक व प्रकाशक—

तोशाम निवासी मा० शिवरामसिंह जैन

शिक्षा प्रचारक, रोहतक।

प्रथमवार	वीर नि० सं० २४६०	मूल्य
२०००	सन् १९३४ ई०	एक आना

गयादत्त प्रेस, बाग दीवार देहली में मुद्रित हुई।

रोहतक सैलाब दृश्य (जलबाढ़)

(चाल—या इलाही मिट न जाये दर्देदिल)

देखिए कैसा नजारा होगया, जलमग्न रोहतक हमारा होगया ॥ टेक

है महीना दुखमयी आसोज का साल नव्वे का यह भारी होगया ।

आसमां से रौ पड़ी है टूट कर यह जिला बरबाद सारा होगया ।

एक नया रोहतक जजीरा बन गया हर तरफ आबी किनारा होगया ।

माल जर जो बह गया जल धार में वोह लुटेरों का इजारा होगया ।

बैल गायें हैं किसी के मर गये या कोई बेघर विचारा होगया ।

आज सड़कोंपर हैं किश्ती चल गईदेखिये अचरज अपारा होगया ।

बहुत सी जानें बचाई तैर कर ऐसे वीरों से गुजारा होगया ।

सैकड़ों को जां बचाने के लिये जैन मंदिर भी सहारा होगया ।

बोरियां बहती फिरें गोदाम की लाखों रुपयों का खिसारा होगया ।

तार चिट्ठी रेल रस्ते बन्द हैं पर शहर ये आफत का मारा होगया ।

हैं जबां पर हर जगह अलफाज ये साल बत्तीस का दोबारा होगया ।

कोठी वाले आज बेघर होरहे ये उदय कैसा सितारा होगया ।

जो कि सोते थे पलंगों पर सदा फर्श उनको अब गवांरा होगया ।

कर रहे सबदेव डोसी दौड़ धूप क्या करें दिल पारा २ होगया ।

और भी अफसर सेवामें खड़े जिनको साहिब का इशारा होगया ।

गौर करते थक गये इञ्जीनियर इल्म उनका भी नाकारा होगया ।

आखिरश अंजन मंगाने पड़गये जल निकलने का सहारा होगया ।

फोटू लेने आगये एरोप्लेन पर भी इक खासा नजारा होगया ।

आज हाय किन बुरे एमाल का यह नतीजा आशकारा होगया ।

आचुके साहिब कमिश्नर गवरनर इस लिये जल्दी सुधार होगया ।

जिसने भी कुछ की मदद इस वक्तमें आज उसका नाम प्यारा होगया ।

सह रहे शिवराम सँकट आज सब एकदम तेरा चितारा होगया ॥

ॐ

बाल पुष्पांजलि ।

१– वीर गायन ।

(चाल–मेरा प्यारा भारत देश रहे सदा वसदा)

मेरी आंखों दा सितारा प्यारा वीर जिनराज,
त्रिशला देवी दा दुलारा महावीर सिरताज ॥ टेक ॥

छाया हुआ था जग बीच जब घोर अन्धकार,
लीना सिद्धार्थ घर कुण्डलपुर अवतार ॥ १ ॥ मेरी०

स्वामी बाल ब्रह्मचारी तीस वर्ष दे भये,
सभी राजपाट त्याग प्रभु मुनि होगये ॥ २ ॥ मेरी०

करी दुद्धर तपस्या केवलज्ञान जगिया,
नीकी बानी से संसार का उद्धार कर दिया ॥ ३ ॥ मेरी०

सारे देश में दया दा डंका बजवा दिया,
भूले भटके हुओं को पंथ दिखला दिया ॥ ४ ॥ मेरी०

सब को आतम कल्याण-कारी ज्ञान देगये,
'शिव' अजर अमर अविनाशी होगये ॥ ५ ॥ मेरी०

२–प्रार्थना

(चाल–सुनादे २)

बतादे२ महाराज तू मैंनु शिव डगर बतादे जिनराज बतादे ।। टेक

मिथ्यात्व अंधेरी छाई, हा मारग सूझे नाहीं ।
अब ज्ञान का भानु उदय करके, बतादे ।। १ ।।
मुझे अष्ट करम ने घेरा, धन ज्ञान हरा है मेरा ।
अब इनको दूर हटा करके, बतादे ।। २ ।।
विषयों ने आन सताया, गति चारों ने भरमाया ।
अब इनसे नाथ बचा करके, बतादे ।। ३ ।।
शिवराम चरण का चेरा, प्रभु दुःख हरो तुम मेरा ।
हे दीनानाथ ! कृपा करके, बतादे ।। ४ ।।

३–कन्याओं का निवेदन ।

(चाल–सुनादे सुनादे कृष्णा)

पहनादे पहनादे पहनादे ऐरी मां,
तू ज्ञान गुण गहना पहनादे प्यारी मां ।। टेक

तू शील की साड़ी मंगादे, और सत्य का फ़ीता लगादे ।।१।।
मुझे लाज का जम्पर लादे, और दया की बीड़िंग पादे ।। २।।
तू प्रेम का हार पहनादे, उपदेश के बुन्दे लादे ।।३।। पहना०
कर कंगन दान सजादे, और शिल्पकी चूड़ी मंगादे ।।४।।
शिवराम भजन की माला, ये भूषण सब से आला ।।५।।
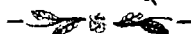
४–चेतावनी (चाल–छई)

प्रभु न चितारे चित्तरे भई, उमर तेरी बीतत रे गई ॥ टेक
बालपन खोयो तैंने बालकन संग खेल,
जवानी बिच विषय रत रे भई ॥ १ ॥
वृद्ध अवस्था आई तब इन्द्रियाँ शिथिल भई,
हाथ पांव गये थक रे भई ॥ २ ॥
तैंने नर भव पाय यूँ गमायो मूढ़ मन रे,
रतन सिन्धु डारे मतरे भई ॥ ३ ॥
हिंसा झूट चोरी औ कुशील अरु तृष्णा,
पाप हैं ये सेवे मतरे भई ॥ ४ ॥
तजके प्रमाद अब भज जिन शिवराम,
जो तू चाहे निज हितरे भई ॥ ५ ॥

५–व्यसन निषेध

(चाल – ननदिया छडदे इश्कदा ख्याल)

चेतनवा तजदे व्यसनदा ख्याल, व्यसन हैं सातों दुखदाई ॥ टेक
द्रोपद नारी पाँडव हारी, राजपाट खो हुए भिखारी ।
भीख जूवे नू मंगवाई ॥ चेतनवा० ॥ १
बक राजा ने मांस जो खाया, राज भ्रष्ट हो अति दुख पाया ।
मांस ने दुर्गति करवाई ॥ चेतनवा० ॥ २
मदिरा पान किया जादोगन, आय सताये मुनि दीपायन ।
द्वारिका छिन में जलवाई ॥ चेतनवा० ॥ ३

चारुदत्त ने वेश्या सेवन, करके खोया अपना सब धन ।
ख़ाक में मिल गई पंडताई ॥ चेतनवा०॥ ४
खेल शिकार ब्रह्मदत्त भूपत, पाई उसने बहुत मुसीबत ।
नरक आखेट ने दिखलाई ॥ चेतनवा० ॥ ५
चोरी के कारण शिवभूती, खोई सारी अपनी विभूति ।
जगत बीच हुई रिसवाई ॥ चेतनवा० ॥ ६
पर कामन है बिष की नागन, रावण नरक गया इस कारण ।
कहे 'शिवराम' तजो भाई ॥ चेतनवा० ॥ ७

६–जैनधर्म का अतीत काल

(चाल—भारत की थी आली शान)

जिनमत का था प्रचार घर घर द्वार किसी दिन ।
मुनि करते थे हज़ार हा ! विहार किसी दिन ॥ टेक
यमपाल से चांडाल भी थे पालते नियम ।
होता था पतितों का यों उद्धार किसी दिन ॥ १
पाते थे दीक्षा जैन की एकदम में सैकड़ों ।
बनते थे विद्यानन्द से आचार्य किसी दिन ॥ २
जिन धर्म रक्षा के लिये निकलंकदेव से ।
करते थे अपनी जान को निसार किसी दिन ॥ ३
भगवान कुन्दकुन्द से थे देश में मुनीश ।
जो रचते थे अध्यात्म समयसार किसी दिन ॥ ४

तजकर नई दुल्हन सभी धन सम्पदा एकदम ।
मुनि बनते थे जम्बू से सुकुमार किसी दिन ॥ ५
सम्राट् चन्द्रगुप्त से होते थे जैन भूप ।
भारत में था सुख शान्ति का विस्तार किसी दिन ॥ ६
वादी समन्तभद्र से अकलंक से ज्ञानी ।
शिवराम थे संसार के सिंगार किसी दिन ॥ ७

७—वन्दे जिनवरम् (ग़ज़ल)

बोलिये मिल कर सभीजन, शब्द वन्दे जिनवरम्,
एक क्षण भी भूलिये मत शब्द वन्दे जिनवरम् ॥ टेक
सब तरह का दुःख हरता और करता सुख का,
इस लिये जपते रहो नित शब्द वन्दे जिनवरम् ॥ १ ॥
पाप अग्नी से हृदय जिसका जला करता है रोज़,
शांति करने को उसे है नीर वन्दे जिनवरम् ॥ २ ॥
सोते उठते बैठते चलते व करते काम कुछ,
पहले जिह्वा पर बुलाओ शब्द वन्दे जिनवरम् ॥ ३ ॥
सर्वसाधक मंत्र यह विश्वास इस पर लाइये,
प्रेम क्षण भर भी न भूलो शब्द वन्दे जिनवरम् ॥ ४ ॥

८—प्रेम प्रदर्शन

प्रेम की धार में बहना नहीं सीखा तो क्या सीखा,
परस्पर प्रेम से रहना नहीं सीखा तो क्या सीखा ॥ टेक

अगम है प्रेम का सागर कठिन है शांति की मंज़िल ।
राह की आफतें सहना नहीं सीखा तो क्या सीखा ॥ १ ॥
तप्त व्याकुल कलेजों में लगा कर शान्ति की मरहम ।
प्रेम के चुटकले कहना नहीं सीखा तो क्या सीखा ॥ २ ॥
भूल कर भूल औरों की समझ कर भूल को अपनी ।
जगत में सिर्फ गुण गहना नहीं सीखा तो क्या सीखा ॥३॥
सदा कर्तव्य रत होकर निरे निर्लेप दुनियां में ।
राग और द्वेष का दहना नहीं सीखा तो क्या सीखा ॥ ४ ॥
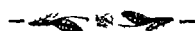
६–खद्दर महत्व

वतन की मुहब्बत दिखाता है खद्दर ।
चलन सादगी का सिखाता है खद्दर ॥ टेक ॥

लगें दाम थोड़े और चलने में पुख्ता ।
सभी के दिलों को लुभाता है खद्दर ॥ १ ॥
लगे मिल के कपड़ों में चरबी औ अंडे ।
अहिंसा का प्रेमी बनाता है खद्दर ॥ २ ॥
चला करके चरखा कता सूत घर का ।
स्वदेशी वही शुद्ध भाता है खद्दर ॥ ३ ॥
ये तासीर इसकी हो गर्मी में ठंडा ।
औ जाड़ों में गरमाई लाता है खद्दर ॥ ४ ॥
लगा करके साबुन ज़रा सा जो धोवो ।
तो बगुले का सा रंग लाता है खद्दर ॥ ५ ॥

बना सूत लाखों भरें पेट औरत ।
जुलाहों की रोज़ी लगाता है खद्दर ॥ ६ ॥
लुटा लाखों रुपये ना पहनो विदेशी ।
ये भारत की दौलत बचाता है खद्दर ॥ ७ ॥
बदन की हो शोभा वतन की हो रक्षा ।
ये तरकीब मक्खन बताता है खद्दर ॥ ८ ॥

१०—पुरुष सम्बोधन

(चाल—सरोंता कहाँ भूल आये)

मेरे प्यारे भाइयो धरम काहे छोड़ दिया ॥ टेक
गुरु जन सेवा शास्त्र पठन नित पात्रदान जिनपूजा ।
गृहस्थी का कर्त्तव्य यही है और काम नहीं दूजा ॥ १
पहिले तात बचन की खातिर राज तजा श्री राम ।
अब हैं बेटे बाप झगड़ते बीच अदालत आम ॥ २
खान पान आचार मिटाया तजा स्वदेशी भेष ।
भक्ति भाव अरु धर्म कर्म का रहा नहीं लवलेश ॥ ३
देश धरम औ जाति हित का कोई तो कीजे काम ।
मानुष देही, उत्तम कुल को मुफ्त न खो शिवराम ॥ ४

११—स्त्री सम्बोधन

(चाल—सरोंता कहाँ भूल आई)

मेरी प्यारी बहिनों धरम काहे छोड़ दिया ॥ टेक

पति सेवा शृंगार था अपना पति दर्शन था पूजा ।
पतिव्रता का धरम यही है और काम नहीं दूजा ॥ १
पहिले पत्नी अपने बल से करती थी बलवान ।
अब हैं इतना क्लेश करती निर्बल बने सुजान ॥ २
पतिव्रता का धरम है बहिनो पति जब घर में आवे ।
गद गद होकर नयन बिछावे बचन से थकन हटावे ॥ ३
पति सेवा कर कुल को दिपाओ मैना सती सम अपना ।
हरी की बहिनो टेर यही है जनम सुधारो अपना ॥ ४

१२-वीर स्तुति

सब मिलके आज जय कहो श्री वीर प्रभु की ।
मस्तक झुका के जय कहो श्री वीर प्रभु की ॥ टेक ॥

बिघनों का नाश होता है लेने से नाम के ।
माला सदा जपते रहो श्री वीर प्रभू की ॥ १ ॥
ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो ।
अकलंक सम बन के करो जय वीर प्रभू की ॥ २ ॥
होकर स्वतंत्र धर्म की रक्षा सदा करो ।
निर्भय बनो अरु जय कहो श्री वीर प्रभू की ॥ ३ ॥
तुझको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है दास ।
उस वाणी पै श्रद्धा करो श्री वीर प्रभू की ॥ ४

१३—वीर प्रार्थना

शरण वीर तेरी हम आये हुए हैं।
तेरे चरणों में शिर झुकाये हुये हैं॥ टेक
कहीं भी जगत में न सुख हमने पाया।
करम शत्रु के हम सताये हुए हैं॥ १
नहीं पर को जाना न आपा पिछाना।
नशा मोह अनादि पिलाये हुये हैं॥ २
तेरे नाम नामी को सुनकर के स्वामी।
हम अर्ज़ी को अपनी ये लाये हुये हैं॥ ३
है 'शिव'पद हमारा सो मिल जाये हमको।
इसी वर की आशा लगाये हुये हैं॥ ४

१४—भजन

महावीर स्वामी मैं क्या चाहता हूं।
फ़क़त आपका आसरा चाहता हूं॥ टेक
मिली तुझको पदवी जो निर्वाण पद की।
कि तुझ जैसा मैं भी हुवा चाहता हूं॥ १
फँसा हूं मैं चक्कर में आवागमन के।
कि अब इस से होना रिहा चाहता हूं॥ २
दया कर दया कर तू मुझ पै दयालू।
क्षमा चाहता हूं क्षमा चाहता हूं॥ ३

बुरा हूं भला हूं अधम हूं कि पापी।
दया कर तू मुझ पै दया चाहता हूं ॥ ४

१५—भजन

(पंजाबी चाल—मेरा रंगदे तिरंगी चोला,)

मेरा जैनधर्म अनमोला, मेरा जैनधर्म अनमोला ॥ टेक
इसी धर्म में वीर जिनेश्वर, मुक्ति का पंथ टटोला ॥ १
इसी धर्म में कुंदकुंद मुनि, शुद्धातम रस घोला ॥ २
इसी धर्म में मानतुंग ने, जेल का फाटक खोला ॥ ३
इसी धर्म में उमास्वामि ने, तत्वार्थ को तोला ॥ ४
इसी में श्रीअकलङ्कदेव ने, बौद्धों को झक झोला ॥ ५
इसी धर्म में टोडरमल ने, प्राण तजे बन भोला ॥ ६
इसी धर्म में मक्खन तुमने, अब पाया यह चोला ॥ ७

१६— ईश विनय

मोरी नैया पार लगादो जगत पिता ॥ टेक
डूब रही मजधार में नैया, तुम बिन नहीं प्रभु कोई खेवैया।
किरपा बाँस लगादो जगत् पिता ॥ १
कर्मों ने आकर मुझको है घेरा, ज्ञान सुधन सब लूटा है मेरा।
इनको दूर हटादो जगत पिता ॥ २
शूकर सिंह नवल कपि तारे, बहुत अधम जब तुमने उभारे।
आवागमन मिटादो जगत पिता ॥ ३
लख चौरासी भटक चुका हूँ, चहुँ गति के दुख भुगत चुका हूं।
'शिव'पुर मार्ग बतादो जगत पिता ॥४

१७-बुड्ढे का विवाह

बूढ़ा छोटीसी छोकरी को ब्याहे लिये जाय शेमर ॥ टेक

गोदी खिलायेगा, बेटी बनायेगा,
नन्हीं सी बाला को ब्याहे लिये जाय ॥ १

हिये का फूटा, दांतों का टूटा,
बोखे से मुंह का वह ब्याहे लिये जाय ।
डाढ़ी मुंडाई, मूछें कटाई,
चेहरे पै उबटन मलाय लिये जाय ॥

सिर को रंगाया, सुरमा जमाया,
मुख पै तो पाउडर लगाय लिये जाय ॥

गरदन है हिलती, आंखें हैं मिलती,
हाथों में कंगना बंधाये लिये जाय ॥
मिस्सी लगाई, मंहधी रचाई,
सिर पै तो सेहरा बंधाये लिये जाय ॥
पोती सी दुल्हन, बाबा सा दुल्हा,
रोती २ छोकरी उड़ाय लिये जाय ॥
ग्यारह की बच्ची पचपन का बच्चा,
रुपयों की थैली झुकाय लिये जाय ॥
देखो यह बूढ़ा बुद्धी का कूड़ा,
करने को विधवा ये ब्याहे लिए जाय ॥

१८—बालक दिन चर्या ।

अरे प्यारे लड़को इधर आओ मिल कर ।
सुनायें जो कुछ अब वह सुन जाओ आकर ।। १
सवेरे ही उठ कर प्रभू नाम लेना ।
माता पितादि को तुम धोक देना ।। २
बाद इसके जाओ तुम जंगल दिशा को ।
मुँह हाथ धोकर अवश्य नहालो ।। ३
मन्दिर में जाकर के दर्शन करो तुम ।
माला जपो धर्म पुस्तक पढ़ो तुम ।। ४
आकर वहां से कुछ खाना खालो ।
फिर पाठशाला को शीघ्र ही चलदो ।। ५
जाकर गुरुजी को प्रणाम करना ।
जगह बैठ अपनी करो लिखना पढ़ना ।। ६
आज्ञा गुरु की सदा मानना तुम ।
नहीं हुक्म उनका कभी टालना तुम ।। ७
छुट्टी मिले जब तो घर आओ सीधे ।
न रस्ते में हरगिज़ लड़ो तुम किसी से ।। ८
घर आके आदर करो तुम सभी का ।
कुछ खाओ खेलो करो काम घर का ।। ९
सोते समय भी प्रभू ध्यान करना ।
यह शिवराम शिक्षा सदा चित्त धरना ।। १०

१६—बालक संकल्प ।

हम बहादुर वीर बनेंगे, भूत ऊत से नहीं डरेंगे ॥ १ ॥
मात पिता की सेवा करेंगे, गुरु की आज्ञा शीश धरेंगे ॥ २ ॥
प्राण किसी के नहीं हरेंगे, सब जीवों पर दया करेंगे ॥ ३ ॥
झूठ वचन को नहीं कहेंगे; सत्य धर्म पर जमे रहेंगे ॥ ४ ॥
किसी को गाली हम नहीं देंगे; बिना दिए कोई चीज न लेंगे ॥ ५
किसी की चुगली नहीं करेंगे; खोटी संगत नित्य तजेंगे ॥ ६
सोडावाटर नहीं पियेंगे; सिगरट हुक्का नहीं छुयेंगे ॥ ७ ॥
नकली फ़ैशन दूर करेंगे; सदा स्वदेशी भेश धरेंगे ॥ ८
ताश अरु चौसर नहीं खेलेंगे; कसरत करेंगे दंड पेलेंगे ६ ॥
देश के संकट दूर करेंगे; जाति के सब दुख हरेंगे ॥ १० ॥
सदा ही अच्छे काम करेंगे; शिवराम शिक्षा चित धरेंगे ॥ ११

२०—बारहखड़ी शिक्षा (चौपई)

कक्का काम बुरे नहीं करना ।
खक्खा खोटी संगत हरना ॥
गग्गा गाली कभी नहीं देना ।
घग्घा घर की बात न कहना ॥
(ङ) से अंग साफ हो तुम्हारा ॥ १
चच्चा चोरी कबहूं न कीजे ।
छच्छा छानके पानी पीजे ।
जज्जा जूआ कोई मत खेलो ।

झञ्झा झूठ कभी मत बोलो ।
(ञ)-से ज्ञान की बातें करना ।।
कभी किसी से नहीं झगड़ना ।।२
टट्टा टहल गुरू की कीजे ।
ठट्ठा ठट्ठे को तज दीजे ।
डड्डा डर है भूत का झूठा ।
ढड्ढा ढंग बदल जग लूटा ।
णण्णा णमो सरस्वती माता ।
यही जगत में है सुख दाता ।
तत्ता तेरी सुनरे प्राणी ।
थत्था थोड़ी है जिन्दगानी ।
दद्दा दान दया चित्त लाओ ।
धद्धा धन से धर्म कमाओ ।
नन्ना नेक चलन तुम रहना ।
कड़वा वचन कभी नहीं कहना ।।
पप्पा पाप करो मत भाई ।
फफ्फा फूट बड़ा दुख दाई ।
बब्बा बड़ों का आदर करना ।
भभ्भा भाई से मत लड़ना ।
मम्मा मात पिता की सेवा ।
जनम जनम में है सुख देवा ।। ८
यय्या यारी सबों से जोड़ो ।

ररा रात का भोजन छोडो ।
लल्ला लड़कपनें में पढ़ना ।
वव्वा विद्या धन में बढ़ना ।
शश्शा शील धरम को धारो ।
षष्षा से षट कर्म संभालो ।
सस्सा सिगरट चुरट न पीजे ।
हाहा हिंसा कभी नहिं कीजे ।
क्ष से क्षमा सभों पर करना ।
त्र से त्रिभुवन नाथ सुमरना ।
ज्ञ से ज्ञान अभ्यास करीजे ।
शिवराम शिक्षा चित्त धरीजे ॥

२१—बालक-धर्म ।

सुनो प्यारे बच्चो ये मन को लगाकर ।
तुम्हारे धरम को हैं कहते सुना कर ॥ १
माता पिता का कहा मानना तुम ।
परम तीर्थ अपना उन्हें जानना तुम ॥ २
तुम्हारे लिये कष्ट कितने उठाते ।
तुम्हें दुःख ज़रा हो न वो चैन पाते ॥ ३
मरे मामता में तुम्हारी हैं जाते ।
खिलाते पिलाते तुम्हें हैं लड़ाते ॥ ४
जो उपकार मा बाप के भूल जाते ।
वह पापी हैं बैठे महा दुःख पाते ॥ ५

ज़रूरी है उनकी सेवा करें हरदम,
गुरु का भी दर्जा नहीं उनसे कम। ६
गुरुजी का दर्जा तो सब से बड़ा है
सभी धर्म ग्रन्थों में ऐसा लिखा है। ७
गुरु के बराबर नहीं कोई हितैषी
वो देते हैं विद्यायें अनमोल कैसी। ८
कि पढ़ने से जिनके है कल्याण होता।
भलाई बुराई का है ज्ञान होता॥ ६
है विद्या गुरुजी से ही सीखी जाती।
परन्तु विनय बिन नहीं विद्या आती॥ १०
न आज्ञा गुरू की कभी टालना तुम।
परम देव अपना उन्हें मानना तुम॥ ११
जु देखो गुरुजी को तुम अपने आते।
तो सब काम छोड़ो खड़े हो विनय से॥ १२
ज़रा आगे बढ़ कर नमस्कार करना।
चलो वायें, पीछे जु हो साथ चलना॥ १३
जो कुछ पूछना हो खड़े हो के पूछो।
नहीं बैठे लेटे कोई बात पूछो॥ १४
खड़े हो गुरू को न तुम घेर करके।
करो बात उनसे न मुंह फेर करके॥ १५
गुरुजी से ऊंचे नहीं बैठना तुम।
नहीं सामने उनके टुक ऐंठना तुम॥ १६

नहीं नाम गुरू का कभी मुख से तुम लो ।
नकल उनकी करना महा पाप समझो ॥ १७

गुरूजी की निन्दा न करना कभी भी ।
करे और कोई न सुनना कभी भी ॥ १८

चलदो वहाँ से या बन्द कान करलो ।
गुरूजी के उपदेश को मन में धरलो ॥ १९

न बदला गुरू का कभी दे सकोगे ।
न माता पिता से उऋण हो सकोगे ॥ २०

सारी उमर भर करो उनकी सेवा ।
शिवराम सेवा से पावोगे मेवा ॥ २१

भूकम्प बिहार जनवरी १९३४

होरी कैसी फाग कैसा काहे का त्योहार है ।
जब कि अपने देश में चहुं ओर हाहाकार है ॥ १

कष्ट देने को हमें आकर मिले सातों ग्रह ।
नष्ट सारा हो गया हा ! आज देश बिहार है ॥ २

क्या गज़ब ढाया हमारे देश में भूकम्प ने ।
हानि जन धन की हुई उसका न कोई शुमार है ॥ ३

राजग्रही चंपापुरी पावापुरी कुंडलपुरी ।
जैन तीर्थों की हुई हानि महा दुखकार है ॥ ४

है मुज़फ़्फ़रपुर नगर मुंगेर की अति दुर्दशा।
उनकी गलियाँ हैं कहाँ अब किस तरफ बाज़ार है॥ ५

हा हज़ारों चल बसे परिवार के परिवार सब।
जो अकेला बच गया वह जीने से बेज़ार है॥ ६

चोट से तन चूर है फिर शोक इष्ट वियोग का।
अन्न का दर्शन नहीं जल का न कुछ आधार है॥ ७

पड़ रही सर्दी कड़ी छप्पर न तन पर वस्त्र है।
जीने से मरना भला जग जग में ये ही विचार है॥ ८

ढेर लाशों का पड़ा कैसा भयानक दृश्य है।
प्रेत भूमी बन रही दुर्गन्ध अपरंपार है॥ ९

देख कर यह दुर्दशा टपके न आंसू आँख से।
उस मनुज में दिल नहीं पत्थर का केवल भार है॥ १०

जन बहुत पहुँचे मदद को कर रहे चंदा सभी।
हैं दुखी इस दुःख से शोकाकुलित संसार है॥ ११

है परीक्षा अब दया की दान की अरु धर्म की।
जन्म उसका है सफल करता जो पर उपकार है॥ १२

शिवराम खुद करते नहीं कहने को लेकिन हैं चतुर।
ऐसे व्यक्ति के लिये धिक्कार बार हज़ार है॥ १३
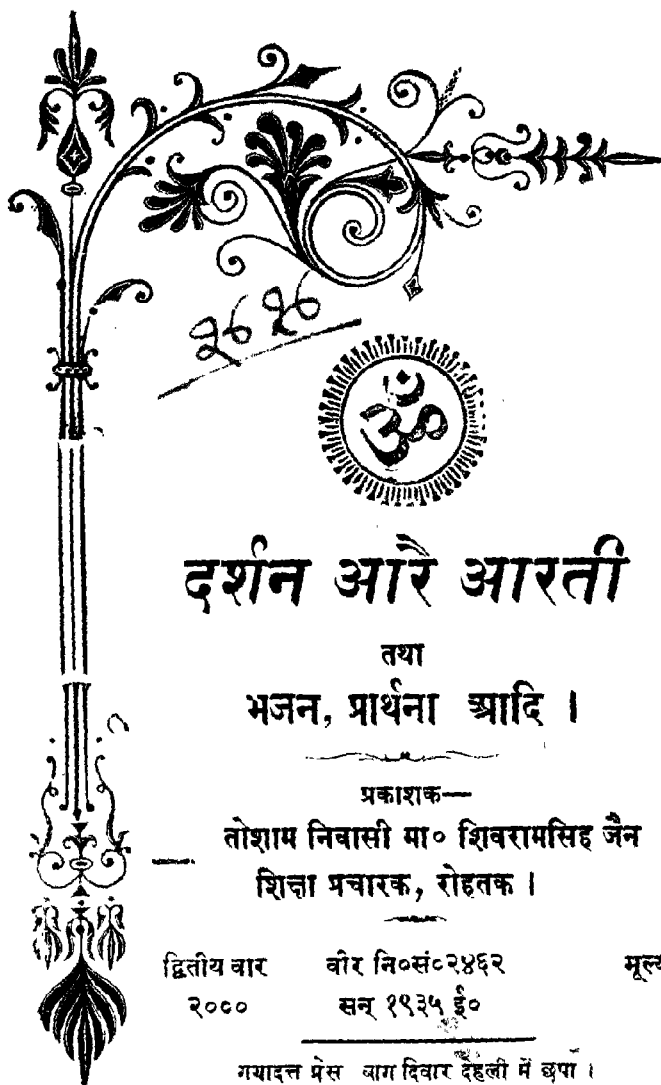
दर्शन और आरती

तथा

भजन, प्रार्थना आदि।

प्रकाशक—
तोशाम निवासी मा० शिवरामसिंह जैन
शिक्षा प्रचारक, रोहतक।

द्वितीय बार वीर नि० सं० २४६२ मूल्य
२००० सन् १९३५ ई०

गयादत्त प्रेस बाग दिवार देहली में छपा।

हमारी पुस्तकें

(१) शिवराम पुष्पापांजलि अंक १ (शिवराम भजन संग्रह प्रथम भाग)—जिसमें जाति सुधार और धर्म प्रचार के जोशीले भजन हैं। मूल्य =)

(२) शिवराम पुष्पांजलि अंक २ (वीर पुष्पांजलि)—इसमें वीर भक्ति के नये जोशीले और उत्तम रसीले भजन हैं। महावीर जयन्ती के अवसर पर खास तौर पर बड़े प्रभावक हैं। दोवारा और बहुत सुन्दर भजन बढ़ाकर छपाई गई है मू० =)॥

(३) शिवराम पुष्पांजलि अंक ३—इस में धर्मप्रचार, जाति सुधार और देशोद्धार के बड़े रसीले भजन हैं। मूल्य =)॥

(४) शिवराम पुष्पांजलि अंक ४—इसमें नये तर्ज के दश लक्षण धर्म तथा स्त्रियोपयोगी और अन्य विषयों के उत्तमोत्तम भजन हैं। मूल्य =)॥

(५) शिवराम पुष्पांजलि अंक ५—इसमें बिल्कुल नई तर्ज के उत्तमोत्तम भजन उपदेशी छपे हैं। मूल्य =)॥

(६) बालपुष्पांजलि—इस पुस्तक में बालकोपयोगी उत्तमोत्तम भजन तथा रोहतक फ्लड भूकम्प बिहार और अन्य शिक्षाप्रद कवितायें प्रकाशित हुई हैं। मल्य -)

(७) शिवविलास—जिसमें विविध अवसरों की विशाल कवितायें और मनोहर भजन हैं शीघ्र छपेगा।

निवेदक—मा० शिवरामसिंह जैन शिक्षा प्रचारक रोहतक

ॐ

दर्शन और आरती

दर्शन पाठ और उसकी विधि

प्रातः काल स्नान कर शुद्ध सादे साफ वस्त्र पहिन चावल, लौंग, बादाम प्राशुक सामग्री लेकर नंगे पाँव दर्शन के लिये मंदिर में जावे, और वहाँ हाथ पाँव धोकर समोशरण में प्रवेश करते समय, जय निःसहि ३ बार उच्चारण करें। फिर भगवान के सामने खड़े होकर नीचे लिखा पाठ पढ़े—

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः
ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

नोट—इस णमोकार मंत्र को ९ या ३ बार पढ़ें।

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

(२४ महाराज के नाम)

१ श्रीआदिनाथजी २ अजितनाथजी ३ संभवनाथजी
४ अभिनन्दननाथजी ५ सुमतिनाथजी ६ पद्मप्रभुजी
७ सुपार्श्वनाथजी ८ चंद्रप्रभुजी ९ पुष्पदंतजी
१० शीतलनाथजी ११ श्रेयांसनाथजी १२ वासुपूज्यजी
१३ विमलनाथजी १४ अनंतनाथजी १५ धर्मनाथजी
१६ शांतिनाथजी १७ कुंथुनाथजी १८ अरनाथजी
१९ मल्लिनाथजी २० मुनिसुव्रतनाथजी २१ नमिनाथजी
२२ नेमिनाथजी २३ पार्श्वनाथजी २४ महावीरस्वामी
जी को नमस्कार हो।

(२० तीर्थङ्करों के नाम)

श्रीसीमंधरजी युगमंधरजी बाहुजी सुबाहुजी
संजातकजी स्वयंप्रभजी वृषभाननजी अनंतवीर्यजी
सौरीप्रभजी विशालकीर्तिजी वज्रधरजी चन्द्राननजी
चन्द्रबाहुजी भुजंगमजी ईश्वरजी नेमीश्वरजी
वीरसेनजी महाभद्रजी देवयशजी अजितवीर्यजी
को नमस्कार हो।

(फिर लाई हुई प्रासुक सामग्री नीचे लिखा छंद पढ़ उपुंजकर चढ़ावे)

(चांवल चढ़ाने का छंद)

तंदुल धवल पवित्र अति नाम सुअक्षत तास।
अक्षत सों प्रभु पूजिये अक्षय गुण परकाश॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो ऽक्षय पद प्राप्तये ऽक्षतान निर्वपा०

(लोंग बादाम का छंद)

जो जैसी करनी करे सो तैसा फल लेय ।
फल पूजा महाराज की निश्चय शिव फल देय ॥
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपा०

(अर्घ चढ़ाने का छंद)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीपसुधूप फलार्घकैः ।
धवल मंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथ महंयजे ॥

ॐ ह्रीं श्री .... जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तपः ज्ञान निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा ।

फिर नीचे लिखा पाठ पढ़ें ।

धन दर्शन देखे भगवंत, आज अंग सुख नयन पवित्र ।
प्रभुजी के चरन कमल को नयो, जनम कृतारथ मेरो भयो ॥
कर जुग जोड़ नवाऊँ शीस, मो अपराध क्षमहु जगदीश ।
यह सेवा फल दीजो मोय, भव भव में प्रभु दरशन होय ॥
हाथ जोड़ कर विनती करूँ, मैं सेवक संसार न रुलूँ ।
नाम लेत सब दुख मिटजाय, मैं तुम दर्शन देखो आय ॥
तुम हो स्वामी महा बलवीर, भव दुख मेटन साहस धीर ।

दोहा—जब चिंतू तब सहस फल लक्खा गमन करेय ।
कोड़ा कोड़ी अनंत फल जब जिनवर दरशेय ॥
तुम जिनवर मोटा धनी तुम्हीं जगत की लाज ।
भव सागर से डूबते तार तार महाराज ॥

दर्शन पाठ संस्कृत

दर्शनं देव देवस्य दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ १॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां साधूनां वन्दनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥ २ ॥
वीतराग मुखं दृष्ट्वा पद्मरागसमप्रभम् ।
नैक जन्म कृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ॥ ३ ॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनम् ।
बोधनं चित्तपद्मस्य समस्तार्थ प्रकाशनम् ॥ ४ ॥
दर्शनं जिनचंद्रस्य सद्धर्म्मामृत वर्षणम् ।
जन्मदाह विनाशाय वर्धनं सुखवारिधेः ॥ ५ ॥
जीवादि तत्व प्रतिपादकाय सम्यक्तमुख्याष्ट गुणार्णवाय ।
प्रशांतरूपाय दिगम्बराय देवाधिदेवाय नमोजिनाय ॥६
चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्म प्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥ ७ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ८ ॥
नहिं त्राता नहिं त्राता नहिं त्राता जगत्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ ९ ॥
जिनेभक्तिर्जिनेभक्ति जिनेभक्ति दिने दिने ।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे ॥ १०॥

जिनधर्म विनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥ ११ ॥
जन्म जन्म कृतं पापं जन्म कोटिमुपार्जितम्
जन्म मृत्यु जरातंकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥ १२ ॥

चैत्य वंदना

सात करोड़ बहत्तर लाख पाताल विषै जिन मंदिर जानो।
मध्यहिलोकमें चारसौ अट्ठावन व्यंतर ज्योतिषके अधिकानो॥
लाख चौरासी हजार सतानवे तेईस ऊरध लोक बखानो।
इक २ में प्रतिमा शत आठ नमों कर जोड़ त्रिकाल सयानो॥

(फिर अष्टांग नमस्कार दण्डवत् करे और ३ परिक्रमा (फेरी) देवे उस समय नीचे लिखी विनती पढ़े)

नोट–कहीं कहीं समोशरण में प्रवेश कर पहिले परिक्रमा देने का विधान है।

विनती बुधजन।

प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरन आयो शरण जी।
यो विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरण जी॥
तुम ना पिछानो आन मानो देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जानो भ्रम गिनो हितकारजी॥
भव विकट बन में कर्म बैरी ज्ञान धन मेरो हरो।
तब इष्ट भूलो भ्रष्ट होय अनिष्ट गति धरतो फिरो॥
धन घड़ी यो धन दिवस योही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो दरश प्रभुजी को लखलयो॥

छवि वीतरागी नग्न मुद्रा दृष्टि नाशा पै धरैं ।
वसु प्रातिहार्य अनंत गुण युत कोटि रवि छविको हरैं ॥
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो उदय रवि आतम भयो ।
मो हर्ष उर ऐसो भयो मनु रंक चिंतामणि लयो ॥
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक वीनऊँ तुव चरण जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारन तरन जी ॥
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नर राज परिजन साथ जी ।
बुध जाचहूं तुव भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथ जी ॥

नोट—फिर भगवान के सन्मुख खड़ा होकर यह विनती पढ़ें ।

विनती अहो जगत गुरु की ।

अहो जगत गुरु देव, सुनियो अरज हमारी ।
तुम हो दीन दयाल, मैं दुखिया संसारी ॥
इस भव बन में वादि, काल अनादि गमायो ।
भ्रमत चहुँगति मांहि, सुख नहीं दुख बहु पायो ॥
कर्म महारिपु जोर, ये कल कान करैं जी ।
मन मानों दुख देय, काहू सों नाहिं डरैं जी ॥
कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नरक दिखावैं ।
सुर नर पशु गति मांहि, बहु विधि नाच नचावैं ॥
प्रभु इनको परसंग, भव भव मांहि बुरोजी ।
जो दुख देखे देव, तुम से नाहिं दुरोजी ॥
एक जनमकी बात, कहि न सकों सुन स्वामी ।
तुम अनंत परजाय, जानत अन्तरजामी ॥

मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे ।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ॥
ज्ञान महानिधि लूट, रंक निबल करि डारो ।
इनही तुम मुझ मांहि, हे जिन अन्तर पारो ॥
पाप पुण्य मिल दोय, पायनि बेड़ी डारी ।
तन कारागृह मांहि, मूँद दियो दुख भारी ॥
इनको नेक बिगार, मैं कछु नांहि कियो जी ।
बिन कारण जगबन्धु, बहुविधि बैर लियोजी ॥
अब आयो तुम पास, सुनके सुजश तुम्हारो ।
नीति निपुण महाराज, कीजो न्याय हमारो ॥
दुष्टन देहु निकार, साधुन को रख लीजे ।
बिनवै भूधरदास, हे प्रभु ढील न कीजे ॥

स्तुति दौलतरामजी

दोहा—सकलज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन ।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरिरज रहस विहीन ॥ १ ॥

पद्धरीछंद—जय वीतराग विज्ञानपूर । जय मोहतिमिर को हरन सूर ।
जय ज्ञान अनंतानंत धार । दृग सुख वीरज मंडित अपार ॥ २ ॥
जय परम शांत मुद्रा समेत । भविजन को निज अनुभूति हेत ।
भविभागन वश जोगे वशाय । तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय ॥३॥
तुम गुण चिंतत निज पर विवेक । प्रगटै विघटै आपद अनेक ।
तुम जग भूषण दूषण वियुक्त । सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥४॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप । परमात्म परम पावन अनूप ।
शुभ अशुभ विभावअभावकीन । स्वाभाविक परिणति मय अछीन ॥५

अष्टादश दोष विमुक्त धीर । स्व चतुष्टय मय राजत गंभीर ।
मुनि गणधरादि सेवत महंत । नव केवल लब्धि रमा धरंत ॥ ६ ॥
तुम शासन सेय अमेय जीव । शिव गये जाहिं जैहैं सदीव ।
भव सागर में दुख छार वारि । तारन को और न आप टारि ॥७॥
यह लखि निज दुख गद हरण काज । तुमही निमित्त कारण इलाज ।
जाने तातें मैं शरण आय । उचरों निज दुख जो चिर लहाय ॥८॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसारि आप । अपनाये विधि फल पुण्य पाप ।
निज को पर को करता पिछान । पर में अनिष्टता इष्ट ठान ॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि । ज्यों मृग मृग तृष्णा जानि वारि ।
तन परिणति में आपो चितारि । कबहुं न अनुभवो स्वपदसार ॥१०
तुमको बिन जाने जो कलेश । पाये सो तुम जानत जिनेश ।
पशुनारक नर सुरगति मंझार । भव धरिधरि मर्यो अनंतबार ॥११
अब काल लब्धि बलतें दयाल । तुम दरशन पाय भयो खुशाल ।
मन शांतभयो मिट सकल द्वंद । चाख्यो स्वातम रसदुख निकंद ॥१२
तातें अब ऐसी करहु नाथ । बिछुरै न कभी तुम चरन साथ ।
तुम गुण गणको नहिं छेव देव । जगतारनको तुव विरदएव ॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय । इन में मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूं आप में आप लीन । सो करो होहुं ज्यों निजाधीन ॥१४॥
मेरे न चाह कछु और ईश । रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारज के कारण सुआप । शिव करहु हरहु ममभोह ताप ॥१५
शशि शांति करन तप हरन हेत । स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय । त्यों तुम अनुभवतें भव नशाय ॥१६॥
त्रिभुवन तिहुं काल मंझार कोय । नहिं तुम बिन निज सुखदायहोय ।
मो उर यह निश्चयभयो आज । दुख जलधि उतारन तुमजिहाज ॥१७॥
दोहा—तुम गुण गण मणि गणपति, गणत न पावहिं पार ।
दौल स्वल्पमति किम कहै, नमहुं त्रियोग सम्हार ॥

बिनती पढ़कर भगवान की प्रतिमा का ध्यान करे और विचारे धन्य इस ध्यान को, धन्य है इस वीतराग मुद्राको, इन्होंने राजपाट तज कर आत्म ध्यान के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त किया । वह दिन कब हो कि मैं भी उनकी तरह आत्म कल्याण करूं इत्यादि विचार कर साष्टांग नमस्कार करे । फिर और वेदियों पर जाकर इसी प्रकार दर्शन करे । अंत में मस्तक नेत्रादि पर यह छंद पढ़कर गंधोदक लगावे ।

(गंधोदक का श्लोक)

निर्मलं निर्मली करणं पावनं पापनाशनं ।
जिन चरणोदकं वंदे चाष्ट कर्म विनाशकं ॥

या

तुम पद पंकजधूलिको जो लावे निज अंग ।
ते निरोग शरीर लहैं छिन में होंय अनंग ॥

फिर बाहर आकर शास्त्र भंडार के सामने खड़ा होकर नीचे लिखे छन्द पढ़ जिनवाणी को नमस्कार करें । और शास्त्र सुने अथवा स्वाध्याय करें ।

शास्त्र स्तुति

वीर हिमाचल तें निकसी गुरु गौतम के मुख कुंड ढरी है ।
मोह महाचल भेद चली जग की जड़ता तप दूर करी है ॥
ज्ञान पयोनिधि मांहि रली बहु भंग तरंगनि सों उछरी है ।
ता शुचिशारद गंगनदी प्रति मैं अंजुलिकर शीश धरी है ॥
या जग मंदिर में अनिवार अज्ञान अँधेर छयो अतिभारी ।
श्री जिनकी धुनिदीपशिखासम जो नहिं होत प्रकाशनहारी ॥

या जग मंदिर में अनिवार अज्ञान अँधेर छयो अतिभारी ।
श्री जिनकी धुनिदीप शिखा सम जो नहिं होत प्रकाशनहारी॥
तो किह भांति पदारथ पांति कहां लहते रहते अविचारी ।
या विधि संत कहें धन हैं धन हैं जिन बैन बड़े उपकारी ॥

दोहा—जा वानी के ज्ञान तें, सूझे लोकालोक ।
सो वानी मस्तक चढ़ो, नित प्रति देतहुँ धोक ॥

नोट— विद्यार्थीगण मन्दिर जी से आकर नाश्ता भोजन खाकर पाठशाला में जावें, गुरुजी को प्रणाम करें और पाठशाला के आरंभ में मिलकर नीचे लिखी प्रार्थना पढ़ें ।

प्रातःकाल की प्रार्थना

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, शिशुगण की अब पूरो आश ।
ज्ञान भानु का उदय करो अब, मिथ्यातम का होय विनाश । १
जीवों की हम करुणा पालें, झूठ वचन नहिं कहें कदा ।
चोरी कबहुं न करि हैं स्वामी, ब्रह्मचर्य्य व्रत रखें सदा ॥ २
तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा, तोष सुधा नित पिया करें ।
भारतवर्ष हमारा प्यारा, इसकी सेवा किया करें ॥ ३
तर्क छंद व्याकरण कला सब, पढ़ें पढ़ावें चित देकर ।
विद्या वृद्धि करें हम निश दिन, गुरुजन की आशिश लेकर। ४
मात पिता की आज्ञा पालें, गुरु की भक्ति धरें उर में ।
रहें सदा हम कर्त्तव्य तत्पर, उन्नति करें निज निजपुर में ॥ ५
दूर भगावें बुरी रीतियां, सुखद रीति का करें प्रचार ।
मेल मिलाप बढ़ावें हम सब धर्मोन्नति का करें विचार ॥ ६

सुख दुख में हम समता धारें रहें अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें वृद्धि करें निज आतमबल ॥ ७
अष्ट कर्म जो दुख हेतु हैं उनके क्षय का करें उपाय ।
नाम आपका जपें निरन्तर विघ्न शोक सब ही टर जांय ॥ ८
हाथ जोड़कर शीस नवावें बालक जन सब खड़े खड़े ।
श्री जिन पूरो आस हमारी चरण शरण में आन पड़े ॥ ९

बालिकाओं की प्रार्थना ।

हे जगबन्धु जगत हित कर्ता, श्री प्रभु हम पर दया करो ।
ज्ञान सुधा वर्षा कर स्वामी, मन के सारे ताप हरो ॥ १ ॥
केवल ज्ञान ज्योति से तुमने, जगत चराचर देख लिया ।
सब के स्वामी अंतरयामी, हमको सद् उपदेश दिया ॥ २ ॥
हम सब नमन करें तव पद को, धन्य २ गुण-आगर हो ।
भव-ज्वाला से जले जीव को, शांति सुधा के सागर हो ॥ ३ ॥
करने से गुण गान तुम्हारा, पाप ताप संताप हटे ।
होकर सकल मनोरथ सिद्धि, हृदय मांहि सत् ज्ञान जगे ॥ ४ ॥
तव शासन पर चलें सदा हम, करुणा कर उपकार करो ।
जैन बालिकायें हम छोटी, दे विद्या उद्धार करो ॥ ५ ॥

प्रत्येक जैन को सुबह शाम के समय सामायिक करना भी आवश्यक है । इस समय सामायिक पाठ तथा आलोचना पाठ पढ़ना चाहिये और णमोकार मन्त्र का जाप तथा आत्म ध्यान करना चाहिये । कम से कम मेरी भावना अवश्य पढ़ना चाहिये ।

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया ।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीनकहो,
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ॥१॥
विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं,
निज-परके हित-साधन में जो निशिदिन तत्पर रहते हैं ।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख-समूह को हरते हैं ॥२॥
रहे सदा सत्सङ्ग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे ।
नहीं सताऊँ किसी जीवको, झूठ कभी नहिं कहा करूँ,
परधन-वनिता❀ पर न लुभाऊँ संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥
अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्षा-भाव धरूँ ।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ,
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ ॥ ४॥
मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणास्रोत बहे ।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे ॥ ५ ॥

❀ स्त्रियाँ 'वनिता' की जगह-'भर्ता' पढ़ें ।

गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा या लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे,
तो भी न्यायमार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे ॥ ७॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे,
पर्वत नदी श्मशान भयानक अटवी से नहिं भय खावे।
रहे अडोल अकंप निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावे ॥ ८ ॥
सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे,
वैर पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे।
घर घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना मनुज-जन्मफल सब पावे ॥९॥
ईति-भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे,
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे॥१०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे।

बनकर सब 'युग-वीर' हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करें,
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख-संकट सहा करें ॥ ११

पूजन का भजन नं० १

महाराज आया हूँ मैं अजि दर्शन काज तिहारे ॥ टेक ॥
मैं अष्ट द्रव्य ले आयो, प्रभू चरणन शीश निवायो ।
तुम चरण कमल चित धारे ॥ महाराज० ॥ १ ॥
हे वीतराग हितकारी, सर्वज्ञ अतुल गुणधारी ।
गणधर यश गावत हारे ॥ महाराज० ॥ २ ॥
जो शरण तिहारी आये, तिन अजर अमर पद पाये ।
अरु लोकालोक निहारे ॥ महाराज० ॥ ३ ॥
"शिव" नाथ कृपा अब कीजे, मम बांह पकर टुक लीजे ।
तुम पतित उधारन हारे ॥ महाराज० ॥ ४ ॥

पूजा समाप्ति का भजन नं० २

चाल गजल

महाराज चरण पूजकर खुशहाल दिल भया,
कहां लों करूँ बयां ज्यों शशि देख तम गया ॥ टेक ॥
शुभ कर्म तो उदय हुआ पाप सब गया ।
अशुभ कर्म छांडि के तमाम होरहा ॥ महाराज० ॥ १ ॥
आया हूँ तुम दरबार धन्य आज मो जिया ।
छवि देखके तेरी प्रभू नैना सफल भया ॥ महाराज० ॥ २

कहता है "जगत" रूप समझ बूझ में लहा ।
जिननाम तेरा है लिया सोइ पार होगया ॥ महाराज० ॥ ३

दर्शन का भजन नं० ३

मोहनी छवि अय प्रभू जी मुझको भाती आपकी ।
ज्ञानकेवल की दशा अब याद आती आपकी ॥ टेक

धन्य हैं ये नेत्र मेरे धन घड़ी शुभ आज दिन ।
हो गये सब दूर संशय देख प्रतिमा आपकी ॥ १
नाशा दृष्टि शांत मुद्रा पद्म आसन मनहरन ।
कर्म आठों देख भागे ध्यान अवस्था आपकी ॥ २
तुमको जो ध्यावे प्रभु जी शुद्ध कर तन मन बचन ।
बेड़ा उसका पार होवे ऐसी महिमा आपकी ॥ ३
दास की अरदास ये है मेटदो आवागमन ।
हो प्रभू 'शिवराम' पै अब मेहरबानी आपकी ॥ ४

गुरु दर्शनभजन नं० ४

चरणन से जी मोरी लागी लगन, लागी लगन ॥ टेक
हाथ कमंडल कोमल पीछी, मिले गुरु जगतारन तरन ॥ १
बन में बसें कसें इंद्रियन को, धारें करुणारूप नगन ॥ २
हित मित बचन धर्म उपदेशी, बरसें मानों मेघ बरन ॥ ३
नयनानंद नमत हैं तिनको, जो नित आतम ध्यान मगन ॥४

जिनवाणी स्तुति नं० ५

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियां ॥ टेक
प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधर जीनै ध्याऊँ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे तिनको शीस नवाऊँ ॥ १ ॥
जाने थाको शरणो लीनो अष्टकर्म क्षय कीनो।
जामन मरन मेट के माता मोक्ष महाफल दीनो ॥ २ ॥
जोनि लाख चौरासी मांही घोर महादुख पायो।
ऐसो महिमा सुनकर माता शरण तिहारी आयो ॥ ३ ॥
बार बार मैं विनऊँ माता मिहर जो मोपै कीजे।
पारसदास की अर्जी सुनकर शरण चरण की दीजे ॥ ४ ॥

भजन दर्शन के बाद का नं० ६

दर्शनसे मन मेरा हुवा मगन हुवा मगन मेरा हुवा मगन ॥टेक
कर्म दवानल शांत भई है, आनन्द बादल छायो गगन ॥१
शिवपुर पहुँचन की उर बांछा, जासों मिटे मेरा आवागमन ॥२
तुम सम ध्यान धरूँ मैं निसदिन, लाग रही है ये ही लगन ॥३
कहै नैन सुख दोउ कर जोरे, हमको रख लो अपनी सरन ॥४

भजन पूजा के बाद नं०७

सफल भई मोरी आज नगरिया।
आज नगरिया, मोरी आज नगरिया। टेक
पार्श्वप्रभू के न्हवन करन को,
भर २ लाऊँ क्षीरोदधि की गगरिया ॥ १

दर्श देख मोरे नैन सफल भये,
चरण परस मोरी सिर की पगरिया ॥ २
भटकत भटकत बहुत दिनन से,
अब पाई शिवपुर की डगरिया ॥ ३
नैनसुक्ख प्रभु के गुन गावें,
मेटो प्रभू भव भव की झगरिया ॥ ४

भजन नं० ८

मेरी बार क्यों ढील करी ।
प्रभ मेरी बार क्यों ढील करी ॥ टेक
सूली से सिंहासन कीनो, सेठ सुदर्शन विपति हरी ॥ १
सीता सती अगनि में बैठी, पावक नीर कियो सगरी ॥ २
श्रीपाल सागर में डारो, राज भोग के मुकति बरी ॥ ३
धन्ना बापी परो निकारो, ताघर ऋद्धि अनेक भरी ॥ ४
वारिषेण पै खड्ग चलायो, फूल माल कीनी सुथरी ॥ ५
सांप करो फूलन की माला, सोमा पै तुम दया धरी ॥ ६
'द्यानत' तो कछु चाहत नांही, कर बैराग दशा हमरी ॥ ७

भजन जिन दर्शन नं० ६

हम आये हैं दर्शन काज मिटाओ प्रभु बिथा हमारी जी ॥ टेक
सेठ सुदर्शन को प्रण राख्यो शूली सेज समान ।
अगन से सीता उभारी जी ॥ १
नाग नागनी जरत उबारे, मंत्र दियो नवकार ।

मरन गति उनकी सुधारी जी ।। २

त्रिभुवन नाथ सुनो जश ऐसो, अब आयो तुम पास ।
करो न प्रभु मेरी गुज़ारी जी ।। ३

तरस तरस प्रभु दरशन पायो, जनम सफल भयो आज ।
लखी जो मुद्रा तिहारी जी ।। ४

हम चाहत प्रभु चरन शरण गत, मांगता हूँ तज लाज ।
सुनो जी नयनानंद की पुकारी जी ।। ५

आरती संग्रह

(सायंकाल दीप धूप लेकर आरती करें)

दीपक छन्द- ध्वस्तोऽद्यमान्धी कृत विश्व विश्वान
मोहान्धकार प्रतिघातदीपाम् ।
दीपैः कनत्कांचन भाजनस्थै ।
जिनेन्द्र सिद्धांत यतीन यजेऽहं ।।

आपा पर दीखे सकल निशि में दीपक जोत ।
दीपक सों प्रभ पूजिये निर्मल ज्ञान उद्योत ।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व०

दुष्टाष्ट कर्मेन्धन पुष्ट जाल, संधूप ने भासुर धूमकेतून ।
धूपैर्विधूतान्य सुगंध गंधे, जिनेन्द्र सिद्धांत यतीन यजेऽहं ।।

पावक दहे सुगंध को धूप कहावे सोय ।
खेऊं धूप जिनेश को, कर्म दहन क्षय होय ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्योऽष्टकर्म विध्वंसनाय धूप निर्वपामि०

(जो संस्कृत श्लोक नहीं पढ़ सकते वे भाषा के ही पढ़लें)

आरती प्रारंभ का भजन ।

सांझ समय जिन बन्दो, भविजन सांझ समय जिन बन्दो
बन्दत होत अनन्दो, भविजन सांझ समय जिन बन्दो ॥टेक
लेकर दीपक आगे बालू, खेऊँ धूप सुगन्धो ॥ भविजन०
रतन दीप सों करूँ आरती, बाजत ताल मृदङ्गो ॥ भवि०
कहे जिन दास समझ जिय अपनो, सेवो नित्य जिनन्दो ॥भ०

पञ्चपरमेष्ठी की आरती ।

इहि विधि मङ्गल आरती कीजे, पञ्च परमपद भज सुख लीजे॥टेक
पहिली आरती श्री जिनराजा, भव जल पार उतार जिहाजा ॥१
दूसरि आरति सिद्धन केरी, सुमरण करत मिटै भव फेरी ॥२
तीजी आरति सूर मुनिंदा, जनम मरन दुख दूर करिंदा ॥३
चौथी आरति श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया ॥४
पांचमि आरति साधु तुम्हारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी ५
छट्टी ग्यारह प्रतिमाधारी, श्रावक बन्दो आनन्दकारी ॥६
सातमि आरति श्री जिनवाणी, 'द्यानत' स्वर्ग मुकति सुखदानी७

"२४ महाराज की आरति"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व की ।
जय महाराजकी श्रीजिनराज की दीनदयालकी आरति कीजे॥१
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांसा, वासुपूज्य महाराज की ।
जय महाराज की श्रीजिनराज की दीनदयाल की आरतिकीजे॥२
विमल अनंत धरम हितकारी शांतिनाथ महाराज की ॥ जय ३

कुंथनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत नमीनाथ महाराज की ।। जय ४
नेमिनाथ प्रभु पार्श्व जिनेश्वर, वर्द्धमान महाराजकी ।। जय ५
इन चौबीसों की आरति करके, आवागमन निवार की ।। जय ६

"जिनेन्द्र पञ्चकल्याण की आरति"

पहिली आरति गर्भ सुधन की, पंद्रह मास रतन वर्षन की ।
आरति कीजै जिनराज चरन जै जै गुण छयालीस अट्ठारह दोष हरन की ।। १

दूसरि आरति जनमकल्याणक, मतिश्रुतिअवधित्रयज्ञान फुरनकी
आरति कीजै जिनराज चरण जै जै गुण छयालीस अट्ठारह दोष हरन की ।। २

तीसरि आरति तपोकरन की, चार घातिया करमदलन की ।
आरति कीजै जिनराज चरन० ।। ३

चौथी केवल ज्ञान फुरन की, समवसरन धनपति रचन की ।
आरति कीजै जिनराज चरन० ।। ४

पांचमि आरति मोक्ष रमणकी, पञ्चकल्याणक तीन रतन की ।
आरति कीजै जिनराज चरन० ।। ५

पूजा करके आरति कीजे, नर भव जन्म सफल कर लीजे ।
आरति कीजे जिनराज चरन० ।। ६ ।।

जो यह आरति पढ़ें पढ़ावें, सो नर मन वांछित फल पावें ।
आरति कीजै जिनराज चरन जै जै गुण छयालीस अट्ठारह दोष हरन की ।। ७ ।।

श्री जिनराज की आरती ।

आरति श्रीजिनराज तिहारी, करमदलन संतन हितकारी ॥टेक
सुर नर असुर करत तुम सेवा, तुमही सब देवन के देवा ॥१
पंच महाव्रत दुद्धर धारे, राग द्वेष परिणाम विड़ारे ॥ २ ॥
भव भयभीत सरन जे आये, ते परमारथ पंथ लगाये ॥ ३ ॥
जो तुम नाम जपै मन मांहीं, जनम मरन भय ताको नाहीं॥ ४
समवसरण सम्पूरन शोभा, जीते क्रोध मान छल लोभा ॥ ५
तुम गुण हम कैसे करि गावें, गणधर कहत पार नहिं पावें ॥६
करुणासागर करुणा कीजे, 'द्यानत' सेवक को सुख दीजै॥ ७

श्री पार्श्वनाथ की आरती ।

नोट—यह आरति जैसी मुखाग्र याद थी वैसी ही लिखी गई ! इसका कहीं दूसरा पाठ देखने में नहीं आया ।

आरति करूं श्रीपार्श्व प्रभु की जनम बनारस हुवा उनका ।
घननऊँ २ बाजे जी घंटा ऐसो ध्यान धरूं जिनवर का ॥ टेक
जब कमठासुर कोप किये तब श्याम घटा बीजल चमका ।
गरड़ २ जल मूसलधारे तड़क २ कर गज सपका ॥ १ ॥
थरहर आसन कम्पो सुर का धरनेंदर का चित्त चमका ।
फन हज़ार विस्तार किये तब झमक जाय प्रभु तन ढँका ॥२
जब पद्मावति तन सिंगारे तथेई नाचें लें फिरका ।
धुपझुप २ पायल बाजे घुमक २ घुंघरू घनका ॥ ३ ॥
तननम २ ताल किये प्रभु भुक झुं मुं करतें विनका ।
ऐरन वैरन के भवतारे झालड़ की झालड़ झँका ॥ ४ ॥

झड़ं झड़ं पर नौबत बाजें दुंदुभि २ के विनका।
इस विधि गीत संगीत सुनावैं गंधर्व गान करैं प्रभु का ॥ ५
सुर नर इंद्र सब जै जै उचरैं जनम सफल हुआ उनका।
अमृत उदय जिन हर्ष भयो मुख क्या विस्तार करें प्रभुका ॥ ६

श्री पार्श्वनाथजी की दूसरी आरती

(चाल—जयदीश हरे)

जय पारसदेवा प्रभु जय पारसदेवा।
सुर नर मुनि जन तव चरनन की करते नित सेवा। टेक
पोष बदी ग्यारसि काशी में आनंद अति भारी।
अश्वसेन घर वामा के उर लीनो अवतारी ॥१॥ जय
श्यामवरण नव हाथ काय पग उरग लखन सोहे।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण सबका मन मोहे ॥२॥ जय
जलते देखे नाग नागिनी पढ़ नवकार दिया।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भान प्रकाश किया ॥३॥ जय
मात पिता तुम स्वामी मेरे आस करूँ किसकी।
तुम बिन दूजा और न कोई शरण गहूं जिसकी ॥४॥ जय
तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता त्रिभुवन के स्वामी ॥५॥ जय
दीनबंधु दुखहरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे।
दो शिवपुर का वास दास यह द्वार खड़ा तेरे ॥६॥ जय
विषय विकार मिटाओ मन का अर्ज सुनो दाता।
जियालाल कर जोड़ प्रभू के चरणों चित लाता ॥७॥ जय

आरती महावीर स्वामी की

(तर्ज— जय जगदीश हरे)

जय सन्मति देवा प्रभु जय सन्मति देवा ।
वीर महा अति वीर प्रभुजी वर्द्धमान देवा ॥ टेक

त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु सुर नर हरषाये ।
पन्द्रह मास रतन कुण्डलपुर धनपति बरषाये ॥ १ ॥ जय०
शुक्ल त्रयोदशी चैत्र मास की आनन्द करतारी ।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव ठाठ रचे भारी ॥ २ ॥ जय०
तीस वर्ष तक रहे गेह में बाल ब्रह्मचारी ।
राज त्याग कर भर जोबन में मुनि दीक्षा धारी ॥३॥ जय०
द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया ।
झलके लोकालोक ज्ञान में सुख भरपूर लिया ॥४॥ जय०
कातिक श्याम अमावस के दिन जाकर मोक्ष बसे ।
पर्व दिवाली चला तभी से घर घर दीप चसे ॥ ५ ॥ जय०
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी शिव मग परकाशी ।
हरि हर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो जयर अविनाशी ॥६॥ जय०
दीन दयाला जग प्रतिपाला सुर नर नाथ जजैं ।
सुमरत विघन टरैं इक छिन में पातक दूर भजैं ॥ ७ ॥ जय०
चोर भील चाण्डाल उभारे भव दुख हरण तुही ।
पतित जान शिवराम उभारो हे जिन शरण गही ॥८॥ जय०

आरती श्रीचंद्रप्रभू की ।

(चाल—प्रभू जय जगदीश हरे)

जय जय जिन चन्दा, प्रभु जय २ जिन चन्दा ।
चन्द्र जिनन्दा आनंद कन्दा, हर २ भव फन्दा ॥ टेक

चंद्रपुरी में जन्म लिया जिन, चन्द्रप्रभू नामी ।
चन्द्र चिन्ह चरणों में सोहे, चन्द्रवरण स्वामी ॥ १ ॥जय०

धन्य सुलच्मणा देवी माता, जिस उर आन बसे ।
महासेन कुल नभ में जगमग, जगमग जोत लसे ॥२॥जय०

बाल्य काल की लीला अद्भुत सुर नर मन भाई ।
न्याय नीति से राज्य कियो चिर, सब को सुखदाई ॥३॥जय०

कारण पाय भये वैरागी, सब जग त्याग दिया ।
भव तन भोग समझ क्षणभंगुर, संयम धार लिया ॥४॥ जय०

दुद्धर तप कर कर्म निवारे, केवल ज्ञान जगा ।
लोकालोक चराचर युगपत, दर्पणवत झलका ॥५॥ जय०

अद्भुत सुंदर समवशरण, तब धनपति देव रचा ।
द्वादश सभा तहाँ अति सोहे, जिन उपदेश दिया ॥६॥ जय०

जीव अनंत भवोदधि तारे, तरि करि मोक्ष गये ।
सिद्ध, शुद्ध, परमात्म, पूरण, परमानन्द भये ॥६॥ जय०

ये आदर्श तिहारा प्यारा, जो नर नित ध्यावें ।
अजर अमर शिवराम परम पद, सो निश्चय पावें ॥७॥जय०

आरती शीतलनाथ की।

[ला० अमीरसिंह रोहतक कृत]

(चाल—जय जगदीश हरे)

जय शीतल देवा प्रभु जय शीतल देवा।
तारण तरण जगत के स्वामी पार करो खेवा॥ टेक
गर्भ समय इन्द्रों ने मिलकर जय जयकार करे।
पन्द्रह मास रतन भद्रका में आनँद से बरसे॥ १॥
चैत वदी आठम को प्रभुजी गर्भ में तुम आये।
छपन कुमारी गर्भ शोधना करती हर्षाये॥ २॥
जनम लिय माह वदि बारस को सुरग से इन्द्र आये।
दृढ़रथ राजा नंदादेवी के दर्शन पाये॥ ३॥
इँद्र और इँद्रानी तुमको पाण्डुक बन लाये।
क्षीरोदधि से न्हवन किया फिर सीधे घर आये॥ ४॥
राज छोड़ माह वदि बारस को जिन दीक्षा लीनी।
पञ्चमुष्टि से लोच किया नति सिद्धनकी कीनी॥ ५॥
कर्म खपा कर पोह वदि चौदस का दिन जब आया।
भवि जीवन के तारण कारण केवलज्ञान पाया॥ ६॥
दे उपदेश भव्यजन तुमने जग से पार किये।
शुक्लपक्ष आसौज की आठम को प्रभु मुक्त गये॥७॥
शीतलनाथ की शरणागत में ए. एस. तु आना।
जग से पार करें नहिं तुम को देव कोई दूजा॥८॥

आरती श्री शान्तिनाथजी की

(चाल—जय जगदीश हरे)

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनवर देवा।
शान्त बिधाता शिव सुखदाता शान्तिनाथ देवा॥ टेक

ऐरा देवी धन्य जगत में जिस उर आन बसे।
विश्वसेन कुल नभ में मानों पूनमचन्द्र लसे ॥ १ ॥
कृष्ण चतुर्दशी जेठ मास की आनन्द करतारी।
हथनापुर में जन्म महोत्सव ठाठ रचे भारी ॥ २ ॥
बाल्यकाल की लीला अद्भुत सुर नर मन भाई।
न्याय नीति से राज्य कियो चिर सबको सुखदाई ॥ ३ ॥
पंचम चक्री काम द्वादशम सोलम तीर्थंकर।
त्रय पदधारी तुमहि मुरारि ब्रह्मा शिवशंकर ॥ ४ ॥
भवतन भोग समझ क्षण भंगुर मुनि व्रत धार लिये।
षट् खण्ड नवनिधि रतन चतुर्दश तृणवत् छार दिये ॥ ५ ॥
दुद्धर तप कर करम निवारे केवल ज्ञान लहा।
दे उपदेश भविक जन बोधे ये उपकार महा ॥ ६ ॥
दीनदयाला जग प्रतिपाला सुर नर नाथ जजें।
सुमरत विघन टरत इक छिन में पातक दूर भजें ॥ ७ ॥
जीव अनन्त भवोदधितारे तरि "शिव" नगर गये।
सिद्ध शुद्ध परमातम पूरण परमानन्द भये ॥ ८ ॥

आरती मुनिराज की।

आरती कीजे श्रीमुनिराजकी, अधमउधारनआतम काज की ॥टेक
जा लक्ष्मी के सब अभिलाखी, सो साधन कर दमवत नाखी ॥ १
सब जग जीत लियो जिन नारी, सो साधन नागनिवत छारी ॥ २
विषयन सब जग जिय बश कीने, ते साधन विषवत तज दीने ॥ ३
भुवि को राज चहत सब प्राणी, जीरण तृणवत त्यागत ध्यानी ॥ ४
शत्रु मित्र दुख सुख सम मानै। लाभ अलाभ बराबर जानै ॥ ५
छहों काय पीहर व्रत धारें, सब को आप समान निहारें ॥ ६
इह आरती पढ़ै जो गावै, 'द्यानत' सुरग मुकति सुख पावै ॥ ७

"जैनमित्र" के इसी अंक का कोड़पत्र

जयवीर

जैन कीर्तन

लेखक व प्रकाशक—

गायनगोष्ठी और भोला समाज नाटक के रचयिता

चन्द्रसेन जैन वैद्य-इटावा

दशलाक्षण पर्व में अमूल्य वितरित

वीर संवत् २४६२

प्रिंटर-पं० वेदनिधि मिश्र बी. एल. प्रेस इटावा में छपा।

* जयवीर *

(१)

तर्ज—कोई हंस रहा है कोई रो रहा है ।

जपो ओ३म् तत्सत् कहो ओ३म् तत्सत् ॥टेक॥

अरहन्त सिद्ध आचारज गाया,

उवझाय साधु सभी मनभाया,

यही पंच परमेष्ठि है ओ३म् तत्सत् ।

जपो ओ३म् तत्सत् कहो ओ३म् तत्सत् ॥

(२)

तर्ज—राधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे कृष्णा ।

भजो वीर महावीर वर्द्धमान सन्मति ॥ टेक ॥

त्रिशला के छैया भव फंद के कटैया वीर ।

लाज के रखैया जगत्पति सन्मति ॥ १ ॥

मग मोक्ष के बतैया जिनवाणी के सुनैया वीर ।

पार के लगैया भवोदधि सन्मति ॥ २ ॥

सब जीवों के रखैया समभाव के करैया वीर ।

मोरे मन आन बसो शिव पति सन्मति ॥ ३ ॥

(३)

तर्ज़---काली कमली वाले तुम पर लाखों सलाम ।

सब जीवन के हितकारी काटो कर्म जंजीर;
नमो अति वीर नमो महावीर ॥ टेक ॥
दीन बन्धु दीनन हितकारी,
सब जीवों में समता कारी,
तुमरे नाम लिये दुख भाजें आन परे जब भीर ।
नमो अति वीर नमो महावीर ॥ १ ॥
ऊंच नीच ना भेद बनाया,
सबको सन्मारग दिखलाया,
अहिंसा धर्म बताया जीवन की लखि पीर ।
नमो अति वीर नमो महावीर ॥ २ ॥
सब जीवन सुख शान्ति विधायक,
पाप दुःख दारिद्र विनाशक,
सन्मति वर्द्धमान जिन कहिये और कहो महावीर ।
नमो अति वीर नमो महावीर ॥ ३ ॥

(४)

तर्ज—गांधी जी हिन्द का रहनुमा होगया।

महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ टेक ॥
जगत सो रहा था जगाया था किसने ?
भटकतों को रस्ता बताया था किसने ?
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ १ ॥
अहिंसा का डंका बजाया था किसने ?
दया धर्म सबको सिखाया था किसने ?
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ २ ॥
पतितों को ऊपर उठाया था किसने ?
सभी को बराबर बनाया था किसने ?
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ३ ॥
सुधा शान्ति सुख का पिलाया था किसने ?
छिपा आत्म बल निधि बताया था किसने ?
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ४ ॥
मतों का अंधेरा मिटाया था किसने ?
अनेकान्त सूरज उगाया था किसने ?
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ५ ॥

(५)

तर्ज:—पीछे यारो कदम को हटाना नहीं।

महावीर नमों अतिवीर नमों।
सन्मति जिन वर्द्धमान नमों ॥ टेक ॥
सब कर्म विनाशक शूर नमों,
दुख दारिद के चक चूर नमों,
महावीर नमों अतिवीर नमों ॥ १ ॥
संकट आकुल धर धीर नमों,
भव ताप विनाशक नीर नमों,
महावीर नमों अतिवीर नमों ॥ २ ॥
पतितोद्धारक हर पीर नमों,
भव जीवन के भवतीर नमों,
महावीर नमों अतिवीर नमों ॥ ३ ॥
सब जीवन के सुख सीर नमों,
निर्बल जन के बल बीर नमों,
महावीर नमों अतिवीर नमों ॥ ४ ॥

(६)

तर्जः—हां हाँ चर्खा कातो तो बेड़ा पार हो।

हां हाँ मिलकर वीर प्रभू गुण गाओ ॥ टेक ॥
हां हाँ जिसने सबको समान बनाया,
हां हाँ उसको समदरशी कहि गाओ ॥ १ ॥
हां हाँ जो है दीन जनों का त्राता,
हां हाँ उसको जग रक्षक बतलाओ ॥ २ ॥
हां हाँ जिसने नीच को ऊंच बनाया,
हां हाँ उसको पतितोद्धारक गाओ ॥ ३ ॥
हां हाँ जिसने वाद विवाद मिटाया,
हां हाँ उसको अनेकान्त मणि गाओ ॥ ४ ॥
हे प्रभु दीननबन्धु दयानिधि,
हमको अपना कर अपनाओ ॥ ५ ॥

(७)

तर्ज :—अरी मोरी गुइयां सरोता कहां भूल आई।

प्रभु गुण गाओ सभी मिल बार बार ॥ टेक ॥
अष्ट करम मोहि बहु दुख दीने,
इनको कीजे कृपा करि छार छार ॥ १ ॥

संग कषायन का अब छूटे,
ये चलते हैं हमारी लार लार ॥ २ ॥
पर में रचि निज रूप भुलानों,
सुध बुध भूले भ्रमें गति चार चार ॥ ३ ॥
सब जीवों में समता राखूं,
सबसे राखूं हृदय में प्यार प्यार ॥ ४ ॥
दीनबन्धु दीनन हितकारी,
निज जन जान हमें अब तार तार ॥ ५ ॥

(८)
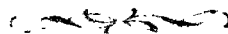
तर्ज़ः—मैं तो तेरा तावेदार जिन जी ।

प्रभु गुण गावेंगे सब मिल ॥ टेक ॥
निर्विकार निर्ग्रन्थ दिगम्बर छवि
लखि पावेंगे ॥ सब मिल० ॥ १ ॥
तुम मुख चन्द्र किरण निरखत ही अघ
तम भाजेंगे ॥ सब मिल० ॥ २ ॥
सिद्ध समान शुद्ध निर्मल हम आतम
भावेंगे ॥ सब मिल० ॥ ३ ॥

राग द्वेष छुट जांय हमारे यह वर
माँगेंगे ॥ सब मिल० ॥ ४ ॥
निज लखि रूप समान तुम्हारे हम
हो जावेंगे ॥ सब मिल० ॥ ५ ॥

(६)

तर्ज:—सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्णा बन्सी की तान सुनाजा कृष्णा

सुनाजा सुनाजा सुनाजा महावीर हितकर
वाणी सुना जा महावीर ॥ टेक ॥
विषयन चाह अगिन की दाह,
मिटाजा मिटाजा मिटाजा महावीर
ये भवपार मिटाजा महावीर ॥ १ ॥
भटक रहा चहुँगति के माहि,
दिखाजा दिखाजा दिखाजा महावीर
अब भव तीर दिखाजा महावीर ॥ २ ॥
पर में रच निज रूप भुलाइ,
बताजा बताजा बताजा महावीर
आतम रूप बताजा महावीर ॥ ३ ॥
आतम ही परमातम होइ:
बनाजा बनाजा बनाजा महावीर
आप समान बनाजा महावीर ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

❀ श्री शान्ति सागरायनमः ❀
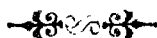
मुनिसंघ भजनावली।

लेखक और प्रकाशक-

मा० शिवराम सिंह जैन शिक्षा प्रचारक
रोहतक।

प्रथमबार १०००] वीर सम्वत् २४५७ [मूल्य) ॥

ऐजूकेशनल प्रेस रेलवे रोड रोहतक में छपा।

मुनिसंघ भजनावली ।

भजन १

चाल-(जिधर देखता हूं)

गुरु शान्ति सागर मिले उपकारी,

सुधारेंगे बिगड़ी दशा ये हमारी ॥ टेक

मुद्दत से दर्शन को थे हम तरसते ।

हुए अब कृतारथ छवी देख प्यारी ॥ १

परम शान्त मुद्रा है जग से निराली ।

बालक सरीखे नगन अविकारी ॥ २

रागी न द्वेषी हैं सच्चे हितैषी ।

सभी प्राणियों को परम सुःखकारी ॥ ३

विषयों की आशा नहीं लेश जिनके ।

हैं त्यागे परिग्रह सभी दुःखकारी ॥ ४

ध्यान तपस्या में लवलीन रहते ।

करें ज्ञान चर्चा स्व पर हित कारी ॥ ५

शिवराम तेरे है चरणों का चेरा ।

शरण आगही है गुरु अब तुम्हारी ॥ ६

भजन २

गज़ल कव्वाली चाल-(मिली है खाक में इनकी)

मुनीश्वर देहली में आए मुबारिक हो मुबारिक हो ।
गुरु ने दर्श दिखलाए मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ टेक
दिगम्बर जैन मुनियों का हुआ था लोप भारत में ।
बड़े सौभाग्य से पाए मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ १
सुना करते थे दक्षिण में मुनी मौजूद हैं अब भी ।
चरन की धूल मिल जाए मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ २
हमारी भावना दिल की हुई पूर्ण अहा कैसी ।
गुरु उत्तर में अब आये मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ३
शान्ति सागर महा मुनिवर दयामय धर्म के सागर ।
मुनीसंघ साथ में लाये मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ४
सर्प विकराल दुखकारी किया उपसर्ग तब भारी ।
जरा नहीं आप घबराए मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ५
आतम अविकार है सूरत निराली शान्ति की मूरत ।
दर्श तो सबके मन भाए मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ६
गुरु का नाम लेने से परम कल्याण होता है ।
न क्यों शिवराम गुन गाए मुबारिक हो मुबारिक हो ७

भजन ३

चाल-होरी बड़ी सुहानी रे ॥
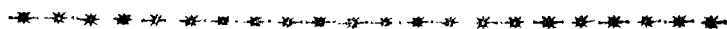
सफल ऋषी महाराज जगत हितकार हैं ॥ टेक

विषय कषाय सर्व नशाए, त्यागे सकल समाज ।

सजन सुख सार हैं ॥ १

रागी न द्वेषी हित उपदेशी, निज पर आतम काज ।

करत सु विहार हैं ॥ २

दक्षिण से गुरु आए चल कर वंदन तीरथ काज ।

सु शिखर पहार हैं ॥ ३

उत्तर भारत हुआ कृतारथ, लख ऐसे ऋषिराज ।

धरत व्रत सार हैं ॥ ४

भाग्य उदय से दर्शन पाए, जनम सफल यह आज ।

नमन हर बार हैं ॥ ५

शिवसुख कारण दुर्गति टारन तारन तरन जिहाज ।

करत भव पार हैं ॥ ६

भजन ४

चाल—(तब तेरा पता कुछ चलता है)

सब पाप कर्म कट जाते हैं, मुनिराज के दर्शन करने से ।
सब संशय भरम मिट जाते हैं मुनिराज वचन चित धरने से ॥ टेक

यह सूरत जग से न्यारी है, छबि परम दिगम्बर प्यारी है ।
भव तापके हरने हारी है, सुख शान्ति के करने वाली है ॥ १

यह पंच महाव्रत धारी हैं, अरु राग द्वेष निरवारी हैं ।
मुनिराज बड़े उपगारी हैं, सब जीवन के हितकारी हैं ॥ २
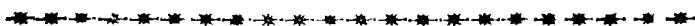
आरंभ परिग्रह छोड़ा है इस जग से नाता तोड़ा है ।
गिरनार से नेहा जोड़ा है, संसार से मुखको मोड़ा है ॥ ३
जिस विषय के बस जग सारा है, उस कामदेव को मारा है ।
सब तनसे वस्त्र उतारा है, पर शील लंगोटा धारा है ॥ ४
ये आतम ध्यान लगाते हैं, ये जैन के साधू कहाते हैं ।
ऐसे साधू नजर नहीं आते हैं शिवराम इन्हें शिर न्याते हैं ॥

भजन ५

चाल [उसका खुदा भला करे]

मुनियों की शांत मूर्ति का दर्शन सदा किया करो ।
ज्ञान वैराग्य का यहां, शिक्षण सदा लिया करो ॥ टेक
देखो कहीं है सच कहो, शान्ती की मूर्ती यह अहो ।
कैसी है वीतरागता, ध्यान जरा दिया करो ॥ १
दुनियां की दौलत छोड़ कर, भोगों से मुंह को मोड़ कर ।
स्वातम ध्यान है किया, ख्याल तो यह किया करो ॥
काम और क्रोध को मारकर, राग और द्वेषको टार कर ।
समता का भाव है किया, वाणी सुधा पिया करो ॥
आदर्श है कल्याण का, मारग है निर्वाण का ।
शिवराम आतम ध्यान का, पाठ यहां पढ़ा करो ॥

भजन ६

गजल कव्वाली [चाल– मिली है खाक में उनको]

करें नित ध्यान आतम का, यही इक साधु सच्चे हैं ।
करें उपदेश आगम का यही इक साधु सच्चे हैं ॥ टेक
महाव्रत पंच को धारें, समिति पांचों को ये पालें ।
करी वश इन्द्रियां सारी, यही इक साधु सच्चे हैं ॥ १
विषय आशा नहीं इनके, न कुछ आरंभ से मतलब ।
हैं ज्ञान अरु ध्यान के धारी, यही इक साधु सच्चे हैं ॥ २
ये कंचन कांच सम जानें, मित्र वैरी को इक मानें ।
तजे रागादि दुःखकारी यही इक साधु सच्चे हैं ॥ ३
धरम दश लक्षणी धारें विचारें भावना बारह ।
परीसह भी सहें सारी, यही इक साधु सच्चे हैं ॥ ४
इन्हीं को सतगुरु मानो, इन्हीं का ध्यान उर आनो ।
इन्हीं की भक्ति शिवकारी, यही इक साधु सच्चे हैं ॥५

भजन ७

चाल-[जिन धर्म का डंका आलम में]

नर जन्म सफल यह आज हुवा, महाराज का दर्शन पाने से ।
सब हर्षित जैन समाज हुवा, गुरुचरणन शीस नमाने से ॥टेक
आचार्य जो शान्ती सागर हैं ये शान्ति सुधा के सागर हैं ।
हैं और सभी आदर्श मुनी, निज शुद्धाचार निभाने से ॥ १
ये पांच महाव्रत धारी हैं, मुनिराज महा उपगारी हैं ।
रागादिक दोष निवार दिये, निज आतम ध्यान लगाने से ॥ २
आरंभ परिग्रह त्याग दिए, विषयों की आश नहीं इनके ।

****
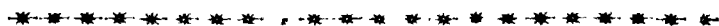
नित ज्ञान ध्यान तप लीन रहें, मतलब नहीं और जमाने से ॥
ये कंचन कांच समान लखें अरि मित्र जु सुख दुख एक गिने
निन्दा से नाराज न होते, नहीं खुश होते रिझाने से ॥ ४
मुनिराज चरण नित चित्त रखो विसरो न घड़ी पल रात्रि अहो
हो निश्चय से उद्धार तेरा, शिवराम गुरु गुण गाने से ॥ ५

भजन ८

चाल-[हमारे ऋषियों के पाक जीवन]

सफल हुवा है हमारा जीवन, मिले मुनीश्वर गुणोंके सागर ।
सप्त ऋषीश्वर महायतीश्वर यहां पधारे कृपा के सागर ॥टेक
आचार्य हैं श्री शांति सागर, महा तपस्वी ये शांत मूरत ।
विषय कषाय न लेश जिनके, परम हितैषी दयाके सागर ॥१
हैं वीर सागर ये वीर सच्चे, परीसहों से न नेक डरते ।
बड़ी कठिन हैं तपस्या करते, महा मुनि नमि नेम सागर ॥ २
ये कुंथु सागर वचन सुधा से हैं, भव्य जीवों को तृप्त करते ।
श्रुति सिंधु मुनि तप तेजधारी, महा प्रतापी हैं चन्द्र सागर ॥ ३
ये सप्त ऋषीश्वर गुरु हमारे पुण्योदय से यहां पधारे ।
शिवराम तारण तरण पाकर, तिरा न क्यों भव अपार सागर ॥

भजन ९

चाल-[भजन बिन बावरे]

हम उनके हैं दास जिन्होंने मन मार लिया ॥ टेक

तज आडम्बर भए दिगम्बर, जीते विषय कषाय ।
ज्ञान ध्यान तप लीन रहें जे, आतम जोति जगाय ॥ जिन्होंने०
क्रोध लोभ के भाव निवारे, मारे काम क्रूर ।
माया विषकी बेल उपाड़ी, मान किया चकचूर ॥ २
कंचन कांच बराबर जिनके वैरी मीत समान ।
सुःख दुःख जीवन मरण एक सम, मानें महल मसान ॥ ३
तप की तोप ज्ञान का गोला, लेय क्षमा तलवार ।
मोह महारिपु मार पछाड़ा, आतम बलको सम्हार ॥ ४
उनही जैसी चर्या जिस दिन, हो मेरी शिवराम ।
ता दिनकी बलिहारी जाऊं, भेटूँ गुरु गुणधाम ॥ ५

भजन १०

चाल—[उसका सदा भला करे]

हे शान्ति सिन्धु तुम शरण, हम पे गुरू दया करो ।
गहे तुम्हारे हैं चरण, अब तो महर जरा करो ॥ टेक
विषय कषाय दुष्ट ये, हाय मुझे सता रहे ।
मेरी यही है प्रार्थना, इनसे मुझे रिहा करो ॥ १
तुम आत्म बलके हो धनी, कषाय सेना है दली ।
शक्ति मुझे भी दीजिए, इतनी प्रभो कृपा करो ॥ २
तुम तो दया निधान हो, महा गुणों की खान हो ।
मैं दुष्ट पापी हूं अधम, अपराध मम क्षमा करो ॥ ३
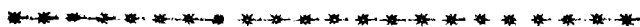
गुरू देव के प्रसाद से गज भील चोर तर गये ।
हे दीन के दयाल तुम, मेरी न क्यों व्यथा हरो ॥ ४
शिवराम आ गही शरण मिटादो मेरी भव तपन ।
टुक शान्ति नीर दीजिए, शान्ति सुधा सरो वरो ॥ ५

भजन ११

चाल [दिए दुख ये फलक ने भारी]

आए हैं शरण तुम्हारी स्वामी मेटो जी विपद हमारी॥ टेक
लख चौरासी भटक चुके हैं चहुंगत के दुःख भुगत चुके हैं ॥
कथा न जाए उचारी । स्वामी ॥ १
देव-धरम गुरु नहिं पिछाने निज नहीं जाने पर निज माने ॥
हुई हमारी ख्वारी ॥ २ ॥
ना तुम रागी ना तुम द्वेषी, हो तुम सच्चे हित उपदेशी ।
महिमा तुम्हारी न्यारी ॥ ३ ॥
भव्य जनों के संशय टारे, बहुत अधम जन तुमने उभारे ।
सब जीवन हितकारी ॥ ४ ॥
हे मुनिनाथ कृपा अब कीजे, हैं शिवराम शरण रख लीजे ।
तुम गुरु पर उपकारी ॥ ५ ॥
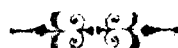
हमारी पुस्तकें।

शिवराम पुष्पांजली अङ्क १–यह पुस्तक पहिले शिवराम भजन संग्रह के नाम से छप चुकी है इसमें प्रायः सब विषयों के उत्तमोत्तम भजन हैं समाप्त होजाने के कारण दुबारा संशोधन करके सुन्दर टाइप उत्तम कागज पर छपाई गई है अन्त में श्री महावीर स्वामी की चित्ताकर्षक आरती भी छपी है। मूल्य मात्र =)

शिवराम पुष्पांजली अङ्क २–यह पुस्तक पहिले वीर पुष्पांजली नामसे छपी थी सो समाप्त हो चुकी है दूसरी आवृत्ति शीघ्र प्रकाशित होगी अबकी बार उस में और अधिक भजन बढ़ाए जायंगे।

शिवराम पुष्पांजली अङ्क ३–इसमें नई तर्ज पर धर्म प्रचार जाति सुधार तथा खद्दर आदि स्वदेश प्रेम के भी उत्तमोत्तम भजन छपे हैं कागज टाईप आदि सर्वोत्तम है। मूल्य =)॥

मुनिसंघ भजनावली- जिसमें श्री आचार्य संघ की भक्ति के उत्तम भजन छपे हैं। मूल्य)॥

नोट–इकट्ठी पुस्तक मंगाने वालों का २५) सैंकड़ा कमीशन दिया जायगा थोड़ी पुस्तक मंगाने वाले महाशयों को टिकट भेजने में लाभ रहेगा। खास कर मुनीसंघ भजनावली की थोड़ी पुस्तक मंगाने वालों को टिकट भेजने आवश्यक है। शिवराम पुष्पांजली के और अङ्क भी क्रमशः प्रकाशित होंगे तथा बाल शिक्षा की पुनरावृत्ति छपाने का भी विचार है।

निवेदक—मास्टर शिवराम सिंह जैन शिक्षा प्रचारक रोहतक।

जैन-जीवन-संगीत ।

प्रकाशक—

कन्छेदीलाल फूलचन्द जैन.

जैन-साहित्य-मन्दिर.

सागर [म० प्र०]

जैन-जीवन-संगीत।

मुनि-आहार-विधि।

(कविवर भैया भगोतीदास कृत)

अरहँत सिद्ध चितार चित, आचारज उवझाय।
साधु सहित वंदन करौं, मन वच शीस नवाय ॥ १ ॥
दोष छियालिस टारकैं, मुनि जो लेहि अहार ॥
नाम कथन ताके कहूं, जिन आगम अनुसार ॥ २ ॥

अस्थि चर्म सूखे अरु हरे। दृष्टि देख भोजन परिहरे ॥
उखली मांहि चक्की चलै। शिलापिसंतो देखत टलै ॥३॥
गोबर थापै माटी छुवै। कोरे वस्त्र भीट जो हुवै॥
चूल्हा जरतो नयन निहार। ता घर मुनि नहिं लेहि अहार ॥४॥
शिरहि नहातो दीखै कोय। सीस कपड़ो करतो होय ॥
कच्चे पानी परसे अंग। ता घरतें मुनि फिरहिं अभंग ॥५॥
करवो मांड़ो दीसै कहीं। छुवो फाटो ह जो तहीं ॥
देत बुहारी दृष्टिहि परै। ताघर मुनि आयेतैं फिरै ॥६॥
वस्त्रादिक सूकत जो धरैं। मिथ्याती भेटै निहँ घरै ॥
ओटै कोय कपास निहार। ताघर मुनि फिर जाहि विचार ॥७॥
ओटै पाक श्वान मंजार। रोमकँचन परसन परिहार ॥
अग्निदाह जो दृष्टिहि परै। रोवन सुनै अहार न करै ॥८॥
प्रतिमा भंग सुनै जे कान। शास्त्र जरै इम सुनै सुजान ॥
प्रतिमा हरी भयो भयजोर। ता घर आये फिरहि किशोर ॥९॥
बिन धोये पट पहिरे होय। पड़िगाहै श्रावक जो कोय ॥
ता कर लेय अहार न साध। अशुचिदोष लगै अपराध ॥१०॥
कर्कश वचन सुनहि विकराल। विनय हीन जो हो अदयाल ॥
लागै चोट ललाटहि पेख। फिरहि साधु दुखित नर देख ॥११॥
विकलत्रय आवै तिहँ ठौर। नख केशादि अपावन और ॥

पानी बूंद परै आकास। ता घर मुनि फिरजाहिं विमास ॥१२॥
खाज सहित रोगी नर देख। पीव बहुत पीड़ित पुनि पेख॥
लोहू दृष्टि परे जो कहीं। तो मुनि असन लेनको नहीं॥१३॥
मांसादिक मल दृष्टिहि परै। कंद रु मूल मृतक परिहरै॥
फल अरु बीज होय तिहँ ठौर। तो मुनि लेहि न एको कौर ॥१४॥
ऐसे दोष छियालिस हीन। तजहिं ताहि संयमि परवीन ॥१५॥
उत्तम कुल श्रावक को जान। द्वारापेखन शुद्ध प्रमान॥
विनयवंत प्राशुक कर नीर। बोलै तिष्ठ स्वामि जगवीर॥ १६॥
ताघर दृष्टि विलोकहिं साध। यहां न कोउ लागै अपराध॥
तब तिहँ मंदिर मैं अनुसरै। प्रासुक भूमि निरख पग धरै॥१७॥
श्रावक जो प्राशुक आहार। कीन्हों दोष छियालिस टार॥
निजहित पापनको परचार। ता पहिलैं कछु भिन्न निकार ॥१८॥
द्वै करजोर मुनीश्वर लेहि। श्रावक निजकरसों तिहँ देहि॥
पुनिकर फेर नीर को धरै। प्रासुकजल तिहँ करमे करै ॥१९॥
लेय अहार नीर तिहँ ठौर। जिनकल्पी उत्तम शिरमौर॥
थिवरकलिको ह्व यह चाल। दोऊ मुनिवर दीनदयाल ॥२०॥
दोऊ बनवासी निर्ग्रन्थ। दोऊ चलहिं जिनेश्वर पंथ॥
दोऊ जपतप किरया करैं। दोऊ अनुभव हिरदै धरैं ॥२१॥
जिनकल्पी एकाकी रहैं। थिवरकलिप शिष्यशाखा गहैं॥
अट्ठाईस मूलगुण सार। आपसाधु पालहिं निरधार ॥२२॥
षष्ठम अरु सप्तम गुण थान। दोऊ रहैं परम परधान॥
पूरव कोटि वरप वसु घाट। उतकृष्ट वरतैं यह बाट ॥२३॥
केवलज्ञान दोऊ उपजाय। पंचमि गतिमैं पहुँचैं जाय॥
सुख अनंत विलसैं तिहँ ठौर। तातैं कहैं जगत शिर मौर ॥२४॥
सम्वत सत्रह सै पंचास। जेठ सुदी पंचमि परकाश॥
भैया बंदत मन हुल्लास। जय जय मुकति पंथ सुखवास ॥२५॥

बाईस-परीषह।

छप्पय—क्षुधा तृषा हिम उष्ण दंशमंशक दुःखभारी। निरावरण तन अरति खेद उपजावत नारी॥ चर्या आसन शयन दुष्टवायक बधबंधन। याचैं नहीं अलाभ रोग तृण परस होय तन। मल जनितमानसन्मनि वश प्रज्ञा और अज्ञानकर। दर्शन मलीन बाईस सब साधु परीषह जान नर॥

दोहा—सूत्र पाठ अनुसार ये, कहे परीषह नाम।
इनके दुख जे मुनि सहैं, तिन प्रति सदा प्रणाम॥

१ क्षुधापरीषह—अनशन ऊनोदर तप पोषत पक्ष मास दिन बीत भये हैं। जो नहिं बने योग्य भिक्षा विधि सूख अंग सब शिथिल भये हैं॥ तब भी दुस्सह भूख वेदना साधु सहैं नहिं नेक नये हैं। तिनके चरण कमलप्रति, प्रतिदिन, हाथ जोड़ हम शीस नये हैं॥

२ तृषा परीषह—पराधीन मुनिवरकी भिक्षा परघर लेंय कहैं कछु नाहीं। प्रकृति विरुद्ध पारणा भुंजत बढ़त प्यासकी त्रास तहां ही॥ ग्रीषमकाल पित्त अति कोपे लोचन दोय फिरैं जब जाहीं। सहैं तृषा ते साधु सदा ही, जयवन्तो वर्तो जग मांहीं॥

३ शीत परीषह—शीतकाल सब ही जन कम्पैं खड़े जहां वन वृक्ष डहे हैं। झंझा वायु बहे वर्षा ऋतु वर्षत बादल झूम रहे हैं॥ तहां धार तटिनी तट चौपट ताल पाल पर कर्म दहे हैं। सहैं सम्हाल शीत की बाधा ते मुनि तारण तरण कहे हैं॥

४ उष्ण परीषह—भूख प्यास पीड़े उर अन्तर प्रजुलै आंत देह सब दागे। अग्नि स्वरूप धूप ग्रीषमकी ताती वायु झालसी लागे॥ तपै पहाड़ ताप तन उपजै कोप पित्त दाहज्वर जागे। इत्यादिक गर्मीकी बाधा सहैं साधु धीरज नहिं त्यागें॥

५ दंशमशक परीषह—दंशमशक माखी तन काटैं पीड़ैं वन पक्षी बहुतेरे। डसैं व्याल विषहारे बिच्छू लगैं खजूरे आन घनेरे॥ सिंघ स्याल शुण्डाल सतावें रीछ रोज दुख देंय घनेरे। ऐसे कष्ट सहैं समभावन ते मुनिराज हरैं अघ मेरे।

६ नग्न परीषह—अन्तर विषय वासना वर्त्तै बाहिर लोकलाज भय भारी। तातैं परम दिगम्बर मुद्रा धर नहिं सकैं दीन संसारी॥ ऐसी दुर्द्धर नग्न परीषह जीतैं साधु शील व्रतधारी। निर्विकार बालक वत निर्भय तिनके पायन धोक हमारी॥

७ अरति परीषह—देश कालको कारण लहिके होत अचैन अनेक प्रकारैं। तब तो खिन्न होंय जगवासी कलमलाय थिरतापन छाड़ैं। ऐसी अरति परीषह उपजत तहां धीर धीरज उर धारैं। ऐसे साधुनको उर अन्तर बसो निरन्तर नाम हमारे॥

८ स्त्री परीषह—जे प्रधान केहरि को पकड़ैं पन्नग पकड़ पान से चापैं। जिनकी तनक देख भौं बांकी कोटिन सूर दीनता जापैं॥ ऐसे पुरुष पहाड़ उठावन प्रलय पवन त्रिय वेद पयापैं। धन्य धन्य ते साधु साहसी मन सुमेरु जिनको नहिं कांपै॥

९ चर्या परीषह—चार हाथ परिमाण निरख पथ चलत दृष्टि इत उत नहिं तानैं। कोमल चरण कठिन धरती पर धरत धीर बाधा नहिं मानैं। नाग तुरङ्ग पालकी चढ़ते ते सर्वादि हृदय नहिं आनैं। यों मुनिराज सहैं चर्या दुख तब दृढ़ कर्म्म कुलाचल भानैं॥

१० आसन परीषह—गुफा मशान शैल तरु कोटर निवसैं जहां शुद्ध भू हेरैं। परिमित काल रहैं निश्चल तन बारबार आसन नहिं फेरैं॥ मानुषदेव अचेतन पशु कृत बैठे विपत आन जब घेरैं। ठौर तजैं नहि स्थिर होवैं ते गुरु सदा बसो उर मेरे॥

११ शयन परीषह—जे महान सोनेके महलन सुन्दर सेज सोय सुख जोवैं। ते अब अचल अङ्ग एकासन कोमल कठिन भूमिपर

सोवैं ॥ पाहन खण्ड कठोर कांकरी गड़त कोर कायर नहिं होवैं। ऐसो शयन परीषह जीतत ते मुनि कर्म कालिमा धोवैं ॥

१२ आक्रोश परीषह—जगत् जीव सम्पूर्ण चराचर सबके हित सबको सुखदानी। तिन्हें देख दुर्वचन कहें शठ पाखण्डी ठग यह अभिमानी। मारो याहि पकड़ पापीको तपसी भेष चोर है छानी। ऐसे वचन बाण की बिरियां क्षमा ढाल ओढ़ैं मुनि ज्ञानी ॥

१३ वध बन्धन परीषह—निरअपराध निर्बैर महामुनि तिनको दुष्ट लोग मिल मारैं। कोई खैंच खम्भसौं बांधैं, कोई पावक में परजारैं ॥ तहां कोप करते न कदाचित पूरब कर्म विपाक विचारैं। समरथ होय सहैं वध बंधन ते गुरु सदा सहाय हमारैं ॥

१४ याचना परीषह—घोर वीर तप करत तपोधन भये क्षीण सूखी गलबांहीं। अस्थिचाम अवशेष रहे तनु नसा जाल झलकै जिस माहीं ॥ औषधि असन पान इत्यादिक प्राण जांय पर याचत नांहीं। दुर्द्धर अयाचीक व्रत धारैं करहिं न मलिन धर्म परछांहीं ॥

१५ अलाभ परीषह—एकबार भोजनकी बिरियां मौन साध बस्तीमें आवैं। जो नहिं बनै योग भिक्षा विधि तो महन्त मन खेद न लावैं। ऐसे भ्रमत बहुत दिन बीतैं तब तप वृद्धि भावना भावैं। यों अलाभकी परम परीषह सहैं साधु सोही शिव पावैं ॥

१६ रोग परीषह—वात पित्त कफ श्रोणित चारों ये जब घटैं बढ़ैं तनु मांहीं। रोग संयोग शोक तब उपजत जगत् जीव कायर हो जाहीं ॥ ऐसी व्याधि वेदना दारुण सहैं सूर उपचार न चाहीं। आतमलीन विरक्त देहसों जैन यती जिन नेम निवाहीं ॥

१७ तृणस्पर्श परीषह—सूखे तृण अरु तीक्ष्ण कांटे कठिन कांकरी पांय विदारैं। रज उड़ आन पड़ै लोचनमें तीर फांस तनु पीर विथारैं ॥ तापर पर सहाय नहिं वांछत अपने कर सों काढ़ न डारैं। यों तृणपरस परीषह विजयी ते गुरु भव भव शरण हमारैं ॥

१८ मल परीषह—जीवन भर जल न्हौन तजो जिन नग्न रूप बन थान खड़े हैं। चलै पसेव धूप की बिरियां उड़त धूल सब अंग भरे हैं॥ मलिन देहको देख महा मुनि मलिन भाव उर नाहिं करे हैं। यो मल जनित परीषह जीतैं तिन्हें पाय हम सीस धरे हैं॥

१९ सत्कार तिरस्कार परीषह–जे महान् विद्यानिधिविजयी चिर तपसी गुण अतुल भरे हैं। तिनकी विनय वचन सों अथवा उठ प्रणाम जन नाहिं करे हैं॥ तो मुनि तहां खेद नहिं मानत उर मलीनता भाव हरे हैं। ऐसे परम साधुके अहिनिशि हाथ जोड़ हम पाँय परे हैं॥

२० प्रज्ञा परीषह—तर्क छन्द व्याकरण कलानिधि आगम अलङ्कार पढ़ जानें। जाकी सुमति देख परवादी विलखे होय लाज उर आनें॥ जैसे सुनत नादि केहरि की बन गयन्द भाजत भय मानें। ऐसी महा बुद्धि के भाजन ये मुनीश मद रंच न ठानें॥

२१ अज्ञान परीषह—सावधान वर्तें निशिवासर संयम शूर परम वैरागी। पालत गुप्ति गये दीर्घ दिन सकल संग ममता पर त्यागी॥ अवधिज्ञान अथवा मनपर्यय केवल ऋद्धि आज नहिं जागी। यों विकल्प नहिं करें तपोधन सो अज्ञान विजयी बड़भागी॥

२२ अदर्शन परीषह—मैं चिरकाल घोर तप कीने अजों ऋद्धि अतिशय नहिं जागे। तप बल सिद्धि होत सब सुनिये सो कुछ बात झूंठसी लागे॥ यों कदापि चित में नहिं चिन्तत समकित शुद्ध शान्ति रस पागे। सोई साधु अदर्शन विजयी ताके दर्शन से अघ भागे।

किस कर्म के उदय से कौन परीषह होती है—

(कवित्त)

ज्ञानावरणी से दोय प्रज्ञा औ अज्ञान होय, एक महा मोहतें अदर्शन बखानिये। अन्तराय कर्म सेती उपजे अलाभ दुख,

सप्त चारित्र मोहनी केवल सुजानिये ॥ नगन निषद्यानारी मान सन्मान गारि, याचना अरति सब ग्यारह ठीक ठानिये । एकादश बाकी रहीं वेदना उदय से कही, बाईस परीषह उदय ऐसेउर आनिये ।

अडिल्ल छन्द—एकबार इन माहिं एक मुनिके कहो । सब उन्नीस उत्कृष्ट उदय आवें सही ॥ आसन शयन विहार दोइ इन माहिकी । शीत उष्ण में एक तीन ये नाहिं की ॥

बारहमासा-श्रीमुनिराजजी का ।

राग मरहटी ।

मैं बन्दू साधु महन्त बड़े गुणवन्त सभी चित्तलाके ।
जिन अथिर लखा संसार बसे बन जाके ॥ टेक ॥

चित चैत में व्याकुल रहे, काम तन दहे, न कुछ बन आवे । फूली बनराइ देख मोह भ्रम छावे । जब शीतल चले समीर, स्वच्छ हो नीर भवन सुख भावे । किस तरह योग योगीश्वर से बनआवे ॥

(झड़) तिस अवसर श्रीमुनि ज्ञानो, रहें अचल ध्यान में ध्यानी । जिन काया लखी पयानी । तन जड़ खाक समजानी ॥ उस समय धीर धर रहैं, अमर पद लहैं, ध्यान शुभ ध्याके । जिन अथिर लखा संसार बसे बन जाके ॥१ ।

जब आवत है बैसाख, होय तृण खाक, तप्त से जलके । सब करैं धाम विश्राम पवन झलझलके ॥ ऋतु गर्मीमें संसार, पहिन नर नार वस्त्र मलमलके । ये जलमे करते नेह जो हैं जो थलके ॥

(झड़)—जिस समय मुनी महराजे, तन नगन शिखर गिर राजे । प्रभु अचल सिंहासन राजे, कहो क्यों न कर्म दल लाजे । जो घोर महा तप करैं, मोक्षपद धरैं, बसे शिव जाके ॥ २ ॥ जिन०

जब पड़े ज्येष्ठमें ज्वाला, होय तन काला धूपका मारी । घर बाहर पग नहिं धरे कोइ घरबारी ॥ पानीसे छिड़कैं धाम, कर

विश्राम सकल नर नारी। घर खसकी टटिया छिपैं लूहकी मारी॥
(झड)—मुनिराज शिखिर गिर ठाड़े दिन रैन ऋद्धि अति बाढ़े। अति तृषा रोग भय बाढ़े, तब रहैं ध्यानमें गाढ़े॥ सब सूखे सरवर नीर, जलै शरीर, रहैं समभाके॥ ३॥ जिन०

आषाढ़ मेघका जोर, बोलते मोर, गरजते बादल। चमके बिजली कड़ कड़े पड़े धारा जल॥ अति उमड़े नदियां नीर गहर, गम्भीर, भरे जलसे थल। भोगीको ऐसे समय पड़े कैसे कल॥
(झड)—उस समय मुनी गुणवन्ते, तरवर तट ध्यान धरन्ते॥ अति काटैं जान अरु जन्ते, नहि उनका सोच करन्ते, वे काटैं कर्म जंजीर नहीं दिलगीर रहैं शिव पाके॥ ४॥ जिन०

श्रावणमें त्योंहार, भूलती नार, चढ़ो हिंडोले। वे गावैं राग मलहार पहन नये चोले॥ जग मोह तिमिर मन बसे, सर्वजन कसे देन झकझोले। उस अवसर श्रीमुनिराज वचन हैं मोले॥
(झड)—वे तीनों रिपु से लरके, कर ज्ञान खड्ग ले करके। शुभ शुक्ल ध्यानको धरके, परफुल्लित केवल वरके॥ नहिं सहैं वो यमकी त्रास, लहैं शिव वास अघान नशाके॥ ५॥ जिन०

भादव अँधियारी रात, सूझै नाहाथ, घुमड़ रहे बादर। बन मोर पपीहा कोयल बोलैं दादुर। अति मच्छर भिन भिन करैं, सांप फुंकरैं, पुकारैं थलचर। बहु सिंह बघेरा गज घूमैं बन अन्दर॥
(झड)—मुनिराज ध्यान गुण पूरे, तब काटैं कर्म अँकूरे। तनु लिपटत बान खजूरे, मधु मक्ख ततइयें भूरे॥ चिंटियोंने बिल तन करे, आप थिर खड़े, हाथ लटकाके॥ ६॥ जिन०

आश्विनमें वर्षा गई, समय नहिं रही, दशहरा आया। रही नहिं वृष्टि अरु कामदेव लहराया॥ कामी नर करैं किलोल, बनावैं

डोल, करें मन भाया । है धन्य साधु जिन आतम ध्यान लगाया ॥

(झड़)—तसु याम योगमें भीने, मुनि अष्ट कर्म क्षय कीने । उपदेश सबनको दीने, भविजनको नित्य नवीने ॥ हैं धन्य धन्य मुनिराज, ज्ञानके ताज, नमूं शिर नाके ॥ ७ ॥ जिन०

कातिकमें आया शीत, भई विपरीत, अधिक शरदाई । संसारी खेलैं जुआ कर्म दुखदाई ॥ जग नर नारी का मेल, मिथुन सुख केल, करें मन भाई । शीतल ऋतु कामी जनको है सुखदाई ॥

(झड़)—जब कामी काम कमावें, मुनिराज ध्यान शुभ ध्यावें । सरवर तट ध्यान लगावें, सो मोक्ष भवन सुख पावें ॥ मुनि महिमा अपरम्पार न पावै पार, कोई नर गाके ॥ ८ ॥ जिन०

अगहनमें टपके शीत यही जगरीत, सेज मन भावे । अति शीतल चलै समीर देह थरांवे ॥ शृङ्गार करे कामिनी, रूप रस ठनी, साम्हने आवे । उस समय कुशीलन सबका मन ललचावे ॥

(झड़)—योगीश्वर ध्यान धरे हैं, सरिताके निकट खरे हैं, वहां ओले अधिक परे हैं, मुनि कर्मका नाश करे हैं । जब पड़े बर्फ घनघोर, करें नहिं शोर, जगो दृढ़ताके ॥ ९ ॥ जिन०

यह पौष महीना भला, शीतमें घुला, कांपती काया । वे धन्य गुरू जिन इस ऋतु ध्यान लगाया ॥ नरनारी घरमें छिपे, वस्त्र तन लिपे, रहै जेड़ाया । तज वस्त्र दिगम्बर हो मुनि ध्यान लगाया

(झड़)—जलके तट जग सुखदाई, महिमा सागर मुनिराई । धर धीर खड़े हैं भाई, निज आतम से लवलाई ॥ है यह संसार असार, वे तारणहार, सकल वसुधाके ॥ १० ॥ जिन०

है माघ बसन्त बसन्त, नार अरु कन्थ, युगल सुख पाते । वे पहिने वस्त्र वसन्त फिरें मदमाते ॥ जब चढ़े मदनकी सैन, पड़ै नहिं चैन, कुमति उपजाते । हैं बड़े धीर जन बहुधा वे डिग जाते ॥

(झड़)—तिस समय जु हैं मुनि ज्ञानी, जिन काया लखी

पयानी। भव डूबत बोधे प्राणी, जिन ये वसन्त जिय आनी॥ चेतन सो खेलें होरी, ज्ञान पिचकारी, योग जल लाके॥११॥ जिन०

जबलगे महीना फाग करें अनुराग, सभी नरनारी। ले फिरे फैंटमें कर गुलाल पिचकारी॥ जब श्रीमुनिवर गुणखान अचल धर ध्यान, करें तप भारी। कर शील सुधारस कर्मन ऊपर डारी॥

(झड़)—कीर्ति कुम कुमें बनावें, कर्मोंसे फाग रचावें। जो बारामासा गावें, सो अजर अमर पद पावें॥ यह भाखें जीया-लाल, धर्म गुणमाल, योग दर्शाके॥ १२॥ जिन अथिर लखा०

बारहमासा—राजुल।

राग मरहटी [झड़ी]

मैं लूंगी श्रीअरहन्त, सिद्ध भगवन्त, साधु सिद्धान्त चारका सरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत् क्या करना॥ टेक

आषाढ़ मास (झड़ी)

सखि आया असाढ़ घन घोर, मोर चहुंओर, मचा रहे शोर इन्हें समझावो। मेरे प्रीतम की तुम पवन परीक्षा लावो॥ हैं कहां मेरे भरतार, कहां गिरनार, महाव्रत धार बसे किस बन में। क्यों बांध मोड़ दिया तोड़ क्या सोची मन में॥

(झर्वट)—न जारे पपैया जारे, प्रीतमको दे समझारे। रहिगी भव संग तुम्हारे, क्यों छोड़ दई मझधारे॥

(झड़ी)—क्यों बिना दोष भये रोष, नहीं सन्तोष, यही अफ-सोस बात नहिं बूझी। दिये जादौं छप्पन कोड़ छोड़ क्या सूझी। मोहि राखो शरण मंझार, मेरे भर्तार, करो उद्धार, क्यों दे गये झुरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

श्रावण मास (झड़ी)

सखि श्रावण संवर करे, समन्दर भरे, दिगम्बर धरे क्या

करिये। मेरे जी में ऐसी आवे महाव्रत धरिये। सब तजूं हार शृंगार, तजूं संसार, क्यों भव मंझार में जी भरमाऊं। फिर पराधीन तिरिया का जन्म नहिं पाऊं॥

(झर्बटें) सबसुन लो राजदुलारी। दुख पड़गया हम पर भारी। तुम तज दो प्रीति हमारी--कर दो संयम की त्यारी॥

(झड़ी)—अब आगया पावस काल, करो मत टाल, भरे सबताल महा जल बरसे। बिन परसे श्रीभगवन्त मेरा जी तरसे। मैं तज दई तीज सलौन, पलट गई पौन, मेरा है कौन मुझे जग तरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना॥

भादों मास (झड़ी)

सखि भादों भरे तलाव, मेरे चितचाव, करूंगी उछाव से सोलहकारण। करूं दसलक्षण के व्रत से पाप निवारण। करूं रोटतीज उपवास, पञ्चमी अकास, अष्टमी खास निशल्य मनाऊं। तपकर सुगन्ध दशमी को कर्म जलाऊं॥

(झर्बटें)--सखि दुद्धर रस की धारा। तजिहार चार परकारा। करूं उग्र उग्र तप सारा। ज्यों होय मेरा निस्तारा।

(झड़ी)—मैं रत्नत्रय व्रत धरूं, चतुर्दशी करूं, जगत् से तिरूं करूं पखवाड़ा। मैं सब से क्षमाउं दोष तजूं सब राड़ा। मैं सातों तत्व विचार, के गाऊं मलहार, तजा संसार तो फिर क्या करना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

आसौज मास (झड़ी)

सखि आया मास कुंवार, लो भूषण तार, मुझे गिरनार की दे दो आज्ञा। मेरे पाणिपात्र आहार की है परतिज्ञा। लो तार ये चूड़ामणी, रतन की कणी, सुनों सब जनी खोल दो बैनी। मुझको अवश्य भरतारहि दीक्षा लैनी॥

(झर्वटें)--मेरे हेतु कमण्डलु लावो। इक पीछी नई मँगावो। मेरा मन जी भरमावो। मम सूते कर्म जगावो॥

(झडी)—है जगमें असाता कर्म, बड़ा बेशर्म, मोह के भ्रमसे धर्म न सूझै। इसके वश अपना हित कल्याण न बूझै। जहां मृग तृष्णा की धूर, वहां पानी दूर भटकता भूर कहां जल झरना॥ निर्मम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

कार्त्तिक मास (झडी)

सखि कार्तिक काल अनन्त, श्रीअरहन्त की सन्त महन्तने आज्ञा पाली। धर योग यत्न भव भोगकी तृष्णा टाली। सजे चौदह गुण अस्थान, स्वपर पहचान, तजे कमकान महल दिवाली। लगी उन्हें मिष्ट जिन धर्म अमावस काली॥

(झर्वटें)—उन केवल ज्ञान उपाया। जगका अन्धेर मिटाया। जिसमें सब विश्व समाया। तन धन सब अथिर बताया॥

(झड़) है अथिर जगत् सम्बन्ध, अरी मतिमन्द, जगत्का अन्ध है धुन्ध पसारा। मेरे प्रीतमने सत जानके जगत् बिसारा। मैं उनके चरणकी चेरी तू आज्ञा देरी, सुनले मा मेरी है एक दिन मरना। निर्मम नेम बिन हमें जगत क्या करना—

अगहन मास (झडी)

सखि अगहन ऐसी घड़ी, उदै में पड़ी मैं रहगई खड़ी दरस नहिं पाये। मैंने सुकृत के दिन बिरथा यौंही गँवाये।

नहिं मिले हमारे पिया, न जप तप किया, न संयम लिया अटक रही जगमें। पड़ी काल अनादिसे पापकी बेड़ी पग में॥

(झर्वटें)—मन भाग्यो माँग हमारी। मेरे शीलको लागेगारी। मत डारो अञ्जन प्यारी। मैं योगन तुम संसारी॥

(झडी,—हुये कन्त हमारा जती, मैं उनकी सती, पलट गई रती तो धर्म नहि खण्डू। मैं अपने पिताके वशको कैसे भंडूं।

मैं प्रबल शील सिङ्गार, अरी नथ तार, गये भर्तारके संग आभरणा।
निर्मम नेम बिन हमें जगत क्या करना—

पौष मास (झड़ी)

सखि लगा महीना पोह, ये माया मोह, जगत्से द्रोह रु प्रीत करावै। हरैं ज्ञानावरणी ज्ञान अदर्शन छावैं। पर द्रव्यसे ममता हरै, तो पूरी परैं, जु सम्बर करैं तो अन्तर टूटैं। अस ऊँच नीच कुल नामकी संज्ञा छूटैं॥

(झर्वट)—क्यों ओछी उमर धरावे। क्यों सम्पतिको बिलखावे। क्यों पराधीन दुःख पावें; जो संयममें चित लावे॥

(झड़ी)-सखि क्यों कहलावें दीन, क्यों हो छवि छीन, क्यों विद्याहीन मलीन कहावें। क्यों नारि नपुंसक जन्ममें कर्म नचावैं। वे तजैं शील शृङ्गार, रुलें संसार, जिनें दरकार नरकमें पड़ना। निर्मम नेम बिन हमें जगत क्या करना

माघ मास (झड़ी)

सखि आगया माह बसन्त, हमारे कन्त, भये अरहन्त वो केवल ज्ञानी। उन महिमा शील कुशीलकी ऐसी बखानी। दिये सेठ सुदर्शन सूल, भई मखतूल, वहां बरसे फूल हुई जयवाणी। वे मुक्ति गये अरु भई कलङ्कित राणी॥

(झर्वट)—कीचक ने मन ललचाया। द्रुपदीपर भाव धराया। उसे भीमने मार गिराया। उन किया जैसा फल पाया॥

(झड़ी) फिर गहा दुर्योधन चीर, हुई दलगीर, गई जुड़ भीर लाज अति आवे। गये पान्डु जुयेमें हार न पार बसावै। भये परगट शासन वीर, हरी सब पीर, बन्धाई धीर पकर लिये चरना। निर्मम नेम बिन हमें जगत क्या करना—

फागुन मास (झड़ी)

सखि आया फागुन बड़भाग, तो हारी त्याग, अठाई लाग के

मैनासुन्दर। हरा श्रीपालका कुष्ट कठोर उदम्बर। दिया धवल सेठने डार, उदधि की धार, तो हो गये पार वे उसही पल में। अरु जा रणी गुण माल न डूबे जल में॥

(झर्वटें)—मिली रैन मंजूषा प्यारी। जिन ध्वजा शील कीधारी। परी सेठ पै मार करारी। गया नर्क में पापाचारी॥

(झड़ी) तुम लखो द्रौपदी सती, दोष नहिं रती कहें दुर्मती पद्म के बन्धन। हुआ धातकी खण्ड जरूर शील इस खंडन। उन फूटे घड़े मंझार, दिया जल डाल, तो वे आधार थमा जल झरना। निर्मम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

चैत्रमास (झड़ी)

सखि चैत्र में चिन्ता करे, न कारज सरे, शील से टरे कर्मकी रेखा। मैंने शीलसे भीलको होता जगत् गुरु देखा। सखो शीलमें सुलसा तिरी, सुतारा फिरी, खलासी करी श्रीरघुनन्दन। अरु मिली शील परताप पवन से अञ्जन॥

(झर्वटें)—रावण ने कुमत उपाई। फिर गया विभीषण भाई। छिनमें जा लंक गमाई। कुछ भी नहिं पार बसाई॥

(झड़ी)—सीता सती अग्नि में पड़ी, तो उस ही घड़ी, वह शीतल पड़ी चढ़ी जल धारा। खिल गये कमल भये गगनमें जय जय कारा। पद पूजे इन्द्र धरेन्द्र, भई शीतेन्द्र, श्रीजिनेन्द्रने ऐसा बरना। निर्मम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

वैशाख मास (झड़ी)

सखी आई वैसाखो मेख, लई मैं देख, ये ऊरध रेख पड़ी मेरे करमें। मेरा हुआ जन्म युहीं उग्रसेन के घरमें। नहिं लिखा करम में भोग, पड़ा है जोग, करो मत सोग जाऊं गिरनारी। मात पिता अरु भ्रात से क्षमा हमारी॥

(झर्वटें)—मैं पुण्य प्रताप तुम्हारे। घर भोगे भोग अपारे।

जो विधिके अङ्क हमारे। नहिं टरें किसी ; टारे॥

(झड़ी)—मेरी सखी सहेली बीर, न हों दलगीर, धरो चित धीर मैं क्षमा कराऊं। मैं कुलको तुम्हारे कबहुं न दाग लगाऊं। वह ले आज्ञा उठ खड़ी, थी मंगल घड़ी, बन में जा पड़ी सुगुरु के चरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

जेठ मास (झड़ी)

अजी पड़ी जेठकी धूप, खड़े सब भूप, वह कन्या रूप सती बड़ भागन। कर सिद्धन का परणाम किया जग त्यागन। अजि त्यागे सब संसार, चूड़ियां तार, कमण्डलु धार कैलाई पिछोटी। अरु पहर के साड़ी श्वेत उपाटी चोटी॥

(झर्बटे; उन महाउग्र तप कीना। फिर अच्युतेन्द्र पद लीना। है धन्य उन्हींका जीना। नहिं विषयन में चित दीना॥

(झड़ी) अजी त्रिया वेद मिट गया, पाप कट गया, पुण्य बढ़ गया बड़ा पुरुषारथ। करें धर्म अरथ फल भोग रुचे परमारथ। वो स्वर्ग सम्पदा भुक्त, जायगी मुक्ति, जैन की उक्ति में निश्चय धरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत् क्या करना—

जो पढ़ इसे नर नार, बढ़े परिवार, सब संसारमें महिमा पावें। सुन सतियन शील कथान विघ्न मिट जावें। नहिं रहैं दुहागिन दुखी, होंय सब सुखी, मिटें बेरुखी करें पति आदर। वे होंय जगत् में सदा सतियोंका आदर॥

(झर्बटे)—मैं मानुष कुल मे आया। अरु जाति यती कहलाया। है कर्म उदय की माया। बिन संयम जन्म गँवाया॥

(झड़ी)—ग्राम संवत कविवंश नाम—

है दिल्ली नगर सुवास, वतन है खास, फाल्गुन मास अठाहीं आठें। हां उन के नित कल्याण छपा कर बाटें। अजी बिक्रम अब्द उनीस, पै धर पैंतीस, श्री जगदीश का लेलो शरणा। कहै दास नैनसुख दोष पर दृष्टि न धरना।

नेमि-व्याह।

(विनोदीलाल कृत)

(सवैया)

मौर धरो शिर दूलहके, कर कंकण बांध दई कस डोरी।
कुण्डल काननमें झलकें, अति भालमें लाल विराजत रोरी॥
मोतिनकी लड़ शोभित है, छवि देखि लजें बनिता सब गोरी।
लालविनोदी के साहिबको, मुख देखनको दुनियां उठ दौरी॥ १॥
छत्र फिरे शिर दूलहके, नब वारत रत्न शिवादेवी मैया।
कृष्ण इतें बलभद्र उतें, कर ढारत चम्र चले दोऊ भैया॥
भूप समुद्र विजै सब संग, चले वसुदेव उछाह करैया।
लाल विनोदीके साहिबको, बनिता सब ही मिलि लेत बलैया॥२॥
गोड़े गये जब नेम प्रभू, पशु पक्षिन खेंच पुकार करी है।
नाथसे नाथनके प्रतिपाल, दयाल, सुनो विनती हमरी है॥
बन्दि पड़े बिललाय सबै, बिन कारण आपद आनि परी है।
पूछत लाल विनोदीके साहिब, सारथी क्यों इन बन्दि भरी है॥३॥
सारथीने कर जोड़ कहा, सुन नाथ, इन्हें जु विदारेंगे अब।
यादव संग जुरे सबरे, तिन कारण ये सब मारेंगे अब॥
बच्चा इनके बनमें बिलपें, इनको वह आज संघारेंगे अब।
तातें तुमसे फरियाद करें, हमरी गति नाथ सुधारेंगे अब॥ ४॥
बात सुनी उतरे रथसे, पशु पक्षिनकी सब बन्द छुड़ाई।
जाव सबै अपने थलको, हमरो अपराध क्षमा करो भाई॥
है धृक् जीवन यों जगमें, तबही प्रभु द्वादश भावना भाई।
देव लौकान्तिक आय गये, जिन धन्य कहें सब यादव राई॥ ५॥
कौन करै प्रभु तो बिन यों, अरु को जगमें यह बात विचारे।
कौन तजे सुत बन्धु बधू, अरु को जगमें ममता निवारे॥

को वसु कर्मनि जीत सकै, धनि आप तरै अरु औरन तारै।
लाल विनोदीके साहबने, यश जीत लियो जग जीतन हारै॥
नेम उदास भये जबसे, कर जोड़के सिद्धका नाम लयो है।
अम्बर भूषण डार दिये, शिर मौर उतारके डार दयो है।
रूप धरो मुनिका जबही, तब ही चढ़िके गिरिनार गयो है।
लाल विनोदीके साहिबने, तहां पंच महाव्रत योग ठयो है॥७॥
नेमकुमारने योग लयो, जब होनेको सिद्ध करी मन इच्छा।
या भवके सुख जान अनित्य, सो आदर एक उदण्डकी भिक्षा॥
नेह तज्यो घरबार तज्यो, सरे भोग [illegible] मन शिक्षा।
लाल विनोदीके साहिबके संग, भूप [illegible] तब दिक्षा॥८॥
काहूने जाय कहा-सुनि राजुल, तेरो [illegible] गिरिनारि चढ़्यो है।
ये सुन भूमि पछार लई, मनु या [illegible] जाव कढ़ो है॥
सो उग्रसेनसे जाय कहा, सुन तात, [illegible] अनर्थ गढ़ो है।
लाज सबै सुध भूल गई, पिय देखनको जु उछाह बढ़ो है॥९॥
लाडली क्यों गिरिनारि चढ़े, उस ही पति तुल्य सुघर वर लाऊं।
प्रोहित को पठवाऊं अबै, बहु भूपनके सब देश ढुंढाऊं॥
ब्याह रचौं फिरके तुम्हरो, महि मण्डलके सब भूप बुलाऊं।
लाल विनोदीके नाथ बिना, यदुवंशनको [illegible] तुझे [illegible] लाऊं॥१०॥
काहे न बात सम्हाल कहो, तुम जानत हो यह बात भली है।
गालियां काढ़त हो हमको, सुन तात [illegible] अनीत चली है।
मैं सबको तुम तुल्य गिनूं, तुन जानत ना यह [illegible] रली है।
या भवमें पति नेमि प्रभू, वह लाल विनोदीको नाथ [illegible] है॥११॥
मेरो पिया गिरनारि चढ़ो, सुनतात मैं [illegible] गिरिनारि चढ़ौंगी।
संग रहों पियके बनमें, तिन ही [illegible] नाम पढ़ौंगी॥
और न बात सुहाय कछू, पियकी गुणमाल हियेमें गढ़ौंगी।
कंत हमारे रचे शिवसे, शिव धानकोमें भी सिवानचढ़ौंगी॥१२॥इति॥

सङ्कटहरण विनती।

हो दीनबन्धु श्रीपती करुणानिधान जी। अब मेरी विथा क्यों ना हरो बार क्या लगी॥ टेक॥ मालिक हो दो जहान के जिनराज आप ही। ऐबो हुनर हमारा कुछ तुम से छिपा नहीं॥ बेजान में गुनाह जो मुझ से बन गया सही। ककरी के चोर को कटार मारिये नहीं॥ हो दीन० १॥ दुख दर्द दिलका आप से जिसने कहा सही। मुशकिल कहर बहर से लई है भुजा गही॥ सब वेद औ पुराण में परमाण है यही। आनन्द कन्द श्रीजिनन्द देव है तुही॥ हो दीन० २॥ हाथी पे चढ़ी जाती थी सुलोचना सती। गंगा में गही ग्राहने गजराज की गती॥ उस वक्तमें पुकार किया था तुम्हें सती। भयटार के उभार लिया हो कृपापती॥ हो दीन० ३॥ पावक प्रचण्ड कुण्ड में उमण्ड जब रहा। सीता से सपथ लेने को जब राम ने कहा॥ तुम ध्यान धरके जानकी पग धारती तहां। तत्काल ही सर स्वच्छ हुआ कमल लहलहा॥ हो० ४॥ जब चीर द्रौपदी का दुशासनने था गहा। सबरे सभा के लोग कहते थे हहा हहा॥ उस वक्त भीर पीर में तुमने किया सहा। परदा ढका सती का सुयश जगत में रहा॥ हो० ५॥ सम्यक्त शुद्ध शीलवन्त चन्दनासती। जिसके नजीक लगती थी जाहर रती रती। बेड़ीमें पड़ी थी तुम्हें जब ध्यावती हुती॥ तब वीरधीर ने हरी दुख द्वन्द की गती॥ हो० ६॥ श्रीपाल को सागर विषै जब सेठ गिराया। उसकी रमासे रमने को आया था बेहया॥ उस वक्त के संकट में सती तुमको जो ध्याया। दुख द्वन्दफन्द मेटके आनन्द बढ़ाया॥ हो० ७॥ हरषेण की माता को था जब सौत सताया। रथ जैनका तेरा चले पीछेसे बताया॥ उस वक्त के अनशन में सती तुमको जो ध्याया।

चकेश्वरी हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया ॥ हो० ८ ॥ जब अंजना सती को हुआ गर्भ उजाला। तब सासु ने कलंक लगा घर से निकाला ॥ बन घर्गके उपसर्गमें सती तुमको चितारा। प्रभु भक्तियुत जानके भय देव निवारा ॥ हो० ९ ॥ सोमा से कहा जो तू सती शील विशाला। तो कुम्भ में से काढ़ भला नाग ही काला ॥ उस वक्त तुम्हें ध्याय के सती हाथ जो डाला। तत्काल ही वो नाग हुआ फूलकी माला ॥ हो० १० ॥ जब राज रोग था हुआ श्रीपालराजको। मैनासती तब आपको पूजा इलाज को ॥ तत्काल ही सुन्दर किया श्रीपालराज को। वह राज भोग भोग गया मुक्तिराजको ॥ हो० ११ ॥ जब सेठ सुदर्शन को मृषा दोष लगाया। रानी के कहे भूपने शूली पै चढ़ाया ॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने निज ध्यान में ध्याया। शूली से तार उसको सिंहासन पै बिठाया ॥ हो० १२ ॥ जब सेठ सुधन्ना को था बापी में गिराया। ऊपर से दुष्ट उसको था वह मारने आया ॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने दिल अपने में ध्याया। तत्काल ही जंजाल से तब उसको बचाया ॥ हो० १३ ॥ एक सेठके घरमें किया दारिद्र ने डेरा। था भोजन का ठिकाना भी नहीं सांझ सवेरा ॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने जब ध्यान में घेरा। तबकर दिया था आपने लक्ष्मी-का बसेरा ॥ हो० १४ ॥ बलि बादमें मुनिराज सों जब पार न पाया। तब रातको तलवार ले शठ मारने आया। मुनिराज ने निज ध्यान में मन लीन लगाया। उस वक्त हो परतक्ष तहाँ देव बचाया ॥ हो० १५ ॥ जब रामने हनुमन्त को गढ़लङ्क पठाया। सीता की खबर लेनेको फौरन ही सिधाया ॥ मग बीच दो मुनिराजको लख आगमें काया। झटवार मूसलधारसे उपसर्ग बुझाया ॥ हो० १६ ॥ जिननाथ ही को माथ नवाता था उदारा। घेरेमें पड़ा था वह कुम्भकरण विचारा ॥ उस वक्त

तुम्हें प्रेमके संकटमें उबारा। रघुवीरने सब पीर तहां तुरत निवारा॥ हो० १७॥ रणपाल कुंवरके पड़ी थी पांवमें बेरी। उस वक्त तुम्हें ध्यानमें ध्याया था सबेरी। तत्काल ही सुकुमार की सब झड़ पड़ी बेरी। तुम राजकुंवरकी सभी दुःख द्वन्द्व निवेरी॥ हो० १८॥ जब सेठके नन्दनको डसा नाग जु कारा। उस वक्त तुम्हें पीरमें धरधीर पुकारा॥ तत्काल ही उस बालका विषभूरि उतारा। वह जाग उठा सोके मानो सेज सकारा॥ हो० १९॥ मुनि मानतुङ्गको दई जब भूपने पीरा। तालेमें किया बन्द भरी लोह जंजीरा। मुनीशने आदीशकी थुति की है गंभीरा। चक्रेश्वरी तब आनके झट दूर की पीरा॥ हो० २०॥ शिवकोटने हठथा किया समन्तभद्र से। शिवपिण्डको बन्दन करो सको अभद्र से॥ उस वक्त स्वयम्भू रचा गुरु भाव भद्र सो। जिन चन्द्रकी प्रतिमा तहां प्रगटी सुभद्र सो॥ हो०२१॥ सूवेने तुम्हें आनके फल आम चढ़ाया। मैंढक ने चढ़ा फूल भरा भक्त का भाया॥ तुम दोनोंको अभिराम स्वर्गधाम बसाया। हम आपसे दातारको लख आज ही पाया॥ २२॥ कपि स्वान सिंह नवल अज बैल विचारे। तिर्यंच जिन्हें रञ्च न था बोध चितारे। इत्यादिको सुरधाम दे शिवधाममें धारे। हम आपसे दातारको प्रभु आज निहारे॥ हो० २३॥ तुमही अनन्त जन्तु का भय भीड़ निवारा। वेदो पुराणमें गुरु गणधरने उचारा। हम आपकी शरणागतिमें आके पुकारा। तुम हो प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष इच्छ अहारा॥ हो० २४॥ प्रभु भक्त व्यक्त जक्त भुक्त मुक्तके दानी। आनन्द कन्द वृन्दको हो मुक्तिके दानी। मोहि दीन जान दीनबन्धु पातक भानी। संसार विषम क्षार तार अन्तरयामी॥ हो० २५॥ करुणानिधान बानको अब क्यों न निहारो। दानी अनन्त दानके दाता हो संभारो॥ वृष चन्द नन्द

वृन्दका उपसर्ग निवारा। संसार विषमक्षार से प्रभु पार उतारो॥ हो दीनबन्धु० २६॥

पुकार पचीसी।

दोहा—जो यह भव संसारमें, भुगतैं दुःख अपार।
सो पुकार पचीसिका, करैं कवित इक ठार॥

तेईसा छन्द।

श्री जिनराज गरीबनिवाज सुधारन काज सबै सुखदाई।
दीनदयाल बड़े प्रतिपाल दया गुणमाल सदा शिर नाई॥
दुर्गतिटारन पाप निवारन हो भवतारन को सब नाई।
बारहिबार पुकारतु हौं जनकी विनती सुनिये जिनराई॥१॥
जन्म जरा मरणो त्रय दोष लगे हमको प्रभु काल अनाई।
तासु नसावनको तुम नाम सुनो हम वैद्य महा सुखदाई॥
सो त्रय दोष निवारनको तुम्हरे पद सेवतु हौं चित ल्याई। बारहि०॥२॥
जो इक है भवको दुख होय तो राख रहौं मनको समझाई।
यह चिरकाल कुहाल भयो अबलौं कहुं अन्त परो न दिखाई॥
सो पर या जगमांहि कलेश परे दुख घोर सहे नहि जाई। बारहि०॥३॥
देख दुखी पर होत दयाल सुहै इक ग्राम पती शिर नाई।
हो तुम नाथ त्रिलोकपती तुमसे हम अर्ज करी शिर नाई॥
सो दुख दूर करो सबके बसु कर्मन ते प्रभु लेउ छुड़ाई। बारहि० ॥४॥
कर्म बड़े रिपु हैं हमरे हमरी बहु हीन दशा कर पाई।
दुःख अनन्त दिये हमको हर भाँतिन भाँतिन स्वाद लगाई॥
मैं इन बैरिनके बश ह्वै करिके भटको सु कहां नहि जाई। बारहि०॥५॥
मैं इस ही भव काननमें भटको चिरकाल सुहाल गमाई।
किञ्चित् हो तिलसे सुखको बहु भांति उपाय करे ललचाई॥
नार गतैं चिर मैं भटको जहां मेरु समान महा दुखदाई। बारहि०॥६॥

नित्य निगोद अनादि रहो त्रसके तनकी जहां दुर्लभताई।
ज्यों क्रम सो निकसो वह तें त्यों इतर निगोद रहो चिरछाई॥
सूक्षम बादर नाम भयो जबही यह भाँति धरी पर्यायी। बारहि०॥७॥
औ जब ही पृथ्वी जल तेज भयो पुनि होय बनस्पतिकाई।
देह अघात धरी जब सूक्षम घातत बादर शीरघताई॥
एक उदै प्रत्येक भयो सह धारण एक निगोद बसाई। बारहि०॥८॥
इन्द्रिय एक रही चिरमें कब लब्धि उदै क्षय उपशमताई।
वे त्रय चार धरी जब इन्द्रिय देह उदै बिकलत्रय आई॥
पंचन आदि किधौं पर्यन्त धरे इन इन्द्रियके त्रस काई। बारहि० ॥९॥
काय धरी पशुकी बहु बार भई जल जन्तुनकी पर्याई।
जो थल मांहि अकाश रहो चिर होय पखेरू पंख लगाई॥
मैं जितनो पर्याय धरीं तिनके बरणें कहुं पार न पाई। बारहि०॥१०॥
नरक मझार लियो अवतार परो दुख भार न कोई सहाई।
जो तिलसे सुख काज किये अपने सब नरकनमें सुधि आई॥
ता तियके तनकी पुतली हमरे हियरा करि लाल भिराई। बारहि०॥११॥
लाल प्रभा सु मही जह हैं अरु शर्कर रेत उन्हार बनाई।
पङ्क प्रभा जु धुआंवत है तमसो सु प्रभा सु महातम नाई॥
आंजन लाख जु गोड़स पिण्ड तहां इकहा छिनमें गल जाई॥बारहि०१२॥
जे अघ घोर महा दुखदायक मैं विषयारसके फल पाई।
काटत हैं जबहीं निरदय तबही सरिता महि देत बहाई॥
देवअदेव कुमार जहाँ किच पूरब बैर बतावत आई॥ बारहि० ॥१३॥
ज्यों नरदेह मिली क्रम सों करि गर्भ कुवास महादुखदाई।
जे नव मास कलेश सहे मलमूत्र अहार महाजय नाई॥
जे दुख देखि जबै निकसो पुनि रोवत बालपने दुखदाई। बारहि०॥१४॥
योवन में तन रोग भयो कबहूं विरहानल व्याकुलताई।
मान विषें रस भोग चहों उन्मत्त भयो सुख मानत ताही।

आय गयो क्षणमें चिरथापन सो नर भौ इस भाँति गमाई ॥बारहिं० ॥
देव भयो सुर लोक विषैं तव मोहि रहो परया उर लाई ।
पाय विभूति बड़े सुरकी पर सम्पति देखत झूरत छाई ॥
माल जबैं मुरझाय रहो थित पूरण जानि तबैं बिललाई ॥बारहिं०१६॥
जे दुख मैं भुगते भवके तिनके वरणौं कहुं पार न पाई ।
काल अनादिन आदि भयो नहिं मैं दुख भाजन हो अघ माहीं ॥
सो दुख जानत हो तुमही जबहीं यह भांति भ्रमो पर्यायी ॥बारहिं०१७॥
कर्म अकाज करे हमरे हमको चिरकाल भये दुखदाई ।
मैं न बिगाड़ करो इनको बिन कारण पाय भये अरि आई ॥
मात पिता तुमही जगके तुम छांड़ि फिरादि करौं कह जाई ॥बारहिं०
सो तुम सौं सब दुःख कहा प्रभु जानत हो तुम पीर पराई ।
*मैं इनको सत्संग कियो दिन ही दिन आवत मोहि बुराई ॥
ज्ञान महानिधि लूट लियो इन रंक कियो यह भांति हराई ॥बारहिं०
मैं प्रभु एक सरूप सही सब ये इन दुष्टन की कुटलाई ।
पाप सु पुण्य दुहूं निज मारग में हमसों नहि फांसि लड़ाई ॥
मोहि धकाय दियो जगमें चिरजानत देह दहै न बुझाई ॥बारहिं०॥२०॥
ये विनती सुन सेवक को निज मारग में प्रभु लेव लगाई ॥
मैं तुम दास रहो तुमरे संग लाज करो शरणागति आई ॥
मैं कर दास उदास भयो तुमरो गुणमाल सदा उर लाई ॥बारहिं०॥२१॥
देर करो मत श्री करुणानिधि जू यति राखनहार निकाई ।
रोग जुरे कमसों प्रभुजी यह न्याय हजूर भयो तुम आई ॥
आन रहो शरणागति हों तुमरी सुनिये तिहुं लोक बड़ाई ॥ बारहिं०२२॥
मैं प्रभु जी तुमरो समको इन अन्तर पाय करो दुसराई ।
न्याय न अन्त करै हमरो न मिले हमको तुम सो ठकुराई ॥
सज्जन राख करो अपने ढिग दुष्टन देहु निकास बहाई । बारहिं०॥२३॥
दुष्टन की सतसंगति में हम को कछु ज्ञान परो न निकाई ।

सेवक साहब की दुविधा न रहै प्रभु जी करिये सु भलाई ॥
फेर नहीं सु करों अरजी तुम जाहर जानि परे जगताई ॥ बारहिं० ॥२४॥
ये विनती प्रभु के पदपंकज में जे नर चित्त लगाय करेंगे ।
जे जगके अपराध करे सब ते क्षणमात्र भरे में हरेंगे ।
जे गति नाम निवास सदा अवतार सुधो स्वरलोकधरेंगे ।
देवीदासकहैं कर सो पुनि ते भवसागर पार तरेंगे ॥२५॥

शीलमहात्म्य ।

जिनराज देव कीजिये मुझ दीन पर करुना । भवि वृन्दको अब दीजिये यह शीलका शरना ॥ टेक ॥ शीलकी धारा में जो स्नान करे हैं । मल कर्मको सो धोय के शिवनार वरै हैं ॥ व्रतराज सो वैताल व्याल काल डरें हैं । उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरें हैं ॥१॥ तप दान ध्यान जाप जपन जोग अचारा । इस शील से सब धर्मके मुँह का है उजारा ॥ शिवपन्थ ग्रन्थ पंथ के निर्ग्रन्थ निकारा । बिन शील कौन कर सके संसार से पारा ॥२॥ इस शीलसे निर्वाण नगरकी है अबादी । त्रेसठ शलाका कौन ये ही शील सवादी ॥ सब पूज्य की पदवी में है परधान ये गादी । अठारा सहस्र भेद भने वेद अनादी ॥३॥ इस शील से सीता को हुआ आग से पानी । पुर द्वार खुला चालनिमें भर कूप सों पानी ॥ नृप ताप हरा शील से रानी किया पानी । गङ्गामें ग्राह सों बचा इस शीलसे रानी ॥ ४ ॥ इस शील हीसे साँप सुमन माल हुआ है । दुख अंजना का शील से उद्धार हुआ है ॥ यह सिन्धुमें श्रीपालको आधार हुआ है । चम्पाका पाट शील हीसे पार हुआ है ॥५॥ द्रौपदी का हुआ शीलसे अम्बर का अपारा । जा धातु द्वीप कृष्ण ने सब कष्ट निवारा ॥ सत चन्दना सती की व्यथा शीलने टारा ।

इस शील से ही शक्ति विशल्या निकारा ॥ ६ ॥ वह कोट शिला शीलसे लक्ष्मणने उठाई । इससे हो नागको नाथा श्रीकृष्णकन्हाई ॥ इस शीलने श्रीपालजी की कोढ़ मिटाई । अरु रैनमञ्जूषा को लिया शील बचाई ॥७॥ इस शीलसे रनपाल कुंअरकी कटी बेड़ी । इस शीलसे विष सेठकी नन्दनको निवेरी ॥ शूलीसे सिंह पीठ हुआ सिंहकी सेरी । इस शीलसे कर माल सुमन गलेरी ॥८॥ समन्तभद्रजी ने यही शील सम्हारा । शिवपिण्ड ते जिनचन्द्रका प्रतिविम्ब निकारा ॥ मुनि मानतुङ्गजीने यही शील सुधारा । तब आनके चक्रेश्वरी सब बात सम्हारा ॥९॥ अकलङ्कदेवजी ने इसी शील से भाई । ताराका हरा मान विजय बौद्धसे पाई ॥ गुरु कुन्द-कुन्दजीने इसी शीलसे जाई । गिरनार पै पाषाण की देवीको बुलाई ॥१०॥ इत्यादि इसी शील की महिमा है घनेरी । विस्तारके कहने में बड़ी होयगी देरी ॥ पल एकमें सब कष्टको यह नष्ट करेरी । इसही से मिले रिद्धि सिद्धि वृद्धि सवेरी ॥११॥ बिन शील खता खाते हैं सब कांछके ढीले । इस शील बिना तन्त्र मन्त्र जन्त्र हों कीले ॥ सब देव करैं सेव इसी शील से होले । इस शील ही से चाहे तो निर्वाण पदी ले ॥१२॥ सम्यक सहित शीलको पाले है जो अन्दर । सो शील धर्म होय है कल्याण का मन्दिर ॥ इससे हुये भव पार हैं कुल कौल और बन्दर । इस शील की महिमा न सकै भाष पुरन्दर ॥१३॥ जिसशील के कहने में थका सहस वदन है । जिस शीलसे भय पाय भगा क्रूर मदन है ॥ सो शील ही भाव वृन्दको कल्याण प्रदन है । दश पैड़ ही इस पैड से निर्वाण सदन है ॥१४॥

॥ इति शील महात्म्य ॥

आपदाओं का स्वागत।

पत्थर तुम मुझे बनाओ; दृढ़ता का पाठ पढ़ाओ।
साहस, सुकर्म सिखलाओ; पथ उन्नति का दिखलाओ॥
हाँ ऐ प्यारी विपदाओ। आती हो, आओ! आओ!—१
जी भर के मुझे सताना; हरगिज़ तुम बाज़ न आना।
निज-हृदय कठोर बनाना; मत कहीं द्रवित हो जाना॥
बस मुझको धीर बनाओ। आती हो, आओ! आओ!—२
क्यों साहस अपना छोड़ूँ; तुमको लख कर मुँह मोड़ूँ।
दिल नाहक अपना तोड़ूँ; निज धर्म-धीरता गोड़ूँ॥
जितना बन सके सताओ। आती हो, आओ! आओ!—३
दुष्टों की बुद्धि भ्रमाना; मेरे विरुद्ध उसकाना।
तुम अवसर जब तक पाना, दुख देने चूक न जाना॥
पीछे न कहीं पछताओ। आती हो, आओ! आओ!—४
मैं जी का बड़ा कड़ा हूँ; मत कहना धृष्ट बड़ा हूँ!
स्वागत के लिए खड़ा हूँ; निज हठ पर आज अड़ा हूँ॥
मुख घूँघट में न छिपाओ। आती हो, आओ! आओ!—५
क्या गम जो दुःख सहूँगा; मन मारे मौन रहूँगा।
मैं कभी अधीर न हूँगा; हा! हन्त! न कभी कहूँगा॥
चाहे जितना तड़पाओ। आती हो, आओ! आओ!—६
तुमसे कुछ अहित न होगा; सित होगा असित न होगा।
यश-शशि क्या उदित न होगा? फिर क्या मन मुदित न होगा?
हाँ हाँ हौसला बढ़ाओ। आती हो, आओ! आओ—७
जिन जिन के पास गई हो; उनकी मति गई नई हो।
चिरजीवी हुए जयी हो; तुम उनको सुधा हुई हो॥
आँखें न मुझे दिखलाओ। आती हो, आओ! आओ!—८
तुम दो मत दया की भिक्षा; है मुझे न इसकी इच्छा।
थोड़े दिन को हो आई; सुख से हो सुखद सगाई।
हो सुमति साथ ही लाई; हो इसी लिये मन भाई॥

बस दे दो ऐसी शिक्षा, कर लूँ मैं पास परीक्षा ॥
कुछ ऐसा गुर बतलाओ। आती हो, आओ! आओ!—९
हाँ ऐसा सबक पढ़ाना; दिल दूना रोज़ बढ़ाना।
भ्रम में न मुझे भटकाना; सद्ज्ञान सदैव जताना ॥
जीवन की जाँच कराओ। आती हो, आओ! आओ!—१०
तुम अगर न जग में होतीं; सब पड़ी जातियाँ सोतीं।
निज समय स्वर्ण सा खोतीं; जगतीं तब दुखड़ा रोतीं ॥
जीवन-रक्षार्थ जगाओ। आती हो, आओ! आओ!—११
तव चरणों की बलिहारी; यह आज सभ्यता प्यारी।
जिसका है सिक्का जारी; हो इसकी सिरजनहारी ॥
मुझको भी सुपथ दिखाओ। आती हो, आओ! आओ!—१२
यदि पड़ता विषम न पाला; गरमी का कठिन कसाला।
जल मुसलधार से पाला; ये भवन न बनते आला ॥
आओ शिष्टता बढ़ाओ। आती हो, आओ! आओ!—१३
यदि भूख न हमें सताती; क्यों करते खेती पाती।
मेधा विकास क्या पाती, यह समझ कहाँ से आती ॥
नित नई सूझ उपजाओ। आती हो, आओ! आओ!—१४
यदि राम न वन को जाते; क्या इतनी कीर्ति कमाते?
क्यों सज्जन फाँसी पाते, यदि तुम्हें न वे अपनाते ॥
जगती में सुयश दिलाओ। आती हो, आओ! आओ!—१५
निर्भय हूँ या कि डरा हूँ; डूबा हूँ या कि तरा हूँ।
जीवित हूँ या कि मरा हूँ; खोटा हूँ या कि खरा हूँ ॥
कस लो, सुलाखलो ताओ। आती हो, आओ! आओ!—१६
तुम हो पाहुनी हमारी; होगी न मुझे क्यों प्यारी?
प्रिय मित्र, धर्म, धृति, नारी इनकी परखानेहारी ॥
सज्जन, दुर्जन बिलगाओ। आती हो, आओ! आओ!—१७
पद पद्म स्पर्श कराओ। आती हो, आओ! आओ!—१८
"विपद"

विधि का प्राबल्य और दौर्बल्य।

(आर्या)

जीवन की औ धन की आशा जिन के सदा लगी रहती।
विधि का विधान सारा, उन ही के अर्थ होता है॥
विधि क्या कर सकता है? उनका जिनकी निराशता आशा।
भय-काम-वश न होकर, जग में स्वाधीन रहते जो॥

मेरी द्रव्य-पूजा।

कृमि-कुल-कलित नीर है जिसमें मच्छ-कच्छ-मेंडक फिरते,
हैं मरते भी, वहीं जनमते, प्रभो मलादिक भी करते।
दूध निकालें लोग छुड़ाकर बच्चे को पीते पीते;
है उच्छिष्ट-अनीतलब्ध, यों योग्य तुम्हारे नहिं दीखे॥ १
दही घृतादिक भी वैसे हैं कारण उनका दूध यथा;
फूलों को भ्रमरादिक सूँघें वे भी हैं उच्छिष्ट तथा।
दीपक तो पतंग-कालानल जलते जिसपर कीट सदा;
त्रिभुवनसूर्य! आपको अथवा दीप-दिखाना नहीं भला॥ २
फल-मिष्टान्न अनेक यहाँ, पर उनमें ऐसा एक नहीं।
मल-प्रिया मक्खीने जिसको आकर प्रभुवर! छुआ नहीं॥
यों अपवित्र पदार्थ अरुचिकर, तू पवित्र सब गुण घेरा;
किस विधि पूजूँ क्या हि चढ़ाऊँ, चित्त डोलता है मेरा॥ ३
औ 'आता है ध्यान' तुम्हारे क्षुधा-तृषा का लेश नहीं,
नाना रस-युत अन्न-पान का, अतः 'प्रयोजन रहा नहीं।
नहिं वांछा, न विनोद भाव, नहिं राग-अंश का पता कहीं;
इससे व्यर्थ चढ़ाना होगा, औषधि सम जब रोग नहीं॥ ४
यदि तुम कहो "रत्न वस्त्रादिक भूषण क्यों न चढ़ाते हो,
अन्यसदृश, पावन हैं" 'अर्पण करते क्यों सकुचाते हो।'

तो, तुमने निःसार समझ अब खुशी खुशी उनको त्यागा;
हो वैराग्य-लीन-मति, स्वामिन! इच्छा का तोड़ा तागा ॥ ५
तब क्या तुम्हें चढ़ाऊँ वे हो, करूँ प्रार्थना 'ग्रहण करो ?'
होगी यह तो प्रकट अज्ञता तुव स्वरूप की, सोच करो।
मुझे धृष्टता दीखे अपनी और अश्रद्धा बहुत बड़ी,
हेय तथा संत्यक्त वस्तु यदि तुम्हें चढ़ाऊँ घड़ी घड़ी ॥ ६
इससे 'युगल' हस्त मस्तक पर रखकर नम्रीभूत हुआ।
भक्ति-सहित मैं प्रणमूँ तुम को बार बार, गुण-लीन हुआ।
संस्तुति शक्ति-समान करूँ औ, सावधान हो नित तेरी;।
काय वचन की यह परिणति हो अहो द्रव्य-पूजा * मेरी ॥ ७
भाव—भरी इस पूजा से ही होगा: आराधन तेरा,
होगा तब सामीप्य प्राप्त औ तभी मिटेगा जग फेरा।
तुझमें मुझमें भेद रहेगा नहिं स्वरूपसे तब कोई,
ज्ञानानंद-कला † प्रकटेगी थी अनादि से जो खोई ॥ ८

---

* श्रीअमितगति आचार्य ने इसी को पुरातन द्रव्य-पूजा प्राचीनों द्वारा अनुष्ठित द्रव्य-पूजा बतलाया है। आप लिखते हैं :-

'वचो विग्रहसंकोचो द्रव्यपूजा निगद्यते।
तत्रमानससंकोचो भावपूजा पुरातनैः ॥'—उपासकाचार।

अर्थात्-काय और वचन को अन्य व्यापारों से हटाकर परमात्मा के प्रति हाथ जोड़ने शिरोनति करने, स्तुति पढ़ने आदिद्वारा एकाग्र करने का नाम 'द्रव्य-पूजा,' और मन को नाना विकल्पजनित व्यग्रता को दूर करके उसे ध्यानादिद्वारा परमात्मामें लीन करने का नाम 'भाव-पूजा' है। ऐसा पुरातन आचार्यों ने—अंगपूर्वादि के पाठियों ने—प्रतिपादन किया है।

† ज्ञान और आनन्द की वह विभूति।

भारत का आमद खर्च।

ग्यारह पाई फी कस जब कि हिन्दुस्तान कमाई है।
क्या क्या खर्च होता है इसमें सुनिये कान लगाई है॥ टेक॥

फैल्ट सातकी कमीज़ दो की नकटाई आठ आने को।
सात का चश्मा सात आने को कालर टाई लगाने को॥
कम से कम चाहिये है चौदह वास्केट कोट बनाने को।
लास्ट दरजे पतलून पाँच का गेलिस बारह आने को॥
दो रुपया महवारा इनकी लगने लगी धुलाई है॥ ग्यारह०॥१॥

चौदह से कम लगे न यारों वेस्टन वाच मंगाने में।
दो रुपये से कम नहीं लगते फैंसी बेंत उठाने में॥
डासन का फुलबूट बीस का है मशहूर जमाने में।
बुर्श और पालिस की शीशी मिलती पन्द्रह आने में॥
ब्रिटिश की जुर्राबों की कीमत दश आना ठहराई है॥ ग्या०॥

तीस की सैकिंडहैन्ड साइकिल यह भी आजकल का फैशन।
एक कदम भी चल नहिं सकते पैदल मिस्टर इन्डीयन।
सवा रुपये का घर में स्लीपर रखना पड़ता मजबूरन॥
गलती हो तो कीजै माफ मैं बतलाता हूं नक्समीनन।
दो आना रोज़ाना उन से लेता बुध्धू नाई है॥ ग्यारह०॥ ३॥

कंघा साबुन तेल सेफ्टीपिन तुमको गिनवाऊं क्या।
पन्द्रह आने से कम कीमत इनकी और लगाऊं क्या॥
सिगरेट का इस कदर खर्च है मैं तुमको समझाऊं क्या।
थर्डक्लास का खर्च तो यह है फर्स्टक्लास बतलाऊं क्या॥
इस फिजूल खर्चो ने नाहक हम से भीख मंगाई है। ग्यारह० ४॥

भक्त भावना।

कुल–कुबेर के कनक कोष की, है न तनिक भी मुझको चाह।
है न कामना औरों की सुख, सम्पत्ति पर हो दारुन डाह॥
नहीं चाहिये अश्व अनोखे, भव्य भवन बहु भोग विलास।
हो न भले ही मेरे घर में, "विद्युत" का वह प्रखर प्रकाश॥
देह दमकती हो दामिनि सी, है न लालसा ऐसी लेश।
मुक्ता मणि की आभा वाले, नहीं चाहिए मुझको वेष॥
नहीं चाहता, चुभें न मेरे, चिंता के अति तीक्ष्ण त्रिशूल।
या कि कल्पना के पलनों में, रहूँ भूलता जग के भूल॥
कहें न चाहे मिल जन मुझको, परम प्रतापी प्रतिभावान।
प्रेम भरी पुष्पों की माला, करें न मेरा गौरव मान॥
कोरी करतल ध्वनि से मेरा, हो न ध्वनित गुणगरिमा गान।
निर्जन वन में होवे चाहे, यह जीवन प्रदीप अवसान॥
मन मंदिर में ज्योति तुम्हारी, प्रभा–पुञ्ज की हो द्युतिपूर्ण।
नाथ! करो मेरा नित ही बस, तम–अज्ञान हृदय का चूर्ण॥
सदा विलोकूँ निज नयनों से, तेरा मञ्जु मनोहर रूप।
चरण कमल चापूँ पुलकित हो, रहे भावना यही अनूप॥

मेरी भूल।

भूल मेरी यह हुई जो मैं ने दुर्जन को सज्जन समझा।
विष को समझा शांति सुधारस, नीम वृक्ष चन्दन समझा॥
रिपु को मित्र, बुरे को अच्छा, मूरख को मुनिजन समझा।
कृतघ्नी को विश्वासी और काफिर को ब्राह्मण समझा॥
दुष्ट और निर्दई पुरुष को दयावान भविजन समझा।
चोर को समझा साधु, छली कपटी को संत सुजन समझा॥

ढाक पुष्प को कमल पुष्प, बन निर्जन नन्दन बन, समझा।
भूल मेरी यह हुई जो मैंने दुर्जन को सज्जन समझा॥ १
दुर्योधन को धर्म युधिष्ठिर, रावण को लक्ष्मन समझा।
कंस को समझा परमहंस, दुःशासन को अर्जुन समझा॥
जयचन्द को राणा प्रताप, औरङ्ग को सुत सज्जन समझा।
गणिका को सतशील धारिणी पतीव्रता कामिन समझा॥
कांच खंड को रत्न अमोलक, पीतल को कंचन समझा।
भूल मेरी यह हुई जो मैंने दुर्जन को सज्जन समझा॥ २
अज को गज, गर्दभ को घोड़ा, स्वान को बनराजन समझा।
काग को समझा राजहंस, और नाग को हार चन्दन समझा॥
द्वेष घृणा को प्रेम प्रीत, अरु झूठ को सत्य वचन समझा।
ताप तप्त को, शीत सुन्दर मन्द सुगन्ध पवन समझा॥
तिमिर को समझा परम उजाला, कटु को मिष्ट भोजन समझा।
भूल मेरी यह हुई जो मैंने, दुर्जन को सज्जन समझा॥ ३
मरनहार को अमर समझकर, मरने को जीवन समझा।
मोह मदिरा कर पान, भुला गुण ज्ञान, न अपनापन समझा॥
जो समझा सो उल्टा समझा, कुछ से कुछ लक्षन समझा।
इसी समझ में जन्म गँवाना, अब जब निकट मरन समझा॥
तब कुछ आई समझ मुझे मैं अपना मूरखपन समझा।
भूल मेरी यह हुई जो मैंने दुर्जन को सज्जन समझा॥ ४
गुरुदेव की हुई कृपा तब मैं सम्यक्‌दर्शन समझा।
हुआ ज्ञान का हृदय उजाला, चारित का पालन समझा॥
मोह जाल जंजाल अहितकर, विषयों को दुश्मन समझा।
राग द्वेष का त्याग, शुद्ध वैराग का मैं वर्णन समझा॥
अमर आत्म, परमात्म, 'ज्योति' लख उसे तरनतारन समझा।
मिटी भूल भव भव की, अब मैं अपने को धन धन समझा॥ ५

प्रकाशक—

जैन मित्र मंडल,

देहली।

ट्रैक्ट संख्या—६१

वीर-वन्दना

सन् १९३२ और १९३३ के श्री वीर-जयन्ति
उत्सव पर होने वाले कवि-सम्मेलनों में
पठित समस्या-पूर्तियों का
सङ्कलन

अगस्त १९३३
वीर निर्वाण सं० २४५९

सङ्कलन कर्त्ता—
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन,
एम०ए०, देहली।

प्रकाशक—
जैन मित्र मंडल,
देहली।

प्रथमवार
१०००

मूल्य =)

सङ्कलनकर्त्ता के दो शब्द

यों तो हमारे वे सभी धार्मिक उत्सव जो परम्परा से चले आ रहे हैं, देहली में प्रति वर्ष होते रहते हैं पर श्री वीर-जयन्ति का परम पवित्र उत्सव इन सब में अद्वितिय और प्रभाव पूर्ण है। अन्य अनेक धार्मिक उत्सवों का रूप अत्यन्त प्राचीन होने के कारण उनका विधि-विधान अब एक बीते हुए स्वर्ण-युग की याद-मात्र रह गया है, किन्तु श्री वीर जन्मोत्सव का यह ओजमय रूप जो देहली में चैत्र की चमकती हुई त्र्योदशी को दिखाई देता है, हमारे वर्तमान का गौरव है।

यह सत्य है कि हम जैन धर्मानुयायी शिथिल हैं, निश्चेष्ट हैं, अकर्मण्य हैं किन्तु यह भी सत्य है कि हम सर्वथा ऐसे नहीं हैं। हम में अब भी जीवन है, हमारे यहां अभी भी ऐसी संस्थायें और ऐसी आत्मायें हैं जो सत्प्रभावना की ज्योति को अपने धार्मिक स्नेह से अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। जैन मित्र-मण्डल इसी बात का उदाहरण है

जयन्ति के अवसर पर होने वाला कवि-सम्मेलन सारे उत्सव का प्राण है। उस दिन देहली और देहली के बाहर के कवि गण एक बहुत बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं और श्री वीर भगवान के चरणों में अपनी हार्दिक भक्ति की पावन श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हैं, उन में जैनियों के अतिरिक्त अनेक उन्नत हृदय अन्य धर्मावलम्बी भाई होते हैं जिनकी वीर-भक्ति हमारे लिये सराहना की वस्तु है।

"वीर वन्दना" गत दो वर्षों की हिन्दी समस्या-पूर्त्तियों का 'सङ्कलन' है। मैं इसे 'सङ्कलन' कहता हूं पर वास्तव में इसमें सङ्कलन का अंश बहुत कम है, जो कुछ है 'संग्रह' ही है।

देहली,
२२ जुलाई १९३३ ई०

—लक्ष्मीचन्द्र जैन,
एम० ए०

सूचि

श्री वीर जयन्ति उत्सव सन् १९३२

१—समस्या—"यश छायो है"

वीर जयन्ति उत्सव सन् १९३३

२—समस्या—"वीर भगवान की"

३—अतिरिक्त रचनाएँ।

❀ यश छायो है ❀

(१)

धाम धन त्यागि दीन्हयों मन न मलीन कीन्हयों,
चित्त माँहि नाम मात्र हू न मोह आयो है।
बन बन डोले परे पाँयन फफोले अरु,
पग धरि पोले जीव जंतु को बचायो है।
फूल फल खायो नाहिं काहू को सतायो, जनै-
इक उपदेश सत्य मारग दिखायो है।
आपु ज्ञान पायो अरु लोगन बनायो यातें,
'विष्णु' महावीर स्वामी को यश छायो है।

(२)

आयो जो शरन माँहि कोन हू बरन भयो
दया दृष्टि करि ताहि पार ही लगायो है।
खायो है न धोखो कहूँ नाना विघ्न आये तहू,
तपके प्रभाव ते न कोऊ पार पायो है।
शौच धृति क्षमा दम नेम व्रत पाल्यो,
गाल्यो राग द्वेष हू को काम को भगायो है।
ब्रह्मचर्य राख्यो अरु मिथ्या कबौं भाख्यो नाहिं
'विष्णु' याहीतें महा वीर यश छायो है।

गंगाविष्णु पाण्डेय, विद्याभूषण 'विष्णु'

(२)

तीनों लोक श्वेत भये, लोप भयो चन्द्रमा को,
वृन्द सब तारन को नभ न दिखायो है।
कोऊ कहै हिम राशि कोऊ कहै हीर अहै,
हरि हरि हारे सब पार नहीं पायो है।
दूध को समुद्र है कि मालती को कुञ्ज है,
हर यह कास को कि कञ्ज पुञ्ज आयो है।
प्रेम-पूर्ण-चित्त इन महावीर देव को,
कौमुदी समान सित ऐसो यश छायो है।

पं० सुधानिधि उपाध्याय वैद्यराज देहली।

(३)

गजानन महाकाय सब में रहे समाय,
पार्वती श्री गणेशजी को सिर नवायो है।
देवन के देव गुरु देव हो महान देव,
अन्धकार नाश करि संशय मिटायो है।
शारदा महेश शेष ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋषि,
ज्ञान दर्शाय जड़वाद को नशायो है।
चेतन स्वरूप सत बोध को विज्ञान भान,
भान के समान चहुं दिशि यश छायो है।

(४)

आत्मा विज्ञान हीन जाल में फँसा हो मीन,
व्याकुल हो जीव कर्म बन्धन में आयो है।
विषयों के संग भृङ्ग भूल रहा रूप रङ्ग,
शार्दूल शावक ज्यों शृगालों में समायो है।

मूढ़ मति मन्द अन्ध त्याग हरि चरणन को,
पुनर्जन्म मृत्यु रूपी व्यालन डसायो है।
वन-माली देख डाली वृक्षों में विज्ञान वाली,
धूल और फूल में चैतन्य यश छायो है।

वनमालीदत्त शर्म्मा।

भारत के मानव अभागियों को दुखी देख,
कृष्ण के समान तुर्त, भारत में आयो है।
अमृत तुल्य वाणी से, करके कृपा की कोर,
तप और दया, मार्ग मोक्ष को बनायो है।
सबने अपनायो, सब ही को अपनायो और,
कहां लों बखान करूं शूद्र अपनायो है।
नवों खंड सात द्वीप सातहु समुद्र पार,
महावीर स्वामी को शुभ्र यश छायो है।

विद्यार्थी रामचरण शर्म्मा, कुचीलिया।

(२)

जीता है सकल लोक, निर्मल दया से नाथ !
अनेकान्त नयों से भ्रम को दुरायो है।
विचलो था सारो देश तुमने दियो सन्देश,
नर सुर त्रियंचादि, सद्गति दुरायो है॥
अहिंसा तेरी महान, सिंधु धेनु एक थान,
हिंसक है ज्ञान वान, द्वेष को भुलायो है।

निपक्ष नीति तेरी जो, देख तो कहे 'अमोल'
विश्व प्रेमी महावीर, तेरो यश छायो है।

(२)

कर्मन झकझोर जोर सदियें विलोर,
शोर भारी घन घोर, हिलोर जीव पायो है।
गतियों में बार बार सद्गति की ढोर ढोर,
अद्भुत मरोर मारी, पुन पुन गिरायो है॥
स्वारथ भरी समाज, दुर्गत अनेक साज,
कोऊ न सहाई आज, आशा आप भायो है।
संकट कठोर जानु, प्रगटो है वीर भानु,
सृष्टि को तिमिर हान सांचो यश छायो है॥

(३)

अनहद आल्हाद भयो स्वर्ग में उन्माद,
इन्द्र अवधि ज्ञान से भेद जो बतायो है।
भारत की भव्य भूमि, अब है पवित्र हुई,
पुनरा-वृत्ति धर्म की, कोट रवि आयो है॥
सिद्धार्थ के भवन में त्रिशला प्रसूती हुई,
ये वीर की जयन्ती है कल्यानक थायो है।
दल बल से आयो है ऐरापति लायो है,
नाटियां सहस्र नेत्र 'अमोल' यश छायो है॥

(४)

श्री महावीर तेरे रूप औ अहिंसा की,
उपमा कितेक करूं पार नहीं पायो है।

(४)

रवि में प्रकाश नहीं कवि में उड़ान नहीं,
शशिमें वह शांति नहीं सुधा सुध नायो है।
समो शर्ण मान खंभ मानियों का मान भंग,
सृष्टि दोष जाति द्वेष लुप्त गुप्त थायो है।
ऋषियों की जटलता स्वयं स्वयं मुक्त होत,
अस्त्र शस्त्र क्रांति शांति ऐसो यश छायो है॥

बाबू अमोलकचंद जैन 'ध्वजपति'

(१)

हंस के परों में, श्वेत शशि के करों में।
याकि कुमुद सरों में शोभा युक्त सरसायो है।
शरद ऋतु में, कांस फूलन तुषारन में,
हीरक के हारन में कवि ने बनायो है॥
ग्रीषम ऋतु के माहि गिरि की गुफाओं मधि,
योगिन के ध्यानन में चन्द सा छवायो है।
पावस की तान में या बिज्जु चमकान में या,
मेघ के बितान में या, वीर-यश छायो है॥

(२)

ऐरावत गज पै चढ़े थे अभिषेक हेतु,
याही तें मनहु श्वेत रंग ताको भायो है।
न्हाये जिस वारि में हे नाथ! गिरि श्रृङ्ग पर,
नीर क्षीर सागर को धवल बनायो है॥

शिव पद गामी हुये हम को विहाय देव !,
देवगण दीपावलि उत्सव मनायो है।
रत्न उजियारे यहाँ गगन में तारे वहाँ,
मैंने जानो वीर ! तेरो शुभ यश छायो है॥

(३)

कर्मवीर गांधी जी ने पाई तेरी ज्योति नाथ !
देश में असहयोग तेज चमकायो है।
वीर बन काट दो तो दासता के पाश आज,
वीर को सन्देश घर घर में सुनायो है॥
शम, दम, शान्ति, सत्य लेके हथियार हाथ,
प्रेम भाव भरित अहिंसा राज छायो है।
घर, घर, दफतर, नगर, नगर और,
बगर बगर आज वीर यश छायो है॥

रामकुमार न्यायतीर्थ विद्याभूषण।

(१)

मदन मद माते सर्व संसार ने समुझि पायो,
धर्म तो ढकोसलो औ गुरुन भरमायो है।
हाय ! लोग मानि बैठे स्मर इक देव बली,
बचि न सके कोऊ स्वत्व सब गमायो है॥
बीजुरी सी डारि फारि दीन्हों सब भर्म वीर,
जीति काम नाम निज धर्म कमायो है।

'रत्न' मानो सन्मति सरोवर के ब्रह्मचर्य,
पद्म को सुहावनो सुगंधि यश छायो है॥

रतनमल जैन, बागवान (मैनपुरी)

(१)

एरी आली, माली, आज हरियाली डाली,
साज महाराज श्रेणिक के राज द्वार लायो है।
कर जोर, शीश नाय मनमांहि हरषाय,
विहंसि विहंसि समाचार ये सुनायो है।
अहो महाराज! आज वीर महावीर जी को,
समवशरण गिरि विपुला के आयो है।
फूलो वन, उपवन, षट ऋतु फल फूल,
फैली है सुगन्ध मानो जग यश छायो है॥

२

यह सुन महाराज श्रेणिक प्रसन्न होय,
सात पैंड चल शीस सात बार नायो है।
तन के वसन और भूषण उतार दिये,
लैके वन माली मन अति हरषायो है॥
घोषणा कराई सब नगर में घर घर,
चलो भाई पूजन को पुण्य उदै आयो है।
नर २ बार आज सब नर नार साज,
गावत सुयश चहुँ ओर यश छायो है॥

(३)

कोऊ ने तो होमन में यज्ञ की हुताशन में,

दीन बलहीन पशु मारके गिरायो है।
कोऊ शठ दया हीन दीन भेड़ बकरी के,
काट २ शीस देवी चरण चढ़ायो है।
हिंसा घोर चहुं ओर धरम के हेत फैली,
देख दृश्य वीर मन दुख से भरायो है।
मंत्र दियो लोगन को तभी दया धरम को,
उन उन सुख इन इन यश छायो है॥

(४)

जीवों को सताय कलपाय कल पाये नहीं,
हिंसा में धरम नहीं ऐसा वेद गायो है।
जीवन चहत सब मरण में भयभीत,
दुख को न चाह सुख सभी मन भायो है॥
यामें सब जीवन को आपने समान जान,
हृदै वन मेती दया मेघ बरसायो है।
पायो सुख जीवन ने भायो दया धर्म मन,
गायो वीर सुयश कि वीर यश छायो है॥

(५)

आज मिलि बैठे सब पुण्यवान पुण्यवंत,
पुण्य के प्रताप मेती पुण्य दिन आयो है।
पुण्य की ही चरचा है अरचा है भी पुण्य ही की,
पुण्य का कथन राग पुण्य ही का गायो है॥

पुण्य के औतार वीर धीर महावीर,
जिन पुण्य का प्रचार कर पुण्य प्रगटायो है।
उनका जनम दिन आयो है हरष आज,
उनहीं का घर २ 'ज्योति' यश छायो है॥

जैन कवि ज्योतिप्रशाद जैन प्रेमभवन, देवबन्द

त्रिशला की गोद में उछाह भर २ लेत,
हरष अपार हिये में नहीं समायो है।
नाचत विविध भांति नाना विधि गीत गात,
सुन्दर अनोखा रूप हरि ने बनायो है।
निरखे जिन वीर धीर भये ना तृपत नैन,
करके सहस्र नैन जिनको लखायो है।
जै जैकार करत हैं भरत आनन्द इन्द्र,
जन्म जिन वीर को है जग यश छायो है॥

घासीराम जैन "चन्द्र" पछार

(२)

ज्ञान अवतार इन्द्र आयो परिवार युक्त,
करके हजार नेत्र रूप पे लुभायो है।
मेरु पे नहुन कियो पुण्य कोश भर लियो,
त्रिशला को सौंप निज सद्म को सिधायो है।
सुर--वृन्द साथ क्रीड़ा करत जिनेन्द्र वीर,
एक दिन उरग को गर्व नशायो है।

जिनको विलोक साधु शंका दूर भई ''प्रेम''
विश्व मांहि इससे अपूर्व 'यश छायो है'।

(२)

अदया आतङ्क में व्यथित थे अनन्त जीव,
क्रन्दन निनाद ने विषाद को बुलायो है।
अधम अकृत्य कृत्य करते अभीत होके,
मिथ्या-मद पीके कृत्या कृत्य को भुलायो है॥
झूठ दगाबाजी, मायाचारी, ठग-यारी बढ़ी,
पाप पन्थियों ने भोले जीवों को फँसायो है।
तब वीर, सत्य का प्रकाश कियो अवनि पै,
नमत शतेन्द्र ''प्रेम'' जग 'यश छायो है'

(३)

एक देश त्यागी निज रूप-अनुरागी वीर,
बाल ब्रह्मचारी नांहि ब्याह को रचायो है।
विषयों के भोग, रोग के समान जाने 'प्रेम',
लियो योग महाव्रती होके तप ठायो है।
आत्म शक्ति द्वारा किए महातप बारा जिन,
ध्यान अग्नि मांहि कर्म ईंधन जलायो है।
केवल प्रकाश, शिव मारग प्रकाश कियो,
तारे अनन्त जीव, तिहुँ लोक 'यश छायो है'।

(४)

लोक है स्वयं सिद्ध करता नहीं है कोई,
जीव हैं अनन्त उन्हें कर्मों ने भ्रमायो है।

पर में लुभाते निज-रूप को न पाते 'प्रेम'
जरा जन्म मरण, त्रि रोग ने दबाया है।
जो विराग धार अनुराग आत्मा में करे,
समता समेत आप आप में लुभाया है।
ध्यान की कमान खेंच जीते बली आठों कर्म,
वरे शिव नारि को जगत 'यश छाया है'।

श्र० प्रेम सागर पञ्चरत्न, रपुरा (पन्ना) निवासी।

(१)

पुरातन अश्वमेध आदि यज्ञ बीच जिन,
मूक प्राणी घात में स्व चित्त हरषाया है।
यज्ञ की जो हिंसा नाहि हिंसा न बताते मूढ़,
स्वार्थ वश हिय सो दया भाव को भगाया है।
धर्मी निद्य कुत्सित प्रवृत्ति रूप अन्धकार,
नाशि के जिन्होंने ज्ञान सूर्य चमकाया है।
उन वीर महावीर सन्मति जिनेश्वर को,
आज लोकालोक में विमल यश छाया है॥

(२)

मति श्रुत अवधि विराजमान वर्द्धमान,
भव्य हित त्रिशला घर जन्म जब पाया है।
चतुर निकाय देव निज निज अधीश संग,
मेरु गिरि क्षीर जल न्हवन कराया है॥

ता समै श्वेत जल प्लावित सुमेरु थल,
देखि कवि इस भाँति उपमा उर लायो है।
भव्य पुण्य पुंज क्षीर सिन्धु अथवा है यह,
किंवा मूर्तिमान महावीर यश छायो है।

पार्श्वदास जैन, न्यायतीर्थ।

कुंडलपुर चैत्र सुदि तेरस के दिन माँहि,
त्रिशला ने तीर्थंकर नन्द ये जायो है।
जानो जन्म जग जिनराज याके देखिबे को,
नर सुर लोक सारो उमड़ के आयो है।
मेरु पै न्हवाय सुर भक्ति गान भारी कियो,
पाताल में पुण्य को प्रभाव धँस धायो है।
चहुँगति जीव 'नाथ' सतत नमावें शीस,
देखो आज विश्व महावीर यश छायो है।

रवीन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ, रोहतक।

(२)

छाय रहो महा मोह-अन्धकार विश्व बीच
ताहि दूर टार ज्ञान भानु प्रगटायो है।
चले तलवार वार धार मूक जीवों पर,
हिंसा सी पिशाच को पकड़ पटकायो है॥
दया औ उदारता को पाठ पढ़ा दुनियां को,
शांति-सुधा को जिन मेघ बरसायो है।

उनही श्री वीर, अति-वीर महावीर जी को,
आज तिहूं लोक में विमल 'यश छायो है'।

विष्णुकान्त जैन, मुरादाबाद।

(१)

जब चहूँ ओर घोर हिंसा साम्राज्य छायो,
त्रिशला के गर्भ माँहि दया मूर्ति आयो है।
कुण्डलपुरी में राजा सिद्धारथ जी के यहां,
देव, इन्द्र, नर-नारी आनन्द मनायो है।
जन्म नवमास पूर्व रत्न वृष्टि होने लगी,
पूछो आज तीन लोक काहे हरषायो है।
चैत्र शुक्ल तेरस को तीर्थंकर जन्म लियो,
देवन के देव महावीर यश छायो है।

(२)

तीन ज्ञान धारी सर्वजीव हित कारी,
पाप पंक धो डारी दया मेघ बरषायो है।
सहस्र आठ लक्ष सोहें जगज्जीव मन मोहें,
दीनबन्धु आप सत्य ज्ञान दरशायो है।
असहयोग कियो भारी देह ममता निवारी,
स्वाधीनता पियारी ध्यान आतम लगायो है।
दया, क्षमा शस्त्र धारे कर्म विजय किये सारे,
पूर्ण ध्यान विस्तारे वीर विमल यश छायो है।

महावीरप्रशाद जैन, देहली।

❀ वीर भगवान की ❀

(१)

एक चना भाड़ को न फोड़ सकै प्यारे मीत,
जीतय क्यों अल्प मति सकल जहान की।
ऐसो ना दिखात शूर भूरि जानि ताहै जौन
सर्व सुख छाँड़ तजै प्रीत मान प्रान की।
हाय हाय कौन सुधि लेय मृक जीवन की,
बार बार दृष्टि जाय ओर आसमान की॥
राधे दुख जावैं सुख आवैं मही माहि फेर,
एक बार आवै शक्ति वीर भगवान की।

(२)

दया के निधान कोटि भानु के समान तेज,
ब्रह्म ज्ञानवान मतिमान खान ध्यान की।
शील शशि शक्ति ज्यों समीर विज्जु सो प्रकाश
कृपा परि पुष्टि जैसे वृष्टि मघवान की।
थाप गे अहिंसा तरु देके उपदेश सर्व,
सींचो ऐक्य नीर सो विहाय गति शान की।
दिव्य दृष्टि द्वार सो दिखात निज शासन को,
एक बार बोलो जय वीर भगवान की॥

राधेलाल, मसजिद नहलखंबा, देहली।

(?)

मात त्रिशला की कोख उपज्यो अनूप रत्न,
सम्पति सिमट आई सकल जहान की।

सुर सुर देव मुनि किन्नर जुरे हैं आय,
त्याग त्याग थान निज मान सन्मान की।
अवनि अकाश लों अनन्द ही अनन्द छायो
गूँजत गगन धुनि दिव्य गुण गान की।
नन्दनी जनक हेर हारी उपमायें सब,
बांकी देख झांकी महावीर भगवान की।

(२)

विश्व की विभूति में न मन भटकाया कभी,
चाह भी न हुई जिन्हें मान सनमान की;
त्याग अनुराग का पढ़ा कर पवित्र पाठ,
नन्दनी जनक आंख खोल दी जहान की।
स्वच्छ गंग जल सा बहा कर दया का स्रोत,
धोय दई कालिमा कराल मन म्लान की।
ज्ञान का प्रकाश कर मोह तम नाश किया,
जयति जयति महावीर भगवान की॥

धर्मपत्नि शठ कवि,
आगरा।

द्वेष दम्भ ईर्षा प्रमाद बढ़ जाता शठ,
बात पूछता ही कौन जप तप ध्यान की।
नरमेध अश्वमेध यज्ञ यहां होते नित्य,
बाजी लग जाती मूक पशुओं के प्रान की॥

फैलतो अधर्म अन्धकार जगतीतल पै,
चर्चा न होती कहीं धर्म की न ज्ञान की।
होते न विमुक्त जग जीव भव बन्धन तें,
होती न अवाई जो पै वीर भगवान की॥

श्यामलाल शुक्ल शठ कवि
आगरा।

प्यारो भू मण्डल मित्र मण्डल हमारो होय,
धर्म ध्वज धारिन के ध्वजा फहरान की।
प्रेम वेलि नूतन सुमुकुलित हमेश रहै,
सज्जन समाज भौर भीर मड्रान की।
देव नरदेव चर अचर निवासी जौन,
देखिवे को आये तौन उत्सव महान की।
सुन्दरी सुलोचनी सुमंगल सजाय थाल,
आरती उतारती हैं वीर भगवान की॥

माधोराम स्वर्णकार, अचलगंज
उन्नाव

(१)

मंडप सजाया गया सुंदर बना है मंच,
की प्रबन्धकों ने तैयारी बड़ी शान की।
श्रोता गण बैठे शांत चित्त होके सुनते हैं,
करते न बात चीत मान अपमान की।
'विष्णु' भक्त भक्तिमें ही लीन हो रहे हैं सब,

होती चरचा है चारों ओर गुण गान की।
वक्ता मंजु भाषणों में बरसा रहे हैं सुधा,
आज है जयन्ती महावीर भगवान की।

(२)

छोड़ कर बाल बच्चे और सब कच्चे खेल,
सिर्फ एक सच्चे 'विष्णु' में ही पहचान की।
बड़े २ पापियों को तारा औ सुधारा उन्हें,
जा जा के सुनाई कथा धर्म और ज्ञान की।
क्लेश जीव मात्र को दिया न कभी,
कीट को भी समझे विभूति उस करुणा-निधान की।
अद्वितीय महिमा है गुण गण गरिमा है,
अणिमा है दासी महावीर भगवान की॥

(३)

मोह को जलाया और छोड़ी प्रीति जाया की भी,
वाणी मन में भी किसी की न कभी हान की।
आ गया तो खाया नहीं फांके में बिताया दिन,
छाया के बिना ही बरसात गुजरान की।
शरण में आया जो सहर्ष अपनाया उसे,
मानव बनाया, राह दिखलाई त्राण की।
'विष्णु' गुण गाया परिपूर्ण यश छाया यहां,
रहे छत्र-छाया सदा वीर भगवान की॥

—गंगाविष्णु पाण्डेय, 'विष्णु' जबलपुर

(१)

अञ्जन-सी निशा हुई, कञ्चन दिशा में व्यक्त,
ऊषा का सिन्दूर बनी आभा आसमान की।

विकसित कोमल कपोल कुसुमों के हुए,
खिरी मोतियों-सी ओस गगन-वितान की।
शीतल समीर और भौंरों की बिठा के गोद,
लाई भर साँस में सुगन्ध उद्यान की।
त्रिशला की कोख है कि प्राची की पुनीत दिशा,
प्रगटी जहां से ज्योति 'वीर भगवान की' ॥

(२)

करदे कलह—कालिमा का मुँह काला यह,
भरे भव्य भावना हिये में प्रेम-दान की।
देके वीर--वाणी का उदार उपदेश यहां,
करे दूर स्वार्थ--बुद्धि सकल जहान की।
पक्षपात--वृक्ष का समूल पक्ष-पात कर,
चौंध में बिठा दे वीतराग विज्ञान की।
विश्व को बना के मित्र--मण्डल जयन्ती आज,
लावे वैजयन्ती नभ 'वीर भगवान की' ॥

(३)

गांठ को गँवा के ज्ञान गौरव गिरा के निज,
गांठते जो कोरी शान थोथे स्वाभिमान की।
देश, धर्म, जाति का भला हो या बुरा हो नहीं,
किञ्चित् भी चिन्ता जिन्हें मान अपमान की।
धर्म रूढ़ियों का रहा कर्म मूढ़-मतियों सा,
दीमकों को बाणी जो चट्टान वर्द्धमान की।
क्या है अधिकार उन्हें साभिमान कहने का
हम हैं सन्तान महा-'वीर भगवान की' ॥

—लक्ष्मीचन्द्र जैन, एम० ए०, देहली

सुजनों सराहो ईसा मसीहा का प्राण दान,
    रूपिका सराहो कुर आन की पुरान की।
तन्त्रवाद बुद्ध का सराहो तो सराहो भले,
    कीर्ति गाथा सांख्य के विचित्र तत्व-ज्ञान की।
किन्तु जिस सत्य और करुणा मे शांति सुख,
    मिलता है प्राणियों को, रक्षा है जहान की।
देनगी है दुनिया को दिव्य दृष्टि खोल देखो
    सत्य औ अहिन्सा वह 'वीर भगवान की' ।।

—भगवन्त गणपति, गोयलीय

(१)

'लीग आफ नेशन' का विश्व व्यापी शान्ति वाद,
    यौद्धिक विशेषताएं चीन व जापान की।
'हर हिटलर' 'रूज वेल्ट' का सुधार वाद,
    'गांधी' की विशाल आत्म-शक्ति वर्तमान की।
गर्जना 'डि वेलरा' मुसोलिनीका क्रान्तिवाद,
    जागृति ईरान व तुरान अफगान की।
विश्व का विराट रूप देखा चाहते हो यदि,
    'शशि' सुनियेगा वाणी 'वीर भगवान की' ॥

(२)

क्षीण हो रहा था मान नाश हो रहा था ज्ञान,
    तान पड़ती थी कान में न कल गान की।
दया सत्य प्रेम हो रहे थे अभिशाप पात्र,
    रश्मियां न फूट सकती थीं सद्ज्ञान की।

हुआ ठीक उसी बार वीर सूर्य अवतार,
हुआ जै जै कार वही धर्म धार ज्ञान की।
आज जो अहिन्सा, शान्ति, प्रेम चाहता है विश्व,
'शशि' वल्लरी है वही 'वीर भगवान की' ॥

—कल्याणकुमार जैन, 'शशि'

(१)

कर्म रूपी शत्रु से पराजित जगत जीव,
सुध बुध भूल गया अपने ही ज्ञान की।
शरीर रूपी पींजड़े में रुक रहया अनादि से,
सांकल लगा लई मिथ्यात्व अज्ञान की।
अनन्त काल बीत गया भोगत दुःख जन्म मरण,
संगति में नित्य रहया राग द्वेष मान की।
ऐसी दशा देख वीर उपदेश दे नसाई पीर,
धन्य धन्य वाणी थी 'वीर भगवान की' ॥

(२)

राग द्वेष दूर करे, जन्म जरा मरण हरे,
सांची है नसैनी मैया अनघ निर्वाण की।
सप्त तत्त्व नौ पदार्थ द्रव्य छः बताय दये,
कुन्जी है मानो यो भेद विज्ञान की।
एकान्तवाद नाश करे अनेकान्त विस्तरे,
स्याद्वादता को लिये वाणी सफलान की।

अहिन्सा प्रचार करे साम्यवादता को धरे,
ऐसी है वाणी श्री 'वीर भगवान की' ॥

— दलीपसिंह कागज़ी, देहलवी ।

(१)

जग में न बल था न दल था सुमार्ग का, थी—
हिन्सा की दलदल निशा थी अज्ञान की ।
अनुचित अनीति रीति करुणा न प्रेम प्रीत,
रक्षा न लेश कहूं कुगति जहान की ।
दारुण अखिल क्लेश त्राहि त्राहि देश देश,
पुकार यह रही शेष चाह दयावान की ।
आलोकित विश्व हुआ देखते ही अभी अभी,
'ध्वजपी' जयन्ती हुई 'वीर भगवान की' ॥

(२)

विश्व की विशालता सम्हालता ही कौन अहो !
प्रलय सी प्रचण्डता में धाक शांति शान की ।
हो ध्वंस भी महत्ताओं न सत्ता के पत्ता उड़ें,
होवे न कठोर क्रान्त लाजनी कृपान की ।
विचित्रता चरित्र हो न कालिमता रहे कहीं,
जग जागे मित्रताई शोभा जहान की ।
'अमोलक' विलोकी जो अहिन्सा ही सांची एक,
विश्व होत वानी खिरी 'वीर भगवान की' ॥

—अमोलकचन्द्र जैन 'ध्वजपति' सहजपुर (सागर)

(१)

ललक ललाट पे ललाम लहराती लाल,
लख छवि क्षीण होती शशि अरु भान की ।

इन्द्र औ नरेन्द्र 'चन्द्र' दर्श कर हर्ष गात,
बरस रही है घटा आनन्द महान की।
बाल छवि 'वीर' की निरख ना अघात 'इन्द्र',
शोभा सु अनूप है अनोखे त्रय ज्ञान की।
आज वही दिन है पवित्र वीर आगम का,
मानिये जयन्ती श्री 'वीर भगवान की' ॥

(२)

चीखते थे पशुगण पुकारते थे रात दिन,
करता सहायता न कोई भयवान की।
अश्व, नर मेध का सितारा चहुं ओर बढ़ा,
धुंवा में हुई थी पूर्ण ओर आसमान की।
भक्षक जन पूरित हुआ था धरा का चीर,
रक्षक बिना थी नहीं खैर पशु जान की।
'वीर' धीर पीर विश्व जनों की मिटाई 'चन्द्र',
गायें गुण गाथा क्यों न 'वीर भगवान की' ॥

—घासीराम जैन 'चन्द्र'

(१)

चहुं ओर मिथ्यात की अंधियारी फैल गई,
आपा पर सूझे नहीं बात भूली ज्ञान की।
मायाचारी, कपटी, पाखंडियों का राज बढ़ा,
निज स्वार्थ सिद्ध काज बात करें मान की।
यज्ञ करवायें मांस मदिरा पिलायें कहें,
मुक्ति दिलवायें, करें बातें अज्ञान की।

ऐसे समय विश्व उपकारी प्रभु जन्म लियो,
मन मोहनी छवि देखी 'वीर भगवान की' ॥

(२)

धन्य है कुण्डलपुर तेरे नभ मण्डल में,
ध्वनि गूंज रही आज वीर गुण गान की।
गर्भ, जन्म, तप हुये तीनों कल्यान यहाँ,
इस कारण प्रगट हुई शक्ति कल्यान की।
अब भी हज़ारों लाखों नर-नारी नित आते,
पुण्य गाथा गाते हैं उसी पुण्यवान की।
पच्चीस सौ इकत्तीस वर्ष पूर्व स्वामी हुये,
वाही छवि देखि आज 'वीर भगवान की' ॥

(३)

आज विश्व मण्डल जयन्ती मनाय रह्यो,
विद्वज्जन आय करें चर्चा विज्ञान की।
त्रिशला ने पुत्र जायो, भव्य जन मोद पायो,
धन्य यह घड़ी मिली वीर रस पान की।
इन्द्रादिक नृत्य करें भक्ति औ प्रमोद धरें,
गावें औ बजावें राग तबले की तान की।
'महावीर' जन्मोत्सव मनाने आये नर-नारी,
बार बार जय बोलें 'वीर भगवान की' ॥

(४)

चैत्र सुदि तेरस को जन्म कल्यान जान,
स्तुति करे तीन ज्ञान धारी गुणवान की।

बंध नाश करने को दुख द्वन्द हरने को,
सब को प्रमोद कारी मूरति है ध्यान की।
बनखण्ड बासन को अष्ट कर्म नाशन को,
स्वपर प्रकाशन को शक्ति है सुज्ञान की।
जन्म मरण हरने को दीनोद्धार करने को,
कृत्कृत्य मूरत है 'वीर भगवान की'॥

(५)

हिन्सा में अभिन्न हैं देख लिये अन्य शास्त्र,
अपने मन निश्चय हुई वीर श्रद्धान की।
सर्वज्ञ देव वीतरागी निर्ग्रन्थ गुरु,
दयामई धर्म कहें आतम कल्यान की।
वीर की अहिन्सा सर्व जग में प्रधान कही,
यारी और आख लखी सारे ही जहान की।
जैनमित्र मण्डल ने सुधा वृष्टि करने को,
रखी है समस्या आज 'वीर भगवान की'॥

—महावीरप्रशाद जैन, देहली।

जनम प्रभू को जानि रानी सह आखण्डल,
कुण्डलपुरी की दीन्ह शोभा सुर थान की।
सहस्र नयन करि दरसि भयो न तृप्त,
हरसि करत कला ताण्डव विधान की।
ऐरावत पै चढ़ाय मेरु जाय अन्हवाय,
ल्याय मातु गोद सौंपि सुकृति बखान की।

छाई ध्वनि जय हो जिनेश! परमेश! जय,
जय हो जयन्ति जय 'वीर भगवान की' ॥

—चुन्नीलाल डोडिया, प्रतापगढ़ (राज)

कैधों भक्ति का अनुराग बाग फल युक्त हुआ,
कैधों है अहिंसा की जुन्हाई कलावान की।
कैधों सर्व अङ्ग प्रेम छवि कमलिनि खिली,
कैधों व्यापी रश्मि जग ज्ञान मय भान की।
कैधों अंकुरित हुआ कलि हेतु कल्प वृक्ष,
करने सफल इच्छा धर्म निरवान की।
कैधों ये स्वतन्त्रता का हुआ अवतार श्रेष्ठ,
कैधों है जयन्ति महा 'वीर भगवान की' ॥

—भैयालाल खासगीवाल, प्रतापगढ़ (राजपूताना)

पुष्पोत्तर विमान तें सुक्लाषाढ़ षष्ठी च्यय,
त्रिसला सिद्धारथ को गुरुता प्रदान की।
कुण्डलपुर मांहि चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को,
जनमे महावीर जिन जीती द्युति भान की।
बाजे अनहद बजे स्वर्गन में शोर मच्यो,
देव इन्द्र सब ही करी सामां पयान की।
ऐरावत गज चढ़ जन्म कल्यानक मिस,
देखन को आये शोभा 'वीर भगवान की' ॥
तब ही इन्द्रानी प्रसूति गृह गमन कियो,
माता सुख निद्रा मांहि भूली सुधि ज्ञान की।

लैकरि उछङ्ग निज सिद्धारथ नन्दन को,
माया मई बालक की प्रतिमा प्रदान की।
दीन्हों पुरन्दर गोद लाय जग वन्दन को,
प्रभुता बखानें देव महिमा महान की।
सहस दृगन सों भी तृप्ति हरि नांहि भई,
देखी अनोखि सुखमा 'वीर भगवान की' ॥
विनती करि हरि ने चढ़ाय ऐरावत पै,
देवनि सहित भेरी देदई पयान की।
पहुँचे सुमेरु गिरि पांडुक शिला पै जाय,
गावत गुणावली जिनेन्द्र वर्द्धमान की।
सहस एक आठ घट सुचि छीरोदक लै,
कीन्हों अभिषेक पूजा विधि सों विधान की।
कुण्डलपुर लाय पुनि दीन्हें गोद माता के,
पिता को बधाई दई 'वीर भगवान की' ॥
निकस्यो सुरेश रूप नट को बनाय आछे,
काछे कटि काछनी सुकिंकिनी विधान की।
नाचे नाना थेई थेई गत सों उमङ्ग भरयो.
कबहूं दिखावे कला नभ में उड़ान की।
कबहूं अदृश्य होय प्रकटै पहुमि आय,
लोट पोट होके करे कल्पना कलान की।
ऐसो अनूप नृत्य ताण्डव दिखायो मघवा,
लैकरि सिधारयो आज्ञा 'वीर भगवान की' ॥
एक दिन वह भी था जैन धर्म डङ्का बजा,
हिंसा गढ़ भेद छिति अहिंसा प्रधान की।

वात्सल्य भाव को प्रचार कर भूतल माहि,
सत्य प्रेम शिक्षा देय दृढ़ता प्रदान की।
धर्म के अंचल माहि सब ही समान भये,
मिले छीर नीर गति भूल अभिमान की।
आज व्यर्थ मान के वितान तान न्यारे न्यारे,
छोड़ बैठे आन सब 'वीर भगवान की'॥
होवत ना बाबू धर्म पण्डित उबारत ना,
हैं ये झूठी कल्पना औ जल्पना अधान की।
पण्डित औ बाबू मिल धर्मछिति काज करें,
सत्य ही प्रभावना हो देव, गुरु, ज्ञान की।
धर्मी जन ह्रास धर्म ह्रास भी नियम सों है,
धर्म की उन्नति उन्नति सों धर्मवान की।
धर्म की उन्नति भये सुख को निवास होय,
आगम बखानी वानी 'वीर भगवान की'।
'कुन्दन' विचार देश काल को सुधार करो,
छोड़ो कुरीत मीत नीत लै पुरान की।
फैलें सिद्धान्त जैन धर्म महि मण्डल माहि,
जग में दुहाई फिरै अहिंसा विधान की।
ऐसी शुभ कामना सफल फलेगी जब ही,
तबही सुधरेगी दशा जैनी जहान की।
ऐहो सुमित्र जैन मण्डल अब बोलो जय,
बोलो जय, बोलो जय 'वीर भगवान की'॥

— कुन्दनलाल सोनी, खंडेलवाल जैन, भरतपुर

दर्शन विशुद्धी आदि सोलह कारन भाय,
तीर्थंकर नाम कर्म श्रेष्ठ जन्म दान की।
उसी पुण्य प्रकृति में अवतरे वीर प्रभु,
लोकातीत वैभव औ अचिन्त्य गुण खान की।
हो रहा था स्वागत उन्हीं का रत्न वृष्टी में,
जो भक्ति में शतेन्द्र को नहीं अनुमान की।
पुण्य काल चिन्तन तें सर्व विघ्न टल जाय
क्यों न श्री जयन्ती हो 'वीर भगवान की' ॥

भारत वसुन्धरा का आज धन्य धन्य भाग,
वीर प्रभु जन्म भूमि नाथ वंश मान की।
जीव वध बन्द कीन्हों सांचो उपदेश दीन्हों,
भारत को सराहें करें रक्षा कीन्हीं प्रान की।
मेरु हिमाचल लेय सेतबन्धु सागर लों,
सोरठ में श्याम भू अलप ज्ञान मान की।
गगन में चन्द्र-तुल जोत मिस अधो लोक,
शुभ्र वर्ण कीर्ति फैली वीर भगवान की॥

शुद्ध साधना विकाश तीन गुप्ति को प्रकाश,
राग द्वेश को विनाश घाति कर्म हान की।
समोशर्न की सहाय सप्त तत्त्व प्रगटाय,
मोक्ष पाय गावें गाथा केवल विज्ञान की।
और कु विचारें नर लोक में है कौन वर,
निरपेक्ष बन्धु सुर महिमा महान की।
विश्व के विरोधी जीव त्यागि निज पूर्व वैर,
शांति धार बोलें जय 'वीर भगवान की' ॥

देश इतिहास आज कह रहा सांची बात,
विश्व-बन्धु जैनधर्म महिमा महान की।
चारों वर्ण अपनायो पूर्ण सुख शांति पायो,
ठौर ठौर फैल रही कीर्त्ति ज्ञान दान की।
योगी, राजा, रानी, श्रेष्ठि, वीर नर नारी भये,
प्राण वार त्याग पर बान राखी मान की।
नैन खोल देखो बंधु हिय में विचार करो,
कैसी पूर्व ख्याति थी 'वीर भगवान की' ॥
रविषेण, वीरसेन, स्वामी श्री समन्तभद्र,
वीर अकलंक देव पूज्य वादि मान की।
सिंहनंदि, माघनंदि, जिनसेन, नेमिचन्द्र,
विद्या, प्रभा, महासेन, मूरति सन्मान की।
चन्द्रगुप्त खारवेल चामुण्ड अमोघ नृप,
वस्तु श्री कुमारपाल शूरता थी शान की।
आशा, भामा, अमरादि रत्न संख्यातीत भये,
त्याग शक्ति दरशाई उच्च कोटि मान की।
त्रिशला श्री राजीमती मैना चन्दना सी सती,
जैनुलंद चेलनादि समता न आन की।
पूर्व जैन धर्म क्षेत्र सीमा विस्तीर्ण थी,
पतित पुरुष भी थे शर्ण भगवान की।
चारु, मधु, यमदण्ड, अञ्जन, विद्युत, जैम,
नंगसेना पतितों ने आत्म कल्यान की।

देव गावें हर्ष में प्रभु के गुणानुवाद,
फूल बरसावें जय 'वीर भगवान की' ॥

—पन्नालाल जैन साहित्य शास्त्री काव्यतीर्थ, ललितपुर।

त्रिशला देवी की कोख वीर जिन जन्म लियो,
शोभा बनी मोहनी कुँडलपुर स्थान की।
देव गण इन्द्र शचि सहित पधारे आन,
गूंजी ध्वनि चहुँ ओर वीर यश गान की।
सार्थ नाम नृपति सिद्धार्थ का हुआ है आज,
भाग्य ने अनोखी निधि वीर सी प्रदान की।
विश्व के समस्त जीव आनन्द अपार धार,
जय जै पुकारते हैं 'वीर भगवान की' ॥
तज के समस्त जीव पावन अहिंसा धर्म,
देने लगे आहुतियां पशुओं के प्राण की।
छाई थी अधर्म से अशान्ति घोर विश्व मांहि,
सुधि थी न कर्म की न धर्म की न ज्ञान की।
वीर आगमन ने किया था विश्व त्राण तभी,
दया हीन हृदयों को ममता प्रदान की।
बन्द हुये हिन्सामय, बलिदान, यज्ञ, होम,
शान्ति व्यापी शिक्षा हीमें 'वीर भगवान की'॥

—कुन्थकुमारी जैन, देहली।

(३)

भारत में देश है विहार अति शोभनीक,
कुण्डलपुरी है तहां स्थान धन धान की।

पावन पुनीत सिद्धारथ नृप राज करे,
सभी आन मानें इस भूपति प्रधान की।
अढ़ाई सहस वर्ष पूर्व इस भूप घर,
आत्मा पधारी एक पुरुष महान की।
त्रिशला देवी के उर आन अवतार लयो,
प्रगटी जगत ज्योति 'वीर भगवान की'॥

(२)

इकाइक आसन सुरेन्द्रों के हिलन लागे,
मानो भूमि कम्पित भई है सुर थान की।
शीश के मुकुट झुक गये स्वयमेव--जैसे,
प्रभु को विलोकि नमें नार विनैवान की।
भयो है अपूरव अचम्भो तिहुं लोक मांहि,
भ्रम भौर मांहि परी बुद्धि अमरान की।
'मक्खन' अवधि ते सुरेश इमि जान लई,
आज है जनम तिथि 'वीर भगवान की'॥

(३)

कल्पवासी देवनि के बिना ही बजाये बजे,
घण्टा, घर नावली श्रवण सुख दान की।
सूर, चन्द्र, तार आदि ज्योतिष विमाननि में,
सुनि हरि नाद ध्वनि तृप्ति भई कान की।
भौन वासी देवन के अनहद शंख बजे,
व्यन्तर अमर घर ध्वनि पटहान की।

करें बीन बांसुरी नगारे घन घोर शोर,
गावत बधाई मानों 'वीर भगवान की' ॥

(४)

चाल रही शीतल सुगन्ध ब्यारि मन्द मन्द,
वृष्टि होय व्योम से कलप पुहपान की।
आंधी, मेघ, धूलि, बिना दशों दिशा स्वच्छ भई,
मानों अगवानी किसी श्रेष्ठ महमान की।
छहों ऋतु फूल फल फूले फले भूमि माहि,
सुख सर वारि भर कमल खिलान की।
कहां लों बखानूं तिहुं लोक भयो शोभनीक,
सबने मनाई खुशी 'वीर भगवान की' ॥

(५)

दोय घड़ी नर्क मांहि नारकी हु चैन लयो,
कल कल मिटी घोर युद्ध घमशान की।
निर्दयी कसाई क्रूर हिंसक अधम नीच,
अदया को त्याग उर दया धरी प्रान की।
काऊ को न मारें काऊ काऊ न सतावें, सब
धारि उर प्रेम तजि मान अभिमान की।
चैत सुदी तेरस जनम महावीर भयो,
सब मिलि बोलें जय 'वीर भगवान की' ॥

(६)

चार हु प्रकार रथ चले गज वाजि साजि,
आय दरबार राज गर्दन झुकान की।

जाय के प्रसूति थान शचि लाई भगवान,
लेके गोद देखी छबि इन्द्र ज्ञान भान की।
तृप्त न भयो तब नयन हजार किये,
पढ़ि पढ़ि सहस्र नाम स्तुति बखान की।
लेय भगवान को अमर गण मेरु गये,
यथोचित सब विधि करी है सनान की॥

(७)

सहस अठोतर कनक घट लेय सुर,
पंचम उदधि क्षीरोदधि को पयान की।
अगनित सुरगण लाये जल हाथों हाथ,
दोऊ ओर पंक्ति बनि रही कलसान की।
प्रभु को नहाय वस्त्र भूषण सजाय,
फिर पिता घर लाय सौंपि मात भगवान की।
देव निज थान गये वृद्धिगत वीर भये,
भोग सों उदास रहे आतम पहिचान की॥

(८)

बाल ब्रह्मचारी लघु वय जोग धारी,
घाति-कर्म परिहारी ज्योति फैली ज्ञान भानकी।
देय उपदेश जग जीवन को पार किये,
कर्म सब हानि लही राह मुक्ति थान की।
परम दयाल जगजीवन कृपाल जाय बसे,
जगभाल न मिशाल उस थान की।

अजर अमर अविनाशी सुख भोगि रहे,
'मक्खन' जयन्ती उस 'वीर भगवान की' ॥

—मक्खनलाल प्रचारक।

(१)

शीत का भयंकर दु शासन अब दूर हुआ,
आई प्रभुताई ऋतुराज श्रीमान की।
वन और उपवन में फूल रहे वृक्ष लता,
होती मधुर ध्वनि कोकिल की तान की।
छाय रहा आनन्द अपार घर घर हाट,
कैसी अपूर्व शोभा दीखती जहान की।
ऐसे शुभ समय मित्र मण्डल मनाता आज,
हर्ष से जयन्ती श्री 'वीर भगवान की' ॥

(२)

लेकर अवतार प्रभु वीर ने दुनिया में,
ज्योति जगाई थी सच्चे शुभ ज्ञान की।
हिन्सा और क्रूरता को मार के भगाया दूर,
दया धर्म समता की स्तुति बखान की।
होता नहीं जन्म जो आपका इस पृथ्वी पर,
रक्षा नहीं होती कभी किसी के भी प्राण की।
बड़े उत्कर्ष से मनाते जयन्ती आज,
उसी आदर्श वीर 'वीर भगवान की' ॥

—विष्णुकान्त जैन, मुरादाबाद।

(१)

पुन्य भूमि भारत में वीर ने कुरीति देख,
यज्ञ और हवनों में पशु बलिदान की।

यौवन के भोगन की इच्छा को विसार दीनी,
छोड़ दीनी टेव सब आन बान शान की।
राजपाट दीनो त्याग केसरिया वस्त्र धारे,
धन्य धन्य वीर बलिहारी बलिदान की।
देश औ विदेशन में धूम आज मच रही,
जयन्ती मनाओ मिल 'वीर भगवान की'॥

(२)

हूक सी उठे है हृदे धारियों के हृदे बीच,
अधोगति देख देख भारत के मान की।
जैन धर्म होते हुए हिन्सा का प्रचार होय,
बलि बलि जायें ऐसे ज्ञान औ विज्ञान की।
धर्म का प्रचार करो देश का सुधार करो,
लाज को बचाओ वेग ऋषि सन्तान की।
काम क्रोध लोभ मोह हिन्सा को विसार देओ,
जयन्ती मनाओ मिल 'वीर भगवान की'॥

(३)

घोर अन्धकार चहुँ ओर जब छाय गयो,
पाप की घटायें छाईं अति घमसान की।
होत ही प्रभात नित्य घात रक्त पात होय,
इति श्री होने लगी भारत के मान की।
राज पाट दीन्हों त्याग देह की बिसारी सुधि,
हृदय बीच लगी वीर लगन उत्थान की।

ऐसा उपकार कीनों डूबते को पार कीनों,
जयन्ती मनाओ मिल 'वीर भगवान की' ॥

(४)

छूत और अछूतन के भेद को भुलाय देओ,
शृंखला को तोड़ो झूठे ज्ञान ध्यान मान की।
हिन्दू धर्म घातकी बनो न ऐसे पातकी औ,
यवनों से बचाओ जान ऋषि सन्तान की।
शिखा धारी भाइयों पै गउओं के अनुयाइयों पै,
प्रेम से बौछार करो प्रेम रसखान की।
मन कर्म बचन से हिन्सा को बिसार देओ,
जयन्ती मनाओ मिल 'वीर भगवान की' ॥

—रतनलाल "ज़मर्द" सिकन्दराबाद, (यू० पी०)

(१)

हिन्सा की अन्धेरी रात छाई थी महान आन,
सब के हृदय इच्छा वसी थी विहान की।
धरम के नाम पर मूक पशु मार जाते,
आज से बढ़ी थी जब प्रथा बलिदान की।
दूसरों के हकों को हड़पने की कैसी रीति,
जैसी कोल्हू माहि मित्र ! पड़ी तिली घान की।
उस वक्त विश्व को अहिन्सा का पढ़ाने पाठ,
'प्रेम' आई आतमा थी 'वीर भगवान की' ॥

(२)

किसने सुझाई थी धरम की सुगम राह,
किसने बनाई थी सहज कुन्जी ज्ञान की।

किसने पढ़ाया था अहिंसा का सुभग पाठ,
किसने सुनाई स्याद्वाद ध्वनि ज्ञान की ।
समता के शान्ति-प्रद सर के सिवाय ठौर,
किसने दिखाई थी अनोखी छटा ध्यान की ।
इन सब बातों का है यही एक समाधान,
सारी करामात 'प्रेम' 'वीर भगवान की' ॥

(३)

बैठे एक आसन पे अनिशी प्रमोद युक्त,
प्यास थी जिन्हों के उर ऐक्य रस पान की ।
जपते थे सत्य मन्त्र श्रद्धा से शुद्ध ठान,
लगन थी रात दिन दया के उत्थान की ।
वीर के सन्देश को सुनाते थे सभी को जब,
भावना प्रचार में थी धर्म के विज्ञान की ।
वास्तव में तभी 'प्रेम' प्रेम से मनाते होंगे,
आज की जयन्ती सुनो 'वीर भगवान की' ॥

(४)

भाई भाई लड़ते हैं धर्म पे झगड़ते हैं,
कहते हैं बात सब भरी अभिमान की ।
नय प्रमाण युक्ति और आगम को छोड़ बन्धु,
करते हैं मन मानी धुन है सम्मान की ।
सब को सुनाते नित हम हैं अहिंसा धारी,
किन्तु नहीं चर्चा है उसके उत्थान की ।

ठाठ है दिखावटी बनावटी हैं बातें सब,
'प्रेम' है जयन्ती कहां 'वीर भगवान की' ?

(५)

रूढ़ियों की शृंखला में जकड़े हैं खूब हम,
बात नहीं सुनते हैं धर्म के उत्थान की।
न्यारा न्यारा राग ही अलापते हैं रोज रोज
गाते नहीं रागनी हैं एकता के तान की।
मुख में बखानते हैं उन्नति की बातें नित,
करके दिखाते नहीं कोई बात शान की।
ठाठ है दिखावटी बनावटी हैं बातें सब,
'प्रेम' है जयन्ती कहां 'वीर भगवान की' ?

—धा० र० ब्र० प्रेमसागर पंचरत्न, रैपुरा।

(१)

छाया था अज्ञान अन्धकार जब चहुं ओर,
सुध न रही थी कुछ स्व पर विज्ञान की।
यज्ञ अश्व होम आदि होने लगे अह निश,
सीमा न रही थी कुछ पाप बलिदान की।
ऐसी समस्या जब विकट उपस्थित हुई,
वीर अवतार लिया मूर्त्ति दिव्य ज्ञान की।
हिन्सा का विनाश किया धर्म का विकास किया,
ध्वजा लहराई तब 'वीर भगवान की'।

(२

वीर पुनः जन्म लेओ दया वृत्ति धार कर,
छवि दिखलाओ प्रभु शीघ्र ज्ञान भान की।

रूढ़ियों के दास बन चाहते सुधार हम,
होरही दशा हमारी जैसे लट्टू श्वान की।
पक्ष हठ शठ वश भ्रात तें निआरे हुए,
ध्येय से विमुख हुए धार शल्य मान की।
सत्य मार्ग त्याग कर चलते पृथक हम,
देते हैं दुहाई फिर 'वीर भगवान की'॥
—लक्ष्मीचन्द जैन, 'शाद' वकील, रामपुर स्टेट, यू० पी०

जिसने किया है उपकार जग जीवन को,
ज्योति युत झलक दिखाके निज ज्ञान की।
जिसने बचाये हैं अनेक मूक दीन पशु,
जग को दिखाके पोल नित्य अन्य ज्ञान की।
जिसने अज्ञ न अन्ध फन्द सों छुड़ायो आन,
जिसने कुमति मार सुमति प्रदान की।
जिसने बताया हमें धर्म कर्म मान सभी,
प्रगट दया है उस 'वीर भगवान की'॥
—कुमरेश जैन, जम्बू विद्यालय, सहारनपुर।

(१)

जन्म लियो कुण्डलपुरी में जब आके तुम,
भूमि हिल गई उसी क्षण सुर थान की।
चतुर निकाय देव मध्य लोक माहिं आय,
सब विधि कीनी जाय मेरु गिर स्नान की।
प्रभु को नह्लाय, वस्त्राभूषण सजाय, तथा-
फिर घर लाय बहु कीरति बखान की।

सुर गाय उमगाय कोऊ मृदंग बजाय,
सहस थुति भाय श्री 'वीर भगवान की' ॥

(२)

तृणथाई जान प्रभु भोग भव तज दियो,
मात प्रियकारिणी की सेवा तज आन की।
तपस्या भारी, मार मोह कर्मों से प्रीति तोरी,
द्वादश बरस माहि ज्योति जगी ज्ञान की।
सुर मनुजों ने आय भावन सों पूजा उन्हें,
जिसने कुमति मार सुमति प्रदान की।
मुदित हो मन माहि एक बार जय कहो,
शुद्ध बुद्ध गुण खानि 'वीर भगवान की' ॥

(३)

कुमति निकन्द होय महा मोह मन्द होय,
जगमगे बुद्धियां विवेक ज्ञान वान की।
नीति को हढ़ाव होय विनय को बढ़ाव होय,
उपजे उछाह बड़ो हिय हरखान की।
धर्म को प्रकाश होय दुर्गति को नाश होय,
बरते समाधि ज्यों पियूष रसधान की।
तोय परि पूर होय दोष दृष्टि दूर होय,
दर्शन की महिमा है 'वीर भगवान की' ॥

—ज्योतीप्रशाद जैन।

वह करुणा अवतार हमारे, संसृति में उस समय पधारे ।
दलित दीन असमर्थ बिचारे, जब थे दुखित महान ! ॥
जयन्ति वीर भगवान ! ०

प्रकटित होकर उन्हें उठाया, गद्गद् होकर गले लगाया ।
पीड़ित जग को धैर्य बँधाया, फैला स्वर्ग विहान ! ॥
जयन्ति वीर भगवान ! ०

करुणा दया प्रेम नय ममता, जीवों मध्य परस्पर समता ।
रक्षा सहन शीलता क्षमता का उठ चला वितान ! ॥
जयन्ति वीर भगवान ! ०

फैला धर्म प्रकाश निराला, हुआ अहिंसा का उजियाला ।
हिंसा वृत्ति का हुआ दिवाला, शोर हुआ वरदान ! ॥
जयन्ति वीर भगवान ! ०

—कल्याणकुमार 'शशि'

❀ लाई बधाए ❀

बौरे रसाल भला किस हेतु? पलाश ने पांवड़े कैसे बिछाए ?
चातक और पिकी किस, कारण कूक उठे सहसा मन भाए ?
शीतल मन्द सुगन्ध लिये, किस कारण में मलयानिल आये ?
मानो बसन्त के व्याज धरा प्रभु वीर के जन्म पै लाई बधाए ॥
—भगवन्त गणपति, गोयलीय ।

❀ आदेश ❀

प्रभु वीर-जन्म उत्सव मिलकर सभी मनाओ,
इसको मनाके जग में, जिनधर्म को फैलाओ ।
श्री चैत्र शुक्ल तेरस, कैसा है दिन मनोहर,
इस दिन ही जन्मे स्वामी, कुण्डलपुरी के अन्दर ।
त्रिशला के प्राण प्यारे, सिद्धार्थ के दुलारे,
जिन धर्म के सितारे, जग जीवों को उबारे ।
जब जन्म लीना स्वामी, कम्पित हुआ इन्द्रासन,
संसार भर में छाया, महा हर्ष का प्रकाशन ।
स्वर्गों से देव आकर, सुन्दर नगर को सजते,
उस वक्त सब तरह के, बाजे मधुर थे बजते ।
स्वामी का जन्म उत्सव, करने को इन्द्र आते,
चढ़ के गजेन्द्र ऊपर, सुमहा प्रमोद पाते ।
अतएव जैन मित्रो ! कर्त्तव्य ज्ञान करके,
इस पर्व को मनाओ, गृह कार्य छोड़ करके ।

'फुलेन्द्र' की है आशा, इसको मनावें सबही,
श्री जैनमत का डङ्का, जग में बजेगा तबही ॥
—फुलेन्द्रकुमार जैन, बगरू (जैपुर)

कामना:—

(१)

पाप और पाखण्डों में बढ़ गया विश्व में जब उन्माद,
न्याय तथा अन्याय, अहिन्सा प्रति हिन्साका छिड़ा विवाद।
अत्याचार प्रपीड़ित होकर दीन जनों में निकली आह,
जीवित पशुओं का बलि वेदी पर बह निकला रक्त प्रवाह।

(२)

करने लगी वासना हँस कर अन्तस्थल में तांडव नृत्य,
अट्ट हास कर उठा स्वार्थ भी, ज्ञान देख कर यह दुष्कृत्य।
अस्त होगया निखिल विश्व में छाया तम अज्ञान अपार,
निर्दयता ने निर्भय होकर निर्दयता में किये प्रहार ॥ २ ॥

(३)

दशों दिशा में त्राहि! त्राहि!! की गुंजन करने लगी पुकार,
इस ही युग में लिया वीर ने जगती तल पर बस अवतार।
देख दशा दयनीय विश्व की किया राज्य का त्याग विशाल,
वैभव ठुकराकर वीरोचित, सहे तीर में कष्ट कराल ॥ ३ ॥

(४)

फिर अन्यायों अत्याचारों का दृढ़ बनकर किया विनाश,
ज्ञान सूर्य का निखिल विश्व में फैल गया तब विमल प्रकाश

झरने लगी सुधा की धारा वदन चन्द्र से तव वर वीर !
बहने लगा सुखद जगती पर मंद सुगंधित मलय समीर ।

(५)

सुर नर मुनि ने आनंदित हो तव चरणों में गाया गान,
धन्य त्याग तव, धन्य शक्ति तव, धन्य ज्ञान तव श्रीभगवान !
किन्तु आह ! फिर देखा विभुवर फैल रहे हैं अत्याचार,
पाप और पाखंड बढ़ रहे धर्म और हो रहे शिकार ॥

(६)

सत्य मार्ग च्युत हुई जा रही नाथ ! देखिये तव सन्तान,
धर्म कर्म का वास्तविक में इसे रहा नहीं किंचित् ज्ञान ।
अतः देव ! फिर से करदो बस उसमें नवजीवन संचार,
दिव्य प्रेम प्रकटादो होवे सुखद ज्ञान का विमल प्रसार ॥

—नाथूराम डोंगरीय जैन न्यायतीर्थ, सुगावली ।

जैन-मित्र-मंडल द्वारा प्रकाशित ट्रेक्ट।

१ जैनधर्म-प्रवेशिका प्रथम भाग, बा० सूरजभान वकील, हिन्दी ≡)
२ रिपोर्ट मण्डल, सन् १९१९ से १९२६ तक उर्दू, हिन्दी =)
३ सुबह सादिक, स्व० पं० जिनेश्वरदासजी साहब उर्दू -)॥
४ जैनधर्म ही भूमण्डल का सार्वजनिक धर्म—सिद्धान्त हो सकता है, बाबू माईदयालजी बी० ए० आनर्स हिन्दी)॥।
५ भगवान् महावीर और उनका काल, बा० शिवलालजी उर्दू -)
६ ख़यालाते तकलीफ़, बाबू भोलानाथजी मुख़्तार उर्दू मु०
७ रिपोर्ट वीर-जयन्ती सन् १९२७ मंत्री मित्र मण्डल हिं० उ० =)
८ अहिंसा धर्म पर बुजदिली का इलजाम बा० शिवव्रतलाल उ०)॥
९ हक़ीक़ते मालूम, बा० भोलानाथ मुख़्तार उ०)॥
१० हयाते वीर ,, ,, ,,)॥
११ महरे कामिल ,, ,, ,, -)
१२ दी रियल नेचर आफ़ परमात्मा, मि० एन० एस० अगरकर अं० =)
१३ जल्वे कामिल, बा० भोलानाथ मुख़्तार, उ० ≡)
१४ लार्ड अरिष्टनेमि, मिस्टर हरिसत्य भट्टाचार्य अं० ।=)
१५ जैनधर्म असली है, बा० दीवानचन्द जैन =)
१६ आदाबे रियाज़त, बा० भोलानाथ मुख़्तार दरख़शां, उ० मु०
१७ मुक्ति और उसका साधन, ब्र० शीतलप्रसादजी हिन्दी -)
१८ ज्ञानसूर्योदय भाग २, बा० सूरजभान वकील ,, ≡)
१९ वीर जयन्ती रिपोर्ट, सन् २८-२९ जैनमित्रमण्डल हि० उ० ।)
२० फ़राज़े इन्सानी, बा० शिवलाल जी मुख़्तार उ०)॥
२१ जैन वीरों का इतिहास और हमारा पतन श्री अयोध्याप्रसाद जी गोयलीय, हिन्दी ।)
२२ पंचव्रत बा० भोलानाथ जी मुख़्तार बुलन्दशहर, ,,)॥

२३ रत्नत्रयकुञ्ज, बैरिस्टर चम्पतराय जी, ,, -)
२४ हुस्ने-फ़ितरत, स्व० पं० जिनेश्वरदासजी माइल उ० मु०
२५ मुक्ति पं० प्रभाचन्द्र जी न्यायतीर्थ हिन्दी मु०
२६ मशायरा सन् १९२०, मंत्री जैनमित्र-मण्डल उ० ,,
२७ रिपोर्ट मंडल सन् १९२० ,, ,, हिन्दी ,,
२८ शारदा-स्तवन, श्री कल्याण कुमार जी जैन 'शशि' ,, ,,
२९ ख़्यालेऋषभ, बा० भोलानाथजी मुख्तार दरख़्शां उ० -)
३० जैन वीरों का इतिहास, बा० कामताप्रसाद जी, हि० ।)
३१ मेरी भावना, पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार हि० मु०
३२ दी न्यूलिटी ऑफ़ जैन सिस्टम, बा० चम्पतरायजी बैरिस्टर अं० =)
३३ जैन भावनाओं की उर्दू अनुवाद, भोलानाथ जी मु० उ०)
३४ दिगम्बर मुनि, बाबू कामताप्रशाद जी हिन्दी -)॥
३५ हमारी शिक्षा पद्धति, पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री ,, =)
३६ दशभक्ति, मुनि अनन्तसागर जी, संस्कृत मुफ्त
३७ मौर्यसाम्राज्य के जैनवीर, श्री अयोध्याप्रशादजी गोयलीय हि० =)
३८ गास्पल ऑफ़ वर्धमान, महर्षि श्रीयुत शिवव्रतलालजी उर्दू ।)
३९ नित्य प्रार्थना, बाबू ज्योतिप्रसाद जी, हिन्दी ।)
४० मण्डल का संक्षिप्त विवरण, मन्त्री मित्र मंडल, ,, मुफ्त
४१ भगवान महावीर की अहिंसा और उसका भारत के राज्यों
पर प्रभाव, लेखक बाबू कामताप्रसाद जी हिन्दी =)

निवेदक—

मन्त्री—जैन मित्र मंडल, देहली ।

श्री रत्न जैन ग्रंथ माला नं. १०

हिन्दी जैन पद्यावली.

प्रकाशक

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था

सदर बजार नागपूर.

१९२९

सुनहरी नामावली

स्तंभः मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराज

आजीवन सदस्य (Life Members)

१ श्री हीरचंदजी नानुलालजी पारख

२ श्री मानकचंदजी सेरमलजी सुराना

सदर बाजार नागपुर.

आश्रयदाता

१ श्री नंदरामजी चांदमलजी बोहरा

मु. पीपला जि. अहमदनगर

२ श्री लालचंदजी रतनचंदजी भटेवडा

मु राहु जि. पुणे

३ श्री फतेराजजी धनराजजी सिंगी

मु. सिंधी जि. नागपुर.

श्रीरत्न जैन ग्रंथमाला नं. १०

॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

हिन्दी जैन पद्यावली

प्रकाशक

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था

सदर बाज़ार नागपूर.

प्रथमावृत्ति ३०००	वीरसंवत २४५५	मूल्य प्रति ... १५ का रु. १ शेकडा रु. ६

पुस्तकोंकी बिक्रीका मूल्य पुस्तकोंके छपानेमें लगाया जाता है.

प्रस्तावना.

प्रिय बंधुओ ! आपके करकमलमें **श्री जैन धर्म प्रसारक संस्थाका** हिंदी जैन पद्यावली नामक दसवां ट्रेक्ट देते हुए हमें विशेष हर्ष होता है. इस पद्यावलीमें जितने पद्य हैं वे सभी एक कविके बनाए हुए नहीं हैं, अलग अलग बनानेवाले हैं, परंतु पद्य सुयोग्य होनेसे संग्रह करके प्रकाशित करनेमें आए हैं.

श्री तिलोक जैन पाठशाला पाथर्डी प्रीत्यर्थ पूनानिवासी **श्रीमान् भिकमदासजी किसनदासजी** के तरफसे '**जैन पद्यावली**' नामकी पुस्तक छपी थी. वह शिल्कमें नहीं रहनेके कारण पाथर्डी पाठशालाके संचालकोंके तरफसे यहां प्रकाशित करनेके लिए आज्ञा मिलनेपर हमने मराठी जैन पद्यावली और हिंदी जैन पद्यावली ऐसे दो विभाग किये हैं, क्यों कि मराठी पद्योंका हिंदी भाषा बोलने-वाले लोगोंको कुछ भी उपयोग नहीं होता, और महाराष्ट्रीय लोगोंको भी जितना चाहिये उतना हिंदी पद्योंका उपयोग नहीं होता.

इस हिंदी जैन पद्यावलीमें **श्रीतिलोक जैन पाठशाला पाथर्डी** विद्यार्थियोंके तरफसे गाए जानेवाले धार्मिक, सामाजिक, और कितनेक उपदेश पर ऐसे २५ पद्योंका संग्रह है.

अपनी जैन पाठशाला ओंमें इस पद्यावलीको गायन अभ्यास क्रममें रखनेसे विद्यार्थियोंके दिल पर सामाजिक और धार्मिक अच्छा असर होगा, ऐसा हमारा दृढ विश्वास है.

हमारे जैनबंधु और समाज सुधारणाके हितेच्छु जैनेतर बंधु भी इस पद्यावलीको अपनावेंगे ऐसी आशा है.

इस हिंदी जैन पद्यावली की १००० प्रतियां निकालनेके लिए सिंधी निवासी श्रीमान् बुधमलजी चंपालालजी छाजेडने आर्थिक आश्रय दिया है, और १००० प्रतियां निकालनेके लिए सदर बाजार नागपूर निवासी श्रीमान मानमलजी भैरोदानजी बद्धानीने अपनी बहन श्रीमती जीवनी बाईके १० दिनकी तपश्चर्या निमित्त आर्थिक आश्रय दिया है. इसी तरह हिंगणघाट निवासी श्रीमान् मानकचंदजी गोलछा ने १००० प्रतियांको प्रकाशित करवानेके लिए आर्थिक मदद दी. अतः उपर्युक्त तीनों महानुभावोंको धन्यवाद देते हुए **श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था** आभार मानती है.

मंत्री

श्रीमहावीराय नमः

॥ पद्य १ ला ॥

॥ तर्ज-विनंति धरजो ध्यान. ॥

मंत्र जपो नमोकार भविकजन मंत्र जपो नमोकार ॥ टेर ॥
पैंतीस अक्षर अडसठ मंगल, जाप जपत भवपार ॥ म. ॥ १ ॥
शेठ सुदर्शन जाप जपत ही, सूली सिंहासन धार ॥ म. ॥ २ ॥
सती जो सीता जाप करत ही, भइ अग्नि जल गार ॥ म. ॥ ३ ॥
नागींद्र कीर्ति की एही अरज है, उतारो भवपार ॥ म. ॥ ४ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य २ रा ॥

॥ तर्ज-गजल ॥ विर्ना जिनराजके देखे. ॥

मुझे क्या काम दुनियासे, मेरा जिनदेव प्यारा है ॥
जलाए अष्ट कर्मोंको, प्रगट जगमें उजारा है ॥ मु. ॥ टेर ॥
बिराजे छत्र शिर ऊपर, अजब आकृति प्रभुकी है ॥
चवर ढुरत प्रभुजी पर, अजब ताको दुवारा है ॥ मु. ॥ १ ॥
नर श्रीपाल सागरसे , ये अंजन चोरसे भारी ॥
सुदर्शन शेठ सूलीसे, जो शिवपुरको सिधारा है ॥ मु. ॥ २ ॥
समारी लाज सीताकी, सरोवर कीन पावक ने ॥
बढाए चीर द्रौपदीके, दुःशासन मान टारा है ॥ मु. ॥ ३ ॥
कुबुद्धिको तजो भाई, बनो शरणागति प्रभुके ॥
जपो जिन नामकी माला, जभी निस्तार धारा है ॥ मु. ॥ ४ ॥
करे विनति मिथुन तेरी, समारो लाज प्रभु मेरी ॥
रहे चरणोंकी शरणोंमें, तुही मालिक हमारा है ॥ मु. ॥ ५ ॥इति॥

❀ ❀ ❀

पद्य ३ रा. ॥

॥ तर्ज—आलो पदीं शरणास. ॥

बनि आई सकल सुर नार पारस चंदनको ॥ टेर ॥
काशी देश बनारसी नगरी, अश्वसेन दरबार ॥ पा. ॥ १ ॥
इंद्र शची मिल करत आरती, संचिये पुण्य भंडार ॥ पा. ॥ २ ॥
कोई गावंत कोई बजावत, कोई करत जयकार ॥ पा. ॥ ३ ॥
कोई भाव बतावत गावत, जिनगुण वृंद अपार ॥ पा. ॥ ४ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य ४ था ॥

॥ तर्ज—गिरनारियो पे० ॥

जिनराजा स्वामी अरज हमारी सुन तारिये ॥ टेर ॥
दीन दयाल दयाके सागर, सब जीवन हितकारी ॥
भव सागरसे पार उतारो, जग तारक जस धारीजी ॥ जि. ॥ १ ॥
कर्मशत्रुके फंदेमे पडकर, चेतन हुवा अनारी ॥
विषयोंसे मदमस्त होयकर, दर दर हुवा भिखारीजी ॥ जि. ॥ २ ॥
चतुर्गतिमे भ्रमत भ्रमते, अगणित दुःख हम पाये ॥
तारण तरण बिरद हम सुनकर, शरण तुमारे आयेजी ॥ जि. ॥ ३ ॥
शरण तुमारा अब हम धारा, सारा दुःख निवारो ॥
बालकको निज दास जानकर, भवसे पार उतारो जी. ॥ जि. ॥ ४ ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य ५ वां ॥

॥ तर्ज— [illegible] मन निशदिन० ॥

नाभिनंदनकू जग वंदन है । ज [illegible] है प्रभु तारत है ॥टेर॥ जन्म भयो प्रभु अयोध्या नगरी, सुरनर [illegible] टावत है ॥ ना० ॥१॥ मरु-

देवी माता गोद खिलावत, देख देख सुख पावत है ॥ ना० ॥२॥ राज पाट सुख संपत्ति तजके, संयमके व्रत धारत है ॥ ना० ॥३॥ इंद्र सुरासुर चरण सेवत हैं, प्रेम धरी गुण गावत है ॥ ना० ॥४॥ युगल धर्मको खंडन करके, धर्मकी नीति बतावत है ॥ ना० ॥५॥ अष्ट कर्मको क्षय कर स्वामी, मुक्तिपुरीमें सिधावत है ॥ ना० ॥६॥ मुनि रत्न प्रभु दर्शन आशा, येही दिलमें चावत है ॥ ना० ॥७॥ मनमाड ग्रामे चतुर संघ तें, भविक सुनी हर्षावत है ॥ ना० ॥८॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य ६ वां ॥

॥ तर्ज– वारिया वारिया वारियारे० ॥

भावना भावना भावनारे एक शांति प्रभुकी मुझ भावना ॥टेर॥ हस्तिना-पुरमें जन्म लियो प्रभु, विश्वसेन कुल चांदनारे ॥ ए० ॥१॥ अचिरा माता विश्वविख्याता, महामारी रोग मिटावनारे ॥ ए० ॥२॥ मृगलक्षण शोभे प्रभुजीको, कनक वर्ण मन मोहनारे ॥ ए० ॥३॥ रत्नऋषि याचक तम पास मांगे, एक दर्शनकी चावनारे ॥ ए० ॥४॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य ७ वां ॥

॥ तर्ज– जिनधर्मका डंका भारतमें० ॥

करुणा कर जीव पुकारत है करुणाकर! तेरा ध्यान कहां ? ॥टेर॥
इस पुण्यरूप भारत भूमीपर, तेरा दया विधान कहां ॥ क० ॥१॥
मानव सम पशु पक्षी भी, सब प्रजा कहाते सृष्टीकी ॥
स्वारथके वश अंध भये हैं, जो उनको हित ज्ञान कहां? ॥ क० ॥२॥
गर्दनपे छुरी चलाते थे, मनमाही दया न लाते थे ॥
दुष्टोंके मद हरते थे वे, महावीरसे वीर कहां? ॥ क० ॥३॥

पशूयज्ञसे भारतमें, जब लहुकी नदी बहती थी ॥
जिसने आकर बंद किया, वह प्राणसे प्यारा वीर कहां? ॥ क० ॥४॥
जिनके सद् उपदेशसे मित्रो! भारत सब सुख सागर था ॥
वे दिव्यमूर्ति समदर्शी, अब **गौतम** गणधर वीर कहां ? ॥ क० ॥५॥
प्राणोंसे भी प्यार अधिक, जो सब जीवोंपर करते थे ॥
वे दया धुरंधर गुण आगर, अब **श्रीसुधर्मा** वीर कहां? ॥ क० ॥६॥
बिना पक्षके नित हितकी, जो सबको शिक्षा देते थे ॥
वे पूज्यपाद और जगतके भूषण, ऋषि **तिलोकी** वीर कहां?॥क०॥७॥
उपदेश दयाका देते थे, और मोह तिमिरको हरते थे ॥
सत पथकेदिखलानेको अब ऋषि गणके वे **रतन** कहां?॥ क० ॥८॥
तत्वज्ञान अरु निजबलसे, जो सबको सुखद बनाते थे ॥
तप संयममें नामी थे, वे ऋषि **केवल** गुणगेह कहां? ॥ क० ॥९॥
हर भांति दयाकी वर्षा कर, सुखधाम किया है भारतको ॥
दासके जो है गुरु **अमोलक**, ऐसे ज्ञानी और कहां? ॥ क० ॥१०॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य ८ वां ॥

॥ तर्ज–मेरे मौला बुला लो० ॥

(करुणाजनक प्रार्थना)

स्वामी चरणोंका दास बना लो मुझे ॥
सच्चा मुक्तीका मार्ग बता दो मुझे ॥ स्वा. ॥ टेर ॥
नीच हूं मैं पातकी जिन धर्मको छोडा मैंने ॥
करता हूं हिंसा सत् कर्मको छोडा मैंने ॥
जैसा हूं मैं तुम्हारा बना लो मुझे ॥ स्वा. ॥ १ ॥
हो गया उन्मत्त पीकर मोह रूपी भंगको ॥

जा कुसंगतमें फँसा तजकरके सुभ सत्संगको ॥
गिरा ऊंचे शिखरसे उठा लो मुझे ॥ स्वा. ॥ २ ॥
ज्ञान भक्ति है न किंचित सब तरहसे हीन हूं ॥
करता हूं सेवन विषय अविचारसे तल्लीन हूं ॥
अब तो फाँसीसे नाथ बचालो मुझे ॥ स्वा. ॥ ३ ॥
नित भटकता मैं फिरा संसारमें सुख नहीं मिला ॥
बस ! जिधर दौड़ा उधर सुखके बदले दुख मिला ॥
अब तो गोदमें अपने बिठा लो मुझे ॥ स्वा. ॥ ४ ॥
पुत्र हूं मैं आपका संकटको मेरे दो निवेर ॥
नाथ ! इस जन्म मरणका टाल दो यह हेर फेर ॥
आया दरपे तुह्मारे न टालो मुझे ॥ स्वा. ॥ ५ ॥
मांगता हूं आपसे भिक्षा ये भक्तोंकी प्रभो ! ॥
पार कर दो नाव मेरी शोक सागरसे विभो ! ॥
अब तो चरणोंकी रजमें लिटा लो मुझे ॥ स्वा. ॥ ६ ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य ९ वां ॥

॥ तर्ज—क्या भूलिया दिवाने० ॥

(श्री सद्‌गुरु स्तुति ॥)

धन्य धन्य भाग हमारे, यहां सद्गुरु पधारे ॥ टेर ॥
देखो मुनीकी करनी, मुखसे न जाय बरनी, जिन नाम सदा उच्चारे ॥ यहां ॥ १ ॥ आवो तुम साज सबेरी, मत ना लगावो देरी, अवसर को मत चुकारे ॥ यहां. ॥ २ ॥ दुर्गुणको दूर हटावो, प्रभु चरण चित्त लगावो, सब होय काज तेरे ॥ यहां. ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य १० वां ॥

॥ तर्ज—वारिया वारिया वारियारे० ॥

वंदना वंदना वंदनारे ज्ञानी गुरुजीने म्हारी वंदना ॥ टेर ॥
वंदना कर्यासूं ज्ञानज आवे, ऊंचा पदकूं पावनारे ॥ ज्ञा. ॥ १ ॥
गुरुजी बुलाया तहत्ति उच्चारो, कर जोडीने बोलनारे ॥ ज्ञा. ॥ २ ॥
गुरुजी पधार्या उभो रेवनो, पधारो पधारो इम केवनारे ॥ ज्ञा. ॥३॥
विनयमूल जैनधर्म भारव्यो, सब अवगुण दूर हरनारे ॥ ज्ञा. ॥४॥ रत्न
ऋषि कहे शीखज मानो, गुरुवचन शिर धरनारे ॥ ज्ञा. ॥५॥ इति ॥

❋ ❋ ❋

॥ पद्य ११ वां ॥

॥ तर्ज—बिना जिनराजके देखे० ॥

ज्ञान दुर्लभ है दुनियामें, धरम सबसे अमोल्कि है ॥
यही भगवानने भाखा, धरम सबसे अमोल्कि है ॥ टेर ॥
रखो तन अपना धन देकर, बचावो लाज तन देकर ॥
धरम पर वार दो सबको, धरम सबसे अमोलिक है ॥ ज्ञा. ॥१॥
धरमके सामने सब हेच, राज और पाट दुनियाका ॥
धरमही सार है जगमें, धरम सबसे अमोल्कि है ॥ ज्ञा. ॥२॥
धरमके वास्ते सीता, किया परवेश अग्नीमें ॥
राम तज राज वन पहुंचे धरम सबसे अमोलिक है ॥ ज्ञा. ॥३॥
धरमके वास्ते गर जान भी जाए तो दे दीजे ॥
समझ लीजे यकीं कीजे, धरम सबसे अमोलिक है ॥ ज्ञा. ॥४॥

❋ ❋ ❋

॥ पद्य १२ वां ॥

॥ तर्ज- तूं तो राम समर० ॥

(उपदेशी)

मन बांधो गठरिया अपजसकी ॥ टेर ॥ लछमी चंचल चपल न अपनी, बांधि रहूं कहूं या किसकी ॥ म० ॥१॥ तन धन जोबन कुटुंब कबीला, यामें न बात कोई रसकी ॥ म० ॥२॥ धर्म विना क्यों बैल बना तू, अब तो करणी कर जसकी ॥ म० ॥३॥ सेवक गाफिल मत हो सांई, जिंदगानी रही दिन दसकी ॥ म० ॥४॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य १३ वां ॥

॥ तर्ज—दर्शन दीजे पारसनाथ० ॥

(समाज सुधारणाके विषयमें)

करने शिक्षाका परचार जात्युन्नतिके करनेवाले ॥ टेर ॥

जगमें छाय रहा अज्ञान, उठ गया धर्म कर्मका ज्ञान, अब तो होगई पूरी हान, जागो जागो सोनेवाले ॥ क० ॥१॥ विद्या धन बल दिया गमाय, घरका माल पराये खाय, भिक्षा मांगन पर घर जाय, कायर नाम डुबाने वाले ॥ क० ॥२॥ करके बालक वृद्ध विवाह, कर दिया सारा देश तबाह, विधवा लाखों मरती आह, चेतो चिता बनानेवाले ॥ क० ॥३॥ जगमें प्यारी है संतान, लोभी लेवे उसका प्रान, फेरे छुरी गलेपर जान, कन्या विक्रय करने वाले ॥ क० ॥४॥ पापी पाप करे दिनरात, पैसा जोड जिमादे जात, घरमें रोवे सारी रात, धनकी धूल उडानेवाले ॥ क० ॥५॥ करते नुकता सब दिल खोल, फिर तो निकल जाय सब पोल, बेचे छोरा छोरी मोल, सत्यानाश मिलाने

वाले ॥ क० ॥६॥ लडते घरघरमें नरनारी, करते रांड भडीका भारी, डूबी इसहीमें सारी, देखो माथा धुननेवाले ॥ क. ॥७॥ गाती भंड-वचन कुलनार, जाती वेश्या जिनसे हार, सुनते तेल कानमें डार, जोरु हुकम चलानेवाले ॥ क० ॥८॥ विद्या पढो पढावो यार, करने सुरीतिका परचार, तबही होगा बेडापार, नैया पार लगानेवाले ॥ क० ॥९॥ सीखो खूब धर्मका ज्ञान, पावो धन बल अरु सन्मान, सूरज प्रगट करो निज शान, कौमी खिदमत करने वाले ॥ क० ॥ १०॥
॥ इति ॥

* * *

॥ पद्य १४ वां ॥

॥ तर्ज— अमोलक मनुष्य जनम प्यारे० ॥

नींदसे जागो मनप्यारे, वक्त जाता है चल्या प्यारे ॥टेर॥

बिन कॉलेजकी उन्नति, होनी है दुशवार ॥ कमर बांधके खोल दो प्यारे, विद्याका भंडार ॥ दिगंबर श्वेतांबर सारे ॥ नींद. ॥१॥ एक दिन छहों खंडमें, था जिनमतका प्रकाश ॥ आज अविद्या छा गई प्यारो, रह गई चौदा लाख ॥ आँख खोलो अबतो प्यारे ॥ नींद. ॥२॥ मुसलमान सिख आर्या, और इसाई सारे ॥ पीछेसे आगे हुवे, खोले कालेज भारे ॥ रहे पीछे जिनमत वारे ॥ नींद. ॥३॥ बद रसमोंको छोड दो, चलो जैन मर्याद ॥ फजूल खर्ची त्यागके करो, कॉलेजकी इमदाद ॥ कहे न्यामत सुनलो सारे ॥ नींद. ॥४॥ इति

* * *

॥ पद्य १५ वां ॥

॥ तर्ज– बिना जिनराजके देखे० ॥

(पंचोंसे अपील)

हमारे मुखिया पंचोंको, कहांसे नींद आई है ॥
चिरागे धर्मकी देखो, सबोंने मिल बुझाई है ॥ ह. ॥ टेर ॥
उठो, पंचो! जरा अबतो, नहीं है वक्त सोनेका ॥
कुरीतें न्यातमें फैली, व तुमपर नींद छाई है ॥ ह. ॥ १ ॥
जरा रोको फजूल खर्ची, लगाओ धन सुमारगमें ॥
धनीको दान देते क्यों, अगर हककी कमाई है ॥ ह. ॥ २ ॥
आतिशबाजीके बदलेमें, खुलाओ पाठ शालाएं ॥
पढावो लडका लडकीको, जनम भर रोशनाई है ॥ ह. ॥ ३ ॥
सिठनोंकी रश्म त्यागो, जो गावें औरतें घरकी ॥
कहां है लाज घूंघटकी, बडी बदनामी छाई है ॥ ह. ॥ ४ ॥
न बोले जेठ सुसरासे, करे गृहसेवकसे ठट्ठा ॥
बुरी चालोंका मुख्य कारण, यही देता दिखाई है ॥ ह. ॥ ५ ॥
जो लेते दाम कन्याके, हुए बरबाद दो दिनमें ॥
वृद्ध वर बापसे बूढा, कुंवरी बेचे कसाई है ॥ ह. ॥ ६ ॥
दिखे कन्याको बूढा वर न नाड्योंमें है दम उसकी ॥
अकड कर तुम चलो पंचो, ये अबला गौ फंसाई है ॥ ह. ॥ ७ ॥
देवेगी शाप ये किसको, पिता माँ कैसे हत्यारे ॥
व्यास औ पंच लोगोंने, लगनपाती बैंटाई है ॥ ह. ॥ ८ ॥
इसी भांति बडी कन्या, जो व्याहो बाल कंवोंको ॥
नहीं सुख कुछ है कन्याको, फकत धनकी बडाई है ॥ ह. ॥ ९ ॥
करो बंद दुष्ट कर्मोंको, धर्म नीतीको धारो सब ॥

करो एका सत्री दिल्में, घरोघर फूट छाई है ॥ ह. ॥ १० ॥
करो प्रबंध पंचायत, मजा लो अपने जीवनका ॥
लगाओ पार बेडाको, इसीमें सब भलाई है ॥ ह. ॥ ११ ॥
कहें अब कहाँतलक तुमको, दिनोदिन हो रही हानि ॥
परमानंद अति दुःखित रेखता गा सुनाई है ॥ ह. ॥ १२ ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १६ वाँ

॥ तर्ज–ठुमरी ॥

(जैनियोंकी वर्तमान स्थितीका दिग्दर्शन.)

अब तुम चेतियोरे, कैसी हुई दशा तुमारी ॥ अ. ॥ टेर ॥
भारत वर्षमें चहुं ओर था, जैन धर्म परचार ॥
हाय आज दिन धर्मकी नैय्या, डूब रही मँझ धार ॥ अ. ॥१॥
विद्या गुणमें शिरोमणि थे, जैनोंके महाराज ॥
आज बौद्ध अरु वाम बनाकर, रहे नास्तिक गाज ॥ अ. ॥२॥
ऋषियोंने कर कठिन परिश्रम, कीन्हे ग्रंथ तैयार ॥
हाय पठन जिनवाणी छोडी, बन रहे मूढ गँवार ॥ अ. ॥३॥
संदूको बिच ग्रंथ बंद भये, ताले दिए है ठोक ॥
दीमक चुहे उन्हे खा रहे, फिरभी करो नहिं होश ॥ अ. ॥४॥
निर उत्तर कीन्हे थे इक दिन, बडे बडे प्रतिवादी ॥
हाय आज मत चले अनंते, बन गये सभी अनादि ॥ अ. ॥५॥
पूर्व समय धर्मोन्नति कारण, फिरते थे विद्वान ॥
आज देशमें फिरत न कोई, फैल गया अज्ञान ॥ अ. ॥६॥
चामर चंडी पीर पैगंबर, पूजे सकल कुदेव ॥
हाय नेत्र मुंद गये ज्ञानके, छोड दिये जिनदेव ॥ अ. ॥७॥

एक समय मित्रो ! तुम सब थे, धर्म वीर धनवान् ॥
खोय सुविद्या फंसे फंदमें, धर्म रहा नहीं ज्ञान ॥ अ. ॥८॥
अब तुम जागो निद्रा त्यागो, देखो देशका हाल ॥
धर्मोन्नति अब उठकर कीजे, कहे जैनी तुझारा लाल ॥ अ. ॥९॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य १७ वां ॥

॥ तर्ज—बिना जिनराजके देखे. ॥

(स्त्री शिक्षाके विषयमें)

करो तुम ध्यान शिक्षापे, यही बिनति हमारी है ॥
उठो बहनो ! पढ़ो विद्या, इसीमें लाभ भारी है ॥ क. ॥ टेर ॥
बिना विद्या तुझारा नाम, अबला है अरी बहनो ॥
बनो सबला तजो आलस, कहे भारतकी प्यारी है ॥ क. ॥ १ ॥
कहाती पंडिता देवी, यदि तुम पढती विद्याको ॥
भलाई तुममें सब आती, न कहते मूर्ख नारी है ॥ क. ॥ २ ॥
समझते तुमको सब दासी, न करते आव आदर कुछ ॥
पढी ना एक भी विद्या, इसीसे बहुत ख्वारी है ॥ क. ॥ ३ ॥
अरी बहनो सुनो विनति, पढो विद्या चलो ढंगपे ॥
कुरीति सब तरह त्यागो, यही मरजी हमारी है ॥ क. ॥ ४ ॥
न गावो गालियाँ मुखसे, न देवो तालियां करसे ॥
हंसो मत खिलखिलाकर तुम, इसीमें लाज भारी है ॥ क. ॥ ५ ॥
पढो इतिहास सीताका, कहा क्या उसने रावणको ॥
अरे मूरख दुराचारी, सतीसे विश्व हारी है ॥ क. ॥ ६ ॥
उछलकर कूदकर चलना, धमकके साथही उठना ॥
अधर्मी बातको करना, तुझारे हकमें ख्वारी है ॥ क. ॥ ७ ॥

अरी बहनो ! पढो विद्या, धर्मको जिससे तुम जानो ॥
अविद्याके सबब हमपे, सभीने तान मारी है ॥ क. ॥ ८ ॥
बको मत मातके आगे, बको मत बापके आगे ॥
हंसो मत गैरके सन्मुख, इसीमें पाप भारी है ॥ क. ॥ ९ ॥
करो भक्ति श्रीसद्गुरुकी, डरो मत स्याने भोपोंसे ॥
कहे तुमको सभी सज्जन, यह लडकी धर्मधारी है ॥ क. ॥ १० ॥
यदि तुम चाहो गानेको, तो गावो पंच कल्याणक ॥
सुने कहें वे हर्ष लाकर, देखो भाई–जैन नारी है ॥ क. ॥ ११ ॥

* * *

॥ पद्य १८ वां ॥

॥ तर्ज–दादरा ॥

(बालविवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह के विषयमें)

मत बच्चोंको व्याहो रुलानेको ॥ टेर ॥ आठकी तिरिया साठके बालम, व्याहो क्या बाबा कहानेको ॥ म. ॥ १ ॥ युवा भई तिरिया मर गये बालम, रांड कर दीनी दुःख उठाने को ॥ म. ॥ २ ॥ रो रो कर वो रुदन मचावे, सुन आवे दया सब जमानेको ॥ म ॥ ३ ॥ मरियो पापी बाप महतारी, मुझे बेची थी थैली भरानेको ॥ म. ॥ ४ ॥ मरियो पंडित व्याह शोधिय्या, फेरे बुड्ढेसे आया फिरानेको ॥ म. ॥५॥ मेरा तरसना दुष्टोंने कीना, लोभ छाया था धनके कमानेको ॥ म. ॥ ६ ॥ आह के नारे उठे जिगरसें, जाऊं मैं किसको सुनानेको ॥म. ॥ ७ ॥ जिन पंचोंका भरोसा गिना था, वह तो शामिल थे लड्डु उडानेको ॥ म. ॥ ८ ॥ कैसी ऊंधी ये जोडी मिलावे, लोगोंके हंसने हसानेको ॥ म. ॥ ९ ॥ बीसकी पुत्री सातके बालम, व्याहो क्या दूध पिलानेको ॥ म. ॥ १० ॥ भरी जवानी मेरे पतिजी, रहा जरिया

क्या जीवन निभानेको ।।म. ।। ११ ।। यदि हों दोनो छे छे बरसके, उन्हें ब्याहो क्या कब्रे उडानेको ।। म. ।।१२।। भारत क्यों न होवे ये भारत, जहां होवे अनर्थ ये कमानेको ।। म. ।।१३।। ये तीनो शादी जैनी कहे छोडो, क्यों फिरते हो देश डुबानेको ।। म० ।।१४।। इति ।।

❀ ❀ ❀

पद्य १९ वां

॥ तर्ज—दादरा ॥

(उपदेशी)

दया करनेमे जियरा लगाया करो ।। टेर ।। चलो तो पहले भूमीको देखो, छोटे मोटे जीवोंको बचाया करो ।। द. ।।१।। बोलो तो पहले दिलमें सोच लो, ना किसके दिलको दुखाया करो ।। द. ।।२।। बेहक का माल न खाओ कभी तुम, परधनको देख न लुभाया करो ।। द. ।।३।। चाहे हो गोरी चाहे हो काली, परस्त्रीसे निगाह न लगाया करो ।। द. ।।४।। पास हो माल खजाना तुम्हारे, दीन दुखियोंके दुःखको मिटाया करो ।। द. ।।५।। चारोंही आहारको रातमें न खाओ, ऐसी बातोंको दिलमें जमाया करो ।। द. ।।६।। चोथमल कहे आठोंही पहरमें, दोय घडी प्रभुजी को ध्याया करो ।। द. ।।७।। इति ।।

❀ ❀ ❀

पद्य २० वां

।। तर्ज—क्या भूलिया दिवाने० ।।

(चेतावनी)

क्यों बंधु ! सो रहे हो, गफलत जरा निहारो ! ।।
जाति बने तुम्हारी, बदनाम टुक विचारो ! ।। टेर ।।

कह खूब थक गये हम, सुनके न आप थाके ॥
अफसोस बन रहे तुम, दिन दिन विशेष बाँके ॥ क्यों. ॥१॥
देखो पडोसियोंने, क्या क्या सुधार कीन्हें ॥
विद्या प्रचार फंडमें, फैयाज दान दीन्हें ॥ क्यों. ॥२॥
कॉलेज पाटशाला, खोले यतमि खाने ॥
रोकी फजूल खर्ची, अश्लील नाच गाने ॥ क्यो- ॥३॥
यह वक्त बेश कीमत, क्यों मुफ्त तुम गंवाओ ॥
शुभ काममें लगाकर, जगमें सुयश कमाओ ॥ क्यों. ॥४॥
है जातिमें तुह्मारे, मोहताज बहन भाई ॥
जिनको नहीं सहारा, मुश्किल शिकम[1] भराई ॥ क्यों. ॥५॥
इनकी मदद करो तुम, ईश्वर करे तुह्मारी ॥
दुख दर्द दीन मेटो, पावो सवाब[2] भारी ॥ क्यों. ॥६॥
है नाचभी कराना, धनसे कुकर्म कमाना ॥
दावत मुमीबतोंमें, करना खुशी मनाना ॥ क्यों. ॥७॥
है बहन बेटियोंसे, गाली बुरी गँवाना ॥
व्यभिचारको सिखाकर, कुलटा उन्हें बनाना ॥ क्यों. ॥८॥
बस ! सुज्ञको इशारा, कहना अधिक तवालत ॥
जैनी यह अर्ज लेके, मेटो प्रभु जहालत ॥ क्यों. ॥९॥

❀ ❀ ❀

॥ पद्य २१ वां ॥

॥ तर्ज– गुरु दत्त दिगंबर भजरे० ॥

(उपदेशी)

जिनराज भजन नित करले, यह तन बारबार न मिले रे ॥ जि. ॥ टेर ॥

---

१ पेट भराई २ आशीर्वाद, पुण्य.

लख चौरासी भटकत भटकत, मानव देह तू पाया ॥ उत्तम कुल अरु पूरण इंद्रिय, पुनि निरोगी काया ॥ जि. ॥ १ ॥ वारवार सद्गुरु समझावे, समझ समझ रे स्याना ॥ बाल तरुण वय व्यर्थ गंवाई, अब तो भज भगवाना ॥ जि. ॥ २ ॥ नारी सुत धन कुटुंब कबीला, सब जग जाल पसारा॥ अंत समय कोई काम न आवे, आखिर हों सब न्यारा ॥ ।जि. ॥ ३ ॥ छिन छिन छीजत आयु सकल तोहि, ज्यों अंजलीका पानी ॥ परमानंद छल कपट झपट तज, भज भज भज जिनवाणी ॥ जि. ॥ ४ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य २२ वां

अनाथ दलको गले लगावो । स्वजाति बंधु स्वदेश बंधु ॥
हितैषि बनकर दया दिखावो ॥ स्वजाति बंधु स्वदेश बंधु ॥ ध्रु. ॥
बिचारे माता पितानें छोडा । तुमसे नाता इन्होंने जोडा ॥
तडपते निशदिन न अब रुलावो ॥ स्वजाति बंधु स्वदेश बंधु ॥अ.॥१॥
यह पेट पापी किया दिखानिग । विधर्मी होकर के फिरते घरघर ॥
विदेशियोंको न अब लुटावो ॥ स्वजाति बंधु स्वदेश बंधु ॥ अ. ॥ २ ॥
तुमारे घरमे तो फर्श मखमल । न इनको खाना न कपडा कंबल ॥
लुटादो धनको इन्हें बचावो ॥ स्वजाति बंधु स्वदेश बंधु ॥ अ. ॥ ३ ॥
अनाथ होवे सनाथ बच्चे । बनेंगे भारतके लाल सच्चे. ॥
अनाथ आश्रम भी आप बनाओ ॥ स्वजाति बंधु स्वदेश बंधु॥अ.॥४॥

❀ ❀ ❀

पद्य २३ वां.

(तर्ज–नींदसे जागो मतवारे.)

अमोलख मनुष्य जनम प्यारे, भूल विषयोंमें मत हारे ॥ धृ. ॥ लाख

चौरासी योनीमे, भ्रमत फिरा चहुं ओर ॥ नर्क स्वर्ग तिर्यंचमें प्यारे, सहे दुःख अति घोर ॥ कहीं नहीं सुख पायो प्यारे ॥ भू. ॥ १ ॥ धन दे तनको राखिये, तन दे रखिये लाज ॥ धन दे तन दे लाज दे प्यारे, एक धर्मके काज ॥ योंही मुनिजन कह गये सारे ॥ भू. ॥ २ ॥ यही धर्मका सार है, करलो पर उपकार ॥ तज स्वार्थ, परमार्थको प्यारे, भज लो वारंवार ॥ कहे न्यामत यह निर्धारे ॥ भू. ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ❀ ❀

॥ पद्य २४ वां ॥

(तर्ज–धरम मरते मरते बचायंगे फिरसे)

तुम्हें अपना तन मन लगाना पडेगा ॥ कि दुनियाको जैनी बनाना पडेगा ॥ धृ.॥ उठो जैनवीरो ! कमर कसके अब तुम ॥ तुम्हें कौमी झंडा उठाना पडेगा ॥ तु. ॥ १ ॥ सुनो जैनियो ! अपनी हाथोंसे तुमको ॥ महोब्बतका बीडा उठाना पडेगा ॥ तु. ॥ २ ॥ ए बिछुडे हुए हैं तुह्मारे जो भाई ॥ इन्हें अब गलेसे लगाना पडेगा ॥ तु. ॥ ३ ॥ उठाते हो दुनियामें सारे सितम तुम ॥ तो जातीका दुःख भी उठाना पडेगा ॥ तु. ॥ ४ ॥ जो आई भी जातिपे कोई मुसीबत ॥ तो खून अपना तुमको बहाना पडेगा ॥ तु. ॥ ५ ॥ समझलो हमें काम करने हैं क्या क्या ॥ दो आलममें डंका बजाना पडेगा ॥ तु. ॥ ६ ॥ करो जैनियो ! नाम रोशन जहांमे ॥ कि पीछे भी फिर मुंह दिखाना पडेगा ॥ तु. ॥ ७ ॥ यही दिन है कुछ काम करनेके करलो ॥ या यह वक्त योंही गंवाना पडेगा ॥ तु ॥ ८ ॥ अगर चे तुह्मारे धरममें है जल्वा ॥ दिखा ओ. खुशीसे दिखाना पडेगा ॥ तु. ॥ ९ ॥ जो कहते हैं एका कोई शै नहीं है ॥ उन्हें एक करके दिखाना पडेगा ॥ तु. ॥ १० ॥ सुनो "दास" की इल्तिजा दस्त बस्ता ॥ तुम्हें अपना रुतबा बढाना पडेगा ॥ तु. ॥ ११ ॥ इति ॥ ❀ ❀ ❀

॥ पद्य २५ वां ॥

॥ तर्ज—पापोंसे मुझ छुडादोर० ॥

(श्री तिलोक जैन पाठशालाके विद्यार्थियोंकी अपील)

विद्याका दान हमे दोजी जिनजीके लाडले ॥ टेर ॥

श्री रत्न ऋषिजी स्वामी, होती देख धर्मकी खामी, समाज सुधारण कामीजी ॥ जि. ॥ १ ॥ **तिलोक जैन पाठशाला पाथर्डी** में स्थापी विशाला, किया जिसने ज्ञान उजालाजी ॥ जि. ॥ २ ॥ धर्मात्मा जन दया लाते, द्रव्य सहाय देते दिखाते, बोर्डिंगस हम सुख पातेजी ॥ जि. ॥ ३ ॥ विद्यार्थी अनाथ आते, उन्हे देखके हृदय द्रवाते, द्रव्य विना रखे नहीं जातेजी ॥ जि. ॥ ४ ॥ अहो श्रीमानो ! धीमानो !, यह अर्ज हमारी मानो, मदतसे सुधारो संतानोजी ॥ जि. ॥ ५ ॥ सुपात्र अरु अभय दानो, दोनोंके महत्वको जानो, विद्या है गुण की खानोजी ॥ जि. ॥ ६ ॥ इस लिये ज्ञान सिखलाओ, दोनो लोकमें सब सुख पावो, जैन धर्मकी ध्वजा फराओ जी. ॥ जि. ॥ ७ ॥ इति

❋ ❋ ❋

ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांतिः !!!

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था का संक्षिप्त वृत्तांत.

प्रातःस्मरणीय परमोपकारी जैन धर्मके स्तंभ श्री श्री १००८ श्री रत्नऋषिजी महाराजका गत वर्ष मिती जेष्ठ वद्य ७ संवत १९८४सोमवार को अल्लीपूर ग्राम (जील्हा वर्धा) में स्वर्गवास हुवा. उन सत्पुरुष का जीवन चरित्र उनके सच्छिष्य मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराजने संक्षिप्तमें यहां (सदर बाजार नागपूर) के श्रावकोंके सामने मिती जेष्ठ वद्य ७ संवत् १९८५ तदनुसार ता० १२।५।२८ शनिवारको सबेरे व्याख्यानमें बडेहि मार्मिक शद्बोंमें फरमाया जिसे सुन यहां की जनतापर अच्छा प्रभाव पडा. और उन्होंने मिती जेष्ठ वद्य १२ को महाराज श्री के स्मारक रूप श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था शुभ मुहूर्तमें स्थापित की.

"श्री जैन धर्म का प्रचार जनतामें निःपक्षपात बुद्धिसे करना यही इस संस्थाका मुख्य उद्देश है:-

नोटः- इस संस्थामें आजतक बाहेर गांववालोंकी आर्थिक सहायतासे १० ट्रेक्ट प्रकाशित हो चुके है.

इस संस्थाको प्रत्येक जैनका कर्तव्य है कि वह इसे तन मन धन से सहायता करे, जिससे इसके कार्यकर्ताओंका उत्साह बढे और वे संस्था के उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न करते रहें.

इस संस्थाका जीवन जैन समाज परही निर्भर है.

जिस महाशय को संस्थामें परिचय करना हो वे संस्था की नियमावली मंगा सकते है.

निवेदक.

गुलाबचंद पारख
मंत्री
श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था.

ता. २१-५-१९२९

॥ ॐ ॥

पंचकल्याणक समुच्चय।

(स्तुति और प्रातःस्मरणमंगलपाठ सहित)

आचार्य श्री शान्ति- सागरजी महाराज, छानी

संग्रहकर्ता

श्री १०५ क्षुल्लक धर्मसागरजी महाराज।

प्रकाशक:—

केशरियाप्रसाद जैन रईस जमीनदार,

महाजन टोली, नं० २, आरा (शाहाबाद)

"दिगम्बर जैन" मासिकपत्रके २५ वें वर्षके
ग्राहकोंको सातवीं भेट।

वीर सं० २४५८ आश्विन वदी १.
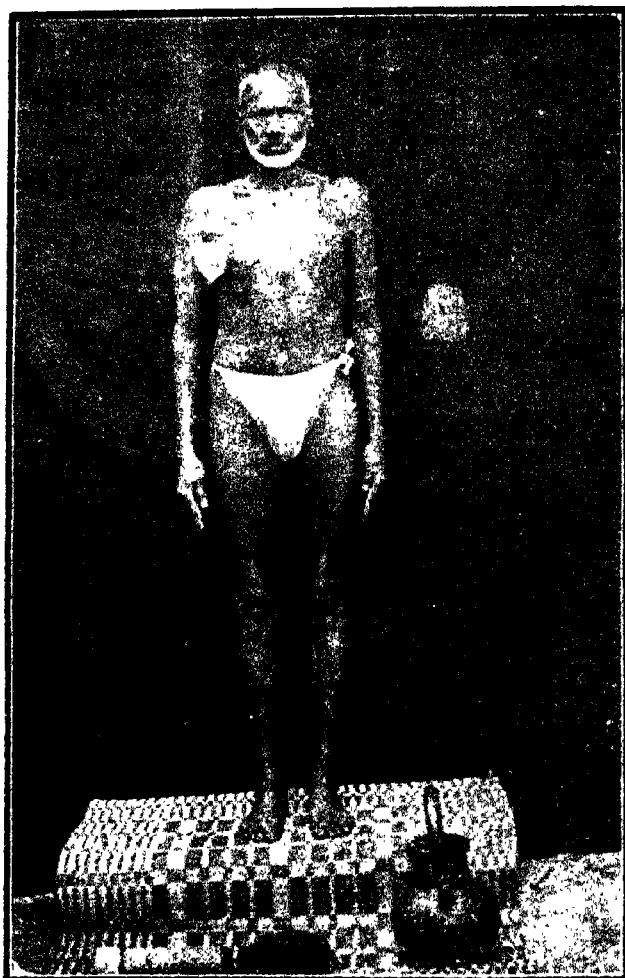
श्री १०५ क्षुल्लक श्री धर्मसागरजी महाराज ।

इस पुस्तकके संग्रहकर्ता व प्रचारक ।

भट्टारक श्री भुवनकीर्तिजी कृत-

पंचकल्याणक समुच्चय।

प्रणमूं श्री चौवीसके पंचकल्याणजी।
गर्भ जन्म तप ज्ञान और निर्वाणजी॥
ताहि समुच्चय मंगलपाठ बखानजी।
तजि सर्वार्थ पयान करे त्रय ज्ञानजी॥

त्रय ज्ञानधारी गर्भ आये,
मात सुपन जु पेखीये।
उठिके प्रभात हि पूछो पिउको,
फल तीर्थंकर लेखिये॥
लखि इन्द्र अवधी धनद पंद्रह,
मास वर्षहु रत्न सो।
छप्पन कुमारी गर्भ सोधन,
राखि माता यत्न सो॥ १॥

इह विधि उच्छव धारि इन्द्र सब सुर गये।
प्रश्नोत्तर नव मास मात पूरण भये॥
जन्म समय तब देव घंट हरि बाजियो।
इन्द्र चल्यो सतसेन गगन तब गरजियो॥

गरजियो ऐरावत चढ़िय सुर,
जन्म नगरी आइया।
इन्द्राणि माया मइय देके,
मातसे प्रभु लाइया।
जय जय करे सुरदेव नाचत,
मेरु गिरिपे ले गये।
इम सहस आठ सु हेमकलशा।
क्षीर जल स्नान भये॥२॥

करि शृंगार सु लाय मातपितु सोंपिया।
राज तिलक सुर देय धर्म ध्वज रोपिया॥
करि विवाह शुभ राजनीति सब थापिया।
अन्त वैराग्य सु पाय समस्त निवारिया॥

ममता निवारी धन्य प्रभु तुम,
आय लोकान्तिक भने।
प्रभु बार भावे भावना,
मघि इन्द्र जो आये गने।
आरूढ़ हैं प्रभु पालकीमें,
स्वजन जन समझाविया।
नमः सिद्ध कह कचलोच करिके,
तपकल्याणक पाविया ॥ ३ ॥

शैलवृक्ष धुनि त्रय ऋतुमें प्रभु तप करें।
मनपर्यय शुभ पाय भव्य जड़ता हरें॥
आर विहार करेसु निहार करे नहीं।
कर्म घातिया नाश ज्ञान केवल लहीं॥
लहि ज्ञान केवल इन्द्र जानी,
समवशरण रचाविया।
गणधर सुमुनि अरु आर्जिका,
चउदेव नर पशु आविया।
करि धर्म तत्त्व बखानमें,
कई भव्य जीव संबोधिया।

स्थुति करी इन्द्र विहारको,
गीरि शिखर योग निरोधिया ॥४॥
एक मास किय ध्यान शुक्ल मन धारियो।
प्रकृति सहीत जु अघातिय कर्म नीवारिया॥
लघुपंचाक्षर माहिं प्रभु गत सिद्ध भये।
रहे केश नख तन परमणु खिर गये॥
खिर गये जब सुर आयके,
माया मई तनु निर्मये।
चंदन प्रमुख सुकुटाग्निते,
शुभ क्रिया करि सब सुर गये।
श्री पञ्चकल्याणक महातम,
सुनत भवि सुख पाइये।
कहि भावसेन सुदत्त यश,
त्रैलोक्य मंगल गाइये।
महाराज मंगल गाइये।
अरहंतके गुण गाइये॥ ५॥

॥ सम्पूर्ण ॥

जिनेश्वर भगवाननो गंधोदक वांदवानो दोहा ।

तुम गंधोदक लेनको, क्षीरोदधि जल लाय ।
इन्द्र न्हलावे मेरु पे, चरणोंमें शिर नाय ॥१॥
सो हम शक्ती हे नहीं, तीन भुवनके राय ।
निरमल जल पद धोयकर; मस्तक लेत चढाय ॥२॥
तुम तन परशित उदकको, जो नर शीश चढाय ।
अष्ट करममें छूटकर, लोक सिखरमें जाय ॥३॥
सो निश्चय मन आनके, में लीनो प्रभु आय ।
निरमल जल पद धोयके, मस्तक लेत चढाय ॥४॥

श्लोक ।

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशकं ।
जिनगंधोदकं वंदे, कर्माष्टकविनाशकं ॥ १ ॥

दोहा ।

निर्मलसे निर्मल अती, अघनाशक सुख सीर ।
वंदूं जिन अभिषेक कृत, यह गंधोदक नीर ॥१॥

॥ समाप्त ॥

स्तुति।

(कवि भूधरदासजी कृत)

अहो ! जगतगुरु एक, सुनियो अरज हमारी।
तुम हो दीनदयाल, मैं दुखिया संसारी ॥ १ ॥
इस भव वनमें वादि, काल अनादि गमायो।
भ्रमत चहूंगति माहिं, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥ २ ॥
कर्म महारिपु जोर, एक न कान करै जी।
मन मान्यां दुख देहिं, काहूंसों नाहिं डरै जी ॥ ३ ॥
कबहूं इतर निगोद, कबहूं नर्क दिखावै।
सुरनर पशुगतिमांहि, बहुविधि नाच नचावै ॥ ४ ॥
प्रभु ! इनके परसंग, भाव भवमाहिं बुरे जी।
जे दुख देखे देव ! तुमसों नाहिं दुरे जी ॥ ५ ॥
एक जनमकी बात, कहि न सकों सुनि स्वामी।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरयामी ॥ ६ ॥
मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ॥ ७ ॥
ज्ञान महानिधि लूटि, रंक निबल करि डार्यो।
इनहीं तुम मुझ माहिं, हे जिन ! अन्तर पार्यो ॥ ८ ॥

पाप पुण्यकी दोइ, पायनि बेड़ी डारी।
तन कारागृह माहिं, मोहि दिये दुःख भारी ॥ ९ ॥

इनकौ नेक विगार, मैं कछु नाहिं कियो जी।
विनकारन जग वंद्य! बहुविधि वैर लियो जी ॥१०॥

अब आयो तुम पास, सुनि जिन सुजस तिहारो।
नीति निपुन महाराज, कीजे न्याय हमारो ॥११॥

दुष्टन देहु निकार, साधुनको रख लीजे।
विनवै भूधरदास, हे प्रभु! ढील न कीजै ॥१२॥

भूधरकृत गुरु दूसरी स्तुति।

वंदौं दिगम्बर गुरुचरन जग, तरन तारन जान।
जे भरम भारी रोग को, हैं राज वैद्य महान ॥
जिनके अनुग्रह विन कभी, नहिं कटै कर्म जंजीर।
ते साधु मेरे उर वसहु, मेरी हरहु पातक पीर ॥ १ ॥

यह तन अपावन अथिर हैं, संसार सकल असार।
ये भोग विष पकवानसे, यह भांति शोच विचार तप॥
विरचि श्रीमुनि वन वसे, सब छांडि परिग्रहभीर।
ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ २ ॥

जे कांच कंचन सम गिनहि, अरि मित्र एक स्वरूप।
निन्दा बड़ाई सारिखी, बनखण्ड शहर अनूप ॥

सुख दुःख जीवनमरनमें, नहिं खुशी नहिं दिलगीर।
ते साधु मेरे उर बसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ ३ ॥
जे बाह्य परबत वनबसैं, गिरिगुफा महल मनोग।
सिलसेज, समतासहचरी, शशिकिरनदीपक जोग॥
मृग मित्र, भोजन तप मई विज्ञान निरमल नीर।
ते साधु मेरे मन बसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ ४ ॥
सूखहिं सरोवर जलभरे, सूखहिं तरंगिनि तोय।
बाटहि बटोही ना चलैं, जहं घाम गरमी होय॥
तिहँकालमुनिवरतपतपहिं, गिरिशिखर धीर।
ते साधु मेरे उर बसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ ५ ॥
घनघोर गरजहिं घनघटा, जलपरहिं पावस काल।
चहुंओर चमकहिं बिजुरी, चलै सीरी व्याल॥
तरुहेट तिष्ठहिं तब जती, एकांत अचल शरीर।
ते साधु मेरे मन बसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ ६ ॥
जब शीतमास तुषारसों, दाहै सकल वनराय।
जब जमै पानी पोखरां, थरहरै सबकी काय॥
तब नगन निवसैं, चौहटे, अथवा नदीके तीर।
ते साधु मेरे उर बसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ ७ ॥
करजोर 'भूधर' बीनवै, कब मिलहिं वे मुनिराज।
यह आश मनकी कब फलै, मम सरहिं सगरे काज॥
संसार विषम विदेशमें, जे बिना कारण वीर।
ते साधु मेरे उर बसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ ८ ॥

॥ ॐ ॥

श्रीप्रातःस्मरण मंगलपाठ।

छप्पै छन्द।

मङ्गल ऋषभ जिनेंद्र, जैनमग प्रगट दिखावन।
मङ्गल मुनि गुरु द्वादशांग, विस्तार बनावन॥
मङ्गल वाणी जैन सकल, आताप निवारण।
मङ्गल मारग जैन स्वर्ग, शिवगतिका कारण॥
श्री सकल संघ मंगलमई, मंगलीक गुरु साधु मुनि।
जिन नाम धाम मंगल मुदा, सदा मोद मंगल निपुनि॥१॥

× × ×

मंगल प्रातहि उठे, कछुक आलस रस पागे।
शिथिल वसन अरु केश तन, सुपन निशि जागे॥
पढ़े मंत्र नवकार, तत्त्वका भेद विचारे।
उदय होय जदि भानु, सेज तज पग भू धारे॥
मल मूत्र आदि त्यागन करे, जल ग्रहे उष्ण अरु शुद्धि कर।
निज तन प्रक्षाल मंगल पढ़े, नहिं पड़े व्यर्थ जल भूमिपर॥२॥

× × ×

मंगलीक सामायिकमें समभाव लगावे।
पंचेन्द्रिय वश करे चित्तका वेग मिटावे॥
मन वच तन कर शुद्ध, हृदयमें समता धारे।
कर जिनवरसे प्रेम, सकल आताप निवारे॥
जब सामायिक पूरा करे, शुभ मंगलीक मंगल रटे।
जिनराज भजन मंगलमई, चित्त दिये पातक कटे॥ ३ ॥

मंगलीक भगवंत, सुमरि आभूषण धारे।
विविध वर्णके वस्त्र, पहन काया शृङ्गारे॥
दर्पणमें मुख देख, नैन युग अंजन दीजै।
यथाशक्ति कर प्रेम, पांच मंगल पढ़ लीजै॥
दुर्बचन झूठ बोले नहीं, नित पास रहे समता रतन।
मृदु शब्द ललित भाषे सदा, जुदा न होवे धर्म धन॥ ४॥

× × ×

मंगल तन शृङ्गार, आदिमें मंगल गावै।
मौन सहित धर प्रीति, जिन चैत्यालय ध्यावै॥
नीची दृष्टि प्रसार, भूमि सब देखत चाले।
अष्ट द्रव्य सब शुद्ध, लिये पहुंचे जिनाले॥
जब लखै ध्वजा जिन चैतकी, अधिक मोद मनमें धरे।
कर नमस्कार मंगलमई, जय जय जय मुख उच्चरे॥ ५॥

× × ×

जिन मंदिरमें जाय, हर्षयुत मंगल गावै।
हाथ जोड़ वसु अङ्ग नाय, मन मोद बढ़ावै॥
आठ द्रव्य कर शुद्ध, पूजिये श्रीजिनराई।
मंगलदायक होय मिले, सम्पति सुखदाई॥
जबलों ठहरे जिन चैनमें, संसार कार्य नहि चित धरे।
व्यभिचार, कलह, चोरी, कपट, चुगली निंदा परिहरे॥६॥

× × ×

मंगल श्रीजिनधर्म ग्रन्थ, शुभ पढ़े पढ़ावै।
गुरुमुख सुन उपदेश, मोदमय मंगल गावै॥

मंगलीक नवकार, जाप कर करे पयाना।
आवें अपने धाम, करे भोजन विधि नाना॥
निज द्वार खड़ा देखत रहै, यदि आन मिलें शुभ साधु मुनि।
मन भक्ति धार आहार दे, यह मंगलीक कारज निपुन॥७॥

× × ×

मंगलीक परवार, कुटुम्बी जन सब लीजै।
यथायोग्य थल बैठ, सकल मिल भोजन कीजै॥
मंगलीक जल पान, करत बहु आनन्द माने।
बाल युवा अरु वृद्ध, सभी मनमें हर्षाने॥
लघु करें बडनको दंडवत, मुख आशिष वृद्ध सदा कहैं।
यह कृत नित हित मंगलमई, मंगलीक मङ्गल लहैं॥ ८॥

× × ×

रोजगार शुभ करे, सदा संतोष बढ़ावें।
दंभ, लोभ, अन्याय, दगा, छल, छिद्र मिटावें॥
मिथ्या भाषण कटुक वचन, परके दुखदाई।
मुखमें कभी न कहै, यही है गुण चतुराई॥
निज सत्यशीलकी घोषणा, फैलावे संसारमें।
यह मंगलदायक कार्य है, प्रचुर लाभ व्यापारमें॥ ९॥

× × ×

मधु, मदिरा, सण लवण, चाम, हड्डी, कस्तूरी।
गऊरोचन, गजदन्त, चमर, सीपी नख छूरी॥
सज्जी, नील, कर्पूर, लाख, घृत, अन्न पुराणा।
लोहा, पीतल, आदि धातु, गुड़, घुणा किराणा॥

दधि, हींग, मुरब्बा, फूलका, लेन देन नहिं कीजिये ।
नित राजनीति हिय धारके, मंगलीक पद लीजिये ॥१०॥

× × ×

बहु आरम्भ निवार परिश्रम शक्ति समाना ।
ज्यों भोजनमें लवण वस्तुमें नफा उठाना ॥
विनय बड़नके साथ, प्रीत सरखा संगनीकी ।
दया करे लघु पुत्र पौत्र, नौकर सबहीं की ॥
निर्विघ्न शुद्ध आजीविका, मन हर्ष धार करता रहै ।
प्रभु वीतराग मंगलमई, तिन प्रसाद सब सुख लहै ॥११॥

× × ×

दुखमें धीरज धार, दुष्टका तज परिवारा ।
निज वनिता संतोष, त्याग दीजे परदारा ॥
गई वस्तुका शोक, मूढ़से प्रीति न कीजे ।
बल विचार बिन युद्ध, निबलको दुख नहिं दीजे ॥
गुरुदेव नृप कवि वैद्य घर, खाली हाथ न जाइये ।
फल बिना अमंगल जानके, कर मंगलीक फल लाइये ॥१२॥

× × ×

याम युगल मध्याह्न समय, आवत सुख माने ।
प्रात समय अनुसार, फेर सामायिक ठाने ॥
निंदनीक निजकर्म, तिन्हें निंदे बहुवारी ।
इन्द्री दमन कर रटे जाप, आतम हितकारी ॥
संसार भ्रमण भयभीत है, बारबार जामन मरण ।
जिनराज चरण सेवा भली, सिद्धि सदन संकट हरण ॥१३॥

यथाशक्ति कंगाल, दीनपर करुणा कीजै।
भोजन वस्त्र अनेक रोग, लख औषधि दीजै॥
अभय दान सन्मान, अन्यकी विपति मिटावै।
क्षमा करे अपराध, दयायुत यश प्रगटावै॥
दुर्भिक्ष मरी जहां संचरे, मन खोल तहां धन व्यय करे।
यह मंगल कारज नित किये, अटल लक्ष्मी संचरे॥१४॥

× × ×

चार घड़ी दिन शेष रहे, फिर भोजन पावै।
प्रात समय अनुसार, सकल परिवार बुलावै॥
सब मिल भोजन करें, क्षुधा आताप निवारें।
युग पट शोधा नीर, पान कर समता धारें॥
नित भक्ष्य अभक्ष्य विचारके, निर्मल भोजन खाइये।
फिर मंगलीक नवकार जप, मंगल मन हर्षाइये॥१५॥

× × ×

सन्ध्या समय निहार, हर्ष जिन मंदिर जावै।
देखन श्री जगदीश, मोह धर मंगल गावै॥
बारबार जिनराजदेवकी थुति उच्चारे।
रोम रोम हुलसाय, अंग आनन्द अपारे॥
त्रैलोकनाथके चरणपर, भाव सहित शिर नायके।
कर जोर करे इम वीनती, निर्मल भाव बनायके॥ १६॥

× × ×

जय जय श्री जिनराज, देव जग मंगलकारी।
भव समुद्रसे पार, उतारो नाव हमारी॥

जीवन है दिन चार, जगत सुपनेकी माया।
तुम हो दीन दयालु, नाम सुन सरणे आया॥
प्रभु लख चौरासी योनिमें, जामण मरण अनेक विधि।
मुझ करत फिरत बहु दिन गये, उपजी नांहि विवेक निधि॥१७

× × ×

पूर्व पुण्य परताप, गोत्र कुल उत्तम पाया।
मनुष्य जन्म अरु वीतराग, का धर्म सुहाया॥
मिटा तिमिर अज्ञान, हृदयमें हुआ उजाला।
सतगुरु भये दयालु, मिटाया गड़बड़ झाला॥
श्रीवीतराग भगवानका, नैनन लखा समव-सरण।
घटमें रवि ज्ञान प्रकाशके, शुद्ध किया अन्तःकरण॥१८॥

× × ×

मंगल थुति उच्चार, आरती करत सुहावे।
झालर ढोल मृदंग, वीन डफ चंग बजावे॥
दुंदुभि भेर मुचंग, झांझ नोबत सहनाई।
अलगोजा बांसुरी नफीरी, ध्वनि सुखदाई॥
कर जोर मधुर मुस्कान युत, पुलक हर्ष पग धारहीं।
जगदीश्वरकी मंगलमई, मंगल आरति वारहीं॥ १९ ॥

× × ×

मंगल गाय बजाय, आरती कीजै पूरी।
हाथ जोड़ शिर नाय, खड़ा जिनराज हजूरी॥
मिष्ट वचन युत प्रेम, किसीको लगे न फीके।
मन्त्र जपे नवकार, शतक ऊपर वसु नीके (१०८)॥

श्री तीर्थंकर चौबीसके, नाम महा मंगलमई।
इक्कीस बार पढ़ लीजिये, सेवा बहुविधि होगई ॥ २० ॥

× × ×

मंगल गिर कैलाश ऋषभ, जिन मोक्ष पधारे।
मंगलीक संमेदशिखर, जिन बीस सिधारे॥
चंपापुर मंदार शैल, मंगल सुखदाई।
वासपूज्य भगवान, पंच कल्याणक भाई॥
गिरनार शिषर मंगलमई, नेमीश्वर शिव तिय वरी।
श्री वर्द्धमान निर्वाण सर, पावापुर आनन्दकरी ॥ २१ ॥

× × ×

मंगल श्रीगजपन्थ, सिद्धवरकूट तारवर।
शत्रुंजय गिर चूल, द्रोणगिर गढ़ सोनागिर॥
बडवानी गिरकुंथ, मैंढागिर तुंग उतुंगा।
कोड़ शिला पावागिर, तट रेवातिन गंगा॥
मथुरा काकंदी गजपुरी, कौसांबी मिथिला रत्नपुर।
सावस्थि विनीता चन्द्रपुर, भद्रलपुर आनंद प्रचुर ॥२१॥

× × ×

मंगल चम्पापुरी, कम्पिला मंगल भारी।
राजग्रही शुभ धाम, पर्वागिर मंगलकारी॥
शोरीपुर विख्यात, कटेश्वर पटना पाना।
कुंडलपुर गुण खान, सरोवर मंगल माना॥
यह सकल भोमि मंगल भरी, वन उपवन नदी तड़ाग थल।
जहां इन्द्रादिक जिनराजके, कल्याणक कीने प्रबल ॥२३॥

इहँविधि श्रीजिनराज, देवगुण मंगल गाके ।
सन्ध्याकी सामायिक कीजै, ध्यान लगाके ॥
पूरण होय समाधि, मंत्र नवकार चितारे ।
चार घड़ी निशि गये, सैनकी विधी विचारे ॥
पग शैय्यापर धरती समय, निज धन्य भाग भयो जानिये ।
जिनराज कृपासे आज दिन, शुभ बीता इम मानिये ॥२४॥

× × ×

आदि ऋषभ महावीर सहित, चौवीस जिनेश्वर ।
मंगलमय सुख मूल, नमस्कार नमत सुरेश्वर ॥
मंगलीक यह पाठ, भाव धर पढ़ें पढ़ावें ।
द्वादश द्वादश अर्द्ध घड़ी, प्रातहि उठ गावें ॥
ऋषि अजमुख नारायण शशी,
संवत् (१९४७) ज्येष्ठ धवल चरण ।
कवि 'जियालाल' भृगु पंचमी,
रचो पाठ मंगल करण ॥ २५ ॥

इति श्री प्रातःस्मरण मंगलपाठ सम्पूर्णम् ।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस-सूरत
मूलचन्द किसनदास कापड़िया ने
मुद्रित किया।
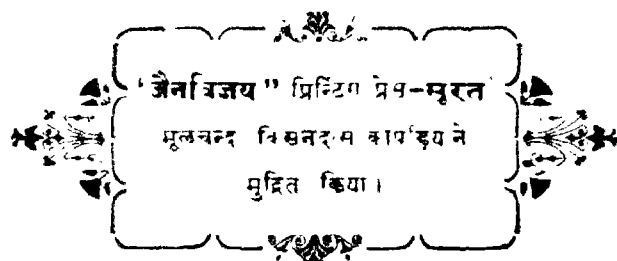
निवेदन ।

श्री १०५ क्षुल्लक धर्मसागरजी महाराज-इस वर्षमें श्री सम्मेदशिखरजी आदिकी यात्रार्थ पधारे थे तब लौटते हुए आरा ठहरे थे उस समय एक दिन शास्त्रसभामें आपने एक अप्रगट 'पंचकल्याणक समुच्चय' हमें बताया और उसके प्रकट करनेकी सूचना की तो उसी समय इसके लिये ३९॥) की निम्नलिखित सहायता बहिनों द्वारा मिली थी इससे वह पुस्तक स्तुति व प्रातःस्मरणमंगलपाठ सहित विना मूल्य प्रगट की जाती है। आशा है हरएक पाठक इसको मुखपाठ करके लाभ उठावेंगे।

सहायकोंकी सूची—

५) धर्मपत्नी बा० गुलींद्रप्रसादजी	आरा
४) द्रौपदीदेवी	,,
५) धर्मपत्नी वकील साहब	,,
५) धर्मपत्नी बंगाली बाबू	,,
४) राधिका बीबी	,,
५) जगमग बीबी	,,
॥) रामजीकी माता	,,
५) कुनकुनकी माता	,,
५) धर्मपत्नी मंदिलदासजी	,,
१) तोतामनी	,,

३९॥) सहायकोंको अनेकश. धन्यवाद है।

प्रकाशक ।

श्री रत्न जैन ग्रंथ माला नं. ९

॥ श्री महावीराय नमः ॥

मराठी जैन पद्यावली

प्रकाशक

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था

सदर बाजार नागपूर.

ता. १ माहे फेब्रुआरी

१९२९

सुवर्णनामावली

स्तंभः-मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराज

आजीवन सदस्य (Life Members)

१ श्री हीरचंदजी नानुलालजी पारख

२ श्री मानकचंदजी सेरमलजी सुराना

सदर बाजार नागपूर.

आश्रयदाता

१ श्री नंदरामजी चांदमलजी बोहरा

मु. पीपला जि. अहमदनगर

२ श्री लालचंदजी रतनचंदजी भटेवडा

मु. राहु जि. पुणें

श्रीरत्न जैन ग्रंथमाला नं. ९

॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

मराठी जैन पद्यावली
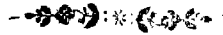
श्रीयुत नथमलजी चांदमलजी बोगावत
मु. पांढरकवडा जि. यवतमाळ
यांच्या आश्रयानें

प्रकाशक
श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था
सदर बाजार नागपूर.

प्रथमावृत्ति १०००	वीरसंवत २४५५ सन १९२९	मूल्य ✓= १५ प्रति १रु. शेकडा ६रु.

धन्यवाद.

———:०:——

मुक्काम पांढरकवडा जि. यवतमाळ येथील श्रीयुत नथमलजी चांदमलजी बोगावत यांनीं आर्थिक सहायता देऊन या पुस्तकास प्रकाशित करून दिले ह्मणून त्या धर्म प्रेमी आणि ज्ञानप्रचारक सज्जनाचा ही संस्था अंतःकरणपूर्वक धन्यवाद देत असतां आभार मानीत आहे.

मंत्री

प्रस्तावना

प्रिय पाठकांनो ! आपल्या करकमली " **श्री जैनधर्म प्रसारक संस्थेचे** " जैन पद्यावली नामक नवें ट्रेक्ट ठेवण्याचा सुप्रसंग आला, याबद्दल आह्मांस अत्यंत हर्ष होत आहे. या पद्यावलींतील बहुतेक पदें जिनस्तुतिपर असून विद्यार्थ्यांनीं अध्ययन करण्यायोग्य आहेत. महाराष्ट्रांतील सर्व जैन शाळेतून ही पद्यावली शाळेच्या धार्मिक अभ्यासक्रमांत ठेवण्यास जैनधर्म प्रवर्तक चोवीस तीर्थंकर, वीस विहरमान, अकरा गणधर वगैरेंची सहजासहजीं ओळख होईल व बालपणींच विद्यार्थ्यांच्या कोमळ मनावर जैनधर्माचीं मुख्य तत्वें बिंबतील. त्या प्रमाणें मराठीं भाषेमध्यें जिनगुण वर्णनपर स्तवनांचा पूर्ण अभ्यास आहे. तेव्हां महाराष्ट्रांतील जैनबंधूनीं देखील हीं पदें कंठस्थ केल्यास बरेंच धर्मज्ञान प्राप्त होईल, असा आमचा पूर्ण विश्वास आहे. ह्या पद्यावलीची प्रथमावृत्ति पुणेकर विद्याप्रेमी **श्रीमान भिकमदासजी किसनदासजी** यांनीं **श्रीतीलोक जैन पाठशाळा पाथर्डीच्या** प्रीत्यर्थ छापिली होती. त्या पद्यावलींत मराठी आणि हिंदी मिळून २५ पद्यें होतीं परंतु प्रथमावृत्ति समाप्त झाल्यामुळें " **श्री तीलोक जैन पाठशाळा पाथर्डी** " च्या संचालकाकडून द्वितीयावृत्ति काढण्याची आह्मास परवानगी मिळाली ह्मणून आह्मीं त्या पद्यावलीचे मराठी आणि हिंदी असे दोन विभाग केले आहेत कारण कीं हिंदी लोकांना मराठी भाषेतील पद्यांचा उपयोग होत नाहीं त्याच प्रमाणें मराठी लोकांनाही हिंदी पद्यापासून पाहिजे तितका उपयोग होत नाहीं.

ह्या मराठी पद्यावलींत सर्व मिळून २५ पद्यें आहेत, त्यांपकीं आधींची सात पद्यें **कविराज धर्मनिष्ठ श्रीयुत अनंत आबाजी बोपलकर जैन** मास्तर यांनीं तयार केलेलीं आहेत. विक्रम सवंत १९७० वीर संवत २४४८ या वर्षीं परोपकारी **श्री श्री १००८ श्री रत्न-ऋषिजी महाराज** ठाणे ३ यांचा चातुर्मास करंव मुक्कामीं झाला होता. त्या समयीं पहिलें पद्य तयार करून दिलें होतें, आणि बाकीचीं ६ पद्यें नंतर मिळालीं. करमाकर सुश्रावक **चंदोबा गुजराथी** यानीं ५ पद्यें तयार केलेली आहेत, आणि पांच पद्यें **श्री तिलोक जैन पाठ-शाळेचे हेडमास्तर श्री गोविंद सिताराम वगाडे यांनीं** रचि-लेलीं आहेत व बाकीचीं आठ पद्यें निरनिराळया कवींनीं बनविलेलीं आहेत. या पद्यावलींतील पद्यांना बनविणाऱ्या कवींनीं सरस, मार्मिक आणि प्रासादिक पद्यें बनविलीं म्हणून आम्हीं त्यांचे आभार मानीत आहोत.

हें पुस्तक लहान असतांनाही फारच उपयोगी आहे, असें सांगितल्यानें कांहीं अतिशयोक्ति होणार नाहीं.

शेवटीं अंगीकृत कार्य करण्यास सामर्थ्य देवो. अशी श्री शांति प्रभुच्या चरणी विनम्रपणें प्रार्थना करून हा छोटीशी प्रस्तावना पुरी करतो.

मंत्री.

❀ ॥ श्री महावीराय नमः ॥ ❀

कविराज श्रीयुत अनंत आबाजी बापलकर कृत-सप्त पदें

चोवीस तीर्थंकर स्तुती

चाल:- (हा थांबा राव जरासे)

❀ १ श्री ऋषभदेवजी. ❀

आदीश्वर जिनवर पहिले । तीर्थंकर भारतिं झाले ॥
कथियला ज्यें जिनधर्म । नमुं त्यांस हराया कर्म ॥१॥

❀ २ श्री अजित नाथजी ❀

नमुं अजित जितेंद्रिय जगतीं । इंद्रादि सुर जया नमिती ॥
मज इंद्रिय-गण नावरती । तव कृपा असो मजवरती ॥२॥

❀ ३ श्री संभव नाथजी. ❀

संभवा ! भवा मम वारीं । करुनिया कृपा मज तारीं ॥
भव दवीं पोळुनी गेलों । म्हणुनिया शरण तुज आलों ॥३॥

❀ ४ श्री अभिनंदनजी. ❀

अभिनंदन ! वंदन तूंतें । करि जोडुनि कर-युगलातें ॥
भ्रमलों मी बहु भवि फिरतां । तुजवीण कोण मज त्राता ॥४॥

❀ ५ श्री सुमति नाथजी ❀

भो सुमति जिना ? दे सुमति । सत्वरीं हरीं मम कुमती ॥
मिथ्यात्व तव कृपें जावो । सम्यक्त्व प्राप्त मज होवो ॥ ५ ॥

❀ ६ श्री पद्मप्रभुजी. ❀

हे पद्म प्रभ जिन देवा । निशिदिनीं घडो तव सेवा ।
तव बोध पद्म-सुम बरवें । मम हृत्सरिं विकसित व्हावें ॥६॥

❀ ७ श्री सुपार्श्वनाथजी. ❀

भो सुपार्श्व दीनदयाला । मजवरी करीं करुणेला ॥
बुडतों मी या भवडोहीं । सत्वर मज तारक होई ॥७॥

❀ ८ श्री चंद्रप्रभजी. ❀

चंद्रप्रभ चंद्र समान। भवदवांत शीतल जाण ॥
तव धर्म चंद्रिका जगतीं। दे उज्वल यश सुख शांति ॥ ८ ॥

❀ ९ श्री सुविधिनाथजी. ❀

पुष्प दंत सुविधि जिनेशा। भो वंदन तुज परमेशा ॥
मज कर्म छळित अनिवार! सत्वरी तयांस निवार ॥९॥

❀ १० श्री शीतलनाथजी. ❀

जिन शीतल! शीत निवारी। भव दावानलिं सुखकारी ॥
संताप हरी जगनाथा। त्वत्पदीं ठेवितों माथा ॥१०॥

❀ ११ श्री श्रेयांस नाथजी. ❀

श्रेयांस! सुजिनावतंसा। मुनि-जन-मन मानस-हंसा ॥
तत्कथित दयामय धर्म। देवो जनि सकला शर्म ॥११॥

❀ १२ श्री वासुपूज्यजी. ❀

वासुपूज्य! सकला पूज्य। जगि यदीय धर्म साम्राज्य ॥
सुर-नर-मुनि नमिति जयाला। शरण वा जाई क्षणि त्याला ॥१२॥

❀ १३ श्री विमल नाथजी. ❀

हे विमल बोध तव विमला। सत्वरीं हरी दुर्मतिला ॥
मन-वचन-काय-संयोग। मज घडो शुद्ध हा योग ॥१३॥

❀ १४ श्री अनंत नाथजी. ❀

जिन अनंत! ज्ञानानंता। बल अनंत वीर्यानंता ॥
भो सिद्ध दर्शनानंता। उद्धारक दीनानंता ॥१४॥

❀ १५ श्रीधर्म नाथजी. ❀

हे धर्मनाथ! धर्मात्मा। उद्धरि हा अधम ममात्मा ॥
तव धर्मचक्र गर्जतसे। अनि अधर्म-पथ वर्जितसे ॥१५॥

❀ १६ श्री शांतिनाथजी. ❀

शांतिनाथ ! अघ करि शांत। आणी न कवण तव अंत ॥
मज कषाय छळिती स्वांतिं। हरुनि त्या देई आणि शान्ति ॥ १६॥

❀ १७ श्री कुंथुनाथजी. ❀

हे कुंथुनाथ ! जिनराया। पदनत दासा तारा या ॥
तव गुण समूह मज देई। जो सत्वर तारक होई ॥१७॥

❀ १८ श्री अरनाथजी. ❀

अरनाथ ! अरी कर्मांचा। संस्थापक जिन धर्माचा ॥
मी शरण असे तव पायीं। दुर्गति मम विलया नेई ॥१८॥

❀ १९ श्री मल्लिनाथजी. ❀

मल्लिनाथ ! मल्लानंगा। हरि त्वरित तयाचा संगा ॥
असिधार ब्रह्मचर्यातें। पाळुनी वरिसि मोक्षातें ॥१९॥

❀ २० श्री मुनिसुव्रतजी ❀

मुनिसुव्रत ! मुनिव्रत जगतीं। धारुनि हरिशी भवभीती ॥
तव कृपें प्राप्त होवोत। दर्शन ज्ञान-सद्वृत्त ॥२०॥

❀ २१ श्री नमिनाथजी. ❀

नमिनाथ ? पदा मी नमितों। मन शुद्ध करुनिया ध्यातों ॥
भवनीरधि अनंत काळीं। तुजवीण कोण ! मज वाली ॥२१॥

❀ २२ श्री अरिष्ट नेमिजी. ❀

नेमीश्वर यादव वंशीं। तप करुनि कर्म विध्वंसी ॥
मंगलशा विवाह काळीं। निर्वृत्तिवधू परिणियली ॥२२॥

❀ २३ श्री पार्श्वनाथजी. ❀

श्री पार्श्वनाथ ! ध्यानरता। तव प्रखर-तपो-बल-सत्ता ॥
उपसर्ग कमठ दे भारी। धरणेंद्र पाविनी वारी ॥२३॥

❀ २४ श्रीमहावीरस्वामीजी. ❀

सिद्धार्थ सुत महावीरा । । जिनधर्म प्रसारक धीरा ॥
सर्वांस अभय दातारा । मज पार करा भवतीरा ॥२४॥
चोवीसही जिननामाला । वाक्सुमनीं गुंफुनी माला
अर्पितों धर्म -बंधूला । कवि अनंत नमुनि जिनाला ॥२५॥
चोवीस शत चाळिस अष्ट । शक वीर जिनाचा श्रेष्ठ ॥
हो कळंब चातुर्मास । मुनि-रत्न ऋषि त्रय वास ॥२६॥
भाद्रपद कृष्ण दशमीशीं । नमि अनंत मुनि चरणांशीं ॥
तत्करीं नराझ देई । जिन नाम सुमनमाला ही ॥२७॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य २ रें

❀ वीस विहरमान स्तुति ❀

विहरमान जिननाथ । वंदूं वीस मुनि ॥ धृ० ॥
प्रथम श्री सीमधरस्वामी । युग्मंधर जिन शान्त ॥ वं० ॥१॥
तृतिय बाहुजी सुबाहु चौथे । पंचम स्वामी सुजात ॥ वं० ॥ २ ॥
षष्ठ स्वयंप्रभ ऋषभाननजी । सप्तम जिन विख्यात ॥ वं० ॥३॥
अनंत वीर्यजी अष्टम जिनवर । नवम सुरप्रभु तात ॥ वं० ॥४॥
दशम विशालजी वज्रधरजीते । एकादश गणितात ॥ वं० ॥५॥
द्वादश चंद्रानन तेरावें । चंद्रबाहु वदतात ॥ वं० ॥६॥
भुजग स्वामी जिन चौदावें । ईश्वर पंच दशांत ॥ वं० ॥७॥
षोडश नेमप्रभु सतरावे । वीरसेन जगतात ॥ वं० ॥८॥
अठरावें जिन महाभद्रजी । तारण तरण जगांत ॥ वं० ॥९॥
देवयश जिन एकोणिसावें । यश ज्याचें जन गात ॥ वं० ॥१०॥
अजितवीर्यजी अंतिम जिनवर । सुरवर ज्या नमितात ॥ वं० ॥११॥
महाविदेही सर्व विहरूनी । धर्मोन्नति करितात ॥ वं० ॥१२॥
दासानंता तीर्थपती हे । तारक सत्य भवांत ॥ वं० ॥१३
साहे चोवीस शत वीर शकीं । पर्यूषण पर्वांत ॥ वं० ॥१४॥ इति॥

❀ ❀ ❀

पद्य ३ रें

❀ अकरा गणधरांची स्तुति ❀

(चाल-

एकादश गणधर नमु साचे ॥ अनुयायी जे वीरजिनाचे ॥ ध्रु० ॥
प्रथम इंद्रभूति अग्निभूति द्वयावायु भूति त्रय हरक भवाचे ॥प॥१॥
चतुर्थ विगतविभूति पंचम । स्वामी सुधर्मा नाम जयाचे ॥प ॥२।
षष्ठम मंडी पुत्रजी सप्तम । मौर्यपुत्र अरि खल कर्माचे ॥ प. ॥३।
अष्टम अकंपित नवम अचलजी । मेतारज धर दश
धर्माचे ॥ प. ॥ ४ ॥ श्रीप्रभास जी अंतिम गणधर । सर्वही
धारक जिन तत्त्वाचे ॥ प. ॥ ५ ॥ ब्रह्म कुलोद्भव मद
त्यागुनिया । धारक होती जिनपंथाचे ॥ प ॥६॥ शत चौंतालिस
सघ जयांच्या । करित निरमूलन निज कर्माचे ॥ प ॥ ७ ॥
दासानंत ह्मणे भव्या ! करि । गणधर नामोच्चारण वाचे ॥ प.॥८॥

❀ ❀ ❀

पद्य ४ थें

❀ सोळा सती स्तुति. ❀

चाल - (हरि नारायण जगतात)

सती षोडश वंद्य जगांत , नमुं त्या त्रिकाल समर्था ॥ ध्रु० ॥
नमु ब्राह्मी चंदनबाला । सुंदरी शिवादेवीला । चेलनाजी श्रेणिक
महिला ॥ नमुं ॥ १ ॥ द्रौपदी मृगावती सीता । कौशल्या रघुवर
माता ॥ राजिमती नेमिकान्ता ॥ नमुं ॥ २ ॥ सुलसाजि
सुभद्रा कुंती । सती प्रभावती दमयंती ॥ पद्मावती स्मरुनी
चित्तीं ॥ नमुं ॥ ३ ॥ सोळा सती सुरनर पुजिती । त्रिजगां
वंद्य ज्या होती ॥ जिनधर्म प्रकाश करिती ॥ नमुं ॥ ४ ॥
नमि दासानंत सतींतें । जोडुनिया करयुगलातें ॥ हा भवसागर-
तरण्यातें ॥ नमुं ॥ ५ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य ५ वें

❀ श्री महावीर स्तुति. ❀

चालः-- (पापोंसे मुझे छुडादोरे.)

ध्याइ मना बा ! निशदिनी तूं कर्मारी महावीर ॥ ध्रु० ॥
करुणेचा केवळ सिंधु । जो दीन जनांचा बंधु ॥ उद्धारक हर भवबंध जनीं ॥ क० ॥ १ ॥ जो अजरामर पद धारी । निज वचनें सकला तारी । दे अभयदान जीवा सकला ॥ क० । २ ॥ नच तारक त्याविण कोणी । दासानंता त्रय भुवनीं । हें तत्त्व सत्य जाणुनी मना ! भज गा तूं महावीर ॥ ध्याई० ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य ६ वें

❀ श्री जिन स्तुति. ❀

चालः (सांवरिया मन भायोरी)

भो मद्दया! दीन दासा या तारी जिना ॥ ध्रु० ॥ लक्ष चौऱ्यांशी फेरे फिरतां । जनन मरणीं बहुशि भलों । तारी जिना ॥ भो ॥ १ ॥ कर्म-खलानें मोहित केलें । सतत विषयीं रमें मन हें । तारी जिना ॥ भो ॥ २ ॥ दासानंता तुज विण त्राता । दिसत जगतीं नच सारी या तारी जिना ॥ भो ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य ७ वें

❀ शार्दूल विक्रीडित वृत्त ❀

स्वाति श्री जिनपादसेवक जनीं , सद्बोध चिंतामणि ।
रत्नानंद अमोलखादि-सुगुणि , षण्मूर्ति धर्माग्रणी ॥
काया मानस वाणि शुद्ध करुनी , त्रैकाल त्या ध्याउनी ।
दासानंत तिखुत्त पाठ वदुनी , वंदीतसे सन्मुनी ॥

२

जे रत्नत्रयिं शोभती गुणनिधी, रत्नाकराच्या परी ।
ज्यांच्या देहिं सदा मुदे विहरते , रत्नप्रभा गोजिरी ॥
विद्याप्रेमि सुरत्न जे मुनिगणीं , सद्बोध देती जना ।
ऐशा रत्न मुनींद्र पादकमलीं , भावें करूं वंदना ॥

३

काव्यालंकृत संयमी शुभगुणी , कर्मतृणा पावक ।
ज्ञानाचा उदधी अमोल गुणधी , बोधीतसे श्रावक ॥
यद्वाणी सु-रसाळ दिव्य सुखवी , संपूर्ण श्रोते जना ।
दासानंन तया अमोलखपदीं , भावें करी वंदना ॥

४

आनंद जिनधर्म पालक जया , आनंद काव्यामूर्ती ।
आनंदे त्रयरत्न धारण करी , शेवी मुदे भारती ॥
आनंदे गुरुपाद सेवित सदा , आनंदवी यद्गिरा ।
दासानंन मुदे त्रिवार नमि त्या , आनंद योगीश्वरा ॥

५

काया क्लेश तपास नित्य करिती , वैयावृतादि क्रिया ।
माता भारती सेविती सकलही , रत्नत्रयाधारक ॥
सम्यक्त्वी त्रय उत्तमादिक मुनी , सच्छील वंदूनिया ।
दासानंन सदा च हा रुजिन मनीं , केवीं घडे सार्थक ॥

❀ ❀ ❀

पद्य ८ वें.

❀ चालः- (आनंदाचा कंद) ❀

धन्य धन्य श्री महावीर जिन क्षत्रियवंशीं जन्मला ॥ध्रु०॥ सत्यासाठीं तो जगजेठी, मानव लोकीं अवतरला ॥ सन्मार्गानें सद् इच्छेनें केवल ज्ञाना पावला ॥ धन्य॥ १ ॥ कर्म-मार्ग हा, सांडुनि सारा, देइ ज्ञाना थारा ॥ चैतन्याचा, सुभाग्याचा' मोक्षमार्गी रंगला

॥ धन्य० ॥ २ ॥ सुरवर सारे, नमिती तुज रे, आह्मीं नमुं कीं प्रेम भरें ॥ आनंदाचा सागर साचा आनंद देई तूं सकला ॥ धन्य ॥ ३ ॥

❀ ❀ ❀

पद्य ९ वें

चालः- (गुरुदत्त दिगंबर)

गुरुराज दयाघन मजला, मति देवो या स्तवनाला ॥ ध्रु० ॥
श्री अरिहंता सिद्धाचार्यां, उपाध्याय साधूला ॥ जिन वाणीशीं नमन करूनि करि, देहार्पण सकला ॥ गुरु ॥ १ ॥ माधवात्मज स्तवुनि मागतो द्यावें सद् बुद्धीला ॥ सपद्य रत्नीं साह्य करूनि न्यावे दुरित लयाला ॥ गुरु ॥ २ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १० वें.

देव जिनेश्वर तो परमेश्वर, त्याशीं माझें नमन असे ॥
प्रथम ध्यान मी आधीं करितों शांति दयाही जया वसे ॥ ध्रु० ॥
अनंत दर्शन ज्ञान जयाला, अनंत सुखही वीर्य तसें ॥
वीतराग त्या ह्मणती सर्वही, राग द्वेष ज्या जवळा नसे ॥ देव ॥ १ ॥
नामस्मरणीं भव भय भीति, चिंतया सर्वही जात असे ॥ ईश-चरणावरि ठेवुनि माथा, बालदास हा विनवीतसे ॥ देव ॥ २ ॥ इति

❀ ❀ ❀

पद्य ११ वें.

चालः- (रघुकुल मंडल जो)

मजवरी जिनेशा ! ठेवी कृपा कैवारी ॥ ध्रु० ॥ नच सौख्य मजसी संसारीं । गांजिती कर्म खल वारी । तारीं दयाळा, कृपाळा, तूं सत्वरी ॥ १ ॥ भवभवीं फिरे मी कुमती । परि जन्म मरण नच सुटती । दावी सुपंथा, कुपंथा, निवारीं ॥ मज० ॥ २ ॥ शुभभाव निरंतर प्रार्थी अघहरा । देइ त्या सुमती । हे जिनेशा, तवाशा मदंतरीं ॥ मज० ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १२ वें.

चालः- (या भरत भूमिचे आर्यां)

सोडुनी देव अरिहंता कुदेव कशाला भजतां ॥ ध्रु० ॥
अरिहंत सुखाचा दाता, मोक्षाचा मार्ग दाविता ॥ कुदेव देव ते पुजुनि पाताल नरकीं जाऊनी, बहु दुःख तुला त्या स्थानीं ॥ चाल ॥ अजुनी तरी उमजा, स्याद्वाद समजा, सन्मति भजा ॥ सत्वरी बापा, चुकतील चौऱ्यांशीं खेपा ॥ सोडुनि ॥ १ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १३ वें.

चालः- (कशी मूर्ति अमूल्य ही)

कां दंग होऊनि या संसारीं रंग बहु करिसी ॥ ध्रु० ॥ माझे माझे सर्व ह्मणूनी व्यर्थ नरा फससी ॥ धरि चित्तीं, जिन भक्ति करि विचार बरवा अजुनि, तरी बा ! मौन कर्म धरिसी ॥ कां ॥ १ ॥
माय बाप सुत दारा भगिनी बंधु वर्ग तुजला ॥ कुपंथीं भ्रमवीती; वरि वरि दाऊनि लटकी माया हरिति पुण्यराशी ॥ कां ॥२॥ जोवरी पैसा तोवरी वैसा, या या या ह्मणती ॥ अशी प्रीती, या जगतीं; हा मोह पसारा व्यर्थचि सारा कारण दुर्गतिशी ॥ कां ॥ ३ ॥ स्त्री विषयीं तूं लोलुप बनुनी, विष खचित खाशी ॥ ही नारी, तुज वैरी, दाविल तुजसी क्षण भर सुख मग नेते चौऱ्यांशी ॥ कां ॥ ३ ॥
सहज तुला नरजन्म लाभला, घेई चीज करुनी ॥ भव विपिनीं, दिनरजनीं; जिनदास ह्या सुभराव वदे जा शरण जिनेशाशीं ॥ कां ॥ ५ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १४ वें.

चालः- (चंद्रकांत राजाची)

शांति जिनेशा ! भो परमेशा ! ज्ञानक्रिया धारी ॥
कर जोडुनिया आह्मी प्रार्थितो, बालांना तारी ॥ ध्रु. ॥
धर्माधर्मी बंधु मिळुनिया, गेलो वेळाल ॥

धर्म चर्चा विषयीं आमुचा, खेळ सुरु झाला ॥ शां. ॥ १ ॥
निमुटपणें परतोनी मागें, आलों स्थानाला ॥
आईबापांतें वदतों, येऊनी शिकण्या आह्मांला ॥ शां. ॥ २ ॥
मात तात ती याचक स्थिति, दर्शविति आह्मांला ॥
बाळा! वेळेवर खाया मिळेना, पैसा न ज्ञानाला ॥ शां. ॥ ३ ॥
सुदैवानें पंचम काळीं, जैन धर्म मिळला ॥
अज्ञानामुळें समजेना ह्मणुनी । तेजरहित झाला ॥ शां. ॥ ४ ॥
धनिक बंधुनों ! हीच विनंती, ज्ञानदान द्यावें ॥
आज्ञानांधकूपा मधुनी, आह्मा काढावें ॥ शां. ॥ ५ ॥
मिथ्यात्व शत्रुनें आज्ञानामुळं, आत्मा जर्जरिलें ॥
अशा दुःसह संकट काळीं, त्यानें न पाडिलें ॥ शां. ॥ ६ ॥
गुरु आमुचे रत्नऋषीजी, परोपकारी असें ॥
दीन दशा ही पाहुनि आमुची, शाळा स्थापितसे ॥ शां. ॥ ७ ॥
तिलोक जैन हें नांव शोभतें, आमुच्या शाळेला ॥
तेथें आह्मी विद्या शिकुनि, मिळवूं सौख्याला ॥ शां ॥ ८ ॥
बंधुंनो ! आमुची हीच विनंती, स्मरुनि दानाला ॥
द्रव्यद्वारें मदत करावी, आमुच्या संस्थेला ॥ शां. ॥ ९ ॥
संस्था स्थापक, पालक चालक, धर्म बंधुला ॥
सुखी ठेवी हीच प्रार्थना ! शांति प्रभो ! तुजला ॥ शां. ॥ इति ॥१०॥

❀ ❀ ❀

पद्य १५ वें.

चालः- (दृढ धर मनि हरि पायीं)

दृढ धर मति जिन चरणीं शरण जा ॥ ध्रु. व्यर्थ भ्रमामध्यें पडुनि सख्यारे, स्वहित कसें बुडविसी? शरण जा ॥ दृ० ॥ १ ॥ भवसागरीच्या, पैल तीरासी, नेईल तो प्रभु ह्मणि, शरण जा ॥ दृढ० ॥ २ ॥ शांति प्रभूच्या पूर्ण कृपेनें, जनन मरण चुकतील शरण जा ॥ दृढ० ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

करमाळेकर श्री. बंडुभाई गुजराथी कृत चार पदें

पद्य १६ वें.

(चालः- गजल)

जैनमुनि शुद्ध हे साचे, नमावे पाय सद्गुरुचे ॥ दमन करि जे इंद्रियांचें ॥ नमावे. ॥ ध्रु.॥ विषय इच्छा न ज्या जाचे, करी जप ध्यान सौख्याचें ॥ बोलहीं गोड बहु ज्यांचे॥ नमावे० ॥१॥ स्मरति जे ज्ञान भक्तिचे, घडे या श्रेष्ठ नीतीचे ॥ जपति जे नाम जिनपतीचें ॥ नमावे० ॥२॥ गुरु हे दीप लोकांचे, दाविती मार्ग धर्माचे ॥ पंचव्रत श्रेष्ठ हे ज्यांचे० ॥ नमावे० ॥ ३ ॥ नसे मनीं नाम तृष्णेचें धरी जे ध्यान समतेचें ॥ कथन करिती जिनाज्ञेचें ॥ नमावे. ॥४॥ रत्नऋषि नाम गुरुश्रींचें, असे जे श्रेष्ठ पदवीचे ॥ ध्यान ज्या आत्म शुद्धिचें ॥ नमावे० ॥ ५ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १७ वें.

चालः- कधीं करिशी लग्न माझें०)

कधीं कधीं तू पार्श्वनाथा ! मजदेशी दर्शना ॥ ध्रु. ॥ तुजविणें, व्यर्थ हें जिणें, वाटते उणें, दीर्घ जाचणें, सौख्य लागेना ॥ मज० ॥ १ ॥ प्रभुवरा, तुझा आसरा संत सोयरा, वार तो बरा, त्रास ठेवीन ॥ मज. ॥२॥ तुजविणें असे तारिता, मला कोणता, तुला सोडिता जीव सोडीना ॥ मज० ॥ ३ ॥इति॥

पद्य १८ वें

चालः- (आनंदाचा कंद)

त्रिशला नंदन ! वंदन तूंते दर्शन द्यावे वा मला ॥ ध्रु. ॥ देवहि नामिति तुजला स्मरिती बहु प्रमानें बा तुला । शुद्ध मनानें मुनिवर ध्यानें वंदन करिती भो तुला ॥ त्रि० ॥ १ ॥ कर्म रिपूंचा हे तु साचा, समूळ ज्यानें छेदिला ॥ विघ्न निवारक भवसुख कारक संशय ज्यानें छेदिला ॥ त्रि० ॥ २ ॥ गौतम गणधर लब्धि सागर

पूर्ण तयानें तारिला ॥ वंदन करितों दृढ भावानें, शांत सुधारस द्या मला ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य १९ वें.

चालः- ("वनजारा ,, किंवा हरि नारायण जगतात.,)

शुभ अचल सुखी होण्याला, धरु ध्यानीं पंच पदाला ॥ ध्रु. ॥ भव रोग टळे मगसारा, रमता गुण गान पसारा, श्री श्रेष्ठ सुखद होण्याला ॥ धरु० ॥१॥ श्रीपाल नरेश्वर ध्याता, मैना सुंदरी त्या भजतां, पावले श्रेष्ठ सौख्याला ॥ धरु० ॥ २ ॥ अरिहंत पदाला भजतां, श्रीसिद्ध पदाला नमितां गातां मनीं आचार्याला ॥ धरु० ॥३॥ श्री उपाध्याय पद माचें, पंचम पद तें साधूचें, या श्रेष्ठ पदीं भजण्याला ॥ धरु० ॥४॥ या प्रभुचें दर्शन घेतां, शुभ ज्ञान मनीं तें येतां, उल्हासें जप घडण्याला ॥ धरु० ॥ ५ ॥ सर्व मंत्र अक्षर यांचे, बनलें पद पंच पदांचे, सर्वदा भजन करण्याला ॥ धरु० ॥६॥ सम्यक्त्वा हृदयीं असतां शुभ पर्वाराधन करतां, न लगे शंका तरण्याला ॥ धरु० ॥ ७ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य २० वें.

चालः (भावना ३ रें)

जाऊं या गाऊं या पाहूं यारे जैन शाळेचें शिक्षण घेऊं या ॥ ध्रु. ॥
सकाळीं उठोनि नम्रपणानें, आईबापाशीं नमुं यारे ॥ जैन. ॥ १ ॥
शांतिप्रभूचें स्मरण करुनि, गुरुचरणीं चित्त लावूं यारे ॥ जैन. ॥ २ ॥
खडे अक्षर शुद्ध करुनि, व्याकरण, वाचन वाचूं यारे ॥ जैन. ॥ ३ ॥
सामायिक सूत्र पाठ करुनि, प्रतिक्रमणाशीं शिकूं यारे ॥ जैन. ॥४॥
नित्यपाठ स्तोत्रातें घोकुनि ज्ञान सुधारस पीऊं यारे । जैन. । ५ ॥
संध्याकाळीं पद म्हणून, जैन सुबोध ग्रंथ वाचूं यारे ॥ जैन. ॥ ६ ॥
जैन धर्मावर प्रेम ठेवूनि, रत्न चरणीं शिर ठेवूं यारे ॥ जैन. ॥ ७ ॥ इति

❀ ❀ ❀

श्रीतिलोक जैन पाठशाला पाथर्डीचे हेडमास्तर श्री गोविंद सिताराम वराडे कृत पंच पदें ॥

पद्य २१ वें.

चालः- (प्रेम सेवा)

वीतरागा, चरण-कमल दावी मला । तूंचि सदय-हृदय नमन हा ! हो तुला ॥ वीतरागा, ॥ सोडोनि अरिहंत, विसरोनि भगवंत, हा होई मतिमंद भवभवीं तापला ॥ वीतरागा ॥ १ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य २२ वें.

चालः- (होइ विजयी तूं रंभे)

असो वंदन त्या धर्मपालकाला, राजनंदनाला, श्रीमहावीराला ॥ ध्रु. ॥ कुंडणापुरीं, अहा क्षत्रियागृहीं, धन्य राजनंदिनी, बाळ झाला ॥ असो०॥१॥ कोठार लुटविलें, नृपें द्रव्य वाटिलें, क्षणि इंद्र पातले, दर्शनाला ॥ असो. ॥ २ ॥ धन धान्य वाढलें, मेघ रत्न वर्षले, " वर्द्धमान" ठेविलें, नांव बाळा ॥ असो०॥३॥ कांचनापरी तेजभास्करावरी, देव सकल वंदिती, जिनेंद्राला ॥ असो० ॥ ४ ॥ अज्ञान पसरलें, सुनवकार विसरले, धर्मध्यान बुडालें, घात झाला ॥असो०॥ ५ ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, नमो सिद्ध मंगलं साधुजीला ॥असो० ॥ ६ ॥ इति ॥

❀ ❀ ❀

पद्य २३ वें.

चालः-

आजि जाऊं चला गाऊं तरण तारण मुनि तिलक-कुमर-सुर मुनिराया ॥ध्रु.॥ आनंदाचा सुदिन उगवला । शिवपददाता स्वगुरु भेटला । कल्लाणं, मंगलं देवयं चेइयं । ध्याऊं, गाऊं. प्रेमें वाहूं, सद्गुरुचरणीं मस्तक ठेऊं, या या या ॥ आजि० ॥ १ ॥ इति॥

❀ ❀ ❀

पद्य २४ वें.

(परमोपकारी श्री १००८ श्री रत्न ऋषिजी महाराज साहेब यांचा देवलोकवास झाल्यानंतर श्री तिलोक जैन पाठशाळा पाथर्डी मधील विद्यार्थ्यांनीं केलेला विलाप.)

चालः- (शिव छत्रपति शक कर्ता)

श्री रत्न ऋषि मम गुरुजी । कां स्वर्गवास हो केला! ध्रु. ॥
छात्र वृंद पडले दुःखीं । आधार दुजा कोणाचा ॥
अश्रुपूर लोटे नयनीं, थरकांप होई हृदयाचा ॥

चालः- श्री तिलोक ऋषिचा कुमर ।
गांठितां अव्ययपद अमर ।
अंतरले प्रभु तव चरण ।

वंदना करूं कोणाला ! । आधार स्तंभ ढासळला ॥ श्री रत्न. ॥ १ ॥
अज्ञान तिमिर छेदुनी । उगवला रवि ज्ञानाचा ॥
धावला बाळ तिलकांचा । रत्नाकर आमुचा त्राता ॥

चालः- हाडांची काडें करुनी ।
शिणवोनि आपुली वाणी ।
म्हणुनि कां कष्टा ओकुनी ।

रुष्ट कां आम्हांवर झाला? । आधार स्तंभ ढासळला ॥ श्री रत्न. ॥ २ ॥
श्रीज्ञान फंड स्थापोनी । छात्रालय उघडी आमुचें ॥
नादार दार विद्यार्थी । विद्यार्जन करिती सांचें ॥

चालः- फुलबाग बगीचा सुरस ।
विद्यार्थि गण अरविंद ।
सानंदें सेवी मकरंद ।

अवचित घातला घाला । आधार स्तंभ ढासळला ॥ श्री रत्न. ॥ ३ ॥
मम करुण कहाणी कथुनी । [illegible] हृदय धनिकांचें ॥
श्रीमान बधूंचें हृदयीं । उभविलें चित्र [illegible] ॥

चालः- बोधिलें [illegible] प्रहर ।
कटु निंदे[illegible] वर्षाव ।
परि धीर वीर गंभीर ।

तिळमात्र नाहीं गडबडला । आधार स्तंभ ढासळला ॥ श्री रत्न ॥ ४ ॥
अभाग्यदशा पितरांची । शिकवील कोण बाळांतें ॥

स्वार्थांध बनतसे जैनी । कळवळा न ये कोणातें ॥

चालः-तूं दयार्णवींचा सदय ।

दुबळ्यांचा प्राणाधार ।

नेतसे शिवपदीं अदय ।

आनंद सूर्य मावळला । आधार स्तंभ ढांसळला ॥श्री.॥५.॥ इति॥

पद्य २५ वें.

चालः (गारियां येन देशाला)

विनंती ज्ञाति बंधूला, । प्रतापी वीर पुत्राला ॥
वांचवा दीन बाळांना । मदत द्या जैन शाळेला ॥ ध्रु. ॥
शेंकडों जैनबाळांना मिळेना अन्न खायाला ।
याचना धनिक वर्गाला । प्रतापी वीर पुत्राला ॥ वि. ॥१॥
कशाची कॉलरी शर्ट । मिळेना फाटके वस्त्र
दया येईल कोणाला ? । प्रतापी वीर पुत्राला ॥ वि. ॥२॥
फजिती जैन कोमांची । अवनति सद्य आम्हनकीं ।
तयांची दाद कोणाला ! । प्रतापी वीर पुत्राला ॥ वि. ॥३॥
गुरें र खिनी दुसऱ्यांची घरीं करती भांडीं शूद्रांची ।
तयाची लाज कोणाला, प्रतापि वीर पुत्राला ॥ वि. ॥४॥
बाटती शेंकडों जैनी । स्विकारी धर्म इस्लामी ।
तयाची शरम कोणाला? । प्रतापी वीर पुत्राला ॥ वि. ॥५॥
श्री तिलोक जैन शाळेला । पुरावा नमुद रजिष्टरला ।
विचारा प्रेसिडेंटाला । तसेचि सेक्रेटरीला ॥ वि. ॥६॥
अन्न दानं खलु श्रेष्टं । "विद्यादान अतिश्रेष्टं ।
शिकवणी जैन धर्माची । सम्मति रत्न ऋषीजींची ॥ वि.॥७॥
वंदना साधु वर्याला । प्रार्थना दान शूरांला ।
वाचवा जैन धर्माला । प्रतापी वीर पुत्राला ॥ वि. ॥८॥

❀ ❀ ❀ ❀

ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांतिः !!!

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्थेचा
संक्षिप्त वृत्तांत.

प्रातःस्मरणीय परमोपकारी जैन धर्माचे स्तंभ श्री श्री १००८ श्री रत्नऋषिजी महाराज बांस गेले वर्षी मिति ज्येष्ठ वद्य ७ संवत १९८४ सोमवारी वर्धा जिल्ह्यांतील अल्लीपुर गांवीं स्वर्गवास झाला. या सत्पुरुषाचें जीवन चरित्र त्यांचे सच्छिष्य मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराज यांनीं ज्येष्ठ वद्य ७ संवत १९८५ तारीख १२-५-२८ शनीवारीं सकाळीं येथें (सदर बजार नागपूर) श्रावकांसमोर व्याख्याना-मध्यें थोडक्यांत पण फार मार्मिक रीतीनें वर्णन केले. या व्याख्यानाचा परिणाम श्रोत्यांवर फार झाला व त्यांनीं मितीं ज्येष्ठ वद्य १२ रोजीं महाराज श्रींचे स्मारक ह्मणून श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था शुभ मुहुर्तावर स्थापन केली.

'श्री जैन धर्माचा प्रचार जनतेमध्यें निःपक्षपात बुद्धीनें करणें हा या संस्थेचा प्रमुख उद्देश आहे.

टीप—या संस्थेतून आजपर्यंत बाहेर गांवच्या मंडळीच्या आर्थिक मदतीनें ९ ट्रेक्ट प्रकाशित झाले आहेत.

या संस्थेच्या कार्यकर्त्यांचा उत्साह वाढून ते संस्थेच्या उन्नती-करितां नेहमीं प्रयत्न करीत रहावें ह्मणून प्रत्येक जैनानें या संस्थेस तन मन धन पूर्वक सहाय करावें.

या संस्थेचें जीवन जैन समाजावरच सर्वतोपरी अवलंबून आहे.

ज्या महाशयांस संस्थेची ओळख करून घ्यावयाची असेल त्यांनीं संस्थेची नियमावली मागवून घ्यावी. आपला

गुलाबचंद पारख
मंत्री
श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था.
१-२-२९